दो शब्द

कोचरबमे सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना हुअी, तभीसे भाअी नरहरि परीख अुसमे शामिल होनेवालोमे है। अिसलिए चिरजीव वनमालाको जो कुछ मिला है, सो आश्रममेसे ही मिला है। वह सरकारी मदरसेसे और वहाँ मिलनेवाली शिक्षासे अछूती रही है, अिसलिअे यह माना जा सकता है कि वह मजदूरी करना जानती है। लेकिन अुसने तो कस्तूरबाके जीवन-वृत्तान्तकी सामग्री इकट्ठा करनेका साहस किया है। अिसमे अुसने दूसरोकी मदद ली है। यह लिखते समय मैने दूसरे लेखोंको देखा नहीं है। चिरंजीव वनमालाका आग्रह था कि अुसके अपने लिखेको मै देख जाअूँ। बेचारी लिखने तो बैठी कस्तूरबाके बारेमे, लेकिन बचपनमे मेरे साथ दौडी और खेली थी, सो मुझे कैसे भूलती? देखता हूँ कि अुसने अिधर-अुधरसे बहुतसी अप्राप्य हकीकत इकट्ठा की है और अुसे ठीक-ठीक सजाया है। अुसकी भाषा घरेलू और सादी है। मुझे अुसमे कहीं भी बनावट नहीं दिखाई दी। चिरजीव वनमालाका यह पहला प्रयत्न कुल मिलाकर सफल हुआ है या निष्फल, अिसका फैसला तो पाठकोंको ही करना होगा।

चिरजीव प्यारेलालकी बहन चिरजीव सुशीलाबहनने जेलमे अुसे मिले हुअे बा के अनुभव लिखे थे। चिरजीव वनमालाने सोचा था कि अुनमेसे कुछ वह अपने लेखमे ले लेगी। लेकिन पढने पर अुसे लगा कि बहन सुशीलाकी लिखावटमे अेक सहज कला है। अुसका अगभंग करनेकी अुसकी हिम्मत न हुअी। मूल

हिन्दीमें ही है। बहन सुशीलाने डॉक्टरीकी आख़िरी डिग्री हासिल की है। साथ ही अुसको गानेका, बजानेका, चित्र निकालनेका और साहित्यका शौक है। वह सार्वजनिक जीवनमे दिलचस्पी लेती है। स्वर्गीय महादेवने अुसके अिस गुणको देखा था और अिसे बढ़ानेमे खूब दिलचस्पी ली थी। लेकिन वह तो सबको छोड़कर चले गये। यह जीवन पूरा किया। पाठक चि० सुशीलाके लेखको अिस दृष्टिसे देखे।

यह तो हुआ लेखिकाओंके बारेमे।

लेकिन दोनों कहती है कि जब तक मैं बा के विषयमे कुछ न कहूँ, तब तक यह पुस्तक अधूरी ही मानी जायगी। जब मैं ही इस संग्रहका परिचय दे रहा हूँ, तो मेरे लिअे बा के विषयमें कुछ लिख देना शायद अुचित माना जायगा। समय मिला तो विस्तारसे लिखनेका मेरा अिरादा है। यहाँ तो जिस कारणसे बा ने जनतामे अितना बड़ा आकर्षण पैदा किया था, अुसकी जड़को मैं ढूंढ़ सकूँ, तो ढूँढूँ। बा का ज़बरदस्त गुण महज़ अपनी अिच्छासे मुझमे समा जानेका था। यह कुछ मेरे आग्रहसे नहीं हुआ था। लेकिन समय पाकर बा के अन्दर ही अिस गुणका विकास हो गया था। मै नहीं जानता था कि बा मे यह गुण छिपा हुआ था। मेरे शुरू-शुरूके अनुभवके अनुसार बा बहुत हठीली थी। मेरे दबाव डालने पर भी वह अपना चाहा ही करती। अिसके कारण हमारे बीच थोड़े समयकी या लम्बी कडुवाहट भी रहती, लेकिन जैसे-जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन अुज्ज्वल बनता गया, वैसे-वैसे बा खिलती गअी, और पुख्ता विचारोंके साथ मुझमे यानी मेरे काममे समाती गअी। जैसे दिन बीतते गये, मुझमे और मेरे काममे — सेवामे — भेद न रह गया। बा धीमे-धीमे

अुसमे तदाकार होने लगी। शायद हिन्दुस्तानकी भूमिको यह गुण अधिक-से-अधिक प्रिय है। कुछ भी हो, मुझे तो बा की अुक्त भावनाका यह मुख्य कारण मालूम होता है।

बा मे यह गुण पराकाष्ठाको पहुँचा, अिसका कारण हमारा ब्रह्मचर्य था। मेरी अपेक्षा बा के लिअे वह बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध हुआ। शुरूमे बा को अिसका कोअी ज्ञान भी न था। मैने विचार किया और बा ने अुसको अुठाकर अपना बना लिया। परिणाम-स्वरूप हमारा सम्बन्ध सच्चे मित्रका बना। मेरे साथ रहनेमे बा के लिए सन् १९०६ से, असलमे सन् १९०१ से, मेरे काममे शरीक हो जानेके सिवा या अुससे भिन्न और कुछ रह ही नहीं गया था। वह अलग रह नहीं सकती थी। अलग रहनेमे उसे कोई दिक्कत न होती, लेकिन अुसने मित्र बनने पर भी स्त्रीके नाते और पत्नीके नाते मेरे काममे समा जानेमे ही अपना धर्म माना। अिसमे बा ने मेरी निजी सेवाको अनिवार्य स्थान दिया। अिसलिअे मरते दम तक अुसने मेरी सुविधाकी देखरेखका काम छोड़ा ही नहीं।

सेवाग्राम, १८-२-'४५

मोहनदास करमचन्द गांधी

पूज्य महादेवकाकाके
चरणोंमें

विषयसूची

दो शब्द	गांधीजी	३
भाग पहला : जीवनकी कहानी	वनमाला परीख	१–११२
१. जन्म और विवाह		३
२. बा का बाल-गृहस्थाश्रम		५
३. आदर्श सहधर्मचारिणी		९
४. संकटकी साथिन		१७
५. सत्याग्रहकी गुरु		२१
६. अपरिग्रहकी दीक्षा		२४
७. जोहानिसबर्गमे बा का घर		२९
८. बा की दृढता		३३
९. बापूको बचाया		३७
१०. पहली स्त्री-सत्याग्रही		३९
११. बा की सेवा-सुश्रूषा		४३
१२. बा की अंग्रेजी		४६
१३. खादी-परिधान		४९
१४. आश्रमकी बा		५२
१५. हरिजनोंकी माँ		५७
१६. बा की दिनचर्या		६०
१७. कर्मयोगी बा		६९
१८. हरिलालभाअी		७३
१९. सार्वजनिक जीवनमे		८५
२०. बिदा		९९
परिशिष्ट		१०३

भाग दूसरा : वात्सल्यमूर्ति बा　　सुशीला नय्यर　११३-२१२

१. प्रथम दर्शन　११५
२. प्रथम परिचय　११६
३. बापूसे सूने आश्रममें　१२२
४. दिखावेसे नफरत　१२३
५. बा की सार-सँभाल　१२५
६. बा की दिनचर्या　१२६
७. बा का त्याग　१२९
८. जगन्नाथजीके दर्शनोंवाली घटना　१३१
९. सेवाग्राममे हैजा　१३२
१०. राजकोट सत्याग्रह　१३३
११. पहली सख्त बीमारी　१३५
१२. दूसरी सख्त बीमारी　१३६
१३. अन्तिम कारावासकी तैयारी　१३९
१४. गिरफ्तारी　१४१
१५. ऑर्थर रोड जेलमे　१४२
१६. आगाखान महलमे प्रवेश　१४५
१७. गवर्नर और वाअिसरायको पत्र　१४७
१८. शनिवार, १५ अगस्त '४२　१४८
१९. ब्राह्मणकी मृत्यु　१५०
२०. शकरका मन्दिर　१५०
२१. बा विद्यार्थीके रूपमे　१५१
२२. रामायण और भागवतमे श्रद्धा　१५५
२३. व्रत-अुपवास वगैरामे श्रद्धा　१५८
२४. पतिव्रता सती　१५९
२५. छुआछूत　१६१
२६. पुराने सस्कार　१६१
२७. हिन्दू-मुसलमानके प्रति समभाव　१६२
२८. अिस बारके जेलका बा पर असर　१६४

२९. बापूके अुपवासकी तैयारी — १६७
३०. अुपवास — १७०
३१. अुपवासके बाद — १७३
३२. खेलका शौक — १७६
३३. वात्सल्य — १७७
३४. बा का दुशाला — १७७
३५. खिलाने और खानेका शौक — १७९
३६. बा की जिद — १८०
३७. 'पीड पराअी जाणे रे' — १८१
३८. जेलमें बापूजीका दूसरा जन्म-दिन — १८४
३९. सहृदयता — १८४
४०. अन्तिम शय्या — १८७
४१. रामनाम ही दवा है — १९४
४२. सबकी माँ — १९६
४३. बापूजीकी पत्नी-भक्ति — १९७
४४. अंतिम रात — २००
४५. २२ फरवरी, १९४४ — २०१
पूर्ति — २१३–२२८
 १. अन्त्येष्टि — देवदास गांधी — २१५
 २. बा — गोशीबहन कैप्टन — २२२

हमारी बा

भाग पहला

जीवनकी कहानी

१

जन्म और विवाह

काठियावाड़के पोरबन्दर नगरमे सन् १८६९के अप्रैल महीनेमे बा का जन्म हुआ था। बापूजीसे बा करीब छह महीने बड़ी थीं। पिताका नाम गोकुलदास मकनजी था और माताका नाम व्रजकुँवर। कुल पॉच भाअी-बहनोंमे तीन भाअी और दो बहने थीं। अिनमेसे अेक बहन और अेक भाअी बचपनमे ही गुज़र गये थे। बड़े भाअी जवानीमें चल बसे। फिर अेक बा और अेक अुनके छोटे भाअी माधवदास दो ही रह गये। माधवदास मामा सबसे छोटे और बा तीसरी थीं।

अुस ज़मानेमे, और सो भी काठियावाड़मे, लड़कियोंको कोअी पढाता नहीं था। अिसलिअे बचपनमें बा बिलकुल निरक्षर थीं। लेकिन अुनको घरके काम-काजकी अच्छी तालीम मिली थी और पिताके संस्कारी वैष्णव परिवारके कुछ अुत्तम गुण अुन्हे विरासतमे मिले थे। धार्मिक वातावरणमे अेक खास सकल्प-बल और सयमका विकास होता है, और ये दोनों बाते बा मे ठेठ बचपनसे ही पाअी जाती थीं।

बा के पिताजी पोरबन्दरमे व्यापारी थे। आर्थिक स्थिति साधारण ही थी। पोरबन्दर राज्यकी दीवानगीरी करनेवाले गांधी परिवारके साथ अुनका अच्छा सम्बन्ध था। अिसलिअे अुन्होंने सात सालकी अुमरमे ६॥ सालके बापूके साथ बा की सगाअी कर दी और तेरह सालकी अुमरमे अुनका विवाह हुआ।

आज हमको अिस तरहके बाल-विवाहकी बात विचित्र और विनोद-पूर्ण मालूम होती है। बापूजीने भी आत्मकथामे अुसका रोचक चित्र खींचा है। वे लिखते है : "मुझे याद नहीं पडता कि सगाअीके समय मुझसे कुछ कहा गया था। अिसी तरह ब्याहके वक्त भी कुछ पूछा नहीं

गया। सिर्फ तैयारियोंसे ही पता चला कि ब्याह होने वाले हैं। अुस समय तो अच्छे-अच्छे कपड़े पहनेंगे, बाजे बजेंगे, जुलूस निकलेंगे, अच्छा-अच्छा खानेको मिलेगा, अेक नअी लड़कीके साथ हँसी-खेल करेंगे, वगैरा अिच्छाओंके सिवा और कोअी विशेष भाव मेरे मनमे रहा हो, अैसा याद नहीं आता।" ब्याहके अवसरका वर्णन करते हुअे बापू लिखते हैं : "मण्डपमें बैठे, फेरे फिरे, कसार खाय-खिलाया और वर-वधू तभीसे साथमें रहने लगे। दो अबोध बालक बिना जाने, बिना समझे, संसार-सागरमें कूद पड़े. . . .। कुछ अैसा खयाल होता है कि हम दोनों अेक-दूसरेसे डरते थे, अेक-दूसरेसे शरमाते तो थे ही। बातें किस तरह करना, क्या करना, सो मैं क्या जानूँ? धीरे-धीरे अेक-दूसरेको पहचानने लगे, बोलने लगे।"

अुस समयकी अपनी भावनाओंका और बा के स्वभावका बापू यों वर्णन करते है : "मुझे अपनी पत्नीको आदर्श स्त्री बनाना था। वह साफ बने, साफ रहे, मैं जो सीखूँ, सीखे; जो पढ़ूँ, पढ़े; और हम दोनों अेक-दूसरेमें ओतप्रोत रहें, यह मेरी भावना थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि कस्तूरबाअीकी भी यह भावना थी। वह निरक्षर थीं, स्वभावकी सीधी, स्वतंत्र, मेहनती और मेरे साथ कम बोलनेवाली। अुन्हें अपने अज्ञानसे असंतोष न था। मैंने अपने बचपनमें अुनको कभी यह अिच्छा करते हुअे नहीं पाया कि जिस तरह मैं पढ़ता हूँ, अुस तरह वह खुद भी पढ़े, तो अच्छा हो . . . .। अुन्हें पढ़ानेकी मेरी बड़ी अिच्छा थी। लेकिन अुसमें दो कठिनाअियाँ थीं। अेक तो बा की पढ़नेकी भूख खुली नहीं थी, दूसरे, बा अनुकूल हो जातीं, तो भी अुस जमानेके भरे-पूरे परिवारमे अिस अिच्छाको पूरा करना आसान नहीं था।"

बापूजी खुद अुस ज़मानेका वर्णन यों करते है : "अेक तो मुझे ज़बर्दस्ती पढ़ाना था, और सो भी रातके अेकान्तमे ही हो सकता था। घरके बड़े-बूढ़ोंके सामने पत्नीकी तरफ देख तक नहीं सकते थे। बाते तो हो ही कैसे सकती थीं? अुस समय काठियावाड़मे घूँघट निकालनेका निरर्थक और जगली रिवाज था। आज भी बहुत-कुछ मौजूद है। अिसलिअे पढ़ानेके अवसर भी मेरे लिअे प्रतिकूल थे। चुनाँचे, मुझे क़बूल

करना चाहिये कि जवानीमे मैंने बा को पढानेकी जितनी कोशिशें कीं, वे सब क़रीब-क़रीब बेकार गअीं। जब मैं विषयकी नींदसे जागा, तब तो सार्वजनिक जीवनमे पड चुका था, अिसलिअे मेरी स्थिति अैसी नहीं रह गअी थी कि मैं ज़्यादा समय दे सकूँ। शिक्षकके जरिये पढानेकी मेरी कोशिशें भी बेकार हुअीं। नतीजा यह हुआ कि आज कस्तूरबाअी मुश्किलसे पत्र लिख सकती है और मामूली गुजराती समझ लेती है। मैं मानता हूँ कि अगर मेरा प्रेम विषयसे दूषित न होता, तो आज वह विदुषी स्त्री होतीं। अुनके पढनेके आलस्यको मैं जीत सकता।"

२

बा का बाल-गृहस्थाश्रम

अिस प्रकार बचपनमें ही बा और बापूजीके गृहस्थाश्रमका आरम्भ हुआ। बाल-वयके अिन पति-पत्नीकी गृहस्थीका और नादानीसे भरे झगड़ोका वर्णन बापूजीने बहुत ही मार्मिक शब्दोंमे किया है। अुससे हम देख सकते है कि जो भी बा निरक्षर थीं, तो भी अैसी नहीं थीं कि अपनी स्वतन्त्रताको न समझें। वे लम्बी बहस या दलील नहीं कर पाती थीं, लेकिन अपने मनकी करनेमे किसीके दावे दबती भी नहीं थीं। बापूजी लिखते है:

"जिन दिनों शादी हुअी, अुन दिनों निबन्धोंकी छोटी-छोटी पुस्तिकाअें निकला करती थीं। अुनमे दाम्पत्य-प्रेम, किफायतशारी, बाल-विवाह वग़ैरा विषयोंकी चर्चा रहती थी। अुनमेसे कुछ निबन्ध मेरे हाथ पड जाते और मैं अुन्हें पढ जाता। यह आदत तो थी ही कि पढना, जो पसन्द न आये अुसे भूल जाना और जो पसन्द पड़े, अुस पर अमल करना। पढा था कि अेक पत्नीव्रत पालना पतिका धर्म है, और यह बात हृदयमे बसी रही।

"लेकिन अिस सद्विचारका अेक बुरा परिणाम हुआ। अगर मुझे अेक पत्नीव्रतका पालन करना है, तो पत्नीको अेक पतिव्रतका पालन करना चाहिये। अिस विचारकी वजहसे मैं अीर्ष्यालु पति बन गया। 'पालना

चाहिये' परसे मैं 'पलवाना चाहिये' के विचार पर पहुँच गया; और अगर पलवाना है, तो पत्नीके अुपर निगरानी रखनी चाहिये। मुझे पत्नीकी पवित्रता पर शक करनेका कोअी कारण न था, लेकिन अीर्ष्या कब कारण देखने बैठती है? मुझे यह जानना चाहिये कि मेरी स्त्री कहाँ जाती है, अिसलिअे मेरी अिजाज़तके बिना वह कहीं जा ही नहीं सकती। यह चीज हमारे बीच दुःखद झगड़ेका कारण बन गअी। अिजाज़तके बिना कहीं न जा सकना तो अेक तरहकी कैद हुअी। लेकिन कस्तूरबाअी अिस तरहकी कैद सहन करनेवाली थीं ही नहीं। जहाँ जाना चाहतीं, वहाँ मुझसे बिना पूछे जरूर जातीं। जितना ही मैं दबाता, अुतनी ही ज़्यादा वह आज़ादी लेतीं और मैं ज़्यादा चिढ़ता।"

बापू अीर्ष्यालु और शंकाशील (वहमी) पति थे। अिसके खिलाफ़ बा बराबर आज़ादी लेती ही रहीं, और फिर भी बापूके वहम और अुनकी अीर्ष्याको अुन्होंने सह लिया। अैसा न किया होता, तो गृहस्थी वहीं खतम हो जाती। हिन्दू गृहस्थाश्रमोंमें बालक पति-पत्नीके बीच अक्सर अैसे कलह होते है, लेकिन अुनमें कुल मिलाकर स्त्रियाँ ही ज़्यादा समझदारी, धीरज और सहनशीलताका परिचय देती हैं। यही वजह है कि गृहस्थीकी नैया टकरा कर चूर होनेसे बच जाती है। फिर तो दोनों सयाने हो जाते हैं, और गृहस्थी सरलतासे चलती है। अिस प्रकार अुसको सरल और सफल बनानेमे अधिक हिस्सा स्त्रियोंका होता है। अैसे समय स्त्री गम खाती है और सहन कर लेती है। पुरुषको तो अुस वक्त अपनी सत्ता जमाने, स्वामित्व सिद्ध करनेका जोश चढ़ा रहता है। लेकिन स्त्रीकी समझदारीके कारण गृहस्थी निभती है।

बापूजी आत्मकथामें लिखते है: "कस्तूरबाअीने जो आज़ादी ली थी, अुसे मै निर्दोष मानता हूँ। अेक बालिका, जिसके मनमें पाप नहीं, वह देव-दर्शनको जानेके लिअे या किसीसे मिलने जानेके बारेमे अैसा दबाव क्यों सहन करे? अगर मैं अुस पर दबाव रखता हूँ, तो वह मुझ पर क्यों न रखे? किन्तु यह तो अब समझमे आता है।"

लेकिन अैसा नहीं हुआ कि बा हरबार चुप ही रह गअी हों। बापूके गर्विष्ठ (घमण्डी) पति होते हुअे भी जब जरूरत मालूम हुअी, बा अुन्हें

चेतावनी देनेमे पीछे नहीं रहीं। बापूजीने लिखा है कि अेक बुरे मित्रकी सोहबतके सिलसिलेमे मेरी माताजी, बड़े भाअी और मेरी पत्नीने मुझको चेताया था। अुस मित्रकी सोहबतमे रहनेके जिस खतरेको बापूजी नहीं देख सके थे, अुसे बा अपनी सहज बुद्धिसे ताड़ गअी थीं और खास बात यह थी कि अैसा करके वह चुप नहीं बैठ गअीं। अनपढ़ और कम अुम्रकी बा मे अुस समय भी विवेकशक्ति और स्वतन्त्र विचारशक्ति थी। अपने लिअे क्या अच्छा है और क्या बुरा है, सो तो बा समझती ही थीं। अिसके सिवा, अुन्हें अिस बातका भी खयाल था कि अपने पतिके लिअे क्या अच्छा है और क्या खतरनाक है। अिसलिअे "पत्नीकी चेतावनीको मैं गर्विष्ठ पति क्यों मानने लगा?" —अिन शब्दोंमे अपने दुःखको व्यक्त करनेके साथ ही साथ बापूजीने बा की समझदारीको भी स्वीकार किया है।

* * *

अिस समयके बा के जीवनकी दूसरी घटनाओंको मैं अेकत्र नहीं कर सकी। सन् १८८८ में बापूजीके विलायत जानेसे पहले बा के अेक बालक जन्मा था, जो दो या चार ही दिनमे मर गया और अुसके बाद हरिलालभाअीका जन्म हुआ। अुस समय अुनकी अुमर क़रीब १९ सालकी थी। बापूजीने लिखा है कि विलायत जानेके समय अुन्होंने सबसे विदा वग़ैरा माँगी थी, लेकिन बासे विदा माँगनेके बारेमे और अुनकी भावनाके बारेमे कहीं कुछ भी नहीं लिखा है। अलबत्ता, बा को यह अच्छा तो नहीं लगा होगा। बहुत-बहुत तो बा ने अितना पूछा होगा कि वापस कब आयेंगे और बापूने प्रेमपूर्वक कुछ आश्वासन दिया होगा। बापूजी विलायतमे थे, तभी अुनकी माताजी यानी बा की सास गुजर गअीं। बा की जेठानी घरमें पूजामें रहती थीं। अुस समय अुनके बच्चोंको नहलाने-धुलाने और सँभालनेका सारा काम बा ही दिन-रात किया करती थीं। रसोअीघर तो समूचा बा के ही जिम्मे था। बा ने सासके जैसी ही जेठानीकी भी सेवा की है।

विलायतसे वापस आनेके बाद भी बापूजी अपने अीर्ष्यालु स्वभावको छोड़ नहीं पाये थे। वे लिखते हैं: "हर मामलेमे मेरी नुक्ताचीनी और

मेरा वहम क़ायम रहा । अिसकी वजहसे मैं अपनी चाही हुअी मुरादोंको पूरा नहीं कर पाया । मैंने सोचा था कि मेरी पत्नीको अक्षरज्ञान होना ही चाहिये और वह मैं अुसे दूँगा । लेकिन मेरी विषयासक्तिने मुझे वह काम करने ही न दिया, और अपनी खामीका गुस्सा मैंने पत्नी पर अुतारा । अेक वक्त तो अैसा आया कि मैंने अुसे अुसके मायके ही भेज दिया और बहुत ज़्यादा तकलीफ देनेके बाद फिर साथ रहने देना कबूल किया । बादमें मैं देख सका कि अिसमें मेरी निरी नादानी ही थी ।"

अिस घटनाके बारेमें बापूजीसे ज़्यादा जानकारी प्राप्त की जा सकती थी । लेकिन अुनकी बीमारी और दूसरे महत्त्वके कामोंमे अुनकी व्यस्तताके कारण मैं अिस सम्बन्धका ब्यौरा अुनसे प्राप्त नहीं कर सकी ।

हिन्दुस्तानमें बापूजीकी बैरिस्टरी अच्छी तरह नहीं चली और अुन्हें अेक मुकदमेके सिलसिलेमें अफ्रीका जाना पडा । अुस समयकी अपनी और बा की भावनाकी थोडी झाँकी बापूजीने हमें दी है । वे लिखते है: "विलायत जाते समय जो वियोग-दुःख हुआ था, वह दक्षिण अफ्रीका जाते वक्त नहीं हुआ । माता तो चली गअी थीं, अिसलिअे अिस बार सिर्फ पत्नीके साथका वियोग दुःखदायी था । विलायतसे लौटनेके बाद दूसरे अेक बालककी प्राप्ति हुअी थी । हमारे बीचके प्रेममें अभी विषय तो था ही, फिर भी अुसमें निर्मलता आने लगी थी । मेरे विलायतसे लौट आनेके बाद हम बहुत कम समय अेक साथ रहे थे । और चूँकि मैं स्वय, कैसा भी क्यों न होअूँ, अेक शिक्षक बना था, और मैंने अपनी पत्नीमें कुछ सुधार कराये थे, अिसलिअे अुन्हें कायम रखनेके खयालसे भी हमारे अेक साथ रहनेकी जरूरत हम दोनोंको मालूम होती थी । लेकिन अफ्रीका मुझे खींच रहा था । अुसने वियोगको सरल बना दिया । 'अेक सालके बाद तो हम मिलेंगे ही न !' — अिस प्रकार ढाढस बँधाकर मैंने राजकोट छोडा और बम्बअी पहुँचा ।" लेकिन बापूजी तो दक्षिण अफ्रीकामे अेकके बदले तीन साल रह गये । बा के ये साल भी राजकोट ही मे बीते । १८९६ में बापूजी छह महीनोंके लिअे अपने परिवारको ले जानेके अिरादेसे देशमें आये । लेकिन छह महीने पूरे

ई स १९१५ में

बा और बापू

होनेसे पहले ही अफ्रीकासे फौरन वापस आनेका तार आया और बापूजी बा को, अपने दो बालकोंको और अपने स्वर्गीय बहनोअीके अेक पुत्रको लेकर अफ्रीकाके लिअे रवाना हो गये।

३
आदर्श सहधर्मचारिणी

बापूजीने अेक जगह लिखा है: "अगर मैं अपनी पत्नीके बारेमें अपने प्रेम और अपनी भावनाका वर्णन कर सकूँ, तो हिन्दूधर्मके बारेमें अपने प्रेम और अपनी भावनाओंको मैं प्रकट कर सकता हूँ। दुनियाकी दूसरी किसी भी स्त्रीके मुकाबले मेरी पत्नी मुझ पर ज्यादा असर डालती है।"

कहा जा सकता है कि बापूजीको अपने जीवनमें जो भी अूँचीसे अूँची चीज मिली है, जो भी प्रेरणा प्राप्त हुअी है, जो कुछ मार्ग-दर्शन मिला है, वह जिस तरह हिन्दूधर्मसे मिला है, अुसी तरह बा से भी मिला है। अिन दोनों जीवनदायी और प्रेरणा पहुँचानेवाले बलोंके बारेमें रहस्यकी बात यह है कि बापू अिन दोनोंमेंसे किसी अेकको भी पसन्द करने नहीं गये थे। हिन्दूधर्म जन्मके साथ मिला। विलायत जाते समय माताकी अिच्छासे अेक जैन साधुके सामने ली हुअी प्रतिज्ञाओंका वहाँ पूरा-पूरा पालन किया, सो अुन प्रतिज्ञाओंके महत्त्वको समझकर नहीं, बल्कि अिसलिअे किया कि ली हुअी प्रतिज्ञाका पालन विकटसे विकट परिस्थितिमें भी करना ही चाहिये। हिन्दूधर्मकी अिस भावनाका माँके दूधकी तरह अुन्होंने बचपनसे पान किया था। अिसी तरह पत्नीको भी अुन्होंने चुना नहीं था। जिस तरह धर्म माता-पिताका मिला, अुसी तरह पत्नी भी माता-पिताने ही ला दी। आत्मकथामें वे कहते हैं: "किसी लड़कीके साथ शादी होनेवाली है, और 'वह मुझे पसन्द है या नहीं, सो सब कुछ मुझसे पूछा नहीं गया था, बल्कि सारा प्रबन्ध मेरे माता-पिताने ही किया था।"

दूसरी अेक रहस्यमय घटना यह है कि अपने जीवनके आरम्भमें अिन दोनोंके बारेमें, यानी हिन्दूधर्मके बारेमें और पत्नीके बारेमें, बापू सशक थे। दक्षिण अफ्रीकामे हिन्दूधर्मके बारेमें अुन्होने अेक मित्रसे कहा था: "जो भी मैं जन्मसे हिन्दू हूँ, फिर भी हिन्दूधर्मके बारेमे बहुत जानता नहीं। दूसरे धर्मोंके बारेमें तो और भी कम जानता हूँ। धर्मके मामलेमें मेरी धारणा क्या है, किस धर्ममें मुझे श्रद्धा है और किस धर्ममें मुझे श्रद्धा रखनी चाहिये, सो मैं कुछ भी नहीं जानता।" जिस तरह बापूने हिन्दूधर्मके पूरे-पूरे महत्त्व और सच्चे रहस्यको जाने बिना धार्मिक जीवनका आरम्भ किया था, अुसी तरह पत्नीके महत्त्व और अुसके सच्चे गुणोंकी किसी कल्पनाके बिना ही अुन्होंने अपने गृहस्थ जीवनका श्रीगणेश किया था। बापूजी खुद ही कहते है: "मै अीर्ष्यालु और वहमी पति था। पत्नी कहाँ जाती है और क्या करती है, अिस पर मैं अंकुश रखना चाहता था।"

अैसा होते हुअे भी बापूजीने आखिर अिन दोनोंको समझनेकी खूब कोशिश की। दोनोंको अपनाया और दोनोंकी मददसे अपने जीवनको धन्य किया! हिन्दूधर्मके गहरेसे गहरे रहस्यको खुद खोज निकाला और अुसके प्रभावसे स्वयं दुनियाकी अेक धार्मिक विभूति बने — सन्त और महात्माके नामसे मशहूर हुअे। अिसी तरह जैसे-जैसे बा के सच्चे गुणोंको वे समझते गये, वैसे-वैसे अपने गृहस्थ-जीवनको धन्य बनाते गये और बापू सच्चे 'बापू' बने।

बापूजीको तपश्चर्याका शौक है। तप और संयमके बड़े-बड़े प्रयोग वे करते ही रहते हैं। जीवनको अुन्होंने तपोमय बना दिया है। फिर भी तपस्वीमे जो शुष्क वैराग्य और कर्कशता आ जाती है, वह अुनके जीवनमे नहीं आ पाअी है। प्रेम और करुणा मूल ही से अुनके स्वभावमें रहे हैं। अिस प्रेम और करुणाके स्रोतको अुनकी तपःपरायणता शायद सुखा डालती, लेकिन यह सोता न सिर्फ सूखा ही नहीं, बल्कि बढ़ते तपके साथ खुद भी बढ़ता ही गया है, सो बा का प्रताप समझना चाहिये।

बापूजीके समान अुग्र तपस्वीके जीवन पर अिस तरहका असर डालना किसी मामूली योग्यताका काम नहीं है। बापूकी तपस्याकी भट्ठीके नज़दीक कुछ देरके लिअे रहना भी कितना कठिन है, सो तो अनुभवी ही जानते है। श्रीमती पोलाक ब्याहके बाद तुरन्त ही बापूजीके अेक परिजनके नाते अुनके घर ही मे रही थीं। वहाँ अुनको कितनी कठिनाअियाँ सहनी पड़ी होंगी, अिसके बारेमे हमे सहृदय बननेकी सलाह देते हुअे श्री अेण्ड्रयूज लिखते है: "अैसे अेक सन्तके साथ, जो हमेशा किसी-न-किसी शारीरिक कष्टको भोगनेका आग्रह रखता हो, जो जिद्दी और धुनका पक्का हो, और अितना होने पर भी जिसे प्यार करनेकी मनमे अिच्छा होती हो, अुसके अेक परिजनकी तरह रोजका बहुत निकटका जीवन बिताना श्रीमती पोलाकके लिअे कितना कठिन हुआ होगा!"

श्रीमती पोलाकको तो कुछ महीने या अेक-दो साल ही बापूके घरमें रहना पड़ा होगा, और वह भी अुन्हें कठिन मालूम हुआ, तो फिर जिनके जीवनका गठबन्धन ही अैसे 'सन्त'के साथ हुआ हो, अुन बा की क्या हालत हुअी होगी, सो सोच लीजिये। अलबत्ता, बा को बहुत-सी मुश्किलोंका सामना करना ही पड़ा होगा। लेकिन अुन्होंने अुन तमाम मुश्किलोंको गौरवके साथ न सिर्फ पार किया है, बल्कि बापूजीको भी अुनकी तपश्चर्याके जोशमें जरूरतसे ज़्यादा कठोर या शुष्क नहीं बनने दिया। बा के जीवनका यही सच्चा रहस्य है। बापू खुद कहते है: "हमारे बीच झगड़े तो खूब हुअे है, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही रहा है। बा ने अपनी अद्भुत सहनशक्तिसे विजय प्राप्त की है।"

दक्षिण अफ्रीकामें बापूजीके जीवनने करवट लेना शुरू किया और सन् १९०४ में तो अुन्होंने जीवनमे क्रान्तिकारी परिवर्तन कर डाला। जीवनके परिवर्तनका अुनका आग्रह अितना तीव्र और अुत्कट था कि अुन दिनों अुनके साथ निभना मुश्किल था। अेक दफा गोखलेजीने बापूजीको हँसी-हँसीमे, लेकिन सच ही कहा था: "तुम बड़े जालिम हो। अेक ओरसे तुम्हारा प्रेम और दूसरी ओरसे तुम्हारा आग्रह दूसरे पर अितने जोरका असर करते हैं कि बेचारा तुम्हारी अिच्छाके अनुसार चलने और तुम्हे खुश करनेको मजबूर हो जाता है।" श्रीमती सरोजिनी नायडू

भी बापूजीको अक्सर ज़ालिम ('टायरण्ट') कहतीं और अपने पत्रोंमें अुन्हें 'माय डीयर टायरण्ट' (मेरे प्यारे ज़ालिम) लिखा करती थीं। बापूके अैसे अत्याचारी प्रेममें और जीवन-परिवर्तनकी अुत्कट तीव्रतामें बा किस तरह निभी होंगी? बापूजीके जीवनका प्रवाह त्याग, वैराग्य, संन्यासकी तरफ जोरसे बहा जा रहा था। बा ने अुसको अनुकूल और अिष्ट मार्गसे बहने दिया है, अुसमे कोअी रुकावट नहीं डाली, और फिर भी जहाँ-जहाँ जरूरत हुअी, वहाँ-वहाँ नम्र सूचनाके रूपमें बाँध बाँध कर, सविनय प्रतिकारके रूपमें अिष्ट रुकावटें खड़ी करके, प्रवाहको प्रतिकूल या अनिष्ट दिशामें बहनेसे रोका है और हमेशा योग्य दिशामें रखा है। काव्यप्रकाशके कर्ता मम्मटने कविताके बोध अथवा अुपदेशकी कान्ताके अुपदेशके साथ तुलना की है। बा ने अिस अुपमाको भलीभाँति चरितार्थ किया है। अपनी नम्रतापूर्ण समझाअिश, सौम्य आग्रह और निरुपाय हो जाने पर आँसुओंके ज़रिये बा ने बापूजीको कठोर बनने, कर्कश बनने और ज़ालिम बननेसे रोका है। अुनको प्रेमल और सरस बनाये रखा है।

अिससे कोअी यह न समझे कि बा ने बापूजीको जीवनमे आगे बढनेसे रोका है। बापूजी कहते है: "बा मे अेक गुण बहुत बडी मात्रामे है, जो दूसरी बहुतसी हिन्दू स्त्रियोंमे न्यूनाधिक मात्रामें पाया जाता है। अिच्छासे हो या अनिच्छासे, ज्ञानसे हो या अज्ञानसे, मेरे पीछे-पीछे चलनेमे अुन्होने अपने जीवनकी सार्थकता मानी है, और शुद्ध जीवन बितानेके मेरे प्रयत्नमे मुझे कभी रोका नहीं। अिसके कारण, जो भी हमारी बुद्धिशक्तिमे बहुत अन्तर है, तो भी मुझे यह लगा है कि हमारा जीवन सन्तोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी है।" बापूजीके धार्मिक महाव्रतोंमे और देशसेवाके महाव्रतोंमे बा हमेशा अुनके साथ ही रही है। अुन्होंने बापूको बराबर आगे ही बढने दिया है। अुदाहरणके लिअे, बापू खुद कहते है: "ब्रह्मचर्य व्रतके पालनमे बा की तरफसे कभी विरोध नहीं अुठा। अथवा बा कभी ललचानेवाली नहीं बनीं। मेरी अशक्ति अथवा आसक्ति ही मुझे रोक रही थी।" सादगी भी बा मे सहज थी, स्वभावसिद्ध थी। कपड़ों वगैराके ठाठ-बाटको छोड़नेमे किसीको थोडा भी

प्रयत्न करना पड़ा हो, तो कपड़ोंकी टीम-टामके शौकीन और चिकन-पोश बापूको ही करना पड़ा होगा। अपरिग्रह बा के लिअे अवश्य ही कठिन रहा होगा। लेकिन अुसके सम्बन्धमें भी बा ने अपने लिअे तो अपने मनको बहुत जल्द मना लिया था। परिग्रहका जो थोड़ा मोह या अिच्छा बा में थी, सो लड़कोंकी बहुओं और बेटियोंके लिअे ही थी। मनको मना लेनेके सम्बन्धकी बा के जीवनकी अेक घटना पूज्य रावजीभाअी मणिभाअी पटेलने — जिनको अफ्रीकामें बा और बापूकी गृहस्थीमें रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था — मुझे लिख भेजी है, और वह अिस प्रकार है:

"बात फिनिक्स आश्रमकी है। सन् १९१३का साल था। अेक दिन सबेरे भोजनके बाद कोअी ११ बजे मैं खानेकी मेज़के पास बैठा था। बापूजी हमेशा सबको जिमा कर जीमते थे। वे भोजन कर रहे थे और अुनके पास अुनके परिवारके अेक बुजुर्ग कालिदास गांधी बैठे थे। वे टूंगाट नामक गाँवमे रहते थे और वहांसे कुछ दिनके लिअे आये थे। बा खड़ी-खड़ी रसोअीघरमे सफाअीका काम कर रही थीं। श्री कालिदासभाअी कुछ पुराने विचारोंके थे।

"दक्षिण अफ्रीकामे अेक मामूली व्यापारीके यहां भी रसोअीघरका और दूसरा सफाअी वगैराका काम करनेके लिअे नौकर रहते थे। यहां बा को अपने हाथों सब काम करते देखकर श्री कालिदासभाअीने बापूजीको सम्बोधन करके कहा: 'भाअी, तुमने तो जीवनमें बहुत हेरफेर कर डाला। बिल्कुल सादगी अपना ली। अिन कस्तूरबाअीने भी कोअी वैभव नहीं भोगा।'

"'मैंने अिन्हें वैभव भोगनेसे रोका कब है?' — बापूने खाते-खाते जवाब दिया।

"'तो तुम्हारे घरमें मैंने क्या वैभव भोगा है?' — बा ने हँसते-हँसते ताना मारा।

"बापूजीने अुसी लहजेमे हँसते-हँसते कहा — 'मैंने तुझे गहने पहननेसे या अच्छी रेशमी साड़ियाँ पहननेसे कब रोका है, और जब तूने चाहा, तब तेरे लिअे सोनेकी चूड़ियाँ भी बनवा लाया था न?'

“ ‘तुमने तो सभी कुछ लाकर दिया, लेकिन मैंने अुसका अुपयोग कब किया है? देख लिया कि तुम्हारा रास्ता जुदा है। तुम्हे तो साधु-सन्यासी बनना है। तो फिर मैं मौज-शौक मनाकर क्या करती? तुम्हारी तबीयतको जान लेनेके बाद मैंने तो अपने मनको मना लिया।’ — बा कुछ गंभीर होकर बोलीं।”

“मैंने तो अपने मनको मना लिया” — अिस कथनमें बा के समूचे जीवनकी सफलताकी कुंजी हमें मिल जाती है। लेकिन अिस प्रकार मनको मना लेनेके बाद भी बा ने बापूको कठोर और शुष्क बन जानेसे तो रोका ही है। ‘महात्मा’ बननेके बाद भी अथवा महात्मा बननेमें मदद करते हुअे भी अुनको अपने विशाल परिवारके प्यारे बापू बने रहनेमे बा ने बापूकी मदद की है, या यों कहिये कि अुनको आम जनताके सच्चे और बड़े बापू बनाया है और अिस प्रकार बापूकी महत्तामें वृद्धि की है। बा के जीवनका यह रहस्य है। अवश्य ही बा को ‘बा’ बनानेमें बापूका हिस्सा कोअी मामूली नहीं रहा है। अिस विभूतिमय दम्पतीके जीवनका सच्चा रहस्य ही यह है कि दोनोंने अेक दूसरेको अूपर अुठाया और महान् बनाया।

गुरुदेव टैगोर अेक जगह लिखते हैं: “अुन दिनों भारतके तपस्वी गृहस्थ थे, क्योंकि तब घर मुक्ति-मार्गमें बाधा रूप नहीं था।” बा के जीवनका भी यही बोध है। बा बापूजीकी साधनामें और अुनके महाव्रतोंके पालनमें बाधक तो बनी ही नहीं, अुल्टे धीमे-धीमे वे बापूके व्रतों, आदर्शों और सिद्धान्तोंको अपनाती गअी है, और वैसे-वैसे अुनका अपना विकास होता गया है। अिस दृष्टिसे बा को महान् पतिव्रता कहा जा सकता है — पतिव्रता शब्दके प्रचलित अर्थमें तो वे पतिव्रता थीं ही, लेकिन अुससे बहुत विशाल अर्थमें भी वे पतिव्रता थीं। बा ने पतिके सभी व्रतोंको अपनाकर अुन पर आचरण किया था। अिसमें बा की विशेषता यह है कि ये सारे व्रत, सिद्धान्त और आदर्श कुछ बा के अपने नहीं थे। बा की महत्त्वाकांक्षा बापूकी तरह अपने जीवनको पूर्ण बनानेकी, मोक्षकी साधना करनेकी नहीं थी। जिसको खुद अैसी महत्त्वाकांक्षा होती है, वह तो अपनी अंदरकी प्रेरणासे प्रेरित होकर अैसा जीवन बिताता

है। बा की तो अैसी भी कोअी महत्त्वाकांक्षा नहीं थी। अुनका अेक सहज स्वभाव था, बापूके अनुकूल होकर रहनेका। यद्यपि अपनी समझके क्षेत्रकी बातोंमे बा के अपने ही स्वतंत्र विचार रहा करते थे और अुन विचारोंमे वे दृढ भी होती थीं, तो भी सार्वजनिक कामों, आश्रमके आदर्शों आदिके बारेमे वे निष्ठापूर्वक बापूका अनुसरण करती थीं और अिस तरह अनुसरण करते-करते अुन्होंने अपना विकास किया था अथवा ज़्यादा सच तो यह है कि अुनका विकास हुआ था। क्योंकि अुन्होंने तो अैसे विकासकी भी आकांक्षा नहीं रखी थी। अुनका जीवन तो सहज भावसे बीता है। अुनके सामने अेक ही ध्रुव तारा था: जो बात समझमे न आये, अुसमे पतिका अनुसरण करना।

बापूके समान परम सत्याग्रही और ध्येयवादीका अनुसरण करनेके लिअे बा ने कुछ कम त्याग नहीं किया था। बापू जैसे तपस्वी पुरुषके साथ चलनेमे तो बीच-बीचमे भूकम्पके-से कठोर धक्के सहनेके मौक़े आते है। ज्वालामुखीके खौलते हुअे लावामे भी चलना पडता है। अितना होने पर भी बा अखीर तक पीछे नहीं हटीं। अपनी अिच्छा-अनिच्छाका त्याग करके अनेक कठिनाअियों और परिवर्तनोंको सहकर पतिके रास्ते चलना आसान नहीं है। अिसके लिअे विपुल आत्मबल और अपूर्व समर्पणकी भावना ज़रूरी है। बा मे ये दोनों बातें थीं, या बा ने अिन दोनोंका विकास किया था और यही वजह है कि वे गृहस्थ जीवनके दुस्तर समुद्रको कुशल तैराककी छटासे पार कर गअीं।

बापू बहुत पढे-लिखे और बड़े नेता और बा अनपढ़; तिस पर बापू अपने जीवनमें अेकके बाद अेक बडे हेर-फेर करते रहे है, और अपने विचारोंके अमलका खूब आग्रह रखते है। अिसलिअे अिस सबके बीच बा की तो पूरी-पूरी कसौटी ही हो जाती थी। अिससे कुछ लोगोंको यह भी लगता कि बा को अिन बातोंका दुःख रहता होगा। लेकिन बा अिस कसौटीमेसे कितने आनन्द और अुत्साहके साथ पार होती थीं, अिसका सबूत अुनके लिखे अेक पत्रसे मिलता है। बा तो चाहती थीं कि यह पत्र अैसी टीका करनेवाली अेक बहनको भेजा जाय और अखबारोंमे भी छपनेको दिया जाय। लेकिन बापूने वह पत्र अुस बहनको

भेजा ही नहीं; अखबारोंमें तो वह छपता ही कैसे ? सेवाग्राममें मैं महादेव काकाके कुछ पत्रोंकी नक़ल कर रही थी, अुन्हींमें यह पत्र मुझे मिल गया। बापूकी अिजाजतसे अुसे यहाँ देती हूँ। असल गुजराती पत्रका चित्र सामने-वाले पृष्ठ पर दिया है। सुधार कर पढ़नेसे वह अिस तरह पढ़ा जाता है :

शुक्रवार

"अ० सौ० लीलावती,

तुम्हारा पत्र मुझे बहुत खटकता रहता है। तुम्हारे और मेरे बीच तो कभी बातचीतका भी बहुत मौका नहीं आया। फिर तुमने कैसे जाना कि गांधीजी मुझे बहुत दुःख देते हैं ? मेरा चेहरा अुतरा रहता है, वे मुझे खानेके बारेमें भी दुःख देते है, सो तुम देखने आअी थीं ? मेरे जैसा पति तो दुनियामें भी किसीके नहीं होगा। सत्यके कारण वह सारे संसारमें पूजा जाता है। हजारों अुसकी सलाह लेने आते है। हजारोंको सलाह देते है। कभी, किसी दिन, बिना मेरी भूलके मेरा दोष नहीं निकाला। मैं दूरकी सोच न सकूँ, मेरी दृष्टि सकुचित हो, तो कहते है कि यह तो सारी दुनियामें होता ही आया है। गांधीजी अखबारोंमे चर्चा करते हैं। दूसरे घरमे कलह मचाते है। अपने पतिके कारण तो मैं सारे ससारमें पूजी जाती हूँ। मेरे सगे-सम्बन्धियोंमें खूब प्रेम है। मित्रोंमें मेरा बहुत मान है। तुम मुझ पर झूठा आरोप लगाती हो, सो कोअी मानेगा नहीं। मैं तुम्हारी तरह आजकलके जमानेकी नहीं हूँ। खूब आजादी लेना, पति तुम्हारे ताबेमे रहे तो ठीक, नहीं तो तेरा और मेरा रास्ता अलग है। लेकिन सनातनी हिन्दूको यह शोभा नहीं देता।

पार्वतीजीका तो यह प्रण था कि 'जन्मोजन्म' शंकर मेरे पति हैं।

लि० कस्तूर गांधी"

શુક્રવાર

અંરસી, લીલાવતી

તમારો પત્ર મને બહુ ખુંચ્યા કરે છે
તમારે અને અમારે તો કોઈ દીવસ વાત
ચીત કરવાનો વખત બહુ નથી આવ્યો
તોત મેં કેમ જાણ્યું કે મને ગાંધીજી
બહુ દુઃખ આપે છે મારો ચેરો ઉતરયો
હોય છે. મને ખાવા પીવો પણ દુઃખ આપે
વર્તન મેં બીજા આશ્રમના પ્રાણીઓ પણ
તો કોઈને દુખ્યા માપણા જ દિ હોય
સતયથી આખાજગત માપુ જાય છે. હજારો
તેની સજા લેવા આવે છે હજારોને સજા
આપે છે. મને કોઈ દીવસ મારી ભુલ વગર
મારો વાંક નથી જડયો મારામાં ખરાબ વિચાર
ન આવે કુદ્રષ્ટિ હોય તો જ કે તે તો આખા
જગતમાં ચાલતું આવ્યું છે ગાંધીજી આપે મડા

પૈજીન અંદરમાં ફેરફાર કરે ~~મારા~~ મારા પતીને
લીધે તો હું આ જગતમાં પુજાયુ. મારા સગા
વહાલામાં ખુબ પ્રેમ છે. મિત્રોમાં મારૂ ઘણું માન છે

તમે મારા ઉપર ખોટી આડઆડાયા છો તે

કોઈ માનવાનું નથી હું તમારા જેવી અભ

ણ અજાણ માણસ જેવી હું નથી ખુબ ધીરજ લેવી

તમારા સત્ય
પતીના ભાગમાં રહી તો સારૂ નહીં તો તારો અને

મારો રસતો નોખો છે

પણ સનાતની હિંદુને તેમ છાજે

પાર્વતીજીને એવું પણ હતું કે જનમો [illegible] [illegible]

સંકર મારા પ્રાણનાથ છે,

લી. કસ્તુર ગાંધી

४

संकटकी साथिन

पिछले प्रकरणमे यह कहा जा चुका है कि सन् १८९६ के अखीरमें जब बापूजी दूसरी बार अफ्रीका गये, तो बा अुनके साथ थीं। बापू जो थोडा वक्त हिन्दुस्तानमे रहे, अुस बीच अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी हालतके बारेमे यहाँ कुछ भाषण दिये थे। अिन भाषणोंकी खबरें तोड-मरोड़कर और बढा-चढाकर दक्षिण अफ्रीका भेजी गअी थीं, जिनके कारण डरबनके गोरे लोग बापूसे चिढ गये थे। तिसपर वहाँ यह अफवाह फैलाअी गअी थी कि गांधी तो अेक स्टीमर भर हिन्दुस्तानियोंको लाया है, और नातालको हिन्दुस्तानियोंसे भर देना चाहता है। अिस वजहसे वे बहुत ही अुत्तेजित हो अुठे थे और बापूके स्टीमरसे अुतरने पर अुन पर हमला करनेका अिरादा रखते थे।

अैसी हालतमें वहाँके मंत्रि-मण्डलके अेक सदस्य और डरबनके अेक खास कार्यकर्ताकी ओरसे स्टीमरके कप्तानको सदेशा मिला कि लोग अुत्तेजित हैं और गांधीकी जान जोखिममें है, अिसलिअे अुनको और अुनके परिवारको शामके वक्त अँधेरा होनेके बाद स्टीमरसे अुतारना। लेकिन बापूके और हिन्दुस्तानियोंके अेक गोरे वकील मित्रको यह सूचना पसन्द नहीं पडी। अुन्होंने स्टीमर पर आकर बापूसे कहा: "अगर आपको जिन्दगीका डर न हो, तो मैं चाहता हूँ कि श्रीमती गांधी और बच्चे गाड़ीमें रुस्तमजी सेठके घर जायँ और आप और मैं सरेआम रास्तेसे पैदल चलें। आप अँधेरा होने पर चुपचाप शहरमें दाखिल हों, यह मुझे तो जरा भी नहीं रुचता। मैं तो मानता हूँ कि आपका बाल तक बाँका नहीं होगा। अब तो सब शान्त है; गोरे सब तितर-बितर हो गये हैं, और मेरी राय है कि कुछ भी क्यों न हो, आपको छिप कर तो हरगिज न जाना चाहिये।"

बापू अुनकी अिस रायसे सहमत हुअे । बा और बच्चे तॉगेमें रुस्तमजी सेठके घर सही-सलामत पहुँचे । बापू अुन गोरे मित्रके साथ पैदल चले । ज्योंही लोगोंको पता चला, वे सब जमा हो गये और अूधमी लोगोंके अुस दलने अुन मित्रको बापूसे अलग कर दिया और फिर बापूजी पर हमला किया । कंकर-पत्थर, अण्डे, लात वगैराकी बापू पर वर्षा-सी की गअी । अिसी बीच पुलिसके अफसरकी पत्नी अुधरसे गुजरीं। अुन्होंने बापूको पहचाना और अुन्हें बचानेके लिअे भीडके सामने खड़ी हो गअीं । दूसरी तरफ़से पुलिसकी मदद भी आ पहुँची और बापू रुस्तमजी सेठके घर पहुँचे । बापूको जो अन्दरूनी मार पड़ी थी, अुसका अिलाज स्टीमरके डॉक्टरने, जो वहॉ मौजूद थे, करना शुरू किया । गोरोंकी भीडने घरको घेर लिया और धमकी देनी शुरू की कि गांधीको सौंपा न गया, तो मकानमें आग लगा दी जायगी । पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी हिकमतसे बापूजीको अुस घरसे भगाया गया । जब लोगोंको पता चला कि अुनका शिकार छटक गया है, तो वे भी तितर-बितर हो गये ।

बापूजीकी यह अेक बड़ी कसौटी थी । लेकिन साथ ही साथ बा की भी कितनी ज़बरदस्त कसौटी! खुद बा को मार तो नहीं पडी थी, लेकिन स्वयं कष्ट सहन करनेकी अपेक्षा अेक अनजान देशमें पैर रखते ही अपने पतिके प्राण संकटमें पड़ जायँ, अुस समय कितनी घबराहट और कितनी चिन्ता होती है, सो सोचने लायक है । बापूके संकटमें साथ रहनेकी यह घटना तो अचानक ही हो गअी, लेकिन तबसे बा हमेशा बापूजीके संकटोंमें अुनकी साथिन रही हैं । बा के दिलमें हमेशा, जागते-सोते, बापूजीके लिअे बराबर चिन्ता बनी ही रहती थी । अुन्होंने हमेशा अपने दिलमें अिस भावनाका सेवन किया था कि जब बापूजी आफ़तमें हों, तब वह और कहीं रह ही नहीं सकतीं । अिसके कुछ अुदाहरण 'स्त्री-जीवन' के विशेषांकमें श्री० कुसुमबहन देसाअीने, जो आश्रममें बापूके साथ कुछ साल रह चुकी हैं, अपने अेक लेखमे दिये है । अुन्हींमेसे कुछ यहॉ दिये जाते है :

"अेक बार बहुत रात बीते बापूजी साबरमती-आश्रममें सो रहे थे । सामने ओसारीमे वा और मै सोअी थी । कोअी दो-ढाअी बजे बापूजी

अेकाअेक अुठे और चल पड़े। बा जाग अुठीं और मुझसे पूछने लगीं: 'बापूजी कहाँ जाते होंगे? हम अुनके पीछे चले! कहीं युद्धके जैसा तो नहीं हुआ?' हम दोनों पीछे-पीछे गअीं और थोड़ी दूर ही से बापूजीको देखा। बापूजीने कहा: 'तुमने सोचा होगा कि मैं भाग जाअूँगा?' सड़क पर कोअी आदमी बिच्छूके काटनेसे रो रहा था। अुसका रोना सुनकर बापूजी अुधर गये थे।

"१९२९मे बापूजी कुछ समयके लिअे हिमालयके कौसानी नामक स्थानमे रहे थे। अुस समयकी यह घटना है:

"हिमालयमे सरदी और कुहरेका पार नहीं रहता, फिर भी बापूजी अपने नियमके अनुसार वहाँ खुलेमे ही सोते थे। अेक रातको बाघका बच्चा बापूजीके बिछौनेके पास चक्कर काट गया। नैनीतालसे आये हुअे कुछ कार्यकर्त्ता वहाँ बापूजीके स्वागत-सत्कारके लिअे रहते थे। अुनमेसे अेकने अिस बच्चेको देखा। दूसरे दिन बापूजीसे यह बात कही गअी। सबने खुलेमे सोनेके बदले अन्दर सोनेका बहुत आग्रह किया। अिस पर बापूजी खूब ही हँसे और हमेशाकी तरह खुलेमे ही अपना बिस्तर लगवाया। यह देखकर बा ने भी, जो रोज़ अन्दर सोती थीं, अपना बिछौना बाहर करवाया और बापूजीकी जोखिममे खुद सहभागिन बनीं।

"अुसी साल बापूजी बनारस गये थे। तब वहांके सनातनियोंने अुनके खिलाफ बहुत जोरोंका आन्दोलन अुठाया था। आम सभामे बापूजीके साथ बा वगैरा कोअी गया नहीं था। ज्यों ही बा को पता चला कि सभामे बहुत गड़बड मची है, वे खुद वहाँ जानेको तैयार हो गअीं। बा, देवदासभाअी, जवाहरलालजी वगैरा सभा-स्थानकी ओर चले। रास्तेमे सामनेसे अुपद्रवी लोगोंकी अेक भीड़ने आकर मोटरको सभाकी जगह जानेसे रोकनेकी कोशिश की। देवदासभाअी और जवाहरलालजी मोटरसे अुतर पड़े। जवाहरलालजीने दो-चारको पकड़कर दूर हटाया और टोली तितर-बितर हो गअी। लेकिन भीड बहुत जोरोंकी थी। अिसलिअे हम सभी मोटरसे अुतर गये। देवदासभाअी और जवाहरलालजी बा से अलग पड गये। अितनेमें पता चला कि सभामे पत्थर बरस रहे है, और बा बोल अुठीं. 'सभामे पत्थर बरसते हों, बापूजी सभामे हों और मैं बाहर

कैसे रहूँ ?' और बा ने सभा-स्थानकी ओर चलना शुरू किया। हमने बड़ी कठिनाओके साथ भीड़को चीरा और हम सभाकी जगह पहुँचीं।"

बापूजीके अनेक अुपवासोंमें भी बा ज़्यादातर बापूके साथ ही रही हैं, और बहुत फ़िक्रके साथ अुन्होंने अुनकी सार-सँभाल की है। जब पति जीवन और मरणके बीच झोंके खा रहा हो, अैसे समय विह्वल न होकर कड़ी छाती रखने और सेवा-चाकरीमे कोअी कमी न रहने देने जितना मन पर क़ाबू रखनेके लिअे भी अद्‌भुत वीरताकी ज़रूरत होती है। बा में यह वीरता थी। सन् १९३२ मे हरिजनोंके सवालको लेकर जब यरवड़ा जेलमे बापूजीने आमरण अुपवास शुरू किये थे, तब बा साबरमती जेलमे थीं। सौ० लाभु बहनने, जो साबरमती जेलमे अुनके साथ थीं, बापूसे दूर रहनेके कारण अुस समय बा की बेचैनीका वर्णन करते हुअे लिखा है: "हम भागवत पढ़ते है, रामायण-महाभारत पढ़ते है, लेकिन अुनमें कहीं अैसे अुपवासोंकी बात नहीं आती। बापूकी तो बात ही और है। वे अैसा ही करते रहते हैं। अब क्या होगा ?" साथकी बहने आश्वासन देतीं कि सरकार कोअी रास्ता निकालेगी, अुनके पास सेवा-चाकरी करनेवाले बहुत है, वग़ैरा। लेकिन बा को तो पल-पलमे यही विचार आता कि क्या हुआ होगा ? क्या होगा ?"

बहनें कहतीं: "सरकार बापूको सब सहूलियतें देगी। आप क्यों फ़िकर करती है ?" अिस पर बा जवाब देतीं: "लेकिन बापू कोअी सहूलियत ले तब न ? वे तो सभी बातोंमे असहयोग करते हैं। अुनके जैसा आदमी तो न कहीं देखा, न कहीं सुना। पुराणोंकी बहुतेरी बातें सुनी हैं, लेकिन अैसा तप तो कहीं नहीं देखा।" फिर कुछ समय बीतता और बा खुद ही कहने लगतीं: "वैसे कोअी दिक्कत नहीं होगी, महादेव वहाँ है, वल्लभभाअी है, सरोजिनीदेवी है। लेकिन हम हों, तो फ़र्क पड़े न !"

"हम हों तो फ़र्क पड़े न ?" अिस अेक वाक्यसे बा की समूची चिन्ता व्यक्त होती है। अुन्हे बराबर यह लगा करता था कि अुनके जितनी सार-सँभाल दूसरे नहीं कर सकते और यह स्वाभाविक भी था; क्योंकि बापूजीको जितना वे जानतीं, अुनकी आदतोंका जितना ज्ञान अुन्हें होता, अुतना दूसरोंको कैसे हो सकता था और वे पहलेसे कैसे सब बातोंको सोच

सकते थे? आखिर सरकारने बा को साबरमती जेलसे हटाकर बापूके पास यरवडा भेजा। बापूके पास पहुँचकर बा ने अुलाहनेभरी आँखोंसे कहा: 'यह फिर और क्या?' बापू चुप रहे। बा की प्रेमभरी चिन्तातुर आँखोंने और बापूके भक्तिभावसे भरे मौनने परस्पर बहुतसी बातें कह डालीं और बा ने आगे बिना कुछ कहे-सुने बापूकी तीमारदारीका जिम्मा ले लिया।

बिलकुल अखीरी घड़ी तक बा बापूके संकटमें अुनकी साथिन रह सकीं, यह अुनका परम सौभाग्य ही माना जायगा। आगाखान महलमें बापूके अुपवासके समयकी कसौटी तो कड़ी-से-कड़ी कसौटी थी। अुस समयकी बा की दशाका वर्णन सुशीलाबहनने (अिस पुस्तकके दूसरे भागमें) अपने लेखमें सुन्दर ढंगसे किया है।

५

सत्याग्रहकी गुरु

बापूने अपनी आत्मकथामें अिस घटनाका वर्णन 'अेक पुण्य-स्मरण और प्रायश्चित्त' शीर्षकसे किया है। सन् १८९८ के आसपासकी यह घटना है।

"जिस समय मैं डरबनमें वकालत करता था, तब अक्सर मेरे कारकुन मेरे साथ ही रहते थे। अुनमें हिन्दू और अीसाअी थे, अथवा प्रान्तोंके हिसाबसे कहूँ, तो गुजराती और मद्रासी थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि अुनके विषयमें मेरे मनमें कभी भेद-भाव पैदा हुआ हो। मैं अुन्हें बिलकुल अपने कुटुम्बीके जैसा समझता और अगर पत्नीकी ओरसे अुसमें कोअी रुकावट आती, तो मैं अुससे लड़ता-झगड़ता था। मेरा अेक कारकुन अीसाअी था। अुसके माता-पिता पंचम जातिके थे। हमारे घरकी बनावट पश्चिमी ढबकी थी। अुसके कमरोंमें मोरियाँ नहीं होतीं, और होनी भी नहीं चाहिये, अैसा मेरा मत है। अिसलिअे हरअेक कमरेमें मोरीके बदले पेशाबके लिअे अलगसे अेक बरतन रहता था। अुसे साफ करनेका काम नौकरका नहीं था, बल्कि हमारा—पति-पत्नी — दोनोंका था। हाँ, जो कारकुन अपनेको घरका ही समझने

लग जाते थे, वे तो अपने बरतनको खुद भी साफ़ कर डालते थे। ये पंचम कुलमें जन्मे कारकुन नये थे। अुनका बरतन हमींको अुठाकर साफ़ करना चाहिये। दूसरे बरतन तो कस्तूरबाअी अुठातीं और साफ करती थीं, लेकिन अिन भाअीके बरतन अुठाना अुन्हें असह्य मालूम हुआ। हमारे बीच झगड़ा हुआ। मैं अुठाता हूँ, तो अुनसे देखा नहीं जाता और खुद अुठाना अुनके लिअे कठिन था। आँखोंसे मोतीके बिन्दु बरसाती, हाथमें बरतन लिये मुझको अपनी लाल-लाल आँखोंसे अुलाहना देती, और सीढ़ियाँ अुतरती हुअी कस्तूरबाअीको मैं आज भी ज्यों-का-त्यों चितर सकता हूँ।

"लेकिन मैं जितना प्रेमल अुतना ही कठोर पति था। मैं अपने आपको अुनका शिक्षक भी मानता था, अिसलिअे अपने अंध-प्रेमके अधीन होकर अुन्हें काफी सताता था।

"अिस तरह अुनके बरतनको अुठाकर ले जाने भरसे मुझे सन्तोष न हुआ। वह हँसते हुअे अुसे ले जायँ, तभी मुझे सन्तोष हो। अिसलिअे मैंने दो बात अूँची आवाज़मे कहीं और मैं गरज अुठा: 'मेरे घरमे यह बखेड़ा नहीं चलेगा।'

"यह वचन तीरकी तरह चुभा। पत्नी खौल अुठीं: 'तो अपना घर अपने पास रखो, मैं चली।'

"मैं अीश्वरको भूल बैठा था। दयाका लेशमात्र मुझमें न रह गया था। मैंने हाथ पकड़ा। जीनेके सामने ही बाहर निकलनेका दरवाजा था। मैं अुस दीन अबलाको पकड़कर दरवाजे तक खींच ले गया। दरवाजा आधा खोला।

"आँखोंसे गंगा-जमुना बह रही थीं और कस्तूरबाअी बोलीं: 'तुम्हे तो शरम नहीं, मुझे है। ज़रा तो शरमाओ। मैं बाहर निकलकर कहाँ जाती? यहाँ माँ-बाप भी नहीं कि अुनके पास चली जाअूँ। मैं औरत ठहरी, अिसलिअे मुझे तुम्हारी चपत भी खानी ही होगी। अब ज़रा शरम करो और दरवाज़ा बन्द कर लो। कोअी देखेगा, तो दोनोंकी फजीहत होगी।

"मैंने अपना चेहरा तो सुर्ख बनाये रखा, लेकिन मनमें शरमा ज़रूर गया। दरवाज़ा बन्द किया। अगर पत्नी मुझे छोड़ नहीं सकती थी, तो मैं भी अुसे छोड़कर कहाँ जा सकता था? हमारे बीच झगड़े तो बहुत

हुअे हैं, लेकिन परिणाम हमेशा शुभ ही हुआ है। पत्नीने अपनी अद्भुत सहनशीलतासे विजय पाअी है।

"आज मैं तटस्थ भावसे अिसका वर्णन कर सकता हूँ, क्योंकि यह घटना तो हमारे बीते युगकी है। आज मैं मोहान्ध पति नहीं हूँ। शिक्षक भी नहीं। चाहे तो कस्तूरबाअी आज मुझे धमका सकती है। हम आज कसौटी पर चढ़े हुअे भुक्त-भोगी मित्र है। अेक दूसरेके प्रति निर्विकार रहकर जी रहे है। वह मेरी बीमारीमें किसी भी प्रकारके बदलेकी अिच्छा किये बिना मेरी चाकरी करनेवाली सेविका हैं।"

अिस छोटी-सी घटना द्वारा हम बा और बापूजीके अुस समयके गृह-जीवनकी थोड़ी झाँकी कर सकते हैं। बा के देहान्तके बाद बापूको आश्वासनके कअी पत्र और तार मिले थे। वाअिसराय लॉर्ड वेवेलके पत्रके जवाबमें बापूने लिखा था:

"....पहले तो अपनी पत्नीकी मृत्युके बारेमें आपकी ममता-भरी समवेदनाके लिअे मैं आपका और लेडी वेवेलका आभार मानता हूँ। यद्यपि अपनी मृत्युके कारण वह सतत वेदनासे छूट गअी हैं, अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे मैंने अुनकी मौतका स्वागत किया है, तो भी अिस क्षतिसे मुझको जितना दुःख होनेकी कल्पना मैंने की थी, अुससे अधिक दुःख मुझे हुआ है। हम असाधारण दम्पती थे। १९०६ मे अेक दूसरेकी स्वीकृतिसे और अनजानी आजमाअिशके बाद हमने आत्म-सयमके नियमको निश्चित रूपसे स्वीकार किया था। अिसके परिणामस्वरूप हमारी गाँठ पहलेसे कहीं ज़्यादा मजबूत बनी और मुझे अुससे बहुत आनन्द हुआ। हम दो भिन्न व्यक्ति नहीं रह गये। मेरी वैसी कोअी अिच्छा नहीं थी, तो भी अुन्होंने मुझमें लीन होना पसन्द किया। फलतः वह सचमुच ही मेरी अर्धांगिनी बनीं। वह हमेशासे बहुत दृढ अिच्छाशक्तिवाली स्त्री थीं, जिनको अपनी नवविवाहित दशामे मैं भूलसे हठीली माना करता था। लेकिन दृढ़ अिच्छा-शक्तिके कारण वह अनजाने ही अहिंसक असहयोगकी कलाके आचरणमें मेरी गुरु बन गअीं। आचरणका आरम्भ मेरे अपने परिवारसे ही किया। १९०६ मे जब मैंने अुसे राजनीतिके क्षेत्रमें दाखिल किया, तब अुसका अधिक विशाल और विशेष रूपसे योजित 'सत्याग्रह' नाम पड़ा। दक्षिण

अफ्रीकामें जब हिन्दुस्तानियोंकी जेल-यात्रा शुरू हुआी, तब श्रीमती कस्तूरबा भी सत्याग्रहियोंमें अेक थीं। मेरे मुकाबले अुनको ज्यादा शारीरिक पीड़ा हुअी। वह कअी बार जेल जा चुकी थीं, फिर भी अिस बारके अिस कैदखानेमे, जिसमे सभी तरहकी सहूलियतें मौजूद थीं, अुनको अच्छा नहीं लगा। दूसरे बहुतोंके साथ मेरी और फिर तुरन्त ही अुनकी जो गिरफ़्तारी हुअी, अुससे अुन्हे जोरका आघात पहुँचा और अुनका मन खट्टा हो गया। वह मेरी गिरफ़्तारीके लिअे बिलकुल तैयार नहीं थीं। मैंने अुन्हे विश्वास दिलाया था कि सरकारको मेरी अहिंसा पर भरोसा है, और जब तक मैं खुद गिरफ्तार होना न चाहूँ, वह मुझे पकड़ेगी नहीं। सचमुच अुनके ज्ञानतन्तुओंको अितने जोरका धक्का बैठा कि अुनकी गिरफ्तारीके बाद अुन्हे दस्तकी सख्त शिकायत हो गअी। अगर अुस समय डॉ० सुशीला नायरने, जो अुनके साथ ही पकड़ी गअी थीं, अुनका अिलाज न किया होता, तो मुझसे अिस जेलमे आकर मिलनेसे पहले ही अुनकी देह छूट चुकी होती। मेरी हाजिरीसे अुन्हें आश्वासन मिला और बिना किसी खास अिलाजके दस्तकी शिकायत दूर हो गअी। लेकिन मन जो खट्टा हुआ था, सो खट्टा ही बना रहा। अिसकी वजहसे अुनके स्वभावमे चिड़चिड़ापन आ गया और अिसीका नतीजा था कि आखिर कष्ट सहते-सहते क्रम-क्रमसे अुनका देहपात हुआ।"

६

अपरिग्रहकी दीक्षा

बापूके साथ अुनके कुछ व्रतोंमे अनायास और अिच्छापूर्वक और कुछ दूसरे व्रतोंमे शुरू-शुरूमें अनिच्छापूर्वक और आयासपूर्वक, लेकिन बादमे समझके साथ, बा ने बापूका अनुसरण किया है। अपरिग्रहके मामलेमे बा को ठीक-ठीक कोशिश करनी पड़ी है। अिसका पहला अुदाहरण 'आत्मकथा' से लेकर बापूकी ही भाषामे नीचे दिया है:

"लड़ाअीके (सन् १८९७ से '९९ तकका बोअर युद्ध) कामसे छुट्टी पानेके बाद मुझे लगा कि अब मेरा काम दक्षिण अफ्रीकामें नहीं, बल्कि

देशमें है। मैंने साथियोंसे मुक्त होनेकी अिजाज़त चाही। बड़ी मुश्किलसे शर्तके साथ मेरी मॉग मजूर की गअी। शर्त यह थी कि अगर अेक सालके अन्दर क़ौमको मेरी ज़रूरत मालूम हो, तो मुझे वापस दक्षिण अफ्रीका पहुँचना चाहिये। मुझको यह शर्त कड़ी लगी। लेकिन मैं प्रेमपाशमे बॅधा था। मित्रोंकी बातको मै ठुकरा नहीं सकता था। मैंने वचन दिया और अिजाज़त हासिल की।

"यों कहना चाहिये कि अिस समय मेरा निकट सम्बन्ध नातालके साथ ही था। नातालके हिन्दुस्तानियोंने मुझको प्रेमामृतसे नहला दिया। जगह-जगह मानपत्र देनेकी सभायें हुअीं और हरअेक जगहसे कीमती भेंटे मिलीं। भेटोंमें सोने-चॉदीकी चीजे तो थी हीं, लेकिन अुनमे हीरेकी चीज़े भी थीं।

"और अिन भेटोंमें ५० गिन्नियोंका अेक हार कस्तूरबाअीके लिअे था। लेकिन अुन्हे मिली हुअी चीज़ भी मेरी सेवाके सिलसिलेमे थी, अिसलिअे अुसे अलग नहीं गिना जा सकता था।

"जिस शामको अिन अुपहारोंमेंसे खास-खास अुपहार मिले थे, वह रात मैंने बावरेकी भॉति जागकर बिताअी। अपने कमरेमें चक्कर काटता रहा, लेकिन अुलझन सुलझती नहीं थी। सैकड़ोंकी कीमतके अुपहारोंको छोड़ देना बहुत मुश्किल मालूम होता था। रखना अुससे भी ज़्यादा मुश्किल लगता था।

"मैं शायद अिन भेंटोंको पचा सकूँ, लेकिन मेरे बच्चोंका क्या? स्त्रीका क्या? अुन्हे तालीम तो सेवाकी मिल रही थी। हमेशा यह समझाया जाता था कि सेवाका कोअी बदला नहीं लेना चाहिये। घरमे क़ीमती गहने वग़ैरा नहीं रखता था। सादगी बढ़ती जाती थी। अब अिन गहनों और जवाहरातको मैं क्या करूँ?

"आखिर मैं अिस निर्णय पर पहुँचा कि मुझे ये चीज़ें हरगिज़ न रखनी चाहिये। पारसी रुस्तमजी वग़ैराको अिन गहनोंका ट्रस्टी मुकर्रर करके अुनके नाम अेक पत्रका मसविदा तैयार किया और तय किया कि सवेरे स्त्री-पुत्र वग़ैराके साथ चर्चा करके मैं अपने बोझको हल्का कर लूँ।

"मै जानता था कि धर्मपत्नीको समझाना मुश्किल होगा। साथ ही मुझे विश्वास था कि बच्चोंको समझानेमें ज़रा भी मुश्किल नहीं होगी। अुनको वकील बनानेका विचार किया।

"बच्चे तो फौरन समझ गये। अुन्होंने कहा: 'हमें अिन गहनोंकी ज़रूरत नहीं। हमको यह सब वापस ही दे देना चाहिये और अगर कभी हमें अैसी चीज़ोंकी ज़रूरत हुअी, तो हम खुद कौन अुन्हें नहीं खरीद सकेंगे?'

"मैं खुश हुआ। मैंने पूछा— 'तो तुम बा को समझाओगे न?'

"ज़रूर, यह काम हमारा। अुन्हें कौन ये गहने पहनने है? वे तो हमारे लिअे रखना चाहती है। हम अुन्हे नहीं चाहते, तो वे हठ क्यों करने लगीं?'

"लेकिन काम जितना सोचा था, अुससे ज़्यादा मुश्किल साबित हुआ। 'तुम्हें चाहे ज़रूरत न हो, तुम्हारे लड़कोंको भी न हो। बालकोंको तो जैसा सिखाओ, सीखते हैं। चाहो, मुझको मत पहनने दो, लेकिन मेरी बहुओंका क्या? अुनके तो काम आयेंगे। और कौन जानता है, कल क्या होगा? अितने प्रेमसे दी हुअी चीजें लौटाअी नहीं जाती।' अिस तरह वाग्धारा चली और अुसके साथ अश्रुधारा आ मिली। बालक दृढ़ रहे। मेरे डिगनेका कोअी सवाल नहीं था।

"मैंने धीमेसे कहा: 'लडकोंकी शादी तो होने दो। हमे कौन बचपनमे अिन्हे ब्याहना है? बडे होने पर ये भले जो चाहे, करें। और, हमें कौन गहनोंकी शौकीन बहुअे ढूँढ़नी हैं? फिर भी कुछ बनवाना ही पड़ा, तो मै तो हूँ ही न?'

"'तुम्हें मैं जानती हूँ। तुम वही हो न कि जिनने मेरे गहने भी छीन लिये? तुमने मुझे सुखसे नहीं पहनने दिया, तो तुम मेरी बहुओंके लिअे क्या लोगे? बच्चोंको आजसे बैरागी बनाना चाहते हो? ये गहने नहीं लौटेंगे, और मेरे हार पर तुम्हारा हक़ क्या।'

"मैंने पूछा: 'लेकिन यह हार तुम्हारी सेवाके लिअे मिला है या मेरी?'

"'कुछ भी हो। तुम्हारी सेवा मेरी भी हुआी। मुझसे रात-दिन मज़दूरी कराअी, सो क्या सेवा नहीं मानी जायगी? मुझे रुला-रुलाकर हर किसीको घरमे रखा और चाकरी करवाअी, अुसका कोअी हिसाब नहीं?'

"ये सारे बाण नुकीले थे। अिनमेसे कुछ चुभते थे, लेकिन गहने तो मुझे लौटाने ही थे। कअी बाबतोंमे मैं जैसे-तैसे मंजूरी ले सका। १८९६मे और १९०१मे मिली हुअी भेंटे लौटा दीं। अुनका ट्रस्ट बना और सार्वजनिक कामके लिअे मेरी अिच्छाके अनुसार या ट्रस्टियोंकी अिच्छाके अनुसार अुनका अुपयोग किया जाय, अिस शर्त पर रकम बैंकमे रखी गअी।

"अपने अिस कार्यका मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ। जैसे समय बीता, कस्तूरबाको भी अिसका औचित्य पट गया। हम बहुतसे प्रलोभनोंमेसे बच गये हैं।

"मैं अिस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि सार्वजनिक सेवकको निजी अुपहार नहीं लेने चाहिये।"

अिस तरह बा को अपरिग्रहकी पहली दीक्षा सन् १९०१ मे मिली। लेकिन पक्की दीक्षा तो अुनको अभी दूसरे ही गुरुओंसे मिलनेवाली थी।

साबरमती आश्रममें चोरोंका अुपद्रव हमेशासे रहता आया है। अलबत्ता, चोरोंको बहुत कीमती चीज़ तो वहाँ मिलती नहीं थी, लेकिन हमारे देश जैसे गरीब देशमे थोड़े कपड़ों-लत्तों अथवा बरतन-भाँडोंके लिअे भी गरीब लोग चोरी करनेको तैयार हो जाते है। आश्रममे समय-समय पर अैसी चोरियाँ हुआ करती थीं। अेक बार बा के कमरेमे चोरी हुअी। ठीक खयाल तो नहीं है, लेकिन १९२६ या २७ का साल था; चोर कपड़ोंसे भरी दो सन्दूकें अुठा ले गये। अुनमेसे कपड़े-कपड़े सब ले लिये और पेटियाँ पासके खेतमे फेंककर चले गये। चोरीके सिलसिलेमे बातचीत चल रही थी। बापूने सवाल किया कि बा के पास दो सन्दूकें भरकर कपड़े होते ही कहाँसे? और होने भी क्यों चाहियें? बा रोज़की नअी-नअी साड़ियाँ तो कुछ पहनती नहीं। बा ने कहा: "चि० रामी और चि० मनु (हरिलालभाअीकी दो लड़कियाँ) की माँ तो मर गअी है, लेकिन

कभी-कदास जब वे मेरे पास आये, मुझे अुनको दो कपड़े तो देने चाहिये न ! अिसके लिअे जब-तब भेटमें मिली हुअी साड़ियाँ और खादी मैंने रख छोड़ी थी।" अलबत्ता, अिस पर बापूकी दलील तो यही थी कि हम अिस तरहका संग्रह कर ही नहीं सकते और साड़ियाँ या खादी निजी भेटके रूपमें मिली हों, तो भी तत्काल अुनकी ज़रूरत हो, तभी वे अपने पास रखी जायँ। जितनी फ़ाज़िल हों, सो सब तो आश्रमके कार्यालयमें ही जमा करा देनी चाहिये। अुन गहनोंकी तरह अिस बार भी बा को अपने लिअे अिन चीज़ोंकी जरूरत थी ही नहीं। माँ का दिल बेटीको कुछ-न-कुछ देनेके लिअे हमेशा छटपटाता है, और यही वजह थी कि बा ने साड़ियाँ और खादी जुटा कर रखी थी। बापूने शामको प्रार्थनामें अिसकी चर्चा करते हुअे कहा : 'हमको अैसा व्यवहार भी नहीं पुसाता। लड़कियाँ हमारे घर आयें, तो रहें और खायें-पीयें। लेकिन जिन्होंने गरीबीका जीवन बितानेका व्रत लिया है, अुन्हें अिस तरहकी भेंट देना पुसाता नहीं।' वगैरा-वगैरा। अिन चोर गुरुओंसे मिली हुअी दीक्षाके बाद बा ने अिस तरहके दो कपड़े भी कभी जुटा कर नहीं रखे।

अपनी निजी ज़रूरतोंके खयालसे तो बा के लिअे अपरिग्रह बिलकुल आसान था। अपनेको चुस्त आश्रमवासी मानने-मनवानेवाले भी बा की सादगीको देखकर शरमाते थे। मीराबहन लिखती है: "जब हम लम्बा और कड़ा सफर करते थे, तब बापूजी कहा करते : 'बा हम सबको हराती है। अितना कम सामान और अितनी कम ज़रूरतें दूसरे किसीकी है ? मैं सादगीका अितना अधिक आग्रह रखता हूँ, फिर भी मेरा सामान बा के मुक़ाबिले दुगना है।' हमारी सजग कोशिशोंके बाद भी हम बा की स्वाभाविक, किन्तु अचूक रूपसे स्वच्छ और भव्य सादगीके साथ किसी तरह होड़में टिक नहीं सकते थे। सारे दलमें अुनका बिस्तर सबसे छोटा होता था और अुनकी नन्हीं-सी पेटी भी कभी अव्यवस्थित या ठूँसी-ठाँसी नहीं रहती थी।"

लेकिन यह तो भौतिक अपरिग्रहकी बात हुअी। बापूके साथ रहकर बा ने धीरे-धीरे अपनी आकांक्षाओं और अभिलाषाओंका परिग्रह तजा था, जो विशेष अुच्च और विशेष भव्य अपरिग्रह है।

बा के अिस अपरिग्रहकी या त्यागकी बापू खूब क़दर करते थे। अेक बार आश्रममे हाल ही भरती हुअे अेक भाअीके साथ बापू बात कर रहे थे। बापूका अपना खयाल है कि चाय, कॉफी-जैसे पेय नुक़सानदेह हैं। अिस पर अुन भाअीने बापूसे कहा : "तो फिर बा आश्रममे रहकर कॉफी क्यों पीती है?"

बापूने फौरन जवाब दिया : "लेकिन तुम्हे क्या पता कि बा ने कितना छोडा है! अुनकी यह अेक टेव रह गअी है। मै अुन्हे अिसे भी छोड़ देनेको कहूँ, तो मेरे जैसा जालिम और कौन होगा!"

तो भी अखीर अखीरमे तो बा ने खुद ही कॉफी पीना भी छोड़ दिया था और जब जरूरत मालूम होती थी, तुलसी और काली मिर्चका काढ़ा पी लेती थीं।

७

जोहानिसबर्गमें बा का घर

'सत्याग्रहकी गुरु' नामक प्रकरणमे सन् १८९८ की अेक घटनाका वर्णन किया है। अुससे हमे थोड़ा पता चलता है कि जब बापू डरबन (नाताल) में वकालत करते थे, तब अुनका घर कैसा था। सन् १९०५ मे वे ट्रान्सवालके जोहानिसबर्ग नगरमे वकालत करते थे। अुस समयके बापू और बा के गृहस्थाश्रमका परिचय हमे श्रीमती पोलाककी 'मिस्टर गांधी — द मैन' नामक पुस्तकसे और आत्मकथासे मिलता है। श्रीमती पोलाक लिखती हैं :

"घर शहरके बाहर अच्छे मध्यम श्रेणीके लोगोंके मोहल्लेमे था। दुमजिला और अलग अहातेवाला बंगलानुमा घर था। अहातेमे बगीचा था। और सामने छोटी-छोटी टेकरियोंवाला खुला मैदान था। मकानमें कुल आठ कमरे थे। दुमजिले परका बरामदा लम्बा-चौड़ा और खूब हवादार था। गरमियोंमे वहाँ सोया जा सकता था और सोनेके काममें अुसका अुपयोग होता भी था।

" परिवारमें गांधीजी, अुनकी पत्नी और तीन बालक थे। मणिलाल ११ सालके, रामदास ९ सालके और देवदास ६ सालके थे (हरिलाल अुन दिनोंमें देश गये हुअे थे)। अिनके सिवा, तारघरमे काम करनेवाले अेक नौजवान अंग्रेज, गांधीजीके अेक हिन्दुस्तानी युवक रिश्तेदार और पोलाक — अितने लोग और थे। मैं अुनमे आ मिली, जिससे मकानमे और अधिकके लिअे सहूलियत नहीं रह गअी।

" सबेरे ६ बजे घरका पुरुषवर्ग चक्की पीसता था, (यहाँ यह याद रखना है कि बापूने जीवनमें परिवर्तन शुरू कर दिया था।) क्योंकि रोटी घर ही में बनाअी जाती थी। अेक कमरेमें चक्की रखी गअी थी वहीं सब अिकठ्ठा होते थे। पीसनेका काम तो कोअी आधे घण्टेमे पूरा हो जाता था, लेकिन चक्कीकी आवाजसे भी ज़्यादा बातचीत और हँसीकी आवाज़ होती थी। क्योंकि अुन दिनों घरमें हँसीके फव्वारे बारबार छूटते ही रहते थे। अुपयोगिताकी दृष्टिसे अिस कामके महत्त्वके अलावा अिससे सबेरे अच्छी कसरत भी हो जाती थी। दूसरी कसरत रस्सी कुदानेकी होती थी। बापू अुसमें निष्णात थे।

" घरमें शामकी ब्यालूका समय ज़्यादा-से-ज़्यादा आनन्दमय रहता था। घरके सब लोग अुसी समय अेक जगह जमा होते थे। बापूको मेहमानदारीका बड़ा शौक़ था, अिसलिअे अैसा दिन तो शायद ही कभी बीतता, जब कोअी-न-कोअी मेहमान न हो। हररोज शामके भोजनमे १० से १५ आदमी रहते।

" भोजनकी चीजें बहुत सादी रहतीं। मेज पर सब चीजे सजाकर ही जीमने बैठते थे, चुनाँचे परोसनेके लिअे किसी नौकरके खडे रहनेकी जरूरत नहीं पड़ती थी। भोजनमें पहले दो-तीन साग-भाजी, दाल, कढी, सिकी हुअी रोटी, मूँगफली या दूसरे किसी मगजको पीसकर बनाया हुआ मक्खन और तरह-तरहके कच्चे सागोंका कचूमर, अितनी चीजे परोसी जाती थीं। दूसरी दफाके परोसनेमे दूध और फल लिये जाते थे और अुसके बाद ऋतुके अनुसार कॉफी या लेमनेड गरम या ठंडा पीया जाता था। भोजनमे कभी जल्दी नहीं होती थी। मेज पर पूरा अेक घण्टा बीतता था और जीमते समय कअी तरहकी चर्चायें हुआ करती

थीं। आमतौर पर हलके विषयोंकी चर्चा, हँसी-मजाक और गप-शप होती रहती थी। बापूमें विनोदकी वृत्ति तो खूब ही है, अिसलिअे किसी भी हँसीकी बातके निकलते ही वे खूब हँसते।

"अेक बार कुछ युरोपियन भोजनका न्योता लेकर हमारे यहाँ आये। बापूकी अुनके साथ कोअी अच्छी पहचान नहीं थी, और बा तो अुन्हें बिलकुल ही नहीं पहचानती थीं। अुन्होंने तो आते ही गृह-जीवनके बारेमे सीधे-सीधे और असभ्य मानी जानेवाली कुतूहलवृत्तिके साथ सवाल पूछने शुरू किये। निजी मामलोंसे सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नोंमे अुनके घमण्डका भी पता चलता था। लेकिन बापू तो शान्तिके साथ जवाब देते जाते थे। और, हिन्दुस्तानी लोग क्या करते हैं और क्या नहीं करते, अिसके बारेमे अुनकी कुछ बाते सुनकर खूब हँसते भी थे। लेकिन बा को तो यह सब देखकर गुस्सा हो आया और हमारे भोजनके कमरेमे दाखिल होनेसे पहले ही वे वहाँसे चली गअीं। बापूने किसीके मारफत अुन्हें बुला भेजा, लेकिन वे नहीं आअीं। अिस पर बापू खुद बुलाने गये, मगर बा ने तो नीचे आनेसे अिनकार ही किया। बापूने लौटकर बा की गैरहाजिरीका थोडा खुलासा दिया और भोजन समाप्त हुआ। दूसरे दिन जब मैं बा से मिली तो अुन्होंने कहा: 'अैसे निठल्ले लोग घरका रग-ढंग देखने आवे और मेरे घरका मज़ाक अुड़ावे (To make laugh of me and my home), यह मुझसे तो नहीं सहा जाता। अैसे लोगोंसे मैं तो हरगिज़ न मिलूँगी। बापू मिलना चाहें, तो भले मिले।' मैं समझती हूँ कि बापूजीने बा के अिस निश्चयको छुड़ानेके लिअे अुन्हे समझा देखा, लेकिन वे तो अपनी राय पर डटी ही रहीं और बापूजीकी अेक भी दलीलसे नहीं पसीजीं।"

अपनी आत्मकथामे बापूने लिखा है कि जीवनमे परिवर्तन करके अुन्होंने अपना घर कैसा बना लिया था। वे लिखते हैं:

"बैरिस्टरके घरमे जितनी सादगी रखी जा सकती थी, अुतनी तो रखनी शुरू की ही। फिर भी कुछ सामान अैसा था, जिसके बिना काम चलाना मुश्किल था। सच्ची सादगी तो मनसे बढी। हरअेक काम अपने हाथों करनेका शौक बढा और अुसमे बालकोंको भी तैयार करना शुरू किया।

“बाज़ारकी रोटी लानेके बदले घर पर क्यूनेकी सूचनाके अनुसार बिना ख़मीरकी रोटी हाथसे बनाना शुरू किया। अिसमे पनचक्कीका आटा काम नहीं देता। साथ ही, यह भी खयाल था कि पनचक्कीके पिसे आटेका अिस्तेमाल करनेकी बनिस्बत हाथके पिसे आटेका अिस्तेमाल करनेमें सादगी, आरोग्य और धनकी अधिक रक्षा होती थी। अिसलिअे ७ पौण्ड खर्च करके अेक हाथकी चक्की खरीदी। अिस चक्कीका पाट वज़नदार था। दो आदमी अुसे आसानीसे चला लेते थे; अकेलेको तकलीफ होती थी। अिस चक्कीको चलानेमे पोलाक, मै और बच्चे खास तौर पर शामिल होते थे। कभी-कभी कस्तूरबाअी भी आतीं, हालॉकि अुनका वह समय रसोअी बनानेमें खर्च होता था। जब श्रीमती पोलाक-आअीं, तो वे भी अिसमें शरीक हो गअीं। बच्चोंके लिअे यह कसरत बहुत अच्छी साबित हुअी। मैंने अुनसे यह या दूसरा कोअी भी काम जबरदस्ती नहीं करवाया, बल्कि वे खुद अिसे अेक खेल-सा समझकर चक्की चलाने आते थे। थकनेपर छोड़ देनेकी आजादी अुन्हें थी ही। लेकिन कौन जाने क्या वजह थी कि क्या अिन बालकोंने और क्या दूसरोंने, मुझे तो खूब ही काम दिया। नटखट बालक भी मेरे नसीबमे थे ही। लेकिन अुनमेसे ज़्यादातर सौंपे हुअे कामको खुशी-खुशी करते थे। ‘थक गये’ कहनेवाले तो अुस जमानेके थोड़े ही बालक मुझे याद आते है।

“घर साफ रखनेके लिअे अेक नौकर था। वह कुटुम्बी बनकर रहता था और बालक अुसके काममे पूरा हाथ बॅटाते थे। टट्टी कमानेके लिअे म्युनिसिपैलिटीका नौकर आता था। लेकिन पाखानेके कमरेको साफ करने और बैठक वगैरा धोनेका काम नौकरको नहीं सौंपा जाता था। वैसी आशा भी नहीं रखी जाती थी। यह काम हम खुद करते थे और बालकोंको अिससे तालीम मिलती थी। नतीजा यह हुआ कि शुरू ही से मेरे अेक भी लड़केको पाखाना साफ करनेकी घिन न रही और आरोग्यके साधारण नियम भी वे सहज ही सीख गये। जोहानिसबर्गमें शायद ही कोअी कभी बीमार पड़ता था। लेकिन जब बीमारी आती थी, तो तीमारदारीके काममे बालक रहते ही थे और वे अिस कामको खुशी-खुशी करते थे।”

८

बा की दृढ़ता

हिन्दूधर्मके संस्कार बा में कितने गहरे पैठ गये थे, अिसकी यह अेक कहानी है। मर जाना मंजूर है, लेकिन मांस और शराब लेकर 'मानुस देह' को भ्रष्ट करना मंजूर नहीं — यह बा का निश्चय था। बापूजीकी 'आत्मकथा' से यह प्रसंग लिया है:

"खूनी बवासिरके कारण कस्तूरबाअीको बार-बार रक्तस्राव होता रहता था। अेक डॉक्टर मित्रने शस्त्रक्रिया (ऑपरेशन)की सिफारिश की। थोड़ी आनाकानीके बाद पत्नीने शस्त्रक्रिया कराना मंजूर किया। शरीर तो बहुत कमजोर हो गया था। डॉक्टरने बिना क्लोरोफॉर्म दिये शस्त्रक्रिया की। अुस समय दर्द तो खूब होता था, लेकिन जिस धीरजसे कस्तूरबाअीने अुसे सहा, अुससे मैं तो आश्चर्यचकित हो गया। शस्त्रक्रिया निर्विघ्न समाप्त हुअी। डॉक्टरने और अुनकी पत्नीने कस्तूरबाअीकी सुन्दर सुश्रूषा की।

"यह घटना डरबनमें हुअी थी। दो या तीन दिन बाद डॉक्टरने मुझे बिल्कुल बेफिकर होकर जोहानिसबर्ग जानेकी अिजाजत दी। मैं गया। कुछ ही दिन बाद खबर मिली कि कस्तूरबाअीकी तबीयत जरा भी सँभल नहीं रही है। वह बिछौने पर अुठ-बैठ भी नहीं सकती है। अेक बार बेहोश भी हो गअी थीं। डॉक्टर जानते थे कि मुझसे पूछे बिना कस्तूरबाअीको दवाके साथ या खूराकके साथ शराब या मांस नहीं दिया जा सकता। डॉक्टरने मुझे जोहानिसबर्गमें टेलीफोन पर कहा: 'आपकी पत्नीको मैं मांसका शोरबा या 'बीफ-टी' देनेकी जरूरत समझता हूँ। मुझे अिजाजत मिलनी चाहिये।'

"मैंने जवाब दिया: 'मैं यह अिजाजत नहीं दे सकता। लेकिन कस्तूरबाअी स्वतंत्र हैं। अुनसे पूछने-जैसी हालत हो, तो पूछिये और वह लेना चाहें, तो बिलाशक दीजिये।'

"'रोगीसे अिस तरहकी बातें मैं पूछना नहीं चाहता। आपको खुद यहाँ आ जाना चाहिये। अगर आप मुझको, मैं जो चाहूँ, खिलानेकी अिजाज़त नहीं देते, तो आपकी स्त्रीके लिअे मैं ज़िम्मेदार नहीं।'

"मैंने अुसी दिन डरबनकी ट्रेन पकड़ी। डरबन पहुँचा। डॉक्टरने खबर दी: 'मैंने तो शोरवा पिलाकर ही आपको फोन किया था।'

"'डाक्टर, अिसे मैं दगा समझता हूँ', — मैंने कहा।

"'अिलाज करते समय मैं दगा-वगा कुछ नहीं जानता। हम डॉक्टर लोग अैसे समय रोगीको और अुसके रिश्तेदारोंको धोखा देनेमें पुण्य समझते है। हमारा धर्म तो किसी भी तरह रोगीको बचाना है!' डॉक्टरने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया।

"मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं शान्त रहा। डॉक्टर मित्र थे, सज्जन थे। अुनका और अुनकी पत्नीका मुझ पर अुपकार था, लेकिन अुनके अिस व्यवहारको सहन करनेके लिअे मैं तैयार नहीं था।

"'डॉक्टर, अब साफ-साफ बात कर लो। क्या करना चाहते हो? मैं अपनी पत्नीको अुसकी अिच्छाके बिना कभी मांस नहीं देने दूँगा। मांस न लेनेसे अुसकी मृत्यु होनेवाली हो, तो अुसे सहनेके लिअे मैं तैयार हूँ।'

"डाक्टरने कहा: 'आपकी फिलासफी मेरे घर बिलकुल नही चलेगी। मैं आपसे कहता हूँ कि जब तक आप अपनी पत्नीको मेरे घर रहने देंगे, मैं अुनको मांस या जो भी कुछ देना मुनासिब होगा, जरूर दूँगा। अगर अैसा करना मंजूर न हो, तो आप अपनी पत्नीको ले जाअिये। अपने ही घरमे जान-बूझकर मैं अुनकी मौत नही होने दूँगा।'

"'तो क्या आप यह कहते है कि मुझे अपनी पत्नीको अभी ले जाना चाहिये?'

"'मैं कब कहता हूँ कि ले जाअिये? मैं तो कहता हूँ कि मुझ पर किसी तरहका अंकुश न रखिये। तभी हम दोनों अुनकी जितनी बन सकेगी, सेवा-सुश्रूषा करेंगे और आप निश्चिंत होकर जा सकेंगे। अगर यह सीधी बात आप न समझ सकें, तो मुझे लाचार होकर यह कहना चाहिये कि अपनी पत्नीको मेरे घरसे ले जाअिये।'

"मेरा खयाल है कि अुस समय मेरा अेक लड़का मेरे साथ था। मैंने अुससे पूछा। अुसने कहा: 'आपकी बात मुझे मंजूर है। बा को मांस तो हरगिज नहीं दिया जा सकता।'

"फिर मैं कस्तूरबाअीके पास गया। वह बहुत कमजोर थीं, अुनसे कुछ भी पूछना मेरे लिअे दुःखदायी था। लेकिन धर्म समझकर मैंने अुन्हें अूपरकी सारी बातचीत थोड़ेमे कह सुनाअी। अुन्होंने दृढतापूर्वक जवाब दिया: 'मैं मांसका शोरवा नहीं लूँगी। 'मानुस देह' बार-बार नहीं मिलती। भले मैं आपकी गोदमे मर जाअूँ। लेकिन मैं अपनी देहको भ्रष्ट नहीं कर सकूँगी।'

"मैंने जितना समझाया जा सकता था, समझाया, और कहा: 'तुम मेरे विचारोंका अनुसरण करनेके लिअे बँधी नहीं हो।' यह भी कहा कि हमारी जान-पहचानके कुछ हिन्दू दवाके रूपमे मांस और शराब लेते हैं। लेकिन वह टस-से-मस न हुअीं और बोलीं: 'मुझे यहाँसे ले चलो।'

"मैं बहुत खुश हुआ। ले जाते घबराहट हुअी, लेकिन निश्चय कर लिया। डॉक्टरको पत्नीका निश्चय कह सुनाया। डॉक्टर गुस्सा होकर बोले: 'तुम तो निष्ठुर पति मालूम होते हो। अैसी बीमारीमे अुस बेचारीसे अिस तरहकी बात करते तुम्हे शरम भी न आअी? मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी स्त्री यहाँसे ले जाने लायक नहीं है। अुसका शरीर अब अैसा नहीं रहा कि थोड़े भी धक्के-दचके सहन कर सके। रास्तेमे ही अुसका प्राण छूट जाय तो मुझे आश्चर्य न होगा। अितने पर भी तुम हठवश नहीं ही मानोगे, तो तुम तुम्हारी जानो। अगर मैं अुसे शोरबा नहीं दे सकता, तो अुसको अपने घरमें रखनेकी जोखिम भी मैं नहीं अुठा सकता।'

"रिमझिम-रिमझिम मेह बरस रहा था। स्टेशन दूर था। डरबनसे फिनिक्स तक रेलका रास्ता था और फिनिक्ससे क़रीब २॥ मीलका पैदल रास्ता था। खतरा काफी था, लेकिन मैंने मान लिया कि अीश्वर सहायता करेगा। मैंने पहलेसे अेक आदमीको फिनिक्स भेज दिया। फिनिक्समें हमारे पास 'हैमक' था। यह जालीदार कपड़ेकी अेक झोली या पालना-सा होता है। बाँसों पर अिसके छोर बाँध देनेसे रोगी अिसमे आरामके साथ झूलता रह सकता है। मैंने मिस्टर वेस्टके नाम सँदेशा भेजा कि वे 'हैमक', अेक बोतल गरम दूध और अेक बोतल गरम पानी और छह आदमियोंको लेकर फिनिक्स स्टेशन पर आयें।

"जब दूसरी ट्रेनके छूटनेका समय हुआ, तो मैंने रिक्शा मँगवाअी और अुस भयंकर हालतमें पत्नीको रिक्शामें बैठाकर मैं चल पड़ा ।

"पत्नीको हिम्मत दिलानेकी मुझे कोअी ज़रूरत नहीं पड़ी । अुल्टे, अुन्हींने मुझको हिम्मत देते हुअे कहा : 'मुझे कुछ नहीं होगा । आप चिन्ता न करें ।'

"हड्डियोंके अुस ढॉचेमें वज़न तो कुछ रह ही नहीं गया था । खूराक कुछ खाअी नहीं जाती थी । ट्रेनके डब्बे तक पहुँचनेके लिअे स्टेशनके लम्बे-चौड़े प्लेटफॉर्म पर दूर तक चलकर जाना था । रिक्शा वहाँ तक जा नहीं सकती थी । मैं अुन्हें अुठाकर डब्बे तक ले गया । फिनिक्समें तो वह झोली आ गअी थी । अुसमें हम रोगीको आरामके साथ ले गये । वहाँ सिर्फ पानीका अिलाज करनेसे धीरे-धीरे शरीर सशक्त बना ।

"फिनिक्स पहुँचनेके कोअी दो-तीन दिन बाद ही वहाँ अेक स्वामी पधारे । हमारे 'हठ'की बात सुनकर अुन्होंने दया जतलाअी और वे हम दोनोंको समझाने आये । जैसा कि मुझे याद पड़ता है, जब स्वामीजी आये, मणिलाल और रामदास हाज़िर थे । स्वामीजीने मांसाहारकी निर्दोषता पर व्याख्यान देना शुरू किया; मनुस्मृतिके श्लोकोंका हवाला दिया । पत्नीकी अुपस्थितिमें अुन्होंने यह चर्चा चलाअी, यह मुझे अच्छा न लगा । लेकिन विनयके विचारसे मैंने अिस चर्चाको चलने दिया । मांसाहारके समर्थनमें मुझको मनुस्मृतिके प्रमाणकी ज़रूरत नहीं थी । मुझे अुन श्लोकोंका पता था । मैं जानता था कि अुन्हें प्रक्षिप्त समझनेवाले लोग भी हैं । किन्तु वे प्रक्षिप्त न हों, तो भी अन्नाहारके विषयमें मेरे विचार स्वतंत्र रीतिसे बन चुके थे । कस्तूरबाअीकी श्रद्धा अपना काम कर रही थी । वह बेचारी शास्त्रके प्रमाणोंको क्या समझे ? अुनके लिअे तो बाप-दादाकी रूढ़ि ही धर्म थी । बालकोंको अपने बापके धर्म पर विश्वास था, अिसलिअे वे स्वामीके साथ विनोद कर रहे थे । अन्तमें कस्तूरबाअीने अिस चर्चाको यह कहकर बन्द किया :

"'स्वामीजी, आप कुछ भी क्यों न कहें, लेकिन मुझे मांसका शोरवा खाकर स्वस्थ नहीं होना है । अब आप मेरा सिर न पचायें, तो आपका अुपकार हो । बाकी बातें करना चाहें, तो लड़कोंके बापके साथ बादमें कीजिये । मैंने अपना निश्चय आपको जता दिया ।'"

९

बापूको बचाया

जिस तरह बापूने बा को बीमारीसे बचाया, अुसी तरह बा ने बापूको भी अद्भुत रीतिसे बचाया है। यह कहना बिलकुल गलत न होगा कि आज बापू जो हमारे बीच है, सो बा के ही प्रतापसे है।

यह मानकर कि दूध प्राणिज पदार्थ है, और अिस कारण मांसके जैसी ही खुराक है, बापूने अेक अरसेसे दूध छोड़ रखा था। तिस पर जब अुन्हें पता चला कि गायों और भैंसों पर, अुनसे अधिक-से-अधिक दूध पानेके लिअे, कलकत्तेमे और दूसरे शहरोंमे फूंकेकी क्रिया की जाती है, तो तभीसे अुन्होंने दूध न पीनेकी प्रतिज्ञा कर ली थी। अुन दिनों बापूका मुख्य आहार सिकी हुअी और कुटी हुअी मूँगफली, गुड़, केले और दो-तीन नीबुओंका पानी, अितना ही था। अेक दिन कुछ ज़्यादा मूँगफली खा जानेकी वजहसे बापूको पेचिशकी थोड़ी शिकायत हो गअी। अुन्होंने कोअी परवाह नहीं की। दूसरे दिन कोअी त्योहार था। बापू दूध या घी तो खाते नहीं थे, अिसलिअे अुनके वास्ते दले हुअे गेहूँकी लपसी तेलमे तैयार की थी और पूरे मूँग बनाये थे। बापूका अिरादा तो खानेका नहीं था, लेकिन कुछ तो स्वादके वश होकर और कुछ बा को खुश करनेके खयालसे वे जीमने बैठे। थोड़ा ही खाकर अुठ जानेके अिरादेसे बैठे थे, लेकिन कुछ ज़्यादा खा गये। खाये अभी पूरा घंटा भी नहीं हुआ था कि ज़ोरके दर्दके साथ पेचिश शुरू हो गअी। खेड़ा जिलेके मशहूर सत्याग्रहके बाद रंगरूटोंकी भरतीके वे दिन थे और अुसके सिलसिलेमे अुसी दिन शामको अुन्हें नड़ियाद जाना था। पेचिशकी परवाह किये बिना बापू वहाँ गये। लेकिन वहाँ जाने पर बीमारी बहुत बढ़ गअी। पाव-पाव घंटेसे दस्त होने लगे। और चौबीस घंटोंमे तो बापूका सुगठित शरीर बिलकुल लुज-पुंज हो गया। डॉक्टर आये, लेकिन दवा न लेनेके अुनके आग्रहके खिलाफ किसीकी कुछ चली नहीं। अच्छी-से-अच्छी सार-सँभालके बावजूद शरीर क्षीण होने लगा। पानीके और अैसे ही अपने दूसरे अिलाजोंकी

मददसे बापूने रोग तो मिटा लिया। लेकिन शरीर किसी भी तरह पनप नहीं पाया। दो-तीन मित्रोंने दूधका और दूध न ले, तो मांसका शोरवा या अण्डे लेनेका आग्रह किया। लेकिन जिसने दूधको मांसवत् मानकर छोड़ दिया हो, वह अिन चीजोंको लेना कैसे कबूल करे? किसीने सलाह दी कि माथेरान जानेसे शरीर पनपेगा, अिसलिअे बापू माथेरान गये। लेकिन वहाँका पानी भारी साबित हुआ, अिसलिअे वहाँ बिलकुल जमा नहीं और वे बम्बअी आये। बम्बअीमें डॉक्टर दलालने अुनके शरीरकी जाँच की और अपना अिलाज शुरू करनेसे पहले कहा: "जब तक आप दूध न लेंगे, मैं आपके शरीरको पुष्ट नहीं बना सकूँगा। आपको दूध और लोहा और 'सोमल' की पिचकारी लेनी चाहिये। आप अितना करें, तो आपके शरीरको फिरसे ठीक-ठीक पुष्ट बनानेकी गारण्टी मैं दूँ।"

"पिचकारी दीजिये, लेकिन दूध मैं न लूँगा।"

"दूधके बारेमें आपकी प्रतिज्ञा क्या है?"

"जबसे मैंने यह जाना है कि गाय-भैंस पर फूँकेकी क्रिया होती है, तबसे मुझे दूधसे नफरत हो गअी है, और मैं हमेशासे मानता हूँ कि दूध मनुष्यकी खुराक नहीं है। अिसलिअे मैंने दूध छोड़ा है।"

बा बापूकी खटियाके पास ही खड़ी थीं। वे बोल अुठीं: "तब तो बकरीका दूध ले सकते हैं।" अपने मनकी-सी बात सुनकर डॉक्टर अुत्साहमें आ गये और बोले: "आप बकरीका दूध लें, तो मेरा काम बन जाय।"

बापूने बा की और डॉक्टरकी सलाह मान ली। बापूके समान सत्यके पुजारीको प्रतिज्ञाकी आत्माका घात करनेका दुःख तो रह ही गया। लेकिन प्रतिज्ञाके शब्दार्थका पालन हुआ।

अिस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि बा की समय-सूचकताने और सहजबुद्धिने बापूको जिलाया।

१०

पहली स्त्री-सत्याग्रही

आजकल जेल जाना बहुत आसान बात हो गअी है; लेकिन पहले तो जेलका नाम सुनकर लोग डरते थे। अुस समय किसीको यह कल्पना तो थी ही नहीं, कि स्त्री जेल जा सकती है; लेकिन बापूजी तो जिनकी कल्पना भी नहीं होती, अैसे बहुतेरे काम करते-कराते आये है। दक्षिण अफ्रीकामे सन् १९१३मे अेक अैसा कानून पास हुआ कि अीसाअी धर्मके अनुसार किये गये ब्याहके सिवा — जो विवाह-विभागके अधिकारीके यहाँ दर्ज हुअे हों — दूसरे सब ब्याहोंको क़ानूनमें कोअी जगह नहीं। अिसका मतलब यह हुआ कि हिन्दू-मुसलमान-पारसी वग़ैरा धर्मोंके अनुसार की गअी शादियाँ अिस कानूनकी वजहसे रद्द मानी गअीं; और अिस कारण बहुत-सी विवाहिता हिन्दुस्तानी स्त्रियोंका दरजा अुनके पतिकी धर्मपत्नीका न रहकर रखेलीका माना गया। यह अेक अैसी स्थिति थी, जिसे स्त्री-पुरुष दोनों सह नहीं सकते थे। बापूने अिस कानूनको रद्द करनेके लिअे वहाँकी सरकारके साथ बातचीत चलाअी, लेकिन अुसका कोअी नतीजा नहीं निकला और बापूने सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। अुन्होंने अिस लड़ाअीमे स्त्रियोंको भी न्योतनेका निश्चय किया। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' नामक पुस्तकमे बापू लिखते है:

"मैं जानता था कि बहनोंको जेल भेजनेका काम बहुत खतरनाक था। फिनिक्समे रहनेवाली अधिकतर बहनें मेरी रिश्तेदार थीं। वे सिर्फ मेरे लिहाजके कारण ही जेल जानेका विचार करे और फिर अैन मौक़े पर घबराकर या जेलमें जानेके बाद अुकताकर माफी वग़ैरा माँग ले, तो मुझे सदमा पहुँचे। साथ ही, अिसकी वजहसे लडाअीके अेकदम कमजोर पड़ जानेका डर भी था। मैंने तय किया था कि मैं अपनी पत्नीको तो हरगिज़ नहीं ललचाअूँगा। वह अिनकार भी नहीं कर सकती थीं, और 'हाँ' कह दें, तो अुस 'हाँ'की भी कितनी कीमत की जाय, सो मैं कह

नहीं सकता था। अैसे जोखिमके काममें स्त्री खुद होकर जो निश्चय करे, पुरुषको वही मान लेना चाहिये और कुछ भी न करे, तो पतिको अुसके बारेमें तनिक भी दुखी नहीं होना चाहिये, अितना मैं समझता था। अिसलिअे मैंने अुनके साथ कुछ भी बात न करनेका अिरादा रखा था। दूसरी बहनोंसे मैंने चर्चा की। वे जेल-यात्राके लिअे तैयार हुआीं। अुन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वे हर तरहका दुःख सहकर भी अपनी जेल-यात्रा पूरी करेंगी। मेरी पत्नीने भी अिन सब बातोंका सार जान लिया और मुझसे कहा:

"'मुझसे अिस बातकी चर्चा नहीं करते, अिसका मुझे दुःख है। मुझमें अैसी क्या खामी है कि मैं जेल नहीं जा सकती? मुझे भी अुसी रास्ते जाना है, जिस रास्ते जानेकी सलाह आप अिन बहनोंको दे रहे हैं।'

"मैंने कहा: 'मैं तुम्हें दुःख पहुँचा ही नहीं सकता। अिसमें अविश्वासकी भी कोअी बात नहीं। मुझे तो तुम्हारे जानेसे खुशी ही होगी। लेकिन तुम मेरे कहने पर गअी हो, अिसका तो आभास तक मुझे अच्छा नहीं लगेगा। अैसे काम सबको अपनी-अपनी हिम्मतसे ही करने चाहिये। मैं कहूँ और मेरी बात रखनेके लिअे तुम सहज ही चली जाओ, और बादमे अदालतके सामने खड़ी होते ही कॉप अुठो और हार जाओ या जेलके दुःखसे अूब अुठो, तो अिसे मैं अपना दोष तो नहीं मानूँगा, लेकिन सोचो कि मेरे क्या हाल होंगे? मैं तुमको किस तरह रख सकूँगा और दुनियाके सामने किस तरह खड़ा रह सकूँगा? बस, अिस भयके कारण ही मैंने तुम्हे ललचाया नहीं।'

"मुझे जवाब मिला: 'मैं हारकर छूट आअूँ, तो मुझे मत रखना। मेरे बच्चे तक सह सकें, आप सब सहन कर सकें और अकेली मैं ही न सह सकूँ, अैसा आप सोचते कैसे हैं? मुझे अिस लडाअीमे शामिल होना ही होगा।'

"मैंने जवाब दिया: 'तो मुझे तुमको शामिल करना ही होगा। मेरी शर्त तो तुम जानती ही हो। मेरे स्वभावसे भी तुम परिचित हो। अब भी विचार करना हो, तो फिर विचार कर लेना और भलीभाँति सोचनेके बाद तुम्हें यह लगे कि शामिल नहीं होना है, तो समझना कि

तुम अिसके लिअे आज़ाद हो। साथ ही, यह भी समझ लो कि निश्चय बदलनेमें अभी शरमकी कोअी बात नहीं है।'

"मुझे जवाब मिला : 'मुझे विचार-विचार कुछ नहीं करना है। मेरा निश्चय ही है'।"

*   *   *

बापूने लड़ाअी शुरू की और अुसकी शुरूआतमे बा और तीन दूसरी बहनें जेल गअीं। वॉल्करस्टके जेलमें दाखिल होनेके दूसरे ही दिन जो घटना घटी, श्री प्रभुदास गांधीने 'जीवनका प्रभात' नामक अपनी लेखमालामें अुसका वर्णन दिया है। वहाँका जेलर गुजराती नहीं जानता था और बहनें अंग्रेजी नहीं जानती थीं। अुनके नाम या पते और पहचान लिख लेनी थी। जेलरने श्री छगनलाल गांधीको दुभाषियेका काम करनेके लिअे आफिसमें बुलाया और कारकुनसे कहा कि वह सवालोंके जवाब ले :

कारकुन (बा को दिखाकर) : यह जो खड़ी हैं, अिनका नाम पूछो।
छगनलाल गांधी (बा से) : अिस कृष्ण-भवनकी पहली रात कैसे बीती?
बा : हम तो अँधेरा होनेके बाद भजन-कीर्तन करके आरामसे सो गअी।
छगनलाल गांधी (कारकुनसे) : अिनका नाम कस्तूरबा।
कारकुन (बा को दिखाकर) : अिसकी शादी हुअी है?
छगनलाल गांधी (बा से) : रात ब्यालू किया था?

बा : मुझको तो फलाहार चाहिये। अिन सबने तो आये हुअे रोटी और सागको सूँघ कर रख दिया। कहने लगीं, अैसे घिनौने बरतनमे कैसे खाया जाय? और अैसा बसाता साग कोअी मुँहमे कैसे डाले?

छगनलाल गांधी (कारकुनसे) : अिनकी शादी हुअी है। अिनके पतिका नाम मोहनदास करमचन्द है। अिसके बाद अुमर, जात, वतन वगैराके बारेमें अेकके बाद अेक चारोंसे सवाल पूछे गये और छगनलाल गांधीने पहली रातके पूरे समाचार जाने और पहुँचाये। बा के फलाहारके बारेमे भी चर्चा की और अुन्हें बताया कि हनूमानजी (मि० कैलेनबेक) वॉल्करस्ट आ पहुँचे हैं और खबर यह है कि वे जेलरसे मिलकर फल पहुँचानेका बन्दोबस्त करनेवाले है।

लेकिन तीन-चार दिनमें सबका तबादला मैरित्सबर्ग जेलमें हो गया। तबादला होनेसे पहले खबर आअी कि बा को फल नहीं दिये गये और बा की तो प्रतिज्ञा थी कि कुछ भी क्यों न हो, जेलमें फलाहार ही करेंगी। अगर जेलवाले फलोंका अिन्तज़ाम न करे, तो भूखों रहना, मरनेकी नौबत आये, तो मर जाना। जेलके अधिकारियोंने अिस प्रतिज्ञाकी कोअी परवाह नहीं की और कहा : 'अैसे ढोंग करने थे, तो जेल क्यों आअीं?'

बा के लिअे दूसरा कोअी अुपाय न रह गया। अुन्होंने अुपवास शुरू किया। अेक, दो, तीन दिन हो गये, अितनेमें अुन पर हुकूमत चलानेवाली मैट्रन ठंढी पड़ गअी। बोली : "हमें तो सुबह अेक वक्तकी चाय नहीं मिलती, तहाँ हमारा सिर घूमने लगता है और तुम दुबली-पतली होकर तीन-तीन दिन बिना खाये कैसे रहती हो? हम लाचार हैं। तुम्हारे लिअे कुछ भी नहीं कर सकते। जेलमें मुँहमाँगा खानेको नहीं मिलता। मेहरबानी करके जो मिलता है, अुसीसे काम चलाओ।"

पाँचवें दिन सरकार झुकी और बा को फल मिले। लेकिन वे अितनी कम तादादमें मिलते कि दर असल बा को तीन महीने आधे पेट ही रहना पड़ा। सिर्फ तीन केले, चार 'प्रुन्स', दो टमाटर और दो नीबू मिलते थे। अिनमें मूँगफली-जैसी अेक भी चीज़ नहीं थी, जिससे घी-तेलकी गरज़ पूरी होती। तीन महीनों बाद जब बा जेलके दरवाजेसे बाहर आअीं, तो बिलकुल हड्डियोंका ढाँचा भर रह गअी थीं। अुनके दर्शन करनेवालोंकी आँखोंसे आँसू टपके बिना न रहे।

११

बा की सेवा-सुश्रूषा

जब बा मैरित्सबर्गके जेलसे रिहा हुअीं, अुनकी तन्दुरुस्ती बहुत ही गिर गअी थी। पिछले प्रकरणमें अिसकी चर्चा हो चुकी है। बापू अुन्हें लिवाने जेल तक आये थे। बा की तन्दुरुस्ती और जर्जर बनी हुअी देहको देखकर बापूने पहली ही बात यह कही: "तुम तो बहुत बूढ़ी हो गअीं।" जेल ही से बा की तबीयत खराब रहने लगी थी। बाहर आनेके बाद भी तन्दुरुस्ती सुधरनेके बदले और ज़्यादा बिगड़ने लगी। जठराग्नि मन्द हो जानेकी वजहसे अुल्टियाँ होती थीं और सारे शरीरमें सूजन आ गअी थी। बापूने अिस पर घरेलू दवायें दीं, लेकिन बा की सूजन जड़से नहीं मिटी। और कुछ ही समयमें तबीयतने फिर पल्टा खाया। हाथों पर और पैरों पर सूजन बहुत ही बढ़ गअी। डॉक्टरोंने बहुतेरी दवायें दीं, लेकिन कोअी फर्क नहीं पड़ा। आखिर डॉक्टरकी दवासे बा भी अुकता गअीं। बापूने बा से कहा: "अगर तुझे मुझ पर विश्वास हो, तो अब मैं तुझ पर अपना प्रयोग करके देखूँ।" बा ने मंजूर किया: "तुम जैसा कहोगे, करूँगी।" बापूने कहा: "अुपवास करने होंगे और दवामें नीमका रस लेना होगा।" बा ने यह भी मंजूर किया और अुसी दिनसे बापूका अिलाज शुरू हुआ।

बापूने बा से १४ दिनके अुपवास करवाये और नीमका सेवन करवाया। अिन दिनों बापूने बा की जो सेवा की, अुसका वर्णन करनेके लिअे शब्द मिलने मुश्किल हैं। सबेरे बापू खुद बा को दतौन कराते। कॉफी भी खुद ही बना कर पिलाते, अेनीमा देते। 'पॉट' साफ कर लाते। बापू सारा दिन बा को धूपमें सुलाते। अुनके घरके सामने बाहरकी तरफ बकायनका (अेक तरहका नीम) पेड़ था। बा का शरीर तो बहुत ही दुबला हो गया था। छोटे बालकको अुठानेके ढंगसे बापू बा को दोनों हाथोंमें अुठाकर बाहर ले आते और पेड़के नीचे खटिया पर सुला देते। जैसे-जैसे धूप बदलती जाती, बा की खटियाको बदलते रहते। शामको फिर अुठा

कर अन्दर ले आते। बापू बा का सभी काम करते थे, लेकिन वे अुनका सिर नहीं गूँथ पाते थे। अिसलिअे काशीकाकी रोज सिर सँवारने जाती थीं। अेक दिन अुन्हे जरा देर हो गअी, तो बापू ख़ुद सिरमें कंघी करने बैठ गये। तेल डालकर अुलझे बालोंको सुलझा भी चुके थे, कि अितनेमें वे पहुँच गअीं। बापूने कहा: "लो, अब तुम करो। मुझे ठीकसे बेनी गूँथना नहीं आता।"

बापू बा की सूजन पर रोज नीमके तेलकी मालिश करते थे। अेक दिन पीतलकी रकाबीमें तेल निकाला था। अुसके दूसरे दिन बापूने बा के लिअे कॉफी तैयार की और अुसे प्याले व रकाबीमें ढालने जाते थे कि अितनेमें काशीकाकी आ पहुँचीं। बापूको बास बहुत ही कम आती है, अिसलिअे अुस रकाबीमें तेलकी बास आती है या नहीं, यह जाननेकी ग़रज़से अुन्होंने काकीसे कहा: "जरा सूँघकर तो देखो, बास आती है?"

काशीकाकीने कहा: "हाँ, बास तो आती है।"

अिस पर बापू बोले: "अगर मैं अिसमे कॉफी ले जाता, तो मेरी आ ही बनती न?" मानो बापू बा से अितने अधिक डरते हों!

बापूकी सेवा फली और बा अुस बीमारीसे मुक्त होकर बिल्कुल चंगी हो गअीं।

* * *

अंग्रेज सरकारके खिलाफ बापूके कअी सत्याग्रहोंकी बातें हम जानते हैं। कभी-कभी बापूने मित्रोंके साथ भी सत्याग्रह किया है। अेक बार बा के साथ सत्याग्रह करनेका मौका भी बापूको मिल गया। आत्मकथामें 'घरमे सत्याग्रह' शीर्षकसे बापूने अिसका वर्णन किया है:

"शस्त्रक्रियाके बाद जो भी थोडे समयके लिअे कस्तूरबाअीका रक्तस्राव बन्द हो गया था, तो भी अुसने फिर पलटा खाया और वह किसी तरह मिटता ही नहीं था। अकेले पानीके अुपचार बेकार साबित हुअे। जो भी पत्नीको मेरे अुपचारों पर विशेष श्रद्धा नहीं थी, तो भी अुनके लिअे मनमे तिरस्कार भी नहीं था। दूसरा कोअी अिलाज करानेका आग्रह नहीं था।

अिसलिअे जब मेरे दूसरे अुपचारोंमे सफलता न मिली, तो मैंने अुन्हें नमक और दाल छोड़नेके लिअे समझाया। बहुत मनाने पर भी, अपने कथनके समर्थनमें अिधर-अुधरकी बातें पढ़कर सुनाने पर भी, वे मानी नहीं। आखिर अुन्होंने कहा : 'दाल और नमक छोड़नेकी बात तो कोअी तुमसे कहे, तो तुम भी अिन्हें न छोड़ो।' मुझे दुःख हुआ और खुशी भी हुअी। मुझे अपने प्रेमकी वर्षा करनेका मौका मिला। मैंने अुस खुशीमें आकर तुरन्त ही कहा, 'तुम्हारा खयाल गलत है। मुझे कोअी रोग हो और वैद्य यह चीज या दूसरी कोअी चीज छोड़ देनेको कहे, तो मैं ज़रूर छोड़ दूँ। लेकिन जाओ, मैंने तो अेक सालके लिअे द्विदल (दाल) और नमक दोनों छोड़े। तुम छोड़ो या न छोड़ो, दूसरी बात है।'

"पत्नीको बहुत पश्चात्ताप हुआ। वह कहने लगीं : 'मुझे माफ करो। तुम्हारे स्वभावको जानते हुअे भी मैं यह कह बैठी। अब तो मैं दाल और नमक नहीं खाअूँगी, लेकिन तुम अपनी बात लौटा लो। यह तो मेरे लिअे बहुत बडी सजा हो जायगी।'

"मैंने कहा : 'तुम नमक और दाल छोड दोगी तब तो बहुत ही अच्छा होगा। मुझे यक़ीन है कि अुससे तुम्हे फायदा ही होगा। लेकिन की हुअी प्रतिज्ञाको मैं लौटा नहीं सकता। मुझे तो लाभ ही होगा। आदमी किसी भी निमित्तसे संयम पाले, अुसे अुसमें लाभ ही है। अिसलिअे तुम मुझसे आग्रह न करना। दूसरे, मुझको भी अपना अन्दाज मालूम हो जायगा, और तुमने दो चीजें छोडनेका जो निश्चय किया है, अुस पर डटे रहनेमें तुम्हे मदद मिलेगी।' अिसके बाद मुझे अुन्हें मनानेकी तो जरूरत ही नहीं रही। 'तुम तो बहुत हठीले हो, किसीकी बात मानते ही नहीं,' कहकर अंजलि भर आँसू बहा लिये और चुप रह गअीं।

"अिसको मै सत्याग्रहका नाम देना चाहता हूँ, और अपने जीवनके मीठे संस्मरणोंमेंसे अेक अिसे मानता हूँ।

"अिसके बाद कस्तूरबाअीकी तबियत खूब सँभली। अिसमें नमक और दालका त्याग कारणभूत था, अथवा किस हद तक वह कारणभूत हुआ था, या अुस त्यागके कारण आहारमें जो छोटे-मोटे हेरफेर हुअे,

वे कारणरूप थे, अथवा अुसके बाद दूसरे नियमोंका पालन करानेमें मैंने जो सतर्कता बरती थी, वह निमित्तरूप थी, या अूपरकी घटनाके कारण अुत्पन्न मानसिक अुल्लास निमित्त बना था, सो मैं कह नहीं सकता। लेकिन कस्तूरबाअीकी गिरी हुअी तन्दुरुस्ती सुधरने लगी। शरीर पुष्ट होने लगा। खून जाना बन्द हुआ और 'वैद्यराज' के नाते मेरी साख कुछ बढ़ी।"

१२

बा की अंग्रेजी

यह स्वाभाविक है कि अफ्रीकामें चारो तरफ़का वातावरण अंग्रेजीसे भरा हो। बापूके साथी ज़्यादातर अंग्रेज होते थे। बादमे जब हिन्दुस्तान आये, तो यहाँ भी आश्रममे कअी भाषाअें बोलनेवालोंका जमघट रहा। अिसलिअे आश्रममें भी अंग्रेज़ीका ठीक-ठीक अुपयोग करनेकी जरूरत रही। अिसलिअे हालाँकि बा अंग्रेजी पढ़ी नहीं थीं, तो भी मौका पड़ने पर वे अिधर-अुधरके अंग्रेज़ी शब्दोंसे अपना काम चला सकती थीं।

श्रीमती पोलाक विलायतसे दक्षिण अफ्रीका आयीं थीं और मि० पोलाकके साथ ब्याह करके बापूके घरमे ही रहने लगी थीं। वे लिखती हैं: "बा टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोल लेती थीं, लेकिन ज़्यादा नहीं। पहले दिन तो हम परस्पर बहुत मिली भी नहीं थीं। लेकिन दूसरे ही दिनसे जब गांधीजी और मेरे पति दफ्तर चले गये, तो हम दोनों घरमे अकेली रह गअीं। फिर तो हमें किसी भी तरह अेक दूसरेसे बातचीत करनी ही थी। कुछ ही समयमे बा की अंग्रेजी सुधर गअी और मेरे साथका अुनका संकोच भी दूर हो गया। फिर तो जब हम अंग्रेज़ मित्रोंसे मिलने जातीं, तो वहाँ वे भी बातचीतमें अच्छी तरह शामिल होतीं।"

बा वहाँ कैसी अंग्रेजी बोलती थीं, अिसकी कुछ मिसालें श्रीमती पोलाककी 'Mr. Gandhi — The Man' नामकी किताबसे यहाँ देती हूँ। अेक बारकी बात है। मि० पोलाक बापूजीसे कुछ

नाराज हो गये थे। वे घरमें किसीसे बोलते नहीं थे और बेचैन रहा करते थे। अिस पर बा ने श्रीमती पोलाकसे पूछा :

"What the matter Mr. Polak? What for he cross?" — मि० पोलाकको क्या हुआ है? वे अितने नाराज क्यों दीखते हैं?

श्रीमती पोलाकने कहा : "बापू पर गुस्सा हुअे हैं।"

तब बा ने पूछा : "What for he cross Bapu? What Bapu done?" — बापू पर गुस्सा क्यों हुअे हैं? बापूने क्या किया है?

अिसके बाद श्रीमती पोलाकने अिस सम्बन्धकी सारी हक़ीक़त बा को कह सुनाअी। अुस पर बा ने जवाब दिया :

"Oh, Oh!" — हॉं, हॉं।

श्रीमती पोलाक अिस 'हॉं-हॉं' का यह अर्थ करती हैं कि मि० पोलाक बापू पर गुस्सा हुअे, अिसका बा को कोअी दु:ख नहीं हुआ, क्योंकि वे खुद भी अिस मामलेमें बापू पर नाराज़ होती थीं; और बापूके लिअे अितना भाव रखनेवाले आदमीको अुनसे नाराज़ होनेका कारण मिलता है, अिससे बा को हिम्मत बॅंधी कि अुनका नाराज होना भी सकारण ही होता है।

बा अिस तरहकी अंग्रेजी तो अफ्रीकासे आनेके बाद यहॉं भी बोलती थीं। आश्रममें आनेवाले गोरे मेहमानोंका स्वागत करना, अुनके कुशल-समाचार पूछना, अुनकी ज़रूरतोंके बारेमें पूछताछ करना वग़ैरा मामूली बातचीत बा अच्छी तरह कर सकती थीं। अिस प्रकार वे अंग्रेज़ी बोलना तो जानती थीं, लेकिन '३०के जेल जीवनमें ६० सालकी अुम्रमें अुन्होंने जेलके अन्दर अंग्रेजी लिखना-पढना सीखनेकी जो कोशिश शुरू की थी, अुसके बारेमें सौ० लाभुबहन, जो जेलमें अुनके साथ ही थीं, 'स्त्री-जीवन' मासिकके बा-सम्बन्धी विशेषांकमें अिस प्रकार लिखती है :

"बा को पता चला कि मैं अंग्रेजी जानती हूॅं और अुन्होंने मुझसे अंग्रेजी पढना शुरू किया। अितनी बडी अुम्रमें, अितने बड़े पदको पहुॅंचनेके बाद भी, मेरे पास बैठकर अंग्रेजी सीखनेमें अुनको न तो हीनता

मालूम हूअी, न शरम। अुन्हें तो अेक ही धुन लगी थी कि खुद बापूका पता अंग्रेजीमे लिख सकें। 'अे-बी-सी-डी' पर लगातार कअी-कअी दिन तक मेहनत करके वे कभी अुकताअी नहीं थीं। अेक ही नामको २०-२५ बार लिखते वे थकी नहीं थीं और न जल्दी-जल्दी, नये-नये शब्दों या वाक्योंको सीख लेनेकी अुन्होंने कभी अिच्छा की थी। वे कहा करतीं : 'अंग्रेज़ी आ जाय तो बापूको जो पत्र लिखती हूँ, अुसका पता तो किसीसे न लिखवाना पड़े ! और ढेर-की-ढेर जो डाक आती है, अुसमेंसे मेरा पत्र खुद ही पहचाना जा सके न ! "

* * *

पूज्य बापूजी सन् १९२२से '२४ तक यरवड़ा जेलमें थे। वहाँ अुन्होंने अेक कैदीकी खुराकके लिअे सुपरिण्टेण्डेण्टके सामने कुछ माँगें पेश की थीं। सुपरिण्टेण्डेण्टने अुन्हें नामंजूर कर दिया, अिससे बापूजीको बहुत बुरा मालूम हुआ और अुन्होने सिर्फ दूध ही पर रहनेका निश्चय किया। अिस तरह चार हफ़्ते बीत गये और अिस बीच अुनका वजन १०४से ९० पर आ गया। जब बा के साथ परिवारके कुछ लोग अुनसे मिलने गये, तो जीना चढ़ते हुअे बापूके पैर कुछ लड़खडाये।—बा ने बापूकी यह हालत देखी और अिसका कारण पूछा। बापूको अनिच्छापूर्वक अपनी सारी बात बा से कहनी पड़ी। सबने अेक होकर बापूसे आग्रह किया कि वे अिस प्रयोगको छोड़ दें और फल लेने लगें। बापूने बात मंजूर भी कर ली।

यह देखकर यरवडाके सुपरिण्टेण्डेण्टने बा से कहा : "मि० गांधी यह जो सब करते हैं, अिसमें मेरा कोअी कसूर नहीं।"

बा ने जवाब दिया : "Yes, I know my husband. He always mischief."

क्या अिस अेक वाक्यमें बा ने, अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजीमें ही क्यों न हो, बापूके सारे चारित्र्यका निरूपण नहीं कर डाला है ? "मै अपने पतिको पहचानती हूँ, वे कभी चुप बैठनेवाले नहीं है। अुन्हे रोज़ कुछ-न-कुछ शरारत ही सूझती है।" क्या अिन शब्दोंमें बापूके समूचे जीवनचरित्रका सार नहीं समा जाता ? १८९३में वे दक्षिण अफ्रीका पहुँचे, तबसे आज तकके अिन ५१ वर्षोंमें बापू कभी चैनसे बैठे है ? आज सारी दुनियामें

अेक क्षण भी चैनसे न बैठनेवाला और दूसरोंको न बैठने देनेवाला बापूके जैसा दूसरा कौन होगा? बापूकी रग-रगको जाननेवाली बा को छोड़कर अैसे अेक वाक्यमें अुनके चारित्र्यका अितना हूबहू और गंभीर अर्थोंवाला वर्णन और कौन कर सकता है? और अिस वर्णनमें अंग्रेजी भाषाका अधूरा ज्ञान भी अुनके लिअे बाधक नहीं बना। अच्छे-अच्छे अंग्रेजीदाँ भी अैसे अेक वाक्यमें बापूका वर्णन क्या करनेवाले थे?

१३

खादी-परिधान

बा को अपनी पोशाकमें और कपड़ोंकी पसन्दगीमें बापूकी अिच्छा और सूचना पर चलना पड़ा है, या यों कहिये कि बा चली है। सन् १९१९-'२०में बा ने खादी धारण की। अुसका जिक्र करनेसे पहले हम यह देख लें कि सन् १८९६में दक्षिण अफ्रीका जाते समय बापूने बा की पोशाकमें किस तरहका हेरफेर कराया था। बापूजी आत्मकथामें कहते हैं.

"परिवारके साथ यह मेरी पहली समुद्र-यात्रा थी। मैंने कअी बार लिखा है कि हिन्दुओंकी गृहस्थीमें बचपनमें शादी होनेके कारण और मध्यमश्रेणीके लोगोंमें अधिकतर पतिके शिक्षित और पत्नीके निरक्षर होनेके कारण, पति-पत्नीके जीवनमें फर्क रहता है, और पतिको पत्नीका शिक्षक बनना पड़ता है। मुझको अपनी धर्मपत्नीकी और बालकोंकी पोशाकका, खाने-पहननेका और बातचीतका बहुत खयाल रखना पड़ता था। मुझे अुन्हें रीति-रिवाज सिखाने होते थे। अुनमेंसे कुछकी याद आज भी मुझको हँसाती है। हिन्दू पत्नी पतिपरायणतामें अपने धर्मकी पराकाष्ठा मानती है। हिन्दू पति अपनेको पत्नीका अीश्वर समझता है, अिसलिअे पत्नीको, जैसा वह नचावे, नाचना पड़ता है।

"जिन दिनोंकी बात मैं लिख रहा हूँ, अुन दिनों मैं मानता था कि सुधरे हुओंमें अपनी गिनती करानेके लिअे हमें अपना बाहरी आचरण भरसक युरोपियनोंसे मिलता-जुलता रखना चाहिये। अैसा करनेसे ही रोब पड़ता है, और रोब पड़े बिना देशभक्ति नहीं हो सकती।

"अिसलिअे पत्नीकी और बालकोंकी पोशाक मैंने ही पसन्द की। बच्चों वग़ैराका काठियावाड़के बनियेके रूपमें परिचय देना कैसे अच्छा लगता? पारसी ज़्यादासे ज़्यादा सुधरे हुअे माने जाते है, अिसलिअे जहाँ युरोपियन पोशाककी नकल करना जँचा ही नहीं, वहाँ पारसी पोशाककी नकल की। पत्नीके लिअे पारसी बहनोंके तर्जकी साड़ियाँ लीं। बच्चोंके लिअे पारसी कोट-पतलून बनवाये। सबके लिअे बूट-मोज़े तो होने ही चाहिये। पत्नीको और बच्चोंको दोनों चीजें कअी महीनों तक अच्छी न लगीं। बूट काटते, मोजे बदबू देते, पैर तंग रहते। अिन अड़चनोंके अुत्तर मेरे पास तैयार थे और अुत्तरोंके औचित्यके मुकाबले हुक्मकी ताक़त तो ज़्यादा थी ही। अिसलिअे पत्नीने और बच्चोंने लाचारीके साथ पोशाकके अिस हेर-फेरको मंजूर किया। अुतनी ही लाचारीसे और अुससे भी अधिक अरुचिसे वे खाते समय छुरी-काँटेका अिस्तेमाल करने लगे। जब मेरा मोह अुतरा, तब फिरसे अुन्होंने बूट-मोजे और छुरी-काँटे वग़ैराका त्याग किया। शुरूका परिवर्तन जिस तरह दुःखदायी था, अुसी तरह आदत पड़ जानेके बाद अुसे छोड़ना भी दुःख देनेवाला था, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि हम सब सुधारोंकी केचुली अुतारकर हल्के हो गये है।"

जिस तरह बा को बूट-मोजे कअी महीनों तक अटपटे लगे, अुसी तरह अुनको खादी पहनानेमें भी बापूको कअी महीने नहीं तो कुछ दिन ज़रूर लगे थे। रौलट-अेक्टके खिलाफ शुरू की गअी सत्याग्रहकी लड़ाअीको मुल्तवी करनेके बाद बापूने 'स्वदेशी'के कामको बहुत जोर-शोरसे अुठाया। अुस समयके स्वदेशी व्रतमें कुछ महीनों तक तो मिलके कपड़ेको भी मंजूर रखा गया था, लेकिन कुछ ही समयमें बापूने देख लिया कि मिलके कपड़ेका प्रचारक बननेकी हमें जरूरत नहीं। असली जरूरत तो परदेशसे आनेवाले कपड़ेकी रोकके लिअे ज़्यादा कपड़ा पैदा करनेकी है, और यह काम चरखेके ज़रिये ही अच्छी तरह हो सकता है। अिसलिअे बापूने सबसे आग्रह करना शुरू किया कि वे चरखा चलायें और खादी पहनें। लेकिन अुन दिनों बड़े अर्जकी खादी तो बनती नहीं थी। ३७ अिंच पनेकी खादी भी मुश्किलसे बुनी जाती थी और अगर धोती या साड़ी खादीकी पहननी हो, तो ६ या ८ नम्बरके

असमान सूतकी और कम अर्जकी असी खादीको जोड़कर ही पहनी जा सकती थी। अिस तरह जोड़कर बनाअी गअी साड़ीका वजन २॥ से ३ पौण्ड होता होगा। जो बहनें यह दलील करतीं कि असी साड़ी तो बहुत भारी पड़ती है, हमसे अुठ भी नहीं सकती, अुनसे बापू कभी-कभी कहते कि नौ-नौ महीनों तक बच्चेको पेटमें धारण करनेवाली बहनोंको देशके खातिर, अपनी गरीब बहनोंकी आबरूके खातिर, यह अितनी-सी साड़ी भारी क्यों लगनी चाहिये ?

आश्रममें भी बापू रोज सब बहनोंको खादी पहननेके लिअे समझाते। बापूकी अुस दलीलको सुनकर साड़ीके वज़नकी दलील तो कोअी बहन न करती, लेकिन रोज धोनेकी मुश्किलवाली दलील बहनें बहुत जोरके साथ पेश किया करतीं। अिस पर बापूजी कहते कि हम तुम्हें तुम्हारी साड़ियाँ धो देंगे। अिस तरह हँसी-विनोद होता रहता। अिन सब दलीलोंमें बा बहनोंकी अगुआ बनतीं। बापू अक्सर कहते: 'बा को बूट और मोजे पहनानेमें मुझे अुनकी कुछ कम खुशामद नहीं करनी पड़ी। और अुनको फिरसे छुड़वाते समय भी थोड़ी खुशामद तो करनी ही पड़ी थी। लेकिन अब देखता हूँ कि बूट-मोजे पहनानेमें जितनी खुशामद करनी पड़ी थी, खादीकी साड़ी पहनानेमें अुससे ज़्यादा खुशामद करनी पड़ेगी।' जहाँ तक मैं जान पाअी हूँ, अुसके मुताबिक तो श्री० सरलादेवी चौधरानीने पहले-पहल खादीकी साड़ी पहनी थी। शायद सारे देशमें सबसे पहले खादीकी साड़ी पहननेवालियोंमें वही प्रथम रही हों। अुन दिनों वे आश्रममें ही रहती थीं। फिर तो तुरन्त ही बा ने भी खादीकी साड़ी धारण की और कुछ ही समयमें सब बहनें खादी पहनने लग गअीं। बादमें तो बड़े अर्जकी खादी भी बुनी जाने लगी और खुद कातनेवालोंके लिअे तो साड़ीकी कोअी कठिनाअी ही नहीं रह गअी।

अिसके बाद तो बा को खादीसे कितना प्रेम हो गया था, अिसका सूचक अेक अुदाहरण यहाँ देती हूँ। अेक दिन बा के पैरकी छोटी अँगुलीसे खून निकला। बा खादीकी पट्टी बाँधने जा रही थीं, अितनेमें अेक बहनने महीन कपड़ेकी पट्टी ला दी और कहा: "अिस महीन कपड़ेसे रगड़ नहीं लगेगी और पट्टी अच्छी तरह बँधेगी।" "मुझे तो खादीकी

पट्टी ही चाहिये। वह खुरदरी भी होगी, तो मुझे नहीं चुभेगी," कहकर बा ने खादीकी ही पट्टी बाँधी।

जब बापूजीने आगाखान महलमें अुपवास शुरू किये, तो अुनसे मिलनेके लिअे गअी अेक आश्रमवासिनी बालासे बा ने सेवाग्राममें पड़े हुअे अपने कपड़े भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंको बाँट देनेके लिअे कहा और सूचना की: "बापूजीके अपने हाथसे कती और मेरे लिअे खास तौर पर तैयार की गअी साडी तो मुझे जेलमें भेज ही देना। मृत्युके बाद मेरी देह पर वह साड़ी लपेटनी है।"

आम तौर पर बा की साडी बापूके काते सूतकी ही बनती थी और बा चिता पर चढ़ीं, सो भी बापूके हाथसे कते सूतकी साड़ी पहनकर ही।

१४
आश्रमकी बा

जिस तरह बापूको 'बापू' ही बनाये रखनेमें बा का बहुत बडा हाथ था, अुसी तरह आश्रमको आश्रम — साधारण मनुष्योंका आश्रयस्थान — बनाये रखनेमे भी बा का हिस्सा कम नहीं रहा। जब अहमदाबादमें बापूने आश्रम कायम किया, तो खयाल अुठा कि अुसका नाम क्या रखा जाय? अनेक नामोंके साथ अेक 'तपोवन' भी सुझाया गया था। बापूका आश्रम वैसा 'तपोवन' बना होता, तो कौन जाने अुसमें कैसे-कैसे लोग रहते होते। आज जो साधारण लोग आश्रमवासी कहलाते है, अुनके लिअे तो शायद जगह ही न रहती। सार्वजनिक कामोंके सिलसिलेमें या निजी कारणोंसे बापूको मिलने आनेवाले लोग अुस तपोवनमें अेक दिन भी रह सकते या नहीं, अिसमे शक है।

बापूका तप सूरजकी तरह तपता है। सूरजका ताप जिस तरह दुनियाके लिअे कल्याणकारी ही होता है, अुस तरह बापूका तप दुनियाके लिअे कल्याणकारी ही है। लेकिन जैसे सूरजके तापके बहुत पास जानेवाला जल जाता है, अुसी तरह बापूके बहुत नजदीक रहना भी अेक कड़ी तपस्या ही है। बापूजीके पास रहनेवालोंकी अिस तरहकी कड़ी

कसौटीमें बा ने हमेशा अुनकी ढालका काम किया है और अुनको बापूके तापसे झुलसने नहीं दिया। बा ने यह सब सोच-समझकर या योजनाके साथ नहीं, बल्कि सहजभावसे ही किया है।

आश्रममें रहनेवाली बहनोंके लिअे बा किस तरह ढाल बन जाया करती थीं, अिसकी अेक मिसाल यहाँ देती हूँ।

आश्रमका नियम था कि सबकी अेक संयुक्त रसोअी हो। हरअेक अपने हिस्से आनेवाला काम कर ले। यह भी अेक नियम था कि आश्रममें होनेवाली साग-सब्जीका ही अिस्तेमाल किया जाय। बाहरसे साग वगैरा न मँगाया जाय। संयुक्त रसोअीमें आश्रमके खेतमें पैदा होनेवाले कद्दूका साग रोज बनता था। कद्दूके सागसे मतलब है, कद्दूके बड़े-बड़े टुकड़ोंका पानीमें अुबाला हुआ पदार्थ। अुसमें नमक भी नहीं छोड़ा जाता था। जिसे जरूरत हो, वह अलगसे नमक ले ले। मेरी माँको अिस सागके खानेसे बादीकी तकलीफ होती और चक्कर आते। दुर्गामौसीको बादीकी शिकायतके साथ-साथ डकारें आतीं। दूसरी भी बहुतेरी बहनोंको वह माफिक नहीं आता था। बापूजी तो सबको पानी चढ़ाते रहते थे, अिसलिअे, और कुछ सकोचकी वजहसे भी, सब बहनें बापूजीसे अिसका जिक्र नहीं करती थीं। लेकिन बा के साथकी बातचीतमें ये सब बातें हुआ करतीं। मेरी माँने रोज-रोजके अिस कद्दूके साग पर अेक गरबी (तुकबन्दी) तैयार कर ली। बा ने वह सुनी और वे तुरन्त ही बापूके पास पहुँचीं। बापूसे कहा: "तुम्हारे कद्दूका साग खाकर मणिबहनको बादीकी तकलीफ होती है और चक्कर आते है। दुर्गाबहनको डकारें आती है। कद्दूका साग भी कहीं निरा अुबाला हुआ बनता है? अुसे मेथीसे छौंका जाय, और अुसमें गरम मसाला वगैरा सब कुछ डाला जाय, तभी वह बाधक नहीं होता। नहीं तो, कद्दू बिना कष्ट दिये कभी रहा है?"

अिस गरबीमें विनोदके तौर पर आश्रमकी रसोअीका थोड़ा मज़ाक किया गया था। अिस पर कुछ आश्रमवासी तो मेरी माँसे कहने लगें कि यह तो तुमने बापूका अपमान किया। लेकिन अिसमें अपमानकी तो कोअी बात थी ही नहीं, सहज मीठा मजाक था। दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद बापूने कहा कि हमारे आश्रममें अेक नये कवि पैदा हुअे है। हमें अुनकी

कविता सुननी है। अिसके बाद बापूने आग्रह करके मेरी माँसे कद्दूवाली वह गरबी गवाअी। गरबीके खतम होने पर बापूने कहा : "अच्छी बात है, आपकी फरियाद मंजूर की जाती है। जिन्हें छौंककर और मसाले डालकर साग खाना हो, वे अपने नाम मुझे लिखा दें।"

बा बोलीं : "यों आपको कोअी नाम नहीं देगा। हम बहनें खुद तय कर लेंगी।"

बापूने कहा : "अच्छा, तो अैसा ही सही। लेकिन देखना भला, अिसमें बच्चोंको शामिल न कर लेना। बच्चे तो बिना मसालेका साग ही पसन्द करते हैं।" बा ने कहा : "अिस तरह कह-कहकर बच्चोंको चढ़ाओ और भले अुन्हें अपने पास ही रखो। ये सब बच्चे कहाँ तक तुम्हारे रहेंगे, सो मैं जानती हूँ।"

फिर सब बहनोंने नाम तय किये। मसाला खानेकी आजादी हासिल की। लेकिन बापूजी कुछ सुखसे मसाला खाने देते हों, सो नहीं। बहनोंकी पंगत अुनके सामने ही बैठती। अिसलिअे खाते-खाते भी बापू मजाक करते और कहते : "क्यों, बघार कैसा लगा है? साग अच्छा मसालेदार है न?"

अिसके जवाबमें बा भी विनोदभावसे कहतीं : "तुम कौन कम थे? पहले हर अितवारको मुझसे 'वेढ़मी' (पूरणपोली) और पकौड़ी या 'पातरे' (अरबीके पत्तेके भजिये) बनवा कर खूब अुड़ाते थे, सो तुम्हीं थे या और कोअी?"

अैसा ही अेक किस्सा और है।

आश्रममें नियम था कि हरअेकको अमुक निश्चित कीमतका ही साबुन अिस्तेमाल करना चाहिये। आश्रमकी बहनोंको अुतना साबुन पूरा नहीं पड़ता था। और अिसके खिलाफ शिकायत करनेका मतलब होता था, बापूके बनाये नियमका विरोध करना। फिर भी सब बहनोंने मिलकर सबकी सहीसे अेक अर्जी तैयार की। बा ने भी अुस पर सही की और अर्जी बापूको दी गअी। अर्जीमें बा का नाम पढ़कर अर्ज करनेवाली जो अेक खास बहन थीं अुनकी ओर अिशारा करके बापूने कहा : "अिन्होंने तो हम दोनोंमें भी झगड़ा करा दिया!" कहनेकी

जरूरत नहीं कि बापूने अर्जी मंजूर की और बहनोंको ज्यादा साबुन मिलने लगा ।

* * *

सेवाग्राममे बापूकी झोंपड़ीकी ओर जानेसे पहले बा की झोंपड़ी पड़ती है। बा या तो चबूतरे पर बैठी कातती मिलतीं, या अैसा ही कोअी काम करती नजर आतीं। किसी नये आनेवाले मेहमानको पहले बा के दर्शन होते। बा अुन्हे पहचानती हों या न पहचानती हों, फिर भी बड़े प्रेमसे अुनका स्वागत करतीं। कहाँसे आये? सीधे यहीं आ रहे है या वर्धा होकर आये? भोजन हुआ या नहीं? गाडीमे बहुत तकलीफ तो नहीं हुअी न? वगैरा छोटी-से-छोटी बातें पूछतीं। भोजन न किया हो, तो करातीं। आये हुअे मेहमानको बापूके साथ तो जिस कामके लिअे आये हों अुसकी चर्चा करनेका ही काम रहता था। पर अुनकी दूसरी तमाम कठिनाअियोंको बा हल कर दिया करतीं। आश्रममे रहनेवालोंसे भी बा जब-तब पूछती रहतीं: 'खाना तो माफिक आता है न? कोअी तकलीफ न अुठाना भला! किसी चीजकी जरूरत हो, तो मुझसे कहिये।' छोटे बच्चे रहते, तो अुन्हें दोपहरमे नाश्ता भी देतीं। आश्रममे खातिरदारीकी या प्यार-दुलार पानेकी कोअी जगह थी, तो वह बा की।

पण्डित मोतीलालजी जैसे आश्रममे कअी-कअी दिन तक रह जाते थे, सो बा की ही बदौलत। बा न हों, तो राजाजीको चाय-कॉफी कौन दे? जवाहरलालजीके लिअे खास जायकेवाली चाय कौन तैयार करे? मीठुबहनको जिन्दा रखना हो, तो अुनको चाय देनी ही चाहिये — बा के सिवा दूसरा कौन अुनकी अैसी वकालत करता?

* * *

बहुत साल पहलेकी बात है। अेक दिन गोशीबहन आश्रममे आअी थीं। आश्रमका रिवाज यह था कि खाना खानेके बाद हरअेक अपनी-अपनी थाली माँज डाले। सब खाने बैठे। बा और गोशीबहन पास-पास बैठी थीं। भोजनके बाद हरकोअी अपनी-अपनी थाली अुठाकर जाने लगा। गोशीबहनने कभी बरतन मले नहीं थे। अुनका भोजन हो चुका था, लेकिन वे परेशान थीं कि क्या करे। अितनेमें बा भी खा चुकीं।

अुन्होंने धीरेसे गोशीबहनकी थाली खींच ली। गोशीबहन और भी परेशान हुअीं और शरमाअीं। बा से कहीं थाली मँजवाअी जा सकती है? लेकिन बा अुनकी कठिनाअीको समझ गअी थीं, अिसलिअे बोलीं: "बहन, तुमने कभी थाली माँजी नहीं है, तो तुमसे यह नहीं बनेगा। मुझको तो रोज़की आदत है। मेरे लिअे अेक थाली ज़्यादा नहीं होगी।"

बापूने आश्रमका अेक नाम 'अस्पताल' भी रख छोड़ा है। बीमारोंको अपने पास रखकर अुनकी तीमारदारी करनेका बापूको शौक है। बापू अपनेको अेक बहुत अच्छा नर्स और डॉक्टर भी समझते है। जिस तरह खुराकके और कुदरती अिलाजोंके प्रयोग वे अपने अूपर आजमाते है, अुसी तरह दूसरों पर भी आज़मानेको तैयार रहते है। अपने अिस कामसे वे अेक तरहकी मानसिक विश्रान्ति प्राप्त करते है। सरदार वल्लभभाअी-जैसे भी बापूके बीमार है। चूँकि आश्रम अिस तरहका अेक अस्पताल है, अिसलिअे बाहरसे बापूके वास्ते फलकी जो भेंटें आती है, अुनमेसे ज़्यादातर फलोंका अुपयोग बीमारोंके लिअे ही होता है। आश्रममे तन्दुरुस्त आदमीके हिस्से फल शायद ही कभी आते है। बा को अिसमें कुछ भी अनुचित नहीं लगता था। लेकिन जब कभी फलोंकी अिफरात होती, बा स्वस्थ आश्रमवासियोंका मुँह मीठा करानेकी मुराद रखतीं। रसोअीघरके व्यवस्थापककी स्वाभाविक वृत्ति फलोंके संग्रहकी रहती। लेकिन बा को यह पसन्द न पड़ता। अुनकी नज़र पड़ती और फल ज़्यादा होते, तो फौरन ही ज़रूरी फल रखकर बाकीके फलोंको वे पंगतमे परोस देनेके लिअे कह देतीं। अैसे समय वे रसोअीघरके व्यवस्थापक पर ताना भी कसतीं। कहतीं: "वह तो लालची है, बापूको भी पीछे छोड़नेवाला।" यह टीका व्यवस्थापककी अपेक्षा बापू पर ही अधिक होती।

और, आश्रममें बा न हों तो अक्सर त्योहारके दिनका भी किसीको पता न चले। बा हमेशा अेकादशीका व्रत रखती थीं और त्योहारके सब दिनोंको भी याद रखती थीं। अिसलिअे त्योहारके दिन सभी आश्रम-वासियोंको बा की कुछ-न-कुछ प्रसादी मिल जाती थी। अिस तरह बा के कारण आश्रममें आनन्दका वातावरण रहा करता।

लेकिन अब सेवाग्राम जाने पर बा का वह हमेशा हँसनेवाला चेहरा और फलों वगैराकी अुनकी वह प्रसादी कहाँ मिलेगी? बा के अभावमें वहाँ कौन भावके साथ स्वागत करेगा? जिस तरह माँके बिना घर सूना-सूना लगता है, अुसी तरह बा के बिना आश्रम भी सूना लगेगा।

१५

हरिजनोंकी माँ

बा तो सारे देशकी माँ बनकर गअीं। अुनके दिलमें कभी कौमी भेदभाव था ही नहीं। लेकिन सफाअी और छूतछातसे सम्बन्ध रखनेवाले वैष्णव सम्प्रदायके संस्कारोंके कारण हरिजनोंकी माँ बननेमें अुनको थोड़ा वक़्त जरूर लग गया। मगर अिस पुरानी घिनके निकल जानेके बाद तो अुन्होंने हरिजनों और सवर्णोंके बीच कभी कोअी भेदभाव नहीं रखा।

अहमदाबादमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना करते समय बापूने अस्पृश्यता-निवारण-सम्बन्धी अपने विचारोंको मित्रोंके सामने साफ-साफ रख दिया था: "अगर कोअी लायक अछूत (अुस समय हरिजन शब्द प्रचलित नहीं हुआ था) भाअी आश्रममें भरती होना चाहेगा, तो मैं अुसे जरूर भरती करूँगा।"

"लेकिन आपकी शर्तोंका पालन कर सकनेवाले अछूत अितने सुलभ हैं कहाँ?" अेक वैष्णव मित्रने अिन अुद्गारोंके साथ अपने मनको मना लिया।

आश्रमकी स्थापनाके कुछ ही महीनों बाद ठक्करबापाने आश्रमके नियमोंका पालन करनेवाले अेक प्रामाणिक परिवारको आश्रममें भरती करनेकी सिफारिश की। बापू तो यह चाहते ही थे। दूधाभाअी, अुनकी पत्नी दानीबहन और अेक छोटी लड़की लक्ष्मी आश्रममें आ पहुँचे।

आश्रममें बड़ी खलबली मची। अफ्रीकामें बापूजीके घर अछूत आते और रहते थे, लेकिन यह तो देश था। यहाँ अछूत परिवारके

साथ रहनेमें बा को और दूसरी बहनोंको मन ही मन थोड़ी झिझक मालूम हुअी। अछूतोंको छूनेमें अुन्हें कोअी आपत्ति न थी। लेकिन अुनको रसोअीघरमें और परिवारमें दाखिल करते समय पुराने वैष्णवी संस्कार बाधक बनते थे। प्यालेसे मुँह लगाकर पानी पीनेके बाद अुसे माँजना ही चाहिये। अगर बिना माँजे वह पनियारे पर रख दिया जाय, तो बा को अुससे बहुत दुःख होता था। थालीमे कुछ भी परोसते समय परोसनेकी कडछुल या चम्मच भोजनकी थालीसे ज़रा भी छू जाय, तो वह कडछुल या चम्मच जूठा माना जाता था और अुसे अलग मलनेके बरतनोंमे ही रख देना होता था। बेचारे दूधाभाअी और दानीबहन अिस तरहकी पूरी-पूरी खबरदारी रखनेकी भरसक कोशिश करते, लेकिन कभी कहीं भूले-चूके अुनसे अैसी कोअी गलती हो जाती थी, तो बा को वह अच्छा नहीं लगता था। दानीबहनके लिअे वे नापसन्दगी तो नहीं, लेकिन अुदासीनता रखती थीं। अिस अुदासीनताको दूर करनेमे बा को बहुत वक़्त लग गया। बादमे दूधाभाअी और दानीबहनने अपने कुछ कारणोंसे आश्रम छोड़ा और बापूने आग्रह करके अुनकी कन्या लक्ष्मीको आश्रममे रख लिया और यह अैलान किया कि अुन्होंने अुसे गोद लिया है। लक्ष्मीकी सार-सँभालका सारा काम बा को सौंपा गया। अिस मौक़े पर भी शुरूमें बा को थोड़ी कठिनाअी मालूम हुअी होगी, लेकिन कुछ ही समयमें बा ने लक्ष्मीको भलीभाँति अपना लिया। अेक बार मनसे तय कर लिया कि अिसे लड़कीकी तरह रखना है, अुसके बाद तो अुसकी सार-सँभाल रखनेमे बा कभी चूकनेवाली नहीं थीं। छोटा बालक थोडा-बहुत झगडालू होता है, अथवा कभी-कभी जिद करता है, अिसी तरह लक्ष्मीने भी कभी-कभी झगड़ा करके बा को परेशान किया होगा, लेकिन बा ने न सिर्फ अुसको कभी कोअी दुःख नही समझा, बल्कि लक्ष्मी बहनको, और बड़ी हो जानेके बाद अुनके बच्चोंको भी अुन्होंने अपने प्रेमसे नहलाया ही है।

* * *

कुछ साल पहले सेवाग्राम आश्रममें अेक घटना घटी थी, जो यहाँ देने लायक है।

नागपुरके कुछ हरिजनोंने मध्य प्रान्तके कांग्रेसी मंत्रिमण्डलमे

हरिजनको मन्त्री न बनानेके लिअे बापूके खिलाफ सत्याग्रहका अैलान किया था। अुन्होंने यह तय किया कि पाँच-पाँच हरिजन सेवाग्राम जाकर आश्रममे बापूके सामने अुपवास करे। पाँच हरिजनोंकी अेक टुकड़ी सेवाग्राम आवे और वहाँ बैठकर २४ घंटोंका अुपवास करे। फिर दूसरी टुकड़ी आकर अुपवास शुरू करे और पहली टुकड़ी चली जाय। अिस तरह टुकड़ियाँ बदलती रहें। बापूने प्रेमके साथ अिन विरोधी हरिजनोंका स्वागत किया और अिनके लिअे आश्रममे बैठने व रहनेकी सहूलियत कर दी। जगहका चुनाव हरिजनोंकी अिच्छा पर छोड़ा गया। अुन्होंने बा की ओसारी पसन्द की।

बा की कुटियामे अेक बड़ी और अेक छोटी कुल दो कोठरियाँ हैं। छोटी कोठरी नहाने और कपड़े बदलनेके लिअे है। बापूने बा को बुलाकर कहा: "*अिन हरिजनोंको तुम अपनी बड़ी कोठरी दोगी न?*"

अपने ही खिलाफ अुपवास करनेके लिअे आये हुअे अिन हरिजनोंको बापू अिस तरहकी सहूलियत दें, और खुदको नहानेके कमरेका अुपयोग करनेकी स्थितिमे रखें, यह बा को कुछ अच्छा नहीं लगा। अुन्होंने सहज अुलाहनेके स्वरमे कहा:

"आपने अिनको अपने पुत्र मानकर टिकाया है, तो अपनी झोंपड़ीमे ही अिन्हें बैठाअिये न!"

"हाँ, ये मेरे लड़के तुम्हारे भी तो लड़के हुअे न?"

अट्टहास्यके साथ बापूने बा को निःशस्त्र किया और बा ने अुन हरिजनोंके लिअे अपनी कोठरीमे जगह कर दी। बा न सिर्फ अुनके सारे अुपद्रवोंको सह लेती थीं, बल्कि अुन्हें पानी वगैराकी जरूरत होती, तो अुसका भी पूरा-पूरा खयाल रखती थीं।

१६

बा की दिनचर्या

अिस अध्यायमें मैं यह बता देना चाहती हूँ कि आम तौर पर बा अपना दिन किस तरह बिताती थीं। अिसमे बापूकी सेवा-टहल सूरजकी तरह मुख्य थी, बाकीका सारा वक्त 'बा'के नाते और आश्रमवासिनीके नाते अपने धर्मका पालन करनेमे बीतता था। किसीको पता भी नहीं चलता था कि वे अपने निजी कामोंसे कब निबट लेती थीं।

बा हमेशा सुबह ४ बजेकी प्रार्थनाके समय अुठनेका आग्रह रखतीं। प्रार्थनाके बाद बापूजीको आधा-पौना घंटा सो जानेकी आदत है। लेकिन बा अुठनेके बाद फिर सोती नहीं थीं। वे तो बापूजीके फिरसे जागनेके पहले अुनके लिअे गरम पानी और शहद या जो भी कुछ बापू सवेरे लेनेवाले हों, सो तैयार करने' या करानेमे लग जातीं। 'करानेमे' अिस लिअे लिख रही हूँ कि बापूके अैसे निजी कामोंको करनेकी बहुतोंकी अिच्छा रहती और अिसके लिअे कभी-कभी आपसमें होडाहोड़ी भी होती। बा अैसे अुम्मीदवारोंको बापूजीकी सेवाके काम बाँट देतीं। लेकिन काम किसीको भी क्यों न सौंपा हो, बा सामने खड़ी रहकर देखतीं कि काम ठीक हो रहा है या नहीं? बा का अिस तरह खड़ा रहना कुछ मतलब रखता था। श्री० कुसुमबहन देसाअीने अिसका अेक अुदाहरण दिया है। अेक बार अलीगढ़मे बापूजीका दूध छाननेकी सेवा अेक भाअीने बहुत हठ करके बा से माँग ली। दूध छाना और बापूजीको दिया। बापूजीका दूधमे अेक बाल दिखाअी पड़ा। बा से पूछने पर अुन्होंने सारी बात बता दी। बापूजीने कहा: 'नतीजा देखा न? दूधमें बाल रह गया।' अुस दिन बापूने दूध नहीं लिया। बा को बहुत क्लेश रहा। अुन्होंने कहा: "किसीको करने न दूँ, तो अुसका दिल दुखता है और करने देती हूँ, तो काम ठीक नहीं हो पाता। दिन-रात अेक-सी सिरपच्ची करना, और पेटमें देखो तो अेक जूनकी भी जमा नहीं।"

अिसलिअे आम तौर पर बा ने रिवाज यह रखा था कि काम दूसरोंने किया हो, तो भी बरतन भलीभाँति साफ हुअे हैं या नहीं, चीज अच्छी तरह

बनी है या नहीं, सो वे खुद ही देख लेती थी और खुद ही बापूजीके पास ले जाती थीं। और, चीज खानेकी हो या पीनेकी, जब तक बापू अुसे खा-पी न लें, बा अुनके पास ही बैठी रहतीं। अिसके बाद वे यह देख लेतीं कि बरतन ठीकसे साफ होकर जगह पर रखे गये है या नहीं। कभी किसी लड़कीने बरतन मले हों और वे अच्छी तरह साफ न हुअे हों, तो बा खुद अुन्हें दुबारा साफ कर लेतीं। बरतनोंको हमेशा चमकीले रखनेकी बा को आदत ही थी।

बापू सबेरे कोअी ७ बजे घूमने निकलते है। अुस समय बा अपने स्नान वगैरा कामोंसे निपट लेतीं और पूजा-पाठमे बैठतीं। घीके दीये और अगरबत्तीकी धूपके साथ क़रीब अेक घण्टा गीताजीका और तुलसी-रामायणका पाठ करतीं। अिसके बाद बा रसोअीघरमे पहुँच जातीं। रसोअीघरमे कहाँ क्या हो रहा है, अिसे वे तुरत अेक निगाह देख लेतीं और किसीको कुछ सुझाना होता तो सुझातीं। रसोअीघरमे कोअी चीज खुली पडी हो, फाजिल साग-सब्ज़ी, फाजिल फल वगैरा बिगडनेकी हालतमे हों, तो बा अुन्हे फौरन ही देख लेतीं। वे बहुत स्पष्टवक्ता थीं, अिसलिअे जिसको जो कहना होता, साफ साफ कह देतीं। मुँहसे हाँ-हाँ कहने और अपने अंगीकृत कामको भलीभाँति न करनेवालोंके लिअे बा की बड़ी नाराजी रहा करती थी। अिसलिअे नये आये हुअे लोगोंको कभी-कभी बा की बातका बुरा भी लग जाता। बा चाहती थीं कि तमाम चीजे और कपड़े वगैरा सभी कुछ ठीकसे जमाकर अपनी जगह रखे जाने चाहिये। कहीं कुछ बेठिकाने देखतीं, तो बा खुद अुसे सहेजने लग जातीं। बा की किसी बातसे किसीके नाराज होनेकी खबर बापू तक पहुँचती, तो वे कहते : "अगर बा के पास थोडा-बहुत कड़ुआ नीम है, तो मीठी शक्करकी तो अिफरात ही है।"

जैसा कि अभी कहा है, बापूजीका भोजन तो बा खुद ही तैयार करतीं या किसी औरने करनेका जिम्मा लिया हो, तो खुद वहाँ खडी रहतीं। बापूके लिअे बनाअी गअी खस्ता रोटी अेक गोल डिब्बेमे रखी जाती है। सभी रोटियाँ डिब्बेमे बराबर जमाकर रखी गअी है या नहीं, सभी अेकसे आकारकी है या नहीं, कोअी मोटी-पतली तो नहीं है,

किसीकी किनार तो फटी नहीं है, अधिक सिकनेसे किसी पर दाग तो नहीं पड गया है, या कोअी कच्ची तो नहीं रह गअी है, अुसमें नमक और सोडा ठीक पड़ा है या नहीं, सो सब बा खुद ही देख लेतीं। बा स्वयं रसोअी बनानेके काममें बहुत ही निपुण थीं। अिसलिअे जब वे खुद 'खाखरे' (खस्ता रोटी) बनातीं, तब तो वे आदर्श 'खाखरे' बनते और बापूको भी पता चल जाता कि आज 'खाखरे' बा ने बनाये हैं।

भोजनकी घण्टी बजती और सब भोजनालयमें आ पहुँचते। तब बापूजीको और खास मेहमानोंको परोसकर बा बापूजीके पास ही खाने बैठ जातीं। अुस वक्त भी अुनकी अेक निगाह तो बापूकी तरफ ही रहती। बापूके पास अेक मक्खी भी आते देखतीं, तो अुनका दायाँ हाथ पंखेको सँभाल ही लेता। खानेके बाद बा बापूके साथ भोजनालयसे अुनके कमरेमें आतीं और जब बापू अखबार पढ़ने लगते, तो वे अुनके तलवोंमें घी मलतीं। जब बापूकी आँख लग जाती, तो बा अुठकर अपने कमरेमें जातीं और ज़रा देर लेटतीं। १५-२० मिनटके बाद अुठकर मुँह धोतीं और खुद अखबार पढ़तीं।

यों बा की गिनती कम पढ़े-लिखोंमें और राजकाजको न जानने-वालोंमें की जायगी। लेकिन बा अखबारोंके जरिये और बातचीतके मारफत देशकी मौजूदा हालतसे खूब परिचित रहती थीं। गुजरात-काठियावाड़की खबरें जाननेके लिअे वे बिलानागा 'वन्देमातरम्' और 'गुजरात-समाचार' पढ़ा करती थीं। हर हफ्ते 'हरिजनबन्धु' आता। बा अुसे भी रोज थोड़ा-थोड़ा करके शुरूसे अखीर तक पढ़ जातीं, ताकि जुदा-जुदा कार्यक्रमोंके बारेमें अुन्हें बापूजीके विचार जाननेको मिल सकें। अखबार पढ़कर दुनियाकी मुसीबतों व तकलीफोंसे बा को बहुत दुःख होता। अेक बार अिस लड़ाअीके बारेमें बा ने कहा: "कौन जाने, यह लड़ाअी तो दुनियाको तबाह करके ही बन्द होगी!" बंगालके भीषण अकालकी खबरें पढ़कर बा ने आगाखान महलसे लिखे पत्रमें लिखा: "बंगालके समाचार सुनकर तो दिल फटता है। वहाँ तो आसमान फट पड़ा है। न जाने, अीश्वर क्या कर रहा है!"

बचपनमे तो बा पढ़ न सकीं, लेकिन बादमे अुन्हे पढ़नेका शौक़ हो गया था। हर दिन अेक-आध घटा तो वे किसी-न-किसीके पास बैठकर कुछ-न-कुछ पढा करतीं। राष्ट्रभाषाके नाते हिन्दुस्तानीकी अच्छी जानकारी होनी चाहिये, अिस खयालसे वे कअी दफा हिन्दीका अभ्यास करतीं। या कभी किसीकी मददसे तुलसीरामायणका अथवा गीताजीका अभ्यास करतीं। गीताजीके श्लोकोंको सही-सही पढने और अुन्हे ज़बानी याद करनेकी वे बराबर कोशिश करती रहतीं। अखीर-अखीरमें अुन्होंने आगाखान महलमे बापूसे गीताजीके श्लोकोंका शुद्ध अुच्चारण सीखना शुरू किया था। जब ७५ सालकी बा ७५ सालके बापूके सामने बैठकर अेक निष्ठावान् शिष्यके-से अुत्साहसे गीता सीखती होंगी, तो वह दृश्य कितना अद्भुत रहता होगा? बा जो भी कुछ सीखना शुरू करतीं, बहुत श्रद्धाके साथ सीखतीं, और अितनी अुम्र हो जानेके बाद भी विनम्र विद्यार्थीकी तरह सीखने बैठतीं। अुन्हे कुछ लिखनेको दिया जाता, तो अुसे भी वे छोटे विद्यार्थी जिस तरह अपना सबक़ तैयार करके लाते है, अुसी तरह दूसरे दिन लिखकर लातीं और कितनी ही ग़लतियाँ क्यों न हुअी हों, अुन्हे सुधार कर दुबारा लिखनेमें वे अुकताती नहीं थीं।

अखबार और पढ़ाअीके कामसे फ़ुरसत पाकर वे कातने बैठतीं। हररोज ४०० से ५०० तार बराबर काततीं। कताअी अुनकी तभी रुकती थी, जब वे बीमारीकी वजहसे बिछौनेमे पड़ी हों। बीमारीसे अुठने पर कमजोर रहने पर भी वे कताअी शुरू कर देतीं। आश्रममें प्रार्थनाके बाद रोज किसने कितना सूत काता, अिसका लेखा लिखा जाता है। बा अुसमे ज़्यादा सूत कातनेवालोंमे होतीं।

अितना करते-करते चारका समय हो जाता और बा फिर रसोअीमे पहुँच जातीं। वहाँ बापूका खाना तैयार करतीं या करातीं और दूसरे कामोंको भी अेक निगाह देख जातीं। ५ बजे बापूजी खाने बैठते, तब अुनके पास बैठतीं। कअी सालोंसे बा ने शामका खाना छोड़ रखा था। सिर्फ कॉफी पी लेती थीं और पिछले कोअी चार सालोंसे तो कॉफी भी छोड़ दी थी। दूधमें तुलसी और काली मिर्च डालकर अुसे थोड़ा अुबालतीं और पी लेतीं।

शामको बापू घूमने जाते तब बा आश्रममे कोअी बीमार होता तो अुसके पास जाकर बैठतीं। और फिर दूसरी बहनोंके साथ वे भी घूमने निकलतीं और आश्रमसे कुछ दूर जाने पर जब बापू सामनेसे आते मिलते, तो अुनके साथ लौट आतीं।

घूमकर आनेके बाद शामकी प्रार्थना होती। अुसमें बा तो रहतीं ही। शामकी प्रार्थनामें रामायण गाअी जाती, और अुसमें भी बा बराबर शामिल होतीं।

प्रार्थनाके बाद कुछ देर तक बा सब बहनोंके साथ बातचीत करती और फिर अपने और बापूके सोनेकी तैयारीमें लग जातीं। सोनेसे पहले बापूके सिरमें तेल मलनेका काम क़रीब-क़रीब अखीर तक वे ही नियमित रीतिसे करती रहीं। सुबह फिर ४ बजे अुठतीं और वही चक्र बराबर चलता रहता।

अिस तरह बा की दिनचर्यामे बापूकी परिचर्या अेक खास अंग थी। अिसके बारेमें मीराबहन लिखती है:

"मैंने भी कअी सालों तक बापूकी सेवा-चाकरी की है। अिस बीच मुझे बा के अद्भुत गुणोंका दर्शन हुआ है। अक्सर यह होता कि बापूकी निजी ज़रूरतोंकी खबरदारी रखनेका काम सिर्फ हम दोनों पर आ पड़ता। बापूके तूफ़ानी दौरोंमें तो बहुतेरी अड़चनें और कठिनाअियाँ रहतीं, लेकिन बा अचूक नियमिततासे, बिना थके, अिस कामको बड़ी खूबीके साथ किया करतीं। बापूके लिअे खाना तैयार करने और अुनकी मालिश करनेका काम तो वे अपने ही हाथमे रखतीं। अुसमें जहाँ-तहाँ थोडी मदद मुझसे भी ले लेतीं। कपडे धोने और सामान बाँधने-खोलनेका काम मेरे जिम्मे था। लेकिन अुसमे भी बा की पैनी नजर बराबर मेरे काम पर बनी ही रहती। बा मानो कभी थकती ही नहीं थीं। सभाओं और मुलाक़ातोंमे बापूको रात कितनी ही देर क्यों न हो जाय, बा अुनके सिरमे तेल मलने और अुनके थके-माँदे शरीरको दबानेके लिअे अुनकी राह देखती बैठी ही रहतीं। और फिर सुबह चार बजे प्रार्थनामे हाजिर रहकर पुनः बापूकी सेवामे लग जातीं। वे ग़ैरजरूरी

बातें करके बापूका वक़्त कभी खराब नहीं करतीं। बापूके आसपासके सभी लोगोंमे वे बापूको कम-से-कम तकलीफ देतीं और अुनकी ज्यादा-से-ज्यादा सेवा करतीं।

"अन्त-अन्तमे जब वे बीमार रहने लगीं, तो बापूका काम खुद नहीं कर पाती थीं, लेकिन अुस पर निगरानी रखनेका अपना काम तो अुन्होंने ठेठ आखिरी घड़ी तक नहीं छोड़ा था। जब आगाखान महलमे अुनकी तबियत बडी तेजीके साथ खराब हो रही थी, वे अेक कमरेसे दूसरे कमरेमे चलकर जा भी नहीं सकती थीं, तब अुन्हे पहियोंवाली कुर्सीमें बैठाकर घुमाना पड़ता था। अेक दिन वे बरामदेमे अपने बिछौने पर लेटी-लेटी बापूको शामका भोजन करते देख रही थीं। अन्दर कमरेमे जानेका वक़्त हो चुका था। अिसलिअे वह पहियेदार कुर्सी लेकर मैं बा के पास पहुँची और मैंने कहा: 'बा चलिये, अन्दर जानेका वक़्त हो गया है।' बा ने जवाब दिया: 'जरा ठहरो, बापूजी खा चुके तो चले।' अिस तरह बीमारीके बिछौने पर पडे-पडे भी अुनका जी बापूजीकी सेवामे रहता था।"

बा के समान निष्ठावान् परिचारिकाकी कमी बापूको आजकल कितनी खटकती है, अुसका कुछ खयाल नीचेकी दो घटनाओंसे आ सकेगा।

बिलकुल अभी-अभीकी बात है। अेक दिन मै बापूके पास बैठी थी। अुनका खाना रोज ठीक ११॥ बजे आता है, लेकिन अुस दिन ११॥। को आया। अिस पर खाना लानेवाली बहनसे बापूने कहा: "हमे यह समझ लेना है, कि बा हमेशा यहाँ मौजूद ही हैं। बा ठहरे हुअे वक्तसे अेक मिनटकी भी देर करके खाना नहीं लाती थीं, और अगर किसी दूसरेको यह काम सौंपा हो और अेक मिनटकी भी देर हो जाय, तो वे 'धडफड़' करने लग जातीं। फौरन अुठकर रसोअीमे जातीं और वहाँ होहल्ला मचा देतीं। आगाखान महलमे वे बीमार थीं और अुनसे कुछ हो नहीं पाता था, तब भी वे घडीके काँटे पर नज़र रखतीं और वक़्त पर मेरा खाना न आता, तो शोर मचा देतीं। मैं कहता कि यहाँ कौन वक़्तकी पाबन्दी करनी है? थोडी देर भी हो गअी, तो क्या हुआ? तो बा फौरन ही जवाब देतीं — 'लेकिन मैं जानती हूँ न कि आप

यहाँ भी अपने वक्तका पूरा खयाल रखते है, तो फिर थोड़ी भी देर क्यों होनी चाहिये ?' "

अिधर-अिधर दोपहरके भोजनके बाद बापू पैरोंमें घीकी मालिश करवानेसे अिनकार करते थे। सभी लड़कियाँ घी मलनेका आग्रह करने लगीं, तब बहुत ग़मगीन आवाजमे बापूने कहा : "मुझे घी मलवाना था, तो बा मर क्यों गअीं ?"

बापूकी टहल करनेवाले तो बहुत हैं। अगरचे सबोंके आग्रह पर बापूने फिरसे घी मलवाना शुरू तो किया, लेकिन बा की-सी लगन और भावना दूसरे कहाँसे लावे ?

* * *

बा काफ़ी नियमित रीतिसे अपनी डायरी लिखती थीं। अुनकी डायरीके कुछ नमूने नीचे दिये है।

१९३३की लडाअीके दिनोंमे बा गाँवोंमें घूमती थीं। अुस समयकी अुनकी डायरीसे :

सोजित्रा,

ता० २८-१-'३३

६ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। रावजीभाअीके घर गअी। सब बहनोंसे मिली। बातचीत। आराम। अखबार पढा। लिम्बासीके लिअे रवाना हुअी, वहाँके भाअी-बहनोंसे मिलकर अुनके सुख-दुःखकी बातें सुनीं। वापस लौटी। मलातज आकर सो गअी।

मलातज,

२९-१-'३३

६।।। प्रार्थना। नित्यकर्म। पत्रिका सुनी। बापूको पत्र लिखा। खाँधली और त्राणजा जाकर वापस आअी।

मलातज,

३०-१-'३३

६।। प्रार्थना। नित्यकर्म। कन्याशाला और अन्त्यजोंकी बस्तीमे जाकर हरिजनोंसे मिल आअी। वे धन्धा वगैरा क्या करते है, सो सब देखा। बादमें प्रार्थना की।

४–२–'३३

५ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। ८ बजे परिषद्‌का प्रोग्राम था। अुसमें ७ बहनें पकड़ी गअीं। बादमें थाने पर ले जाअी गअीं। नाम लिख लिये। फिर भोजनके लिअे पूछा। गाँवसे खाना आया। भोजन किया। स्टेशनके लिअे रवाना हुअीं। १२ बजे कठाणा स्टेशन पर अुतरीं। फौजदारने आकर पानी वगैराके लिअे पूछा। बादमें स्टेशन पर ही बैठाया। नाम लिखे और वारण्ट तैयार किये। फिर तीन बजे गाड़ीमें बैठीं। बोरसद जाते हुअे रास स्टेशन पर भाअी-बहन मिलने आये थे। ५ बजे बोरसद पहुँची। मुकदमा चलाकर 'लॉक-अप' में लाये। मजिस्ट्रेटसे मिली। प्रार्थना।

साबरमती जेलकी डायरीसे :

१६–२–'३३

जिस दिन मैं यहाँ आअी, मीराबहन अुसी दिन सवेरे आ गअी थीं, अिससे आनन्द हुआ। हम दोनों साथ रहती हैं। मैं और मीराबहन ठीक ४ की आवाज पर प्रार्थना करती हैं। अुसके बाद सो जाती हूँ। फिर नित्यकर्म। नहाना-धोना वगैरा। कॉफी पीना। १०–१०॥को सुपरिण्टेण्डेण्ट रोज आता है। सुबह डॉक्टर आता है। ११ बजे भोजन। १ घण्टा आराम। २ से ४॥ तक हिन्दी लिखना-पढ़ना और चरखा चलाना। ५॥ को भोजन। फिर घूमना। ७ बजे प्रार्थना। पढ़ना, बातचीत। और ९ बजे सो जाना।

२१–२–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ती हूँ, अनासक्तियोग। फिर थोड़ी देर सो जाती हूँ। नित्यकर्म। ६॥ बजे नहाने जाती हूँ। लौटकर कॉफी पीती हूँ, फिर पढ़ती हूँ। 'जामे जमशेद' पढ़ती हूँ। ११॥ भोजन। आराम। २ से ५ पढ़ना। कातना। भोजन। तार हमेशा ३०० काते।

१६–४–'३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। ४०० तार काते। अखबार पढ़ा। ११॥ भोजन। काता। पढ़ा लिखा। मैं यहाँ भी अेकादशी

करती हूँ । आराम । फिर हिन्दी और गुजराती लिखना, पढना । कॉफी पी । बातें कीं । यहाँ कोअी नयी बात नहीं है । शामको प्रार्थनाके बाद भागवत सुनती हूँ । आजकल मीराबहन चन्द्रमा, पृथ्वी, सूर्य, सबके बारेमे सिखाती है ।

३–५–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीता पढी । नित्यकर्म । कॉफी पी । अखबार पढा । भोजन । कल अखबारसे पता चला कि बापूजी हरिजनोंके लिअे दूसरा अुपवास करनेवाले है। ८–५–'३३को सोमवारके दिनसे शुरू होगा। गांधीजीका अपने अनुयायियों परसे विश्वास अुठ गया है। बापूजीके पास जानेकी बहुत चिन्ता बनी रहती है । बापूजीका यह सवाल, यह तपश्चर्या, बहुत कठिन है ।

८–५–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीता पढी । आजसे बापूजीका महायज्ञ शुरू होता है । हमने यहॉ प्रार्थना की थी । आशा रखी थी कि मुझे बापूजीके पास ले जायॅगे, लेकिन आज तीसरा अुपवास हो चुका है, मुझे बुलाया नहीं । आजकल तो अखबारकी राह देखती हूँ कि अुसमे क्या होगा? 'हरिजन' पढा । मन तो बेचैनका बेचैन ही रहता है ।

१०–५–'३३

कल समदास मिलने आया था । अिस बार मेरे नसीब फूट गये है । नहीं तो मुझे क्यों न ले जाते? क्या करूँ? बहुत चिन्ता होती है । अिस बार भी मैं दूर हूँ । मैंने बापूजीको तार किया कि मुझे आपके पास आना है, यहॉ मेरा जी बहुत घबराता है । अुनका तार आया, धीरज रखो । फिर दूसरा तार आया कि हम सरकारसे अिजाजत नहीं मॉग सकते, शान्ति रखो । फिर तो मै कातती थी, प्रार्थना करती थी और कुछ अच्छा ही नहीं लगता था ।

बा को बापूजीके पास ले जानेके बादकी डायरीसे :—

१६–६–'३३

४ बजे प्रार्थना । गीतापाठ होता है । फिर नित्यकर्म । ५॥ बजे बापूको खाना दिया । दूध वगैरा । ६॥ के बाद मैं नहाने जाती हूँ ।

लौटकर तुलसीको पानी सींचा। लालजीके दर्शन करके कॉफी पी। लाल दवाके कुल्ले किये। ९ बजे बापूजीको खाना दिया। फिर मिट्टीकी पट्टी बाँधी। ११ बजे भोजन। १२ बजे बापूजीको खाना दिया। फिर आराम। पैरोंमें घी मला। काता — तार २००।

९-७-'३३

४ बजे प्रार्थना। गीताजी। फिर नित्यकर्म। बापूको खाना दिया। यहाँ और क्या काम है? बापूजीके सिवाय दूसरा कोअी नहीं है। बालकृष्ण बापूजीका खूब काम करता है। और प्रभावती तो अुनके पाससे हटती ही नहीं। केशू भी खडा रहता है। फिर मैं क्या करूँ? बापूजीके पास जाती हूँ और लौट आती हूँ। अुन सबके बीच बैठना मुझे अच्छा नहीं लगता। काता।

१७

कर्मयोगी बा

गीताजीमें कहा है कि **योग: कर्मसु कौशलम्**। अिस अर्थमें बा सचमुच कर्मयोगी थीं। अेक मिनट भी बेकार बैठे रहना अुनके लिअे अस्वाभाविक हो गया था। तिस पर खुद जो काम करतीं, अुसे खूब कुशलतासे और व्यवस्थित रीतिसे करती थीं। अगर यह कहें कि व्यवस्थाकी तो वे मूर्ति ही थीं, तो गलत न होगा। कोअी चीज अपनी जगह पर न हो, तो बा की निगाह अुस पर गये बिना न रहती। "यह चीज यहाँ क्यों पडी है? यहाँ कोअी झाडता-बुहारता नहीं क्या?" वगैरा सवाल अुनके मुँहसे निकले बिना रहते ही नहीं, और वे खुद ही सारी चीजोंको क़रीनेसे जमाने लग जातीं। जब बापूकी कुटियामें जातीं, तो वहाँ भी अुनकी नजर बापूके बरतनों, खडाअूँ, चप्पल, घडी, कपडे, वगैरा पर गये बिना न रहती। घडी और चप्पलको पोंछकर अुनकी जगह रख देतीं। बरतन बिना मले पडे रह गये हों, तो खुद जाकर माँज लातीं। बा की अिस पैनी दृष्टिके कारण अुनके आसपासवालोंको बहुत चौकन्ना रहना पड़ता।

आश्रमवासियोंमे भी किसीने कपडे ठीकसे न पहने हों, बाल ठीकसे न सँवारे हों, तो बा सहज भावसे कह अुठतीं : "कपडे ठीकसे क्यो नहीं पहने? यह क्या जैसे-तैसे — लथर-पथर — लपेट लिया है? बाल क्यो नही सँवारे?" वगैरा। बा खुद तो व्यवस्थित थीं ही, लेकिन दूसरोंसे भी वे अुतनी ही अुम्मीद रखती थीं। अिस वजहसे जब बा के लिअे रोटी या साग बनाना होता, तो बनानेवालेको खूब सावधान रहना पडता। लडकियाँ तो अिस कारण बा से डरा भी करती। बा ज़्यादा तो कुछ कहती नहीं थीं, मगर टीकाका अेकाध शब्द जरूर कह दिया करतीं।

अिस अुम्रमे भी बा में आलस्यका नाम नहीं था। बा को अल्साकर सोते तो किसीने शायद ही कभी देखा हो। अुनका अुद्यम आजकलके नौजवानोंको भी शरमानेवाला था। कभी रसोअीमे, तो कभी साग काटनेमे, और कभी कातनेमे, यों अेकके बाद अेक अुनका काम चलता ही रहता।

बा के लिअे पाखानेका जुदा बन्दोबस्त कर देनेका सबका बहुत आग्रह होने पर भी गरमी हो, सरदी हो या बारिश हो, वे हमेशा सार्वजनिक पाखानेका ही अुपयोग करतीं। रातका 'पॉट' भी खुद ही साफ कर लिया करतीं। बा के कमरेमे अुनके साथ हमेशा दो-तीन लडकियाँ तो होतीं ही, लेकिन बा अपना थोडा-सा भी काम अुन लडकियोंसे न करवातीं। अुल्टे, कभी किसी लडकीको देर हो जाती, तो खुद ही कमरा साफ करने लग जातीं। सुबह अुठकर दतौनके लिअे गरम पानी भी खुद रसोअीघरमें जाकर ले आतीं। दतौनको अपने हाथों ही कूट भी लेतीं। पिछले ५–६ सालसे तो बा की तन्दुरुस्ती बहुत ही गिर गअी थी। बापू रोज बा से कहते : "तेरी अितनी सारी लडकियाँ है, फिर तू क्यों अितनी दौड-धूप करती है?" जब बीमार होती, थोडे दिनके लिअे बा दूसरोंसे काम ले लिया करतीं, लेकिन जरा अच्छा मालूम होते ही फिर खुद ही अुठकर करने लगतीं। जब वे देखतीं कि फलॉ आदमी सच्चे दिलसे काम करनेको तैयार है, तो अुसे कभी-कदास कोअी काम सौंपतीं, और वह काम भी अैसा होता कि जिसे वे खुद न कर पातीं।

बा बहुत ही स्पष्टवक्ता थी। नये आनेवालोंको कभी-कभी अिससे बुरा लग जाता। लेकिन कुछ दिनोंके अन्दर बा के स्वभावको जान लेनेके

बाद अुनकी भाषामे मिठास मालूम होने लगती। बापूजीने कअी दफा कहा है: "मेरे और बा के निकट सम्पर्कमे आनेवाले लोगोंमे अैसे लोगोंकी तादाद ही ज्यादा है, कि जिन्हे जितनी श्रद्धा मुझ पर है, अुससे कअी गुनी ज्यादा श्रद्धा बा पर है।" अेक दिन घनश्यामदासजी बिड़लाने मेरे पिताजीसे विनोदपूर्वक कहा: "आपके आश्रममे सभी थोड़े-बहुत 'चक्रम' (खब्ती) तो हैं ही।"

मेरे पिताजीने पूछा: "क्या बापू भी?"

जवाबमे अुन्होंने कहा: "हॉ, हॉ, वे तो और सबसे बड़े। साबरमती आश्रमका तो मुझे बहुत तजरबा नहीं है, लेकिन सेवाग्राममे मुझे तो अेक बा और दूसरी दुर्गाबहनको छोड़कर और कोअी समझदार आदमी नजर नहीं आता।"

बा को अपने नाते-रिश्तेदारों और बेटों-पोतोंके लिअे सहज ही खूब प्रेम था। बा ने तो अपना जीवन बापूको, यानी आश्रमको, सौंप दिया था, अिसलिअे आश्रम ही अुनका घर था। कभी किसी लड़केके घर जाती जरूर थीं, लेकिन कुछ ही दिनोंमे वापस आ जाती थीं। आश्रम तो सार्वजनिक पैसोंसे चलता है, अैसी हालतमे बच्चोंको कुछ दिनके लिअे अपने पास बुलाना हो, या किसीके बीमार होने पर अुसे अपने पास रखकर अिलाज कराना हो, तो क्या किया जाये? बापूने अिसका रास्ता निकाला। बच्चे आयें, रहें और आश्रममेसे किसीकी सेवा लें, तो आश्रमको अुसका खर्च दे दिया करें। यह तो हम आसानीसे सोच सकते हैं कि बा को यह चीज कितनी दुखदायी मालूम हुअी होगी। दादा-दादीके घर तो बच्चे मौज मनाने जाते हैं। बच्चोंको देखकर दादी तो अुन पर वारी-वारी जाती है। वहॉ ये दादा तो बच्चोंको अेक जून मुफ्त खिलाते भी नहीं। लेकिन धन्य है बा को! अुन्होंने बापूकी अिस बातको भी मंजूर किया। जब बच्चे जानेको होते, बा खुद ही आश्रमके व्यवस्थापकसे कह देतीं: "देखिये, अब ये लोग जानेवाले हैं। अिन पर जो भी खर्च हुआ हो, अुसका बिल अिन्हे दे दीजियेगा।"

सन् १९२८ की बात है। साबरमती आश्रमकी जमीनसे कुछ दूर अेक बॅगला था। वहॉ चर्मालयका प्रयोग शुरू किया गया और अेक

आश्रमवासी भाअी कुछ मजदूरोंके साथ वहाँ रहने गये। अेक दिन सुबह खबर आयी कि लुटेरोंकी अेक टोलीने वहाँ रहनेवाले लोगोंको मारपीटकर अुनका सारा सामान लूट लिया है। गरीब मजदूरोंके घरमे धन-दौलत तो क्या होती? लेकिन अिस घटनासे वे घबरा गये और अुस जगह रहनेसे अिनकार करने लगे। बापूने कहा: "तो हम बिना मजदूरोंसे ही अपना काम चलावेंगे।" सभी मजदूरोंको रुखसत दे दी गअी। शामकी प्रार्थनामें बापूने अित्तला दे दी कि कलसे हम सबको गोशालाका काम करना है।

दूसरे दिन निश्चित समय पर दूसरोंके साथ बा भी गोशालामे पहुँचीं। गोशालाके व्यवस्थापक सोचमें पड़ गये कि बा को क्या काम दे? बा समझ गअीं। अुन्होंने सरलतासे कहा: "काम क्यों नहीं बताते? गायोंके लिअे 'गवार' नहीं दलनी है?"

व्यवस्थापक बोले: "लेकिन बा आपको —"

बा: "नहीं, नहीं, लाओ।"

और बा जाकर चक्कीपर बैठ गअीं! फिर गाती-गाती 'गवार' दलने लगीं।

१९३१ मे अेक बार बा वेडछी आश्रम गअी थीं। आश्रमके व्यवस्थापकने सोचा था कि बा आकर खटिया पर बैठेंगी और सभाका वक्त होनेपर सभामे आयेंगी। अिसीलिअे खटिया तैयार रखी थी। आते ही बा से कहा गया: "बैठिये।" लेकिन बा क्यों बैठने लगीं? वे तो सीधी रसोअी-घरमे गअीं और रसोअी बनानेमे मदद करने लगीं। व्यवस्थापककी पत्नी दंग रह गअीं: 'अितनी बडी बा हमे रसोअीमे मदद करती है!' अुन्होंने कहा: "बा, आप रहने दे, मै अभी बना लूँगी।" लेकिन बा क्यों छोडने लगीं! वे बोलीं: "सौ हाथ, सुहावनी बात। अभी रसोअी बना डालेंगी और फिर अेक साथ सभामे चलेंगी।" और सचमुच अुन्होंने अैसा ही किया।

किसी दिन सुबह या शामको रसोअीके वक्त आम सभाका या अैसा कोअी दूसरा कार्यक्रम होता, तो बा रसोअीघरमे काम करनेवालोंसे कहतीं: "तुम सब जाओ। तुम छोटे हो। तुम्हे देखने और घूमनेकी अिच्छा रहती है। रसोअीका काम मैं कर डालूँगी।"

१९४१ मे बा मरोली गअी थीं। वहाँसे वे सेवाग्राम आनेवाली थीं। सब अुनकी राह देख रहे थे। अेक बहन तो बा से मिलनेके लिअे ही

अुमर अुस वक्त अुसकी थी। अिसलिअे अुस समयके मेरे जीवनके संस्कार अुस पर पड़े है। संस्कारोंकी यह बात चाहे जैसी हो, मगर हरिलालभाअीने बापूके खिलाफ जो बगावत की, अुसकी खास वजह तो, जैसा कि हरिलालभाअी कहते है, यह है कि बापूने खुद अुनको और अुनके भाअियोंको न सिर्फ ठीक-ठीक तालीम ही नहीं दी, बल्कि अपने पास रहनेवाले दूसरोंको जब वे पढ़ाअीके अच्छेसे-अच्छे मौके देते थे, तब अुन्होंने जान-बूझकर अपने निजके लड़कोंको शिक्षाके अवसरोंसे वंचित रखा। हरिलालभाअीका खयाल है कि अुनकी बगावतकी जड़मे यह अन्याय है। बा ने अपनी सादी किन्तु दूरतक पैठनेवाली व्यावहारिक समझदारीसे बहुत-सी अुलझनोंको सुलझानेमे बापूकी मदद की है, लेकिन हरिलालभाअीके मामलेमें बा विशेष कुछ न कर सकीं।

सन् १८९७की जनवरीमे जब बापू बा के साथ डरबन पहुँचे, तो अुनके साथ तीन बालक थे। १० सालकी अुम्रका अेक भांजा, ९ सालके हरिलालभाअी और ५ सालके मणिलालभाअी। बापूने खुद ही लिखा है कि अिन्हे कहॉ पढाना, यह अुनके सामने अेक बड़ा विकट सवाल था। गोरोंके लिअे चलनेवाले मदरसोंमे गांधीके लड़कोंके नाते बतौर मेहरबानीके या अपवादके अुन्हे भरती किया जा सकता था। लेकिन दूसरे सब हिन्दुस्तानी बालक जहॉ न पढ सके, वहॉ अपने बालकोंको भेजना बापूको पसन्द न था। अीसाअी मिशनके मदरसोंमें भेजनेके लिअे बापू तैयार न थे। तिसपर, गुजरातीके जरिये तालीम दिलानेका आग्रह था और अिसका कोअी अिन्तजाम किसी मदरसेमे नहीं था। घर पर पढानेवाला कोअी अच्छा गुजराती शिक्षक मिल नहीं सका। बापू खुद पढानेकी कोशिश करते, लेकिन कामकी वजहसे अुसमे बहुत अनियमितता आ जाती। बापूका अपना अेक खयाल यह भी था कि बच्चोंको मा-बापसे अलग नहीं रहना चाहिये। क्योंकि जो तालीम अच्छे, व्यवस्थित घरमे बालक सहज पा जाते है, वह छात्रालयोंमे नहीं मिल सकती। अिसीलिअे वे बच्चोको वापस हिन्दुस्तान भेजना भी नहीं चाहते थे। फिर भी भांजेको और हरिलालभाअीको कुछ महीनोंके लिअे देशके अलग-अलग छात्रावासोंमें रखकर देखा। लेकिन कुछ ही समयमे अुन्हे वापस बुला लेना पड़ा।

हरिलालभाओीको अिस बातका बड़ा दुःख था कि अुनकी पढ़ाओीका कोओी पक्का अिन्तजाम नहीं हो सका। यही नहीं, बल्कि बड़ेपनमें भी अिसके लिअे अुनके मनमें बापूके प्रति रोष बना रहा। "बापूने अच्छी शिक्षा पाओी है, तो वे हमको अच्छी शिक्षा क्यों नहीं दिलाते? बापू सेवाभावकी, सादगी और चारित्र्यके निर्माणकी बातें करते हैं, लेकिन जो शिक्षा अुन्हें मिली है, वह न मिली होती, तो देश-सेवाके जो काम वे आज कर सकते हैं, अुन्हें कर सकते क्या? हम भी पढ़-लिखकर अिसी तरह देश-सेवाके काम करेंगे और अपनी शक्तियोंका विकास करनेके बाद सादगी वगैरा भी रखेंगे। सादा और सेवापरायण जीवन बितानेके खिलाफ हमें कुछ कहना नहीं है। लेकिन अनपढ़ रहकर हम किस तरह सेवा कर सकेंगे, सो हमारी समझमें नहीं आता।" यह हरिलालभाओीकी तमाम दलीलोंका निचोड़ था।

मि० पोलाक और मि० कैलनबेकका भी कुछ हद तक अैसा खयाल था कि बापू अपने बच्चोंकी शिक्षाके बारेमें लापरवाह रहते हैं। मि० पोलाक बहुत चुभती भाषामें बापूसे कहते कि आप अपने बालकोंको अच्छी अंग्रेजी तालीम न देकर अुनका भविष्य बिगाड़ रहे हैं। मि० केलनबेकका यह खयाल था कि टॉल्स्टाय आश्रममें और फिनिक्स आश्रममें दूसरे शरारती, गन्दे और आवारा लड़कोंके साथ बापू जो अपने लड़कोंको शामिल होने देते हैं, अुसका अेक ही नतीजा होगा कि अुन्हें आवारा लड़कोंकी छूत लगेगी और वे बिगड़े बिना न रहेंगे। बा को भी अिस बातका असन्तोष बना रहता था कि बापू लड़कोंकी शिक्षाकी कोओी चिन्ता नहीं करते। हरअेक माताकी यह महत्त्वाकांक्षा होती ही है कि अुसके बच्चे बड़े बनें और नाम कमायें, फिर भले वे कैसे ही क्यों न हों! तिसपर ये तो खूब चालाक और तेजस्वी बालक थे। अिसलिअे बा की महत्त्वाकांक्षा सकारण थी। अिन सब फरियादोंके जवाबमें बापू शिक्षाके सिद्धान्तोंकी और जीवनके ध्येयकी अपनी फिलॉसफी पेश करते। मि० पोलाक और मि० कैलनबेक सिर हिलाते और बा मन मारकर बैठी रहतीं।

सन् १९०४ से बापूने अपने जीवनमें जो क्रान्तिकारी परिवर्तन करने शुरू किये थे, वे भी शायद हरिलालभाओीको अच्छे न लगे हों।

लेकिन अिस बातकी अुन्हें ज़्यादा परवाह नही थी। वे अैसे न थे कि बापूके धन न कमाने पर नाराज हों। अुन्हे अपने पिताकी कमाअी पर जिन्दगी नही गुजारनी थी। अुनको तो पढ़-लिखकर अपनी निजकी मेहनतसे ही बड़े बननेकी हवस थी। आखिर जब अुन्होंने देखा कि बापूके ही ऑफिसमे मुंशीका काम करनेवाले मि० रिच और मि० पोलाक बापूकी मदद और अुनके बढावेसे अिग्लैण्ड जाकर बैरिस्टर बन आये है, और दूसरे दो हिन्दुस्तानी सज्जन मि० जोसफ रॉयपन और मि० गॉडफ्रे भी बापूकी प्रेरणासे विलायत गये और बैरिस्टर बनकर अपने धन्धेसे लग गये, और अिसके बाद सत्याग्रहकी लडाअीमे शामिल होनेवाले अेक पारसी नौजवान श्री सोहराबजी अडालजाको बापूने खुद बैरिस्टर बननेके लिअे विलायत भेजा, अिस खयालसे कि बापूकी गैरहाजिरीमे सोहराबजी कौमकी खिदमतका काम सँभाल लेंगे,— दुर्भाग्यसे अिस होनहार नौजवानका असमयमे अवसान हो गया — तब तो हरिलालभाअीसे नहीं रहा गया। अुस वक्त अुनकी अुम्र कोअी २०–२१ सालकी थी। दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमे अुन्होंने खासा हिस्सा लिया था और तीन दफा जेल भी हो आये थे। वे सोचा करते थे कि दूसरे जिन नौजवानोंको बापू बैरिस्टर बनने देते है, या बननेमे मदद करते है, अुनकी-सी लियाकत मुझमें नही है क्या? आखिर अुन्होंने बगावत करके पिताका साथ छोडने और देशमे आकर पढ़नेका निश्चय किया। बेशक बापू अपने विचारोमें दृढ थे, लेकिन पुत्रको यह सब समझाकर अुसे अपने साथ न रख सके, अिसका दुःख, अिसकी बेचैनी, अुन्हें कुछ कम न थी। अिस अवसर पर बा की क्या दशा हुअी होगी, अिसकी तो कल्पना करना भी कठिन है। बापूके सामने तो अेक बडे सिद्धान्तका सवाल था और पुत्रने अुनका जो त्याग कर दिया था, अुसके दुःखको सह लेनेमें सिद्धान्तपालनका आश्वासन भी अुनके पास तो था। लेकिन बा के पास क्या था? बा तो चाहती थी कि पुत्रको प्रचलित शिक्षा मिले। लेकिन बापूके सिद्धान्तके कारण वे पुत्रके लिअे अैसी शिक्षाकी कोअी व्यवस्था कर नहीं सकती थी। पति और पुत्रके बीच अुनका दिल कितना टूटा होगा? अुन्होंने कितनी बेचैनीका अनुभव किया होगा? कितनी आकुल-व्याकुल वे रही होंगी?

हरिलालभाअीने हिन्दुस्तान आकर पढाअी शुरू की। बापूने अुनके खर्चका सारा अिन्तजाम कर दिया। लेकिन हरिलालभाअी पढाअी पूरी नहीं कर सके। पढाअीके दिनोंमे काकाकी और दूसरे नाते-रिश्तेदारोंकी सलाह और मददसे अुन्होंने अपनी शादी की और अेक दो बार मैट्रिकमे नापास होनेके बाद पढाअी छोड दी और काम-धन्धेसे लग गये। धन्धेमे अुन्होंने अच्छी कामयाबी पाअी। फिनिक्स आश्रमके अपने साथियोंको लेकर बापूके हिन्दुस्तान आने पर कुछ दिनों बाद अुन्होंने बापूके नाम अेक पत्र लिखा। "मेरे पिताजी, मि० अेम० के० गांधी, बार-अेट्-लॉके नाम खुला पत्र", अिस नामसे, अेक छोटी पुस्तिकाके रूपमे, अुन्होंने अपना वह पत्र छपवाया था। मेरा खयाल है कि अखबारोंमे वह पत्र नहीं छपा। लेकिन १९१७मे मेरे पिताजीके आश्रममे दाखिल होनेके बाद हरिलालभाअीसे ही अुन्हे वह पढनेको मिला था। अुस पत्रका सार देते हुअे वे अिस प्रकार लिखते है:

"अुस पत्रकी लिखावट और अुसकी दलीलोंको पढ़कर हरिलालभाअीकी शक्तियोंके बारेमे मेरा अूँचा खयाल बन गया था। बापूके हाथों बा के साथ, अपने छोटे भाअियोंके साथ और खुद अपने साथ जो अन्याय हुआ था, अुसका वर्णन करके हरिलालभाअीने अुसमे अपना रोष व्यक्त किया है और बापूसे यह अनुरोध किया है कि 'आपने मुझे न पढाया, न सही, लेकिन अब मेरे भाअियोंको पढाअिये।' व्रतोंके लिअे बापूके शौकको देखकर आश्रममे जो भी कोअी व्रत लेता — अलोना खाता, अेक बार खाता या फलाहार करता — वह किस तरह बापूका लाडला बन जाता, अैसोंको बापू किस तरह अेकदम ऋषि, मुनि, तपस्वीकी बडी-बडी अुपाधियाँ दे डालते और किस तरह अुन तपस्वियोंको और सबोंकी टीका करनेका परवाना मिल जाता, अिसका अुन्होंने दिलचस्प वर्णन किया है। आश्रम-जीवनके नये जोशमे आकर कठोर व्रतों और नियमोंका पालन करनेवाले और फिर कुछ ही समयमे अुन तमाम व्रतों और नियमोंको व आश्रमको भी छोड़कर चले जानेवाले लोग जब बा के बारेमे टीका करते और कहते कि 'बा तो चीनी ज़्यादा खाती है' या 'बाको तो कॉफी पीनेके लिअे चाहिये,' तो यह सब सुनकर अुन्हें कितना गुस्सा आता, अिसका भी अुन्होंने वर्णन

किया है। दूसरे, मणिलालभाअी या रामदासभाअीको जब अुनकी पढ़ाअीके समयमे दूसरोंके काम सौंपे जाते और वे अुस पर अपना कुछ असन्तोष प्रकट करते, तो बापू अुनसे कहते : 'तुम . . . की चाकरी करते हो, यही तुम्हारी अुत्तम पढ़ाअी है। जो आदमी अपना फ़र्ज अदा करता है, वह हमेशा ही पढ़ता है। तुम कहते हो कि पढ़ाअी छोड़नी पड़ती है, लेकिन दरअसल अैसा है ही नहीं। तुम सेवा करते हुअे भी अभ्यास ही करते हो। अक्षरज्ञान तो बादमें भी हासिल किया जा सकता है, लेकिन सेवाका अवसर बादमें आवेगा ही, अिसका कोअी निश्चय नहीं।' अिस तरहकी बातें कहकर नाहक अुन्हें बड़प्पन देते है, और अुनको अपनी पढ़ाअी आगे नहीं बढ़ाने देते। कहावत मशहूर है कि 'वर मरो, कन्या मरो, मेरी गोदका भाड़ा भरो'। बस, ठीक अिसी तरह आश्रममें सब कोअी बरतते हैं — 'कुछ भी हो, मगर बापूजीको खुश करो।' वगैरा बातें लिखकर आश्रममें अुनको जिस दम्भके दर्शन हुअे थे, अुसको भी अुन्होंने खोला है।

"यह समूचा पत्र मैंने करीब २५ साल पहले अेक बार पढ़ा था। अुसमेंसे महत्त्वकी जो बातें याद रह गअी है, सो तुझे लिखी है। वैसे पत्र तो बहुत लम्बा है। अपने अिस पत्रमें अुन्होंने यह भी बताया है कि पढ़ाअीके दिनोंमें ही किस तरह अुन्होंने अपनी शादी कर ली और फिर पढ़ नहीं पाये।"

बापू पर यह आक्षेप किया जाता है कि अुन्होंने अपने बालकोंकी पढ़ाअीका ठीक-ठीक प्रबन्ध नहीं किया। अिसके बारेमें बापूने अपनी सफाअी और अिस सम्बन्धकी अपनी विचारधाराका 'आत्मकथा' में विस्तारसे वर्णन किया है, अिसलिअे यहाँ अुसे दोहराना जरूरी नहीं। लेकिन बा की विचारधारा कुछ बापूके जैसी नहीं थी, अिसलिअे बा के खयालसे तो यह बड़े दुःखकी ही बात थी।

जिन दिनों हरिलालभाअीने वह पत्र लिखा था, अुन दिनों बहुत करके वे कलकत्तेमें किसी तरहका कोअी व्यापार करते थे। सन् १९२०में अुनकी धर्मपत्नी सौ० गुलाबबहन गुज़र गअीं। अुस वक्त तक हरिलालभाअीका जीवन कुछ ठीक रहा। १९१९के रौलट सत्याग्रहमें सैनिकके नाते अुन्होंने अपना नाम भी दर्ज कराया था। लेकिन गुलाबबहनके गुजर जानेके बाद हरिलालभाअी गैर रास्ते चल पड़े। बापूने और बा ने अुनको ठीक रास्ते

लानेकी बहुत कोशिशें कीं, लेकिन कोअी नतीजा न निकला। वे मुसलमान बन गये। फिर लौटकर आर्यसमाजी बने। ये सारी बातें तो दुनिया जानती ही है। हरिलालभाअीके दो पुत्रों (अिनमेंसे अेक गुजर गये है) और दो पुत्रियोंको बा ने अपने पास रखकर ही पाला-पोसा और अपने मनको मनाया। लेकिन जब अुन्होंने हरिलालभाअीके मुसलमान होनेकी बात सुनी, तबके अुनके दुःख और दर्दका वर्णन करना सम्भव नहीं। हरिलाल-भाअीको लिखे गये अुनके नीचे लिखे पत्रमे वह कुछ-कुछ व्यक्त हुआ है।

"चि० हरिलाल,

"मेरे सुननेमे आया है कि कुछ समय पहले मद्रासमें, आधी रातको, आम रास्ते पर, शराबके नशेमें अूधम मचानेके कारण पुलिसने तुझे पकड़ा था और दूसरे दिन मजिस्ट्रेटके सामने पेश किये जाने पर अुन्होंने तुझे १ रुपयेके जुर्मानेकी सजा की थी। तुझपर अुन्होंने यह जो अितनी दया दिखाअी, अिससे पता चलता है कि वे बहुत ही भले आदमी होने चाहिये। तुझे अैसी नाममात्रकी सजा देकर मजिस्ट्रेटोंने भी तेरे पिताके लिअे अपने सद्भावको प्रकट किया है।' लेकिन अिस घटनाका ब्योरा सुननेके बाद मुझे तो बहुत ही दुःख होता रहा है। मै नहीं जानती कि अुस रातको तू अकेला था, या तेरे किन्हीं मित्रोंके साथ था। लेकिन तेरा यह आचरण तो सचमुच बहुत ही अनुचित था।

"मुझे सूझ नहीं पड़ता कि मैं तुझसे क्या कहूँ? पिछले कअी सालोंसे मैं तुझे बराबर मनाती रही हूँ कि तू अपने जीवन पर अंकुश रख। लेकिन तू तो दिन-ब-दिन ज़्यादा ही ज़्यादा बिगड़ता जाता है। अब तो मेरे लिअे जीना भी कठिन हो पड़ा है। अपने माता-पिताको तू अुनके जीवनकी सन्ध्याके दिनोंमें कितना दुःख पहुँचा रहा है, अिसका तो तनिक विचार कर।

"तेरे बापूजी अिस बारेमे कभी किसीसे बातचीत नहीं करते, लेकिन तेरे चाल-चलनसे लगनेवाले आघातोंके कारण अुनका दिल चूर-चूर हुआ जाता है। हमारी भावनाको यों बार-बार दुखाकर तू अेक बड़ा पाप कर रहा है। हमारे घर पुत्रकी तरह पैदा होकर तू दुश्मनकी तरह बरत रहा है।

"मेरे सुननेमें आया है कि अिधर-अिधर तू अपने बापूकी बहुत टीका और निन्दा करने लगा है। तेरे समान बुद्धिशाली पुत्रको यह शोभा नहीं देता। अपने बापूजीकी निन्दा करके तू अपनी ही पोल खोलता है, अिसका तुझे जरा भी खयाल नहीं है। अुनके दिलमें तेरे लिअे सिवा प्रेमके और कुछ भी नहीं है। तू जानता है कि चारित्र्यकी शुद्धताको वे बहुत ही महत्त्व देते है। लेकिन तूने अुनकी अिस सलाहको तनिक भी नहीं माना। अितना होने पर भी अुन्होंने तो तुझे अपने साथ रखनेकी, तेरे खाने-पीने और पहनने-ओढ़नेकी जरूरतोंको पूरा करनेकी, और तेरी सार-सँभाल रखनेकी भी अपनी तैयारी बताअी है। लेकिन तू तो सदा कृतघ्न ही रहा है। अिस दुनियामें अुनके सिर कितनी बडी जिम्मेदारियाँ है। वे अिससे अधिक कुछ तेरे लिअे कर नहीं सकते। वे तो सिर्फ अपनी अिस कमनसीबीके लिअे शोक ही कर सकते है। भगवानने अुनको प्रबल अिच्छाशक्ति दी है। अुनके जीवनकी अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिअे अीश्वर अुनको आवश्यक दीर्घायु दे। लेकिन मैं तो अेक कमजोर व बूढ़ी स्त्री हूँ, और तू जो मानसिक व्यथा पैदा करता है, अुसे सहनेमें असमर्थ हूँ। तेरे बापूजीको हररोज कअी लोगोंकी तरफसे तेरे चाल-चलनके बारेमें शिकायती चिट्ठियाँ मिलती हैं। बदनामीके ये सारे कड़वे घूँट अुन्हें पी जाने पडते है। लेकिन मेरे लिअे तो तूने जाने लायक अेक भी जगह नहीं रखी। शरमकी मारी मैं मित्रों या अजनबियोंके बीच घूम-फिर भी नहीं सकती। तेरे बापूजी तो तुझे हमेशा माफ करते ही रहते हैं। लेकिन परमात्मा तेरे आचरणको सहन नहीं करेगा।

"मद्रासमें तो तू किन्हीं अिज्जतदार और जाने-माने सज्जनके घर मेहमानकी तरह ठहरा था, लेकिन अुनके घरको छोड़कर तूने आम रास्ते पर अैसा दुर्व्यवहार करके अुनकी मेहमानदारीका दुरुपयोग किया है। अपने अिस व्यवहारसे तूने अुनको कितना नीचा दिखाया होगा? हररोज सुबह जागती हूँ, तब दिलमें यही धुक-धुकी बनी रहती है कि कहीं तेरे किसी नये दुराचरणकी कोअी ताजा खबर तो नहीं आयी है। मैं अक्सर सोचती हूँ कि तू कहाँ रहता होगा? कहाँ सोता होगा? क्या खाता होगा? शायद तू अभक्ष्य चीजे भी खाता होगा। अैसे-अैसे

अनेक विचारोंके कारण कभी-कभी रात मुझे नींद भी नहीं आती। कभी बार दिल होता है कि तुझसे मिलूँ, लेकिन मुझे तो यह भी पता नहीं कि तू कहाँ मिल सकता है। तू मेरी पहली कोखका लड़का है, और तेरी अुमर भी ५० सालकी हो गअी है। कहीं तू मेरी भी बेअिज्जती न कर दे, अिस आशंकासे तेरे पास आनेमें भी मैं डरती हूँ।

"मैं नहीं जानती कि तूने अपने पैदाअिशी धर्मको क्यों बदला है। यह तेरा अपना निजी सवाल है। लेकिन मैं सुनती हूँ कि तू निर्दोष और अज्ञान लोगोंको अपनी राह चलनेकी सलाह दे रहा है। तुझे अपनी मर्यादाका भान कब होगा? धर्मके बारेमें तू जानता क्या है? तेरे बापूजीके नामकी वजहसे लोग तेरे कहने पर गलत रास्ते बहक जायेंगे। तू धर्म-प्रचार करनेके योग्य नहीं। तू तो पैसेका गुलाम बन गया है। जो लोग तुझे पैसा देते हैं, वे तुझे अच्छे लगते हैं। लेकिन तू तो शराबखोरीमें सारा पैसा बरबाद कर डालता है। और फिर सभाके मंच पर खड़ा होकर भाषण करता है। तू अपने आपका और अपनी आत्माका हनन कर रहा है। अगर तू अैसा ही करता रहा, तो वक्त आयेगा, जब सभी तुझसे दूर भागेंगे। अिसलिअे मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि तू शान्तिके साथ विचार करके अपनी अिस मूर्खताको छोड़ दे। तेरा धर्म-परिवर्तन मुझे अच्छा नहीं लगा था, तो भी तूने अपने जीवनको सुधार लेनेके अपने निश्चयके बारेमें जो बयान दिया था, अुससे मैंने संतोष माना था और आगे तू समझदारीके साथ अपना जीवन बितायेगा, अिस विचारसे मन-ही-मन मैं खुश भी हुअी थी। लेकिन मेरी यह आशा भी धूलमें मिल गअी है। कुछ ही वक्त पहले बम्बअीके तेरे कुछ पुराने मित्रों और शुभचिन्तकोंने तुझे पहलेसे भी ज्यादा बुरी हालतमें देखा था। तू जानता है कि तेरे आचरणसे तेरे पुत्रको कितना दुःख होता है। साथ ही, तेरे अिस विचित्र व्यवहारसे अुत्पन्न होनेवाले शोकके भारको ढोना तेरी लड़कियों और दामादोंके लिअे दिन-ब-दिन ज्यादा मुश्किल होता जा रहा है।"

हरिलालभाओीके धर्म-परिवर्तनमें और अुसके बादकी अुनकी हलचलोंमें दिलचस्पी लेनेवाले मुसलमान भाअियोंको सम्बोधन करके बा लिखती हैं:

"मैं आपके कामको समझ नहीं पाती। जो मेरे पुत्रकी मौजूदा हलचलोंमे अमली तौरपर हाथ बॅटा रहे है, अुन्हींको सम्बोधन करके मैं यह कहती हूँ। मैं जानती हूँ, और मुझको यह खयाल करके खुशी होती है कि विचारशील मुस्लिम जनताके बहुत बड़े हिस्सेने और हमारे जिन्दगी भरके मुसलमान दोस्तोंने अिस सारी घटनाकी निन्दा की है। आज अुस महापुरुष, डॉक्टर अनसारीकी कमी बहुत ज़्यादा खटकती है। वे होते, तो अुन्होने मेरे लडकेको और आप लोगोंको भी बहुत नेक सलाह दी होती। लेकिन अुनके जैसे दूसरे कअी प्रतिष्ठित और भले लोग आपमें मौजूद है, और मैं अुम्मीद करती हूँ कि वे आपको मुनासिब सलाह देंगे ही। अिस तथाकथित धर्म-परिवर्तनसे मेरा लड़का सुधरनेके बदले बुरी आदतोंका और ज़्यादा शिकार बन गया है। आपको चाहिये कि आप अुसे अुसकी बदफेलीके लिअे अुलाहना दें और अुसे अच्छी राह पर लायें। कुछ लोग तो मेरे लडकेको मौलवीका अुपनाम देनेकी हद तक बढ गये है। क्या यह वाजिब है? क्या आपका मजहब शराबीको मौलवी कहनेकी अिजाजत देता है? मद्रासमे अुसकी अुस तूफानी हरकतके बाद भी कुछ मुसलमान अुसे स्टेशन पर बिदाअीकी अिज्जत बख्शनेको अिकट्ठा हुअे थे।

"अिस तरह अुसको अितना ज्यादा बड़प्पन देनेमें आपको क्या खुशी होती है, सो मैं समझ नहीं पाती। अगर आप अुसको अपना सच्चा भाअी ही मानते होते, तो अुसके साथ आपका बरताव अैसा न होता। क्योंकि आपका बरताव अुसके लिअे जरा भी फायदेमन्द नहीं है। अगर आपका अिरादा दुनियामें हमारी हँसी करानेका ही हो, तो मुझे आपसे कुछ भी कहना नहीं है। आपसे जो बन पड़े, आप कर सकते हैं। लेकिन अेक घायल माँ की कमजोर आवाज आप पर अपना असर रखनेवाले किन्हीं भाअीके अन्तःकरणको जाग्रत करेगी और मुमकिन है कि वे आपको समझा सकेंगे। लेकिन जो बात मैं अपने लड़केसे कह रही हूँ, अुसीको दोहराकर आपसे कहना मै अपना फर्ज समझती हूँ, और कहती हूँ, कि आप जो कुछ कर रहे है, वह खुदाकी नजरोंमे वाजिब नहीं ठहरता।"

बा को अपने लड़केके लिअे दर्द और हमदर्दी होना स्वाभाविक है। यों, हरिलालभाओी बा और बापूको छोड़कर चले तो गये, लेकिन बा के लिअे तो अुनके दिलमें भी बहुत ही अिज्जत और मुहब्बत रही। वे यह सोचा करते कि राजरानी बननेके लिअे जनमी हुओी बा से बापू नाहक अितनी तकलीफें अुठवाते हैं। बा से मिलनेके लिअे वे कभी-कभी आश्रममें भी आते थे। जब अुनकी हालत बहुत ही खराब हो गओी, तब शायद अुन्हें आश्रममें आते हिचक मालूम होने लगी। लेकिन अिससे बा के लिअे अुनका प्रेम कम कैसे होता? अेक बार वे बहुत ही बुरी — बेहाल — हालतमें बा से मिले थे। अुस समयकी अेक बहुत ही करुण घटना है, जिससे बा के प्रति अुनके भावका साफ पता चलता है।

अेक बार बा और बापू ट्रेनका सफर कर रहे थे। जब जबलपुर मेल कटनी स्टेशन पर पहुँचा, तो वहाँ दूसरे स्टेशनोंसे बिल्कुल अलग अेक जयनाद सुनाओी पड़ा: "माता कस्तूरबाकी जय!" बा को सहज ही अिससे थोड़ा अचंभा हुआ। अुन्होंने खिड़कीकी राह मुँह बाहर निकालकर देखा, तो सामने हरिलालभाओी खड़े थे।

अेक समयका तन्दुरुस्त शरीर बिलकुल जर्जर हो गया था। अगले दाँत सब गिर पड़े थे। कपड़े बिलकुल फटे हुअे थे। खिड़कीके पास आकर अुन्होंने अपनी जेबसे झटपट अेक मोसंबी निकाली और कहा: "बा, यह तुम्हारे लिअे लाया हूँ।"

अिससे पहले कि बा जवाबमें कुछ कहें, बापूजी खिड़कीके पास आ पहुँचे। अुन्होंने पूछा: "मेरे लिअे कुछ नहीं लाया?"

हरिलालभाओीने कहा: "नहीं, यह तो बा के लिअे ही लाया हूँ। आपसे तो सिर्फ यही कहना है कि बा के प्रतापसे ही आप अितने बड़े बने हैं।"

"अिसमें तो कोओी शक ही नहीं। लेकिन क्या तू अब हमारे साथ चलेगा?"

"नहीं, मैं तो बा से मिलने आया हूँ।"

बापू वापस अपनी जगह पर जाकर बैठ गये। माँ-बेटेकी बातचीत आगे चली:

"लो बा, यह मोसंबी।"

"कहाँसे लाया?"

"कहींसे भी लाया होअूँ। तुम्हारे लिअे प्रेमपूर्वक लाया हूँ। भीख माँग कर लाया हूँ।"

बा ने मोसंबी अपने हाथमें ले ली। लेकिन हरिलालभाअीको अिससे पूरा संतोष नहीं हुआ। अुन्होंने कहा:

"बा, यह मोसंबी तुम्हीं को खानी है। तुम न खाओ तो मुझे वापस दे दो।"

"रह, रह, यह मोसंबी मैं ही खाअूँगी।" कुछ देर तक अुनको अेकटक निरखनेके बाद बा फिर बोलीं: "तू अपने हाल तो देख! जरा यह तो सोच कि तू किनका लड़का है! चल, हमारे साथ चल।"

लेकिन अिस अखीरी बातको खतम करना तो वे खूब जानते थे। बोले:

"अिसकी तो बात ही न करो, बा! मैं अब अिस हालतसे अुबर नहीं सकता।"

बा की आँखे छलछला आअीं। गार्डने सीटी दी। ट्रेन चली। चलते-चलते हरिलालभाअीने फिर कहा: "बा, मोसंबी तो तुम ही खाना, भला!"

जब गाड़ी जरा आगे बढ़ी, तो बा को अचानक याद आअी कि अुन्होंने तो अुनको कुछ भी नहीं दिया। बोलीं: "अरे, बेचारेको फल-बल कुछ भी नहीं दिया! भूखों मरता होगा। देखूँ, अब भी कुछ दे सकूँ तो!"

डलियामेंसे फल निकालकर बाहर देखा, तो ट्रेन प्लेटफॉर्म पार कर चुकी थी।

दूरसे अेक क्षीण अवाज सुनाअी पड़ी:

"माता कस्तूरबाकी जय!"

१९

सार्वजनिक जीवनमें

दक्षिण अफ्रीकामें जेल जानेके सिवा बा वहाँके सार्वजनिक कामोंमें शरीक हुआी हों, सो मालूम नहीं होता। लेकिन हिन्दुस्तानमें आनेके बाद बापूजीने जितने भी काम अुठाये, अुन सबमें बा ने अेक अनुभवी सैनिककी अदासे हाथ बँटाया है। बा को आम सभाओं, जुलूसों और अिस तरहके दिखावोंका बिलकुल ही शौक नहीं था। लेकिन जहाँ रचनात्मक काम करना होता, अपनी हाजिरी और हमदर्दीसे लोगोंमें हिम्मत और 'हूँफ' (गरमी) भरनी होती, वहाँ वैसे कामोंके लिअे बा तैयार रही हैं। बापूने हिन्दुस्तान आने पर सत्याग्रहकी पहली लड़ाअी चम्पारनमें छेडी। कहा जा सकता है कि अुसमें सविनयभंग करनेके साथ ही फतह मिली। लेकिन बापूजीने महसूस किया कि चम्पारनमें ठीकसे काम करना हो, तो कुछ सेवकोंको देहातमें लोगोंके बीच जाकर बैठना चाहिये और सुख-दु:खमें अुनके भागीदार बनकर अुन्हें तैयार करना चाहिये। बिहार जैसे गरीब सूबेमें तनख्वाह लेकर काम करनेवाले सेवक पुसा ही नहीं सकते। और जैसे-तैसे सेवकोंसे काम नहीं चल सकता। गाँववालोंके पास पैसे तो नहीं थे, लेकिन जिस गाँवमें लोग रहनेके लिअे मकान और कच्चा अनाज देना मंजूर करें, वहाँ सेवकोंको बैठा देनेकी बात बापूने तय की। अिस कामके लिअे बापूने सार्वजनिक रूपसे स्वयंसेवकोंकी माँग पेश की। महाराष्ट्र और गुजरातसे संस्कारी और कुशल सेवक मिल गये। और, बापूने आश्रमसे भी कुछ भाअी-बहनोंको वहाँ बुलवा लिया। गुजरातसे गअी हुअी बहनोंको गुजरातीका ही थोडा-बहुत ज्ञान था। वे बालकोंको हिन्दी कैसे सिखातीं? बापूने बहनोंको समझाया कि अुन्हें बच्चोंको व्याकरण नहीं, बल्कि सभ्य जीवन सिखाना है; पढ़ना-लिखना सिखानेके बजाय सफाअीके नियम सिखाने हैं। आये हुअे भाअी-बहन दो-दो या तीन-तीनकी टुकड़ियोंमें बाँट दिये गये, और अुन्हें गाँवोंमें बैठा दिया गया। भीतिहरवा नामके गाँवमें अेक छोटे मन्दिरके महन्तकी मददसे मन्दिरकी अपनी थोडी धर्मादा ज़मीन पर अेक

झोंपड़ा तैयार करके वहाँ अेक मदरसा खोला गया था। बा और दूसरे दो भाअी वहाँ रहने लगे।

अिस मदरसेमें कम-से-कम सहूलियतें थीं। अुस हिस्सेकी हवा भी अच्छी नहीं थी, और हिमालयकी तलहटीके ज़्यादा नजदीक होनेसे वहाँ जाड़ोंमे सर्दी भी बहुत पड़ती थी। रहनेके झोंपड़ोंकी छत पर सुबह धुनी रुअीकी तरह ओस फैली और लदी नजर आती थी। अिन शारीरिक कष्टों और अड़चनोंके सिवा वहाँ पास ही जिस निल्हे गोरेकी कोठी थी, वह सब गोरोंमे बदतर माना जाता था। अिसी वजहसे बापूने बा को वहाँ रखा था। बा गाँवमे घूमने और दवा तक़सीम करनेका काम करती थीं, जो अिस निल्हे गोरेसे सहा नहीं गया। अुसने अखबारोंमे बेजा शिकायतें छपवाअीं और लिखा: "मि० गांधी नगे पैर घूमकर और कपड़ोंमे सादगी बरतकर लोगोंमे अंधश्रद्धा पैदा करते है और अुससे फायदा अुठाना चाहते है; यही नहीं, बल्कि जब वे दूसरो राजनीतिक हलचलोंको चलानेके लिअे बाहर चले जाते है, तब श्रीमती गांधी यहाँ लोगोंको भड़कानेका अपने पतिका काम जारी रखती है।" वग़ैरा-वग़ैरा।

राजनीतिक मामलोंसे बिलकुल दूर रहनेवाली, केवल भूतदयासे प्रेरित होकर ही बीमारोंमे दवा बाँटनेका काम करनेवाली, देहातकी भाषासे बिलकुल अनजान, टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोल सकनेवाली, अंग्रेजी अखबारोंमे किये गये आक्षेपोंके बारेमे जबतक कोअी अुन्हे गुजरातीमे समझा न दे, बिलकुल अनजान रहनेवाली, यानी बहुत थोड़ी पढ़ी-लिखी बा, अुस घमंडी निल्हेको लोगोंमे अुत्तेजना फैलानेवाली मालूम हुअी!

अेक बार बा और अुनके साथी गाँवोंमे घूमने गये। जब लौटे, तो देखा कि जिस झोंपड़ेमें वे रहते थे और जिसमे मदरसा लगता था, वे दोनों जलकर खाक हो गये हैं। सिवा राखके वहाँ अुनका कोअी निशान तक नहीं रह गया था। अिसमे शक नहीं कि काममे रुकावट पैदा करनेकी गरजसे किसी द्वेषीने आग लगा दी होगी। बा का और अुनके साथी श्री सोमणका तो आग्रह था कि मदरसा अेक दिन भी बन्द न रहना

चाहिये । चुनाँचे सारी रात जागकर बाँस और घासका अेक झोंपड़ा खड़ा कर लिया । बादमें पक्का मकान बनाया गया, जो अभी क़ायम है ।

भीतिहरवाके पास ही अेक छोटा-सा गाँव है । बापूजी घूमते-फिरते अुस गाँवमें पहुँचे । वहाँ कुछ बहनोंके कपड़े बहुत ही गन्दे नजर आये । बापूने बा से कहा कि वे अुन बहनोंको कपड़े धोनेके लिअे समझायें । बा ने बहनोंसे बातचीत की । अुनमेंसे अेक बहन बा को अपनी झोंपड़ीमें ले गअी और बोली : "आप देखिये, यहाँ कोअी पेटी या आलमारी नहीं है, जिसमें कपड़े धरे हों । बदन पर यह जो साड़ी पहने हूँ, यही अेक साड़ी मेरे पास है । अिसे मैं किस तरह धोअूँ ? महात्माजीसे कहिये, वे कपड़े दिलावें, तो मैं रोज नहाने और रोज कपड़े बदलनेको तैयार हूँ ।"

बा ने बापूसे सारी हकीकत कही । भारतमाताकी अिस हालतको देखकर बापूका दिल तड़प अुठा ।

* * *

खेड़ा सत्याग्रह

अभी चम्पारनका काम चल ही रहा था कि अितनेमें खेड़ा ज़िलेमें सत्याग्रह शुरू हुआ । अुस वक्त बा भी बापूके साथ खेड़ा जिलेके गाँवोंमें घूमती थीं । कभी बापूके साथ रहतीं और कभी अकेली भी घूमतीं ।

खेड़ा जिलेके तोरणा गाँवमें मामलतदारने अेकाअेक छापा मारकर तेअीस घरोंमें जब्तियाँ कीं । ज़ब्तीमें अुन्होंने औरतोंके जेवर, हण्डे, घड़े, देग, दुधार भैंसें वग़ैरा चीजें जब्त कीं । बा को अिसका पता चला और फौरन ही वे तोरणावालोंके दुःखमें अुनको ढाढस बँधानेके लिअे वहाँ दौड़ी गअीं । अुनके जानेसे लोगोंकी खुशीका पार न रहा, और औरतोंने तो सचमुच फूलोंकी वर्षा की ।

वहाँ औरतोंकी सभामें बा ने लड़ाअीके मर्म और धर्मको समझाते हुअे अेक छोटा मगर पुरअसर भाषण किया :

"हमारे मर्दोंने सत्यके लिअे सरकारके साथ जो लड़ाअी ठानी है, अुसमें हमें अुनको अुत्साह दिलाना चाहिये । सरकारके दिये दुःखको सहना चाहिये । वह हमारा माल-असबाब अुठाने आवे, तो अुसे अुठा ले जाने

देना चाहिये। वह हमारी जमीनें छीन ले, तो छीन लेने देना चाहिये। लेकिन सरकारको लगानकी अेक पाअी भी देकर झूठे नहीं बनना चाहिये। क्योंकि जब रिआया सरकारसे कहती है कि फसल नहीं हुअी, तो सरकारको अुस पर यकीन करना चाहिये। मगर वह न माने और सताये, तो हमें सब कुछ सह लेना चाहिये, लेकिन अपनी टेकसे डिगना न चाहिये। सरकारी नौकरोंसे मत डरिये, बल्कि धीरज रखिये और अपने भाअियों, पतियों और बेटोंको हिम्मत बँधाअिये।"

बा के अिन सादे लेकिन अुत्साह और प्रेरणा दिलानेवाले वचनोंसे लोगोंमें जोश आया और कअी बहादुर औरतोंने बा को वचन दिया :

"जब आप हमारे लिअे अितनी-अितनी तकालीफें अुठाती है, तो फिर हम किस लिअे डरें ? हम हिम्मत रखेंगी और सरकारको पैसा देने नहीं देंगी।"

* * *

स्वराज्यकी पहली लड़ाअीमें

सन् १९२२ मे बापूजीको गिरफ्तार किया गया और छह सालकी सजा सुनाअी गअी। अिस सजाकी बात सुनकर सारा देश संतप्त हो अुठा। अुस वक्तका बा का संदेश अेक वीरांगनाको शोभा देने जैसा है :

"आज मेरे पतिको छह सालकी सजा हुअी है। अिस जबरदस्त सजासे मैं थोडी अस्थिर — बेचैन — हुअी हूँ, सो मुझे मंजूर करना चाहिये। लेकिन हम चाहें, तो सज़ाकी मुद्दत पूरी होनेसे पहले ही अुनको जेलसे छुडा सकते हैं।

"सफलता पाना हमारे हाथकी बात है। अगर हम असफल हुअे, तो अिसमे दोष हमारा ही होगा। और अिसीलिअे मैं मेरे दुःखमें हमदर्दी रखनेवाले और मेरे पतिके लिअे मुहब्बत रखनेवाले सभी स्त्री-पुरुषोंसे प्रार्थना करती हूँ कि वे रात-दिन लगे रहकर रचनात्मक कार्यक्रमको कामयाब बनाये। रचनात्मक कार्यक्रममे, यानी तामीरी काममे, चरखा चलाना और खादी पैदा करना दो खास चीजें है। गांधीजीको दी गअी सज़ाका जवाब हम अिस तरह दें :

१. सभी औरत-मर्द परदेशी कपड़ा पहनना छोड़ दें और खुद खादी पहनें व दूसरोंको पहननेके लिअे समझायें।

२. सभी औरत-मर्द कताअीको अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझ ले, और दूसरोंको भी वैसा करनेके लिअे समझाये।

३. सभी व्यापारी परदेशी कपड़ेका व्यापार करना छोड़ दें।"

बा के सच्चे दिलसे निकले अिस पैगामका लोगों पर बहुत अच्छा असर हुआ। जगह-जगह परदेशी कपडेकी होलियाँ जलने लगीं। चरखे गूँजने लगे और कुछ लोगोंने शुद्ध खादी पहननी शुरू की।

बापूको साबरमतीसे यरवडा ले गये। बा को दु.ख तो बहुत हुआ, लेकिन वे अपनेको सँभाले रहीं। अैसे समय बा अपने सच्चे रूपमें प्रकट हो अुठती थीं। हमेशा कम बोलनेवाली और रसोअीघर सँभालनेवाली बा सार्वजनिक कामोंके लिअे अिस तरह निकल पड़ीं कि कोअी नौजवान भी क्या निकलेगा। वे कहतीं: "मुझे अब आश्रममे चैन नहीं पडता। अब तो मुझे, जितना बन पड़े, बापूका काम करना चाहिये। बापू कार्यकर्ताओंको गाँवोंमें और रानीपरज (आदिवासियों) के बीच बसनेको कह गये है। अिसलिअे मुझे भी गाँवमें ले चलो।" स्वर्गीय श्री दयालजीभाअीकी माँके साथ बा विद्यापीठके चन्देके लिअे सूरत जिलेमे और अुधर नदुरबार तक घूमीं। और, बारडोलीमे चरखेके कामको गति देनेके लिअे बैलगाडीमें बैठकर गाँव-गाँव घूमीं। जब कांग्रेसके अन्दर स्वराज्यवादी दल पैदा हुआ और बापूके रचनात्मक कामके बारेमे अच्छे-अच्छोंकी श्रद्धा डिग चुकी थी, तब भी बा अनन्त निष्ठासे और अविचल भावसे बापूके कार्यक्रममे श्रद्धा रखती थीं और अपने थोड़े शब्दों द्वारा लोगोंको प्रेरणा देती थीं:

"अुमडते हुअे जोशके समय तो हर कोअी साथ देता है। लेकिन जोश अुतरनेके बाद भी जो टिके रहते है, वे पक्के है। दक्षिण अफ्रीकामें भी अैसी ही नाअुम्मेदी छा गअी थी, लेकिन बहनें और खानोंमे काम करनेवाले मजदूर निकल पड़े और जीत हुअी। अुसी तरह मैं तो सचमुच मानती हूँ कि आखिर सत्यकी जीत होनेवाली है।"

बा के ये शब्द लच्छेदार लेक्चर देनेवालोंके लेक्चरोंसे कहीं गहरा असर करते थे। अुन्हीं दिनों बा ने सोनगढ़ तहसीलके जंगलमें डोसवाड़ा मुकाम पर रानीपरजकी दूसरी परिषद्‌की सदारत की और हजारों आदिवासियोंसे शराब छुड़वाकर अुनको चरखा कातने और भजन करनेमे लगा दिया।

* * *

दाँडीकूच और धरासणा—'३०की लड़ाअीमें

अिस लड़ाअीमें बा ने जो हिस्सा लिया था, अुसका बयान श्रीमती मीठुबहनके शब्दोंमे ही यहाँ दिया है:

"१९३०में दाँडीकूचके समय बहनोंने बापूसे पूछा कि अिस बार हमें क्या करना चाहिये?

"बापूने कहा: 'तुम्हारे लिअे मैंने अेक सुन्दर काम ढूँढ रखा है। बहनोंको जेल नहीं जाना है, बल्कि विदेशी कपड़ेके बहिष्कारका और शराब-बन्दीका काम करना है। और जरूरत पड़े तो अुसके लिअे धरना—पिकेटिंग—भी देना है।'

"छठी अप्रैलको दाँडीमें नमक सत्याग्रहके बाद बापूने जो सभा की थी, अुसमे अिस चीजपर खास तौरसे जोर दिया था। नवसारीके पास बीजलपुरमें बहनोंकी अेक खास सभा बुलाअी गअी थी। अिस सभामे कोअी चार-पाँच हजार बहनें हाजिर थीं। अहमदाबाद और बम्बअीसे भी कुछ अगुआ बहनें आअी थीं। अुस सभामे बापूकी सलाहसे 'स्त्री-स्वराज्य-संघ'की स्थापना की गअी और सूरत शहर और जिलेमें विदेशी कपड़ेके बॉयकाट और शराब बन्दीके लिअे छावनियाँ डालनेकी अेक योजना तैयार की गअी। बहनोंकी मददके लिअे बापूने गुजरातके मशहूर नेता डॉक्टर सुमन्त महेताको चुना और कहा: 'आपको बहनोंकी रहनुमाअी नहीं करनी है; रहनुमाअी तो बा और मीठुबहन ही करेंगी। आपको तो सिर्फ मुनीमके नाते मददभर करनी है।'

"मुझे अिससे थोड़ा सकोच मालूम हुआ और मैंने बापूसे कहा: 'आप हमारी ताकतका बहुत ज्यादा अंदाज लगाते है।' लेकिन बापू अपनी बात पर डटे रहे। क्योंकि बा की तत्त्वनिष्ठा और काम करनेकी

शक्तिसे वे परिचित थे। बा के नाममें कुछ अैसा खिंचाव था कि छावनीमें सैकड़ों बहनें भरती हो गअीं। सूरत शहरमें, पिछड़ी कही जानेवाली क़ौमोंसे भी, सैकड़ों बहनें जिन्दगीमें पहली बार सार्वजनिक कामके लिअे निकल पड़ीं। अुन सबको हिम्मत और प्रेरणा बा से ही मिलती थी। 'बा कौन अंग्रेजी पढ़ी हैं? अगर वे यह काम कर सकती हैं, तो हम अुनका साथ क्यों न दें?' बा के जीवनसे अुनमें आत्मश्रद्धा पैदा हुअी। नतीजा यह हुआ कि समूचे सूरत जिलेमें, जो अपनी शराबखोरीके लिअे मशहूर है, शराबकी दुकानों पर अेक चिड़िया तक नहीं फड़कती थी। सरकारको अपनी नीति और अपने कानून ताक़ पर रख देने पड़े और दारू-ताड़ीकी फेरी लगानेकी अिजाजत देनी पड़ी। अब तक सभ्यताका स्वाँग रचकर बैठी हुअी सरकारने देहातमें अिस बातकी पेशबन्दी की कि बहनोंको वहाँ छावनीके लिअे कोअी अपने मकान न दें। लेकिन बहनें डिगीं नहीं। मँडवे बाँधकर अुन्होंने अुसमें अपनी छावनियाँ डालीं। जब मँडवे जलने लगे और बरतन-भाँडे जब्त होने लगे, तो बा ने कहा: 'हम चटाअियोंके झोंपड़ोंमें रहेंगी और मिट्टीके बरतन रखेंगी। फिर देखें, वे क्या ले जाते हैं?'

"बा छावनीमें थीं, तभी अुनको बापूकी गिरफ्तारीकी खबर मिली। यह खबर सुनकर अुन्होंने देशवासियोंके नाम स्वदेशभक्तिसे छलकता हुआ यह संदेश दिया:

'आज सुबह चार बजे मैं प्रार्थना कर रही थी, तभी मुझे बापूका स्मरण हुआ। रात हमारी छावनीके नजदीकसे मोटरोंकी भागादौड़ी बहुत सुनाअी पड़ती थी। अिसलिअे मनमें शक तो पैदा हो ही गया था। प्रार्थनाके बाद तुरन्त ही नवसारी छावनीसे खबर आअी कि गांधीजीको वे आधीरातके वक्त ले गये हैं।

'सुबह मैं कराड़ीकी छावनीमें हो आअी। आश्रमवासियोंसे मिली। अुनसे सुना कि दो मोटरोंमें हथियारोंसे लैस सिपाहियोंके साथ कुछ अफसर आये थे। गांधीजीके चारों ओर सिपाहियोंका घेरा डाल दिया गया था और कुछ देर तक तो किसी आश्रमवासीको भी अुनके पास जाने नहीं दिया गया। कराड़ी गाँवके लोगोंको मालूम होते ही वे दौड़े आये, लेकिन कहते हैं, सिपाहियोंने अुन्हें छावनीमें घुसने नहीं दिया। ये सारी बातें सुनकर मुझे

बहुत अफसोस हुआ। सरकारके पागलपन पर मुझे हँसी आअी। गांधीजीको गिरफ्तार करनेके लिअे आधीरातके वक्त डाका डालनेकी क्या ज़रूरत? अुनको पकड़नेके लिअे अिस सारे लश्करी लवाजमेकी क्या ज़रूरत?

'अब गांधीजी तो गये। यह सरकारकी मेहरबानी है कि वह अुन्हे अितनी देरमे ले गअी। अिन पॉच हफ्तोंमें वे जितना कुछ हमें कहना चाहते थे, सब कह चुके है। अुन्होंने हमारे लिअे अेक रास्ता बता दिया है। भाअियोंको और बहनोंको अुनका काम अलग-अलग सुझा दिया है। अब तो गांधीजी जो काम हमे सौंप गये हैं, अुसे पूरा करना ही हमारा धर्म हो जाता है।

'मैं अीश्वरसे प्रार्थना करती हूॅ कि अिस घटनाके कारण देशमें कहीं कोअी अशान्ति (बदअमनी) न हो! लोगोंसे भी मिन्नत करती हूॅ कि वे अपनी भावनाओं और भक्तिकी बाढमें बहकर पागल न बनें, बल्कि मर मिटनेकी अपनी साधको प्रबल बनाकर अिस लड़ाअीको जारी रखे।

'सरकारी नौकरी करनेवाले भाअियो, आप अब कब तक अपनी नौकरीसे चिपटे रहेंगे? सिपाही अपने देशभाअियों पर लाठियॉ चलाते और गोलियाँ दागते है। अुन्हें यह हिम्मत कैसे होती है? भाअियो, हिम्मतसे काम लो। भगवान् आपमेंसे किसीको भूखा नहीं रखेगा। पहले बेगुनाह और देशभक्तिमे पगे हुअे बच्चों पर हाथ अुठाना और फिर घर जानेके बाद आॅखोंमे पानी भरकर लम्बी आहे छोड़ना, अिससे फायदा क्या? परमेश्वरका नाम लेकर हिम्मतसे काम लो और नौकरी छोड़ दो।

'आज अिसके सिवा और दूसरा संदेश मैं क्या दूॅ? परमात्मा हम सबको शक्ति दे!'

"बापूजीकी गिरफ्तारीके बाद गुजरातके देशसेवक धरासणाकी ओर चल पडे। सरकारने अुनके साथ बहुत बेरहमी बरती। लाठियॉ चलाअीं। नीचे गिराकर अूपर घोड़े दौड़ाये। मुॅहमे कपडा ठूॅसकर खारे पानीमें डुबाया। कॅटीली और तारोंवाली बागुडोंमें फेंक दिया। निहत्थे सैनिकों पर जितना कहर बरपा किया जा सकता था, किया। बा को अिसका पता चला। वे गअीं। वहॉ जो कुछ देखा, अुससे अुनका दिल तड़प

अुठा। अेक पत्र-प्रतिनिधिको मुलाकात देते हुअे अुन्होंने जो करुण वर्णन किया है, अुससे अुनके अुस समयके दुःखका थोड़ा अंदाज लगेगा :

'घायल स्वयंसेवकोंको देखने और अुन्हें ढाढ़स बँधाने मैं वल्लाड़के अस्पतालमें गअी। बिछौनों पर पड़े हुअे अुन भाअियोंकी मरहमपट्टी और बैण्डेज वगैराका वह करुण (दर्दनाक) दृश्य देखकर मेरा दिल फटने लगा — रो पड़ा। पुलिसने अुन पर जो जुल्म ढाये हैं, अुन्हें सुनकर मैं काँप अुठी। मुझे कहना चाहिये कि मुझको दुःख तो हुआ, फिर भी अैसी जबरदस्त तकलीफें सहनेके बाद भी अुन नौजवानोंने जिस देशभक्ति, वीरता और अुत्साहका परिचय दिया था, अुसे देखकर मेरा दिल खुशीसे नाच अुठा। सत्यके लिअे अैसे बलिदानका दृष्टान्त तो अितिहासमें अकेले अेक हरिश्चन्द्रका ही मिलता है।

'चारों ओरसे अैसे जुल्मोंकी कहानियाँ आ रही हैं। अिसलिअे सबकोअी अिस काममें अेक-दूसरेकी सहायता करें और साथ दें, तभी हमारा काम सफल हो। मुझे यह देखकर बहुत ही खुशी हुअी कि अितनी बड़ी तादादमें डॉक्टर और बहनें बीमारोंकी सेवा कर रही हैं।

'मुझे अुम्मीद है कि मेरे जो देशभाअी धरासणाकी करुण कहानी सुनेंगे, वे वाअिसरायके नये काले कानूनोंकी मुखालिफत करनेके लिअे दुगने अुत्साहसे कर न देनेकी तहरीक चलायेंगे और साथ ही शराब-बन्दीका व परदेशी कपड़ेके बायकाटका काम जारी रखेंगे।'

"अिस लड़ाअीके दिनोंमें बीजलपुरमें जलालपुर तहसीलकी जो परिषद् हुअी थी, अुसका अध्यक्षपद बा ने स्वीकार किया था। अुसमें भाषण करते हुअे अुन्होंने कहा था :

'अपने देशके अितिहासके अेक बहुत नाजुक मौके पर आज हम यहाँ अिकट्ठा हुअे हैं। अिस वक्त हमारे पास लम्बे-चौड़े भाषण करनेका समय नहीं है। अिसलिअे आजकी सभाका अध्यक्षपद देनेके लिअे मैं बहुत थोड़ेमें आपका आभार माने लेती हूँ। अिस वक्त मुझे तो आपसे अेक ही बात कहनी है, कि आपसके झगड़ोंको भूल जाअिये। अिस मौके पर सब अेक हो जाअिये। अगर अेकके घर जब्ती हो, तो समझिये कि सबके घर हुअी है। कोअी ज़ब्तशुदा माल न खरीदे।

'अगर बहनें चाहें, तो वे अिस लड़ाअीमें पुरुषोंकी बहुत मदद कर सकती हैं । शराब, ताड़ी और परदेशी कपड़ेके बायकाटका काम तो बहनोंको ही करना है । हिम्मत दिलानेके मौक़ों पर बहनें भाअियोंको हिम्मत तो दिलायेंगी ही, लेकिन कभी स्वार्थवश कोअी भाअी सरकारकी मदद करने जाये, तो बहनें अुन्हें चेतायें और ज़रूरत पड़ने पर अुनके साथ असहयोग भी करें ।

'बहनोंमें जितनी समझ होती है, अुतनी पुरुषोंमें नहीं होती । क्योंकि बहनें दुःखकी भाषाको ज़्यादा समझती हैं । धरासणाके अत्याचारोंसे बहनोंके दिलोंको चोट पहुँची है । जब-जब देशके हितके खिलाफ़ कोअी भी हलचल शुरू हो, तब धरासणाको याद रखिये ।

'अिससे ज़्यादा और मैं क्या कहूँ ? मैंने जो कुछ कहा है, अुस पर डट जानेकी और अुसका अमल करनेकी ताक़त परमात्मा आपको दे और आप सबका कल्याण करे !'

"अिस लड़ाअीके सिलसिलेमें दौड़धूपकी वजहसे बा की तन्दुरुस्ती गिर गअी । मैं बा के साथ मरोली गाँवमें रहती थी । अेक दिन सवेरेकी प्रार्थना समाप्त करके सब नाश्ता करने बैठे थे कि अितनेमें डाकिया आया और अेक तार दे गया । तारकी खबर जाननेको सभी बेताब हो अुठे थे ।

"तार था : 'हमें कस्तूरबाके साथकी ज़रूरत है ।'

"अिस छोटे-से संदेशेने सबको बेचैन कर दिया । बा तारका मर्म समझ गअीं और नाश्ता छोड़कर झटपट जानेकी तैयारी करनेमें जुट गअीं ।

"यह तार बोरसदसे आया था । बोरसदके बहादुर किसानोंने देशके खातिर अपना वतन, घर-बार, ढोर वग़ैरा सब कुछ छोड़कर हिजरत की थी । सरकारको लगान न देनेकी वजहसे अुन्हें जेल जाना पड़ा था और मारपीट सहनी पड़ी थी । किसानोंके गुज़रेका जो अेक ही जरिया —ज़मीन— था, वह भी नीलाम किया जा चुका था ।

"लगान न देनेकी सलाह देनेवाली कुछ बहनों पर सरकारने लाठी चलाअी थी । गाँवमें हाहाकार मच गया था । बहुतेरी बहनें घायल होकर

अस्पतालमें पड़ी थीं। गाँववालोंको हिम्मत बँधानेके लिअे अिन बहनोंने बा को तारसे बुलाया था।

"'बा, आप यह क्या कर रही हैं?' मैं बा की अुतावली देखकर घबराअी, और अिस फिकरसे कि अिसकी वजहसे बा की तबियत और खराब होगी, मैंने कहा: 'आपमें ताकत कहाँ है? बदनमें खून नामको नहीं रहा, अिसीलिअे तो डॉक्टरोंने आपको आराम करनेकी सलाह दी है। आपकी ओरसे मैं बोरसद जाती हूँ। आप यहीं रहिये।'

"'बहादुरीके साथ पुलिसकी लाठियोंको सहन करनेवाली बहनोंके बीच मुझे पहुँचना ही चाहिये। बापू होते, तो अिस वक्त अुनके पास रहते। लेकिन वे आज आजाद नहीं हैं।' कम्बल और दूसरी ज़रूरी चीज़ोंको अपनी झोलीमें रखते हुअे बा ने जवाब दिया, और कदम बढ़ाती हुअीं वे बोरसद जानेवाली गाड़ीको पकड़नेके खयालसे स्टेशनकी ओर रवाना हो गअीं।

"बोरसद पहुँचकर बा ने न सिर्फ अस्पतालमें घायल होकर पड़ी हुअी बहनोंको अुत्साहित किया, बल्कि सारे गाँव पर छाये हुअे डर और आतंकको भी दूर किया। अपनी कमजोर तबियतका जरा भी खयाल न करके बा ने सुबहसे लेकर रात तक खड़े पैरों काम करना शुरू कर दिया।

"अिससे बा की सेहत और गिरी। नडियादसे डॉक्टर आये। अुन्होंने बा की जाँच की। कहा कि आरामकी बहुत ही जरूरत है और चेतावनी दी कि 'अगर आप हमारा कहना नहीं मानेंगी, तो तबियत ज़्यादा खराब होगी और नतीजा अच्छा न निकलेगा।'

"'लेकिन मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं होता। मैं तो बापू के पदचिह्नों पर चलनेके सिवा और कोअी काम नहीं कर रही। बापू की गैरहाजिरीमें मुझे काम करनेका यह मौका मिला है। आराम तो मैं नहीं कर सकूँगी।'

"डॉक्टर निराश हुअे। और बा अेक सत्याग्रहीकी शानसे अपने कामको आगे बढ़ाती चली गअीं।"

सन् १९३२ और '३३का तो बा का बहुतेरा वक्त जेल ही में बीता। '३२ में सौ० लाभुबहन महेताको बा के स्वभावका जो परिचय मिला, अुसके बारेमें वे लिखती हैं:

"'यह कौन आया? अैसे नन्हे, नाज़ुक अुमरके बच्चोंको पकड़कर लानेमें सरकारको शरम भी नही आती?' मुझे देखकर अुनका कोमल हृदय कराह अुठा। दूसरे दिन अुन्हे मालूम हुआ कि मैं कुछ खाती नहीं हूँ; वहॉका वह रूखा-सूखा खाना मेरे गले नहीं अुतरता था। अुन्होंने अुसी वक्त मुझे बुलाया। 'बी' क्लासकी अपनी खुराकमेंसे मुझे ज़बरदस्ती खानेको दिया और सीखकी दो बाते कहीं: 'देखो, यों भूखी रहोगी, तो जेल कैसे काट सकोगी? सहन करने आअी हो, तो सहन तो करना ही चाहिये न?' मैं सब समझती तो थी ही, फिर भी मनको मजबूत करनेमें दो तीन दिन लग गये। और फिर तो मैंने अपनेको अुस खुराकके अनुकूल बना लिया। अिस बीच बा की सहानुभूति मुझे मिल गअी। जेलमे जो कोअी भी बहन बीमार पड़ती, कमजोर दिलकी होती, या घरमे आरामकी जिन्दगी बितानेवाली होती, अुसे बा की मदद, अुनका सहारा, हमेशा मिलता। बा की हमदर्दीके कारण जेल काटना आसान हो जाता। जेलमें हम क़रीब ८० बहने अेक साथ थीं, लेकिन किसीको कभी कोअी तकलीफ़ नहीं हुअी। किसीने यह महसूस नहीं किया कि यहॉ हम अकेली पड़ गअी है, या कि यहॉ हमारा कोअी नहीं है। मानो हम सब अुनके घर ही मे रहती हों, अिस तरह वे सबकी फिकर रखती थीं — सबको सॅभालती थीं। सब पर समान प्रेम और सबकी समान चिन्ता, यह अुनके स्वभावकी खूबी थी।"

* * *

जब राजकोटमे सत्याग्रह छिड़ा, तो अिस खयालसे कि वह तो मेरा वतन है, बा बापूसे भी पहले वहॉ पहुँच गअी थीं। वहॉ अुन पर जो बीती, अुसका बहुत ही बढ़िया वर्णन सुशीला बहनने किया है,। पाठक अुसे वहीं पढ़ ले। लेकिन अुसके बारेमे खुद बापूजीने 'गांधीजी' नामक ग्रंथमें बा के निस्बत जो कुछ लिखा है, सो यहॉ देना जरूरी है।

"बा राजकोटकी लड़ाअीमे शामिल हुअीं, अिस पर कुछ न लिखनेका मेरा अिरादा था, लेकिन अुनके अुस लड़ाअीमे शामिल होने पर जो थोड़ी निष्ठुर टीकायें हुअी है, वे खुलासा चाहती है। मुझे तो कभी यह सूझा ही न था कि बा को अिस लड़ाअीमे शरीक होना चाहिये। अिसकी खास

वजह तो यह थी कि अिस तरहकी मुसीबतोंके लिअे वे बहुत दुखी हो चुकी थीं। लेकिन बात कितनी ही अनोखी क्यों न मालूम हो, टीकाकारोंको मेरे अिस कथन पर अितना विश्वास तो रखना चाहिये कि अगरचे बा अनपढ़ थीं, फिर भी कअी सालोंसे अुन्हें अिस बातकी पूरी-पूरी आजादी थी कि वे जो करना चाहें, करें। क्या दक्षिण अफ्रीकामें और क्या हिन्दुस्तानमें, जब-जब भी वे किसी लडाअीमें शरीक हुअी हैं, अपने आप, अपनी आन्तरिक भावनासे ही। अिस बार भी अैसा ही हुआ था। जब अुन्होंने मणिबहनकी गिरफ्तारीकी बात सुनी, तो अुनसे न रहा गया। और अुन्होंने मुझसे लडाअीमें शामिल होनेकी अिजाजत माँगी। मैंने कहा, तुम अभी बहुत ही कमजोर हो। दिल्लीमें कुछ ही दिन पहले वह अपने नहानेके कमरेमें बेहोश हो गअी थीं। अुस वक्त देवदासने हाजिरख्यालीसे काम न लिया होता, तो वे अुसी समय स्वधाम पहुँच गअी होतीं। लेकिन बा ने जवाब दिया: 'शरीरकी मुझे परवाह नहीं।' अिस पर मैंने सरदारसे पुछवाया। वे भी अिजाजत देनेके लिअे बिलकुल तैयार न थे।

"लेकिन फिर तो वे पसीजे। रेसीडेण्टकी सूचनासे ठाकुर साहबने जो वचन-भंग किया था, अुसके कारण मुझे होनेवाले क्लेशके वे साक्षी थे। कस्तूरबाअी राजकोटकी बेटी ठहरीं। अिसलिअे अुन्होंने अंतरकी आवाज सुनी। अुन्होंने महसूस किया कि जब राजकोटकी बेटियाँ राज्यके पुरुषों और स्त्रियोंकी आजादीके लिअे जूझ रही हों, तब वे चुप बैठ ही नहीं सकतीं।

* * *

"अुनमें अेक गुण बहुत बड़ा था। हरअेक हिन्दू पत्नीमें वह कमोबेश होता ही है। अिच्छासे या अनिच्छासे अथवा जाने-अनजाने भी वह मेरे पदचिह्नों पर चलनेमें धन्यता अनुभव करती थीं।

"बा हमेशासे बहुत दृढ़ अिच्छाशक्तिवाली स्त्री थीं, जिनको अपनी नवविवाहित दशामें मैं भूलसे हठीली माना करता था। लेकिन अपनी दृढ़ अिच्छाशक्तिके कारण वे अनजाने ही अहिंसक असहयोगकी कलाके आचरणमें मेरी गुरु बन गअीं। वह कअी बार जेल जा चुकी थीं, फिर भी अिस बारके (१९४२-४४) अिस कैदखानेमें, जिसमें सभी तरहकी सहूलियतें मौजूद थीं, अुनको अच्छा नहीं लगा। दूसरे बहुतोंके साथ मेरी और फिर तुरन्त ही

अुनकी जो गिरफ्तारी हुअी, अुससे अुन्हें जोरका आघात पहुँचा और अुनका मन खट्टा हो गया। वह मेरी गिरफ्तारीके लिअे बिल्कुल तैयार नहीं थी। मैंने अुन्हें विश्वास दिलाया था कि सरकारको मेरी अहिंसा पर भरोसा है, और जब तक मैं खुद गिरफ्तार होना न चाहूँ, वह मुझे पकड़ेगी नहीं। सचमुच अुनके ज्ञानतन्तुओंको अितने ज़ोरका धक्का बैठा कि अुनकी गिरफ्तारीके बाद अुन्हें दस्तकी सख्त शिकायत हो गअी। अगर अुस समय डॉ० सुशीला नय्यरने, जो अुनके साथ ही पकड़ी गअी थीं, अुनका अिलाज न किया होता, तो मुझसे अिस जेलमे आकर मिलनेसे पहले ही अुनकी देह छूट चुकी होती। मेरी हाजिरीसे अुन्हें आश्वासन मिला और बिना किसी खास अिलाजके दस्तकी शिकायत दूर हो गअी। लेकिन मन जो खट्टा हुआ था, सो खट्टा ही बना रहा। अिसकी वजहसे अुनके स्वभावमे चिड़चिडापन आ गया और अिसीका नतीजा था कि आखिर कष्ट सहते-सहते क्रम-क्रमसे अुनका देहपात हुआ। यद्यपि अपनी मृत्युके कारण वह सतत वेदनासे छूट गअी है, अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे मैंने अुनकी मौतका स्वागत किया है, तो भी अिस क्षतिसे मुझको जितना दुःख होनेकी कल्पना मैंने की थी, अुससे अधिक दुःख मुझे हुआ है। हम असाधारण दम्पती थे। हमारा जीवन सदा सतोषी, सुखी और अूर्ध्वगामी था।"

अिस बारकी लड़ाअीमे बा की गिरफ़्तारीके वक़्तसे लेकर आगाखान महलकी सारी हकीकत सुशीलाबहनने दी है, अिसलिअे यहाँ अुसको भी दोहराया नहीं है।

बा के अिन सारे सार्वजनिक कामोंसे साफ़ मालूम होता है कि अैसे काम करनेके लिअे या लोकसेवाके लिअे सच्ची जरूरत विद्वत्ताकी नहीं, बल्कि आमजनताके लिअे प्रेमकी और असलमें कौन चीज करने जैसी है, अिसकी सीधी-सादी समझकी है। बा को गुजरातीमे या हिन्दीमे भाषण करनेके लिअे अक्षरज्ञानका अभाव कभी बाधक नहीं हुआ। अुल्टे, सीधी बात कहनेके कारण वे ज़्यादा असर पैदा कर सकी है। अूपर अुनके कुछ बयान दिये है। लेकिन अिन बयानोंसे भी ज़्यादा असर बा के जबानी भाषणोंका होता था।

२०

बिदा

बा को अिस बातकी आगाही तो बहुत पहले हो गअी थी कि अुनकी मौत अब नज़दीक है। सन् '४२के जनवरी महीनेकी बात है। तब बापू और बा कुछ दिनोंके लिअे बारडोलीमे थे। वहॉसे मीठुबहनको मिलने और कुछ दिन अुनके साथ बितानेके खयालसे बा मरोली आश्रम गअीं। लेकिन वहॉ अुन्हे बुखारने आ घेरा। पिछले कअी सालोंसे बा का दिल तो कमज़ोर पडने ही लगा था, अिसलिअे वे बहुत कमजोर हो गअी थीं। बा को बापूजीके वर्धा जानेकी तारीख मालूम थी, चुनॉचे अैसी कमजोर हालतमे भी वे बारडोली आ ही पहुँचीं। बापूको पता चला कि बा मरोलीसे बीमार होकर आ रही है। वे यह भी जानते थे कि बा आते ही अुनसे मिलने आवेंगी। लेकिन अुन्हें जीना चढनेकी तकलीफ न अुठानी पडे, अिस खयालसे ज्यों ही बापूको बा के आनेकी खबर मिली, वे झट-पट नीचे अुतर आये। खुद ही अपने हाथका सहारा देकर अुन्हे मोटरसे नीचे अुतारा और पास ही सरदारके कमरेमे अेक खटिया पर लिटाकर और कुछ देर अुनके पास बैठकर फिर आप अूपर गये। बा जिस तरह बापूकी सेवामें तत्पर रहतीं, अुसी तरह बापू भी बा की बहुत ही चिन्ता रखते। जब भी बा कहीं बाहर जानेको होतीं, या बाहरसे आनेवाली होतीं, तब बापू कितने ही जरूरी काममें क्यों न हों, अुनका नियम ही था कि वे बा को बिदा करने या लिवाने आश्रमके दरवाजे तक जायॅ।

यह सब खतम हुआ और बा आरामसे सोअीं। फिर सरदार कल्याणजीभाअीसे कहने लगे: "बा को अैसी हालतमे क्यों ले आये? वहीं रख लेना था न?"

कल्याणजीभाअी बोले: "आप मानते हैं कि हमने आग्रह करनेमे कमी की होगी? लेकिन बा चुप बैठे तब न? वे तो बराबर कहती ही रहीं, 'अब रेलगाडियॉ बन्द हो जानेवाली है और बापूजी सेवाग्राम चले जायेंगे, तो अितने सालोंके बाद मैं अुनसे बिछुड जाअूँगी न? अब मैं कौन ज़्यादा जीनेवाली हूँ? अब तो यही चाहती हूँ कि मैं बापूकी गोदमे मरूँ।"

और, बा की यह अिच्छा सचमुच ही पूरी हुअी।

'४२ के अगस्तमे महासमितिकी बैठकके लिअे बापू बम्बअी गये, तो बा भी साथ थीं। कुछ आश्रमवासी अुन्हे बिदा करनेके लिअे वर्धा स्टेशन तक गये थे। अुन्होंने बा से कहा : "बा, जल्दी वापस आअियेगा।" अुस समयके बा के अुद्‌गार ये थे : "हॉं भाअी, आप सबके आशीर्वादसे वापस आ सकूँगी, तो खुशी तो होगी ही।" वापस आनेकी निराशाने ही बा के मुँहसे ये शब्द कहलवाये थे।

और आगाखान महलमें महादेव काकाके गुज़र जानेके बाद तो बा हरदम यह कहा करतीं : "मुझे जाना था और महादेव क्यों गया?" बापूके अुपवासके दिनोंमें अुनके दर्शनोंके लिअे हम सब तीन बार आगाखान महल गये थे। जब-जब हम वहॉंसे चलते, बा कहतीं : "जिन्दा रहूँगी, तो फिर मिलेंगे।" बापूके अुपवासोंकी समाप्तिके बाद जब हम चलने लगीं, तब मेरी मॉंसे और आश्रमकी दूसरी बहनोंसे बा ने कहा : "यह हमारी आखिरी मुलाकात ही है। मैं यहॉंसे जीते जी बाहर नहीं निकलूँगी।" आश्रमकी बहनोंकी प्रार्थनाका पहला श्लोक अिस प्रकार है :

'गोविन्द द्वारिकावासिन् कृष्ण गोपीजनप्रिय।
कौरवैः परिभूतां मां किं न जानासि केशव॥'

अिस श्लोकको दोहराते हुअे बा बोलीं : "अब तो कृष्ण भगवान् अिन कौरवोंसे घिरे हुअे हमारे देशकी सुध ले तो अच्छा हो।" फिर जेलके अपने सभी साथियोंका नाम ले-लेकर कहने लगीं : "हम दोनोंको चाहे जेलमें रखे, लेकिन और सबकी रिहाअी हो!"

आगाखान महलकी दूसरी बातें, बापूके अुपवासके समयकी बा की मनोदशा, और अुनकी सार-सँभाल वग़ैराके बारेमे सुशीलाबहनने अपने निबन्धमे सुन्दर ढंगसे लिखा ही है। मै यहॉं अपनी देखी हुअी अेक ही बीतका जिक्र करूँगी। बापूजीकी खटियाके सामने दीवार पर 'हे राम' शब्द लिखे हुअे थे। ठीक अुनके नीचे तुलसीका अेक गमला था। सवेरे नहा-धोकर बा तुलसी माताका पूजन करतीं और झुक-झुककर नमन करतीं। बापू लेटे-लेटे श्रद्धासे युक्त, प्रेमसे छलकती आखोंसे बा की ओर देखा करते। कितना भव्य था वह दृश्य! बापूके अुपवास सकुशल जो समाप्त हुअे,

अुसकी जड़मे बा के अन्तरतमकी गहराअीसे निकली हुअी अिस प्रार्थनाका कितना हाथ रहा होगा ? सत्यवानको मृत्युके मुँहसे वापस लानेके लिअे सावित्री यमराजसे अेक बार लड़ी थी, लेकिन बा को तो बापूको बचानेके लिअे यमराजके साथ कअी-कअी बार लड़ना पड़ा है । बापूका अेक-अेक अुपवास बापूसे भी अधिक बा के लिअे कड़ी तपश्चर्या बन जाता था । बापूका तो शरीर सूखता, लेकिन बा का तो मन भी सिक जाता । मगर बा की यह अटल श्रद्धा थी कि भगवान् अपने भक्तोंको सही-सलामत अुबार लेता है । अिसलिअे बापूके अुपवासके दिनोंमे मिलने गये हुअे आश्रमवासियोंसे बा कहतीं : "आप चिन्ता न करें । मैं बापूसे पहले ही जाअूँगी । बापू ज़रूर अुठ बैठेंगे । लेकिन मैं यहाँसे जीती बाहर नहीं निकलूँगी । यह तो महादेवका मंदिर है । जिस रास्ते महादेव गये, अुसी रास्ते मैं भी जाअूँगी ।"

* * *

बा के अन्तिम समयके और अग्निसंस्कारके वर्णन बहुतेरे आये है । लेकिन यहाँ मैं अुस समय वहाँ हाजिर रही अेक बहनका आश्रममे आया अेक पत्र ही दे रही हूँ :

"अन्त-अन्तमे बा की आँखे अेकदम खुलीं और अुन्होंने बापूजीको बुलवाया । जयसुखलालभाअी पास थे । अुन्होंने बापूसे कहा : 'बा बुलाती हैं ।' बापू हँसते-हँसते आये और बोले : 'क्यों बा, शायद तू सोचेगी कि सब रिश्तेदार आ गये, अिसलिअे बापूने मुझे छोड़ दिया । ले, यह मैं आया ।' बापूजीने बा को गोदमे ले लिया । बापूकी ओर देखकर बा कहने लगीं : 'मैं अब जाती हूँ । हमने बहुत सुख भोगे, दुःख भी भोगे । मेरे बाद रोना मत । मेरे मरने पर तो मिठाअी खानी चाहिये ।' यों कहते-कहते बा के प्राण बापूकी गोदमे ही निकल गये । बापू देख रहे थे । ज्यों ही बा के प्राण निकले, बापूने अपना सिर बा की देह पर डाल दिया और आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह चली । देवदासभाअी बा के पैर पकड़कर 'बा, बा' पुकारने लगे । जयसुखलालभाअीने बापूजीका चश्मा अुतार लिया । बापू फौरन ही सँभल गये । अुन्होंने देवदासभाअीको अपनी गोदमे लेकर स्वस्थ किया । पूज्य बा के नज़दीक रामधुन शुरू हुअी । फिर बापू, मनु, प्रभावती और सुशीलाने मिलकर बा की मृतदेहको स्नान कराया, शरीर

पोंछा, और बापूके काते सूतकी साड़ीमें बा को लपेटा। माथे पर कुकुम लगाया। हाथमें और गलेमें बापूका कता सूत पहनाया। ज़मीन लीपकर अुसमें चौक पूरा और बा को वहाँ सुलाया। शामको साढ़े सात बजे शरीर छूटा था। रात १२ बजे तक प्रार्थना और गीताका पारायण किया। देवदासभाअी, मनु और सतोकबहनको छोड़कर शेष सब बाहर आ गये। अग्निसंस्कारके समय बहुतोंको बाहरसे अंदर जानेकी अिजाजत मिली। बा का चेहरा खूब दमकता था और अैसा मालूम होता था, मानो वे शान्त निद्रामे सोअी हों। अग्निदाह-सम्बन्धी विधि करानेके लिअे अेक ब्राह्मण अुपाध्याय बुलाये गये थे। जब शुरूकी विधियाँ पूरी हुअी और शवको चिता पर लिटा दिया गया, तो बापूने अेक संक्षिप्त प्रार्थना करनेकी सूचना की। गीता, कुरान और बाअिबलके कुछ अंश पढ़े गये। आश्रमवासियोंने अेक भजन गाया। डॉ० गिल्डरने जरथुस्त धर्मकी प्रार्थना की। मीराबहनने अेक अंग्रेजी भजन गाया।

"मृतदेह पर चंदनकी लकड़ी रखी गअी और घी सींचा गया। अिसी समय बापू धीमे पैरों देवदासभाअीके पास गये और बोले: 'देवा, महादेवके अन्तिम सस्कार मैंने किये, बा के अन्तिम सस्कार तू कर।' अिसके बाद देवदासभाअीने हाथमे अग्नि लेकर बा के शवकी तीन बार प्रदक्षिणा की और ज़ोरसे गोविन्द, गोविन्द, गोविन्दका रटन करते हुअे मृतदेहको आग दी। चिता धक्-धक् जल अुठी।

"अिस सारे समयमें बापूजी स्वस्थ रहे थे। लेकिन देवदासभाअीका दुःख देखा नहीं जाता था। बापूने कहा: 'अुसकी याद आती है, तब मैं भी धीरज नहीं रख पाता।' शामको पाँच बजे तक हम सब वहाँ थे। पूज्य बापूजीने मुझसे बहुत-सी बातें की। सबके समाचार पूछे। रामदासभाअी अग्निसस्कार समाप्त होनेके बाद आये। रामदासभाअी और देवदासभाअीको पूज्य बापूके साथ तीन दिन रहनेकी अिजाजत मिली है। महादेवभाअीकी समाधिके पास बा की समाधि भी बनेगी।"

महादेवभाअीकी समाधि पर बापूने अपने हाथों छोटे-छोटे शखोंका ॐ बनाया है। बा की समाधि पर भी बापूने ही छोटे-छोटे शखोंसे 'हे राम' लिखा है।

श्रीमती सरोजिनीदेवीकी श्रद्धांजलिके साथ अिस जीवन-कथाको समाप्त करती हूँ :

"भारतीय स्त्रीत्वके जीते-जागते प्रतीक-सी, अुस नाजुक किन्तु वीर नारीकी आत्माको चिर शान्ति प्राप्त हो। जिस महापुरुषको वे चाहतीं, जिसकी वे सेवा करतीं, और अद्वितीय श्रद्धा, धैर्य और भक्तिके साथ जिसका वे अनुसरण करतीं अुसके लिअे बराबर कुरबानी करते रहनेका जो कठिन मार्ग अुन्होंने अपनाया था, अुस मार्ग पर चलते हुअे अुनके पैर अेक क्षणके लिअे भी लड़खड़ाये नहीं और न अुनके दिलने कभी कच्ची खाअी। वे मृतत्वसे अमरत्वमें गअीं और हमारी गाथाओं, हमारे गीतों, और हमारे अितिहासकी वीरांगनाओंकी मंडलीमें वे अपने हककी जगह पा गअी हैं; अिसकी हम खुशी मनायें।"

परिशिष्ट

[बा को लिखे बापूके पत्रोंमेंसे लिये गये कुछ नमूनेके पत्र]

१

(राजकोट सत्याग्रहके समयके)

सेगाँव, ८-२-'३९

बा,

तू काफी तकलीफ अुठा रही है। जो भी तकलीफ हो, अुसकी खबर मुझे जरूर देना। तू दुःख सहनेके लिअे जन्मी है। अिसलिअे तेरी तकलीफोंसे मुझे कोअी आश्चर्य नहीं होता। मैंने राजकोट तार तो किया है। तेरी तकलीफोंके बारेमें अखबारोंमें कुछ भी नहीं देना है। भगवान् तो वहाँ तेरे पास बैठा ही है। अुसे जो करना होगा, वह करेगा। 'कहानम' (कनु) मजेमें है। रातको तुझे याद जरूर करता है। लेकिन फिकर न करना। अमतुल्सलाम यहाँ है। वह कहानमको सँभालती है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणि, तू वहाँ है, यह कितनी अच्छी बात है!

२

सेगॉव, ९-२-'३९

बा,

तेरा पत्र मिला। तू बीमार रहा करती है, यह अच्छा नहीं लगता। लेकिन अब तो हिम्मतके साथ रहना। सहूलियतें तो मिल जायेंगी। और, न मिले तो भी क्या? मणि ठीकसे गा न सके, तो भी रामायण सुनाये। राम-सीताके दुःखकी तुलनामें हमारे दुःखकी क्या बिसात है? तू घबराना मत। आजकल लड़कियोंसे सेवा लेना छोड़ रखा है। तू फिकर न करना। क्या करना चाहिये, सो मैं देख लूँगा। सुशीला तो सेवा करती ही है।

बापूके आशीर्वाद

३

सेगॉव, १०-२-'३९

बा,

डाक तेरे नाम रोज गअी है। वहाँ चिट्ठियाँ न मिले, तो किया क्या जाय? मेरी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं। लेकिन तबियत चिन्ता करने-जैसी हो जाय, तो भी मैं तुझसे तो अिस जवाबकी आशा रखता हूँ कि "वियोगमें अुनकी मृत्यु बदी होगी, तो होकर रहेगी। लेकिन मैं तो जहाँ मेरे बच्चे त्रास पा रहे है, वहाँ पड़ी हूँ। मुझे जेलमें रखोगे, तो अुससे भी मैं खुश होअूँगी। ठाकुर साहबसे वचन पलवानेमें आप सब मदद करे, मेरा अुपयोग करें, वरना मैं चाहती हूँ कि राजकोटके आँगनमें ही मेरी मृत्यु हो जाय!" तू अपने आप अपनी खास अिच्छासे गअी है। अिसलिअे तेरे दिलसे ये अुद्गार निकले, तो निकालना। अपने मनमें यही धारणा रखना। तू रोज लिखती है कि लड़कियोंकी सेवा लिया करो। लेकिन फिलहाल तो वे आजाद ही है। सुशीला मालिश करती है, सो भी छोड़ना ही है न? लेकिन अपनी अैसी तबियतकी वजहसे अुसे अभी छोड़ नहीं सका हूँ। अिस बारेमें भी मेरी चिन्ता मत करना। मुझे निबाहनेवाला आखिर तो अीश्वर ही है न?

बापूके आशीर्वाद

४

बा,

पिछली बार तुझे प्रवचन भेजा था। अुसकी नक़ल भेजना। तेरा पत्र आज मिला। यह पत्र मौनवारके दिन लिख रहा हूँ। मणिलालकी चिन्ता मत कर। अुसे तेरा पत्र भेज रहा हूँ। परागजीके कहनेसे घबरा अुठनेका कोअी कारण नहीं। दोनों प्रौढ़ है। ग़लती हुअी होगी, तो सुधार लेंगे। 'जामे जमशेद' का प्रबन्ध तो किया ही है। मथुरादासके लिखनेसे हो गया है। अिसलिअे मैंने ज़्यादा कुछ नहीं किया। अब तो मिलता ही होगा। फिर पूछ-ताछ करता हूँ। रामायण और भागवतके लिअे तजवीज करता हूँ। प्रेमलीलाबहनसे मँगानेमें तनिक भी सकोच न करना। तुझे मँगाना ही क्या है? जो थोड़ा-बहुत चाहिये, सो वे प्रेमसे भेजेगी। लेकिन जिसकी जल्दी ही जरूरत न हो, वह तू मेरे मारफत मँगायेगी तो बस होगा। मैं तजवीज़ कर दूँगा। दाँत काममें ले सकती है? लालपानीके कुल्ले करती है? दूधाभाअीकी लक्ष्मीको भी छठा महीना चल रहा है, यह तो मारुतिका पत्र आज मिला। अिन सब खबरोंको सुनकर मुझे दु:ख या आश्चर्य नहीं होता। होना भी नहीं चाहिये। ब्याहका यह नतीजा तो सबके लिअे है ही। अिसमें दुःख क्या और आश्चर्य क्या? रामदासको भी मैंने कोअी अुलाहना नहीं दिया। अैसे मामलोंमें अुलाहना क्या कर सकता है? सब अपनी शक्तिके अनुसार संयम पाले। संयमको यह बात भी अभी अिधर-अुधरकी है। वरना लोग तो अपनी अिच्छाके अनुसार भोग भोगते ही आये हैं। ठक्करबापा अिस समय मेरे साथ नहीं है; १५वींको मिलेंगे। आजकल मलकानी मेरे साथ है। वह तो खूब काम कर रहे हैं। और सब तो करते ही है। चंद्रशंकरकी तबियत ठीक ही रहती है। ओम, किसन बराबर अपनी तन्दुरुस्तीको सँभालते हैं। ओम भरसक मेहनत करती है। बहुत भोली और सरल है। किसन भी अैसी ही है। सुरेन्द्रको ताकत आ गअी है। आन्ध्रदेशकी यात्रा ३री तारीखको पूरी होती है। अुसके बाद मैसूर जाना होगा। जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ धाँधली तो रहती ही है। परेशानी भी रहती है। मुझे तो सब सँभाल लेते हैं, अिसलिअे परेशानी कम मालूम होती है। छोटी-से-छोटी बातका

खयाल मीराबहन रख लेती है, अिसलिअे यात्रामें मुझे तकलीफ रहती ही नहीं। तू मुलाक़ात छोड़े तो मुझसे हर हफ्ते पत्र पायेगी। मैं हर हफ्ते प्रवचन भेजता रहूँगा। तू दूसरी बहनोंसे मिल सकती है, अिससे संतोष मानना। लेकिन जैसा तेरी मर्ज़ीमे आये, करना। तू मुलाक़ात चाहेगी, तो मिलने आनेवाले तो बहुत तैयार हो जायेंगे, चाहेंगे भी। जान-बूझ-कर मुलाकाते कम रखनेका रिवाज डाला है। लेकिन तू जो चाहे, सो बिना सकोचके लिखना। जानकीबहनकी तबियत ठीक है। अुनके राम-कृष्णके टॉन्सिल कटवानेकी बात मैं शायद तुझे लिख चुका हूँ। कमला अब खाना लेने लगी है। किशोरलालको बुखारने अभी छोडा नहीं, लेकिन चिन्ताका कारण नहीं। मेरा मौन आजकल रविवारकी रातको शुरू होता है, अिसलिअे सोमवारकी रात तक बोलना नहीं रहता। आज रातको ९–१० बजे मौन टूटेगा। और अुस वक़्त किसीसे बोलनेका शायद ही कोअी काम पड़े, क्योंकि फिर तो सोनेका समय हो जायगा। सुबह तीन बजे अुठना रहता है। ब्रजकृष्णका बुखार अब अुतर गया है। ताकत आनी बाक़ी है। हेमीबहन गुजर गअी हैं।

अब प्रवचन :

पिछली बार भक्तके लक्षण लिखे थे। यह भी सूचित किया था कि सेवाके बिना भक्ति नहीं होती। अिस बार सेवा कैसे की जाय, सो लिखता हूँ। क्योंकि लोग अकसर यह सवाल पूछते हैं। कुछ कहते हैं, सेवा अमुक स्थितिमे ही हो सकती है। कुछ कहते है, अमुक अभ्यास करने पर ही सेवा हो सकती है। यह सब भ्रम है। अितना तो पिछले हफ्ते ही लिख चुका था। आदमी किसी भी हालतमे रहता हुआ सेवा कर सकता है। हमारे पास जितनी भी शक्ति हो, सो सब हम कृष्णार्पण कर दे, तो हमे पूरे गुण (नम्बर) मिल जायॅ। जिसकी शक्ति करोड़ देनेकी है, पर जो आधा करोड देता है, अुसे ५० गुणसे ज़्यादा नहीं मिलेंगे। लेकिन जिसके पास अेक पाअी है, और जो वह पाअी दे डालता है, अुसे सौमेसे सौ नंबर मिलेंगे। अिसलिअे तुम वहाँ रहनेवाली बहनों और तुम्हारे सम्पर्कमे आनेवाली बहनों या अफसरोंके साथ अच्छा व्यवहार करो, तो कहा जायगा कि तुमने सेवाधर्मका पालन किया। अफसरोंके साथ

सेवाभावसे बरतनेका मतलब है कि कभी अुनका बुरा न चाहना, अुनके साथ विनयका पालन करना, अुन्हें धोखा न देना। नियमोंका पालन करना, और तुम्हारे सम्पर्कमे आनेवाली गुनाहोंके लिअे सजा पाअी हुअी बहनोंके साथ सगी बहनका-सा व्यवहार करना। अुन पर तुम्हारे प्रेमकी छाप पडे, वे तुम्हारी पवित्रताको पहचाने, तो वह भी सेवाधर्मका पालन कहा जायगा। दोनोमे हेतु अच्छा होना चाहिये। स्वार्थके कारण या डरकी वजहसे जो अच्छा व्यवहार किया जाता है, वह सेवामे शुमार नहीं होता। अेक काम अेक आदमी स्वार्थ साधनेके लिअे करता है और दूसरा परमार्थकी दृष्टिसे करता है, सो तो हम भी अकसर देखते ही है। जहाँ अीश्वरार्पण भाव है, वहाँ स्वार्थको कोअी स्थान ही नहीं। अिस प्रकार सेवा करनेवाला रोज अपनी शक्ति बढाता जाता है। वह अभ्यास करता है, अुद्यम करता है, सो भी सेवाके विचारसे ही। अिस प्रकार जो सेवापरायण रहता है, अुसके हँसनेमे, खेलनेमे, खानेमें, पीनेमे भी सेवाभाव ही भरा रहता है। यानी अुसके सब कामोंमे निर्दोषता होती है। अैसे भक्तोंको परमात्मा सब आवश्यक शक्ति दे देता है। अिससे सम्बन्ध रखनेवाले तीन श्लोक स्त्रियोंकी प्रार्थनामे है, सो तुम्हें याद होंगे। ये रहे वे श्लोक :

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्ताना योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्य तुष्यन्ति च रमन्ति च॥
तेषा सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोग तं येन मामुपयान्ति ते॥

अिनका अर्थ 'अनासक्तियोग' मे देख लेना। ये श्लोक ९वे, १०वें अध्यायोंमें मिलेंगे। याद रहे कि गीताजीको हम अपने अमलमे लानेके लिअे पढते हैं। यह समझना कि अूपर मैंने जो लिखा है, सो सब गीताजीके आधार पर लिखा है।

बापूका सबको आशीर्वाद

५

१३-२-'३४

बा,

यह पत्र ट्रेनमें लिख रहा हूँ। तेरा पत्र मिला है। काम अितना था कि मंगलवारको लिख न सका। आज गुरुवार है। तू जो तेरी मर्जीमें आवे वह काम मुझे सौंपना। जो चाहे सो सवाल पूछना, मैं अुसे पूरा करूँगा: कोशिश तो करूँगा ही। तूने हरिलालके बारेमें पूछा है। वह पांडुचेरी गया था। वहाँ भी पैसोंकी भीख माँगकर खूब शराब पीता था। कुछ पैसे मिले भी। आजकल कहाँ है, पता नहीं। अुसका यों ही चलेगा। अीश्वर जब अुसे सुबुद्धि दे, तब सही। अिसमें हमारे पाप-पुण्य भी तो काम करते ही है न? हरिलालके गर्भके समय मैं कितना मूढ़ था? जैसा मैंने और तूने किया होगा, वैसा ही हमे भरना होगा। अिस तरह बच्चोंके आचरणके लिअे माँ-बाप जिम्मेदार है ही। अब तो हम यही कर सकते है कि हम शुद्ध बने। सो वैसी कोशिश हम दोनों कर रहे हैं, और अुससे हम संतोष माने। हमारी शुद्धिका प्रभाव जाने-अनजाने भी हरिलाल पर पड़ता ही होगा। अिधर मनुका पत्र नहीं, लेकिन जमनादासने अुसकी खबर दी थी। सुशीलाको लिखूँगा। पुरुषोत्तमकी सगाअी हरखचंदकी लड़कीके साथ हो गअी है। पुरुषोत्तमकी तबियत अभी अच्छी नहीं कही जा सकती। रणछोड़भाअीके भाअीकी पत्नी गुज़र गअी हैं, अिससे मोतीबहन अुदास रहती हैं। अुनकी जवाबदारी बढ़ी है। अम्बालालभाअी और मृदुला मुझसे मिल गये। अम्बालालभाअी और सरलाबहन विलायत जा रहे है। तीन-चार महीने वहाँ रहेंगे। देवदास-लक्ष्मी ठीक है। क्या लक्ष्मीको बालकोंका बोझ अुठाना कठिन मालूम होता है? रामदास-नीमु ठीक है। अुन दोनोंको तेरे पत्रकी नकल भेजता हूँ। असल पत्र मणिलालको भेज रहा हूँ। नकल वल्लभभाअीको भी भेजी है। वे भी चिन्ता करते है। माधवदासका अभी तक कोअी जवाब नहीं आया। मथुरादास मेरे साथ है। अेक-दो दिन रहकर बम्बअी जायेंगे। अेस्थर मेनन विलायतसे आ गअी है। वह मुझे मिल गअीं। मिस लेस्टर लंका गअी है। कल मद्रासकी यात्रा समाप्त करके राजाजी चले गये। वे दिल्ली जायेंगे सही।

अमतुलसलामको अभी कमजोरी बाकी है, अिसलिअे अुसे मद्रास छोड़ आया हूँ। राजाजी अुसे सँभालेंगे। तुझे पूनियाँ मिल गअी होंगी। जब खतम हो जायँ, तो फिर लिखना। भेज दूँगा। कुसुमका भाअी जंगबहारमें मर गया, अिसका अुसे काफी दुःख हुआ है। प्यारेलाल कल छूटे। किशोरलाल देवलाली हैं। कुछ ठीक हैं। लक्ष्मीकी प्रसूति बारडोलीमें होगी। मजुकेशा अुसकी सार-सँभाल रखेगी। मोती या लक्ष्मी भी वहाँ होंगी। नानीबहन झवेरीका अुस तकलीफके लिअे ऑपरेशन हुआ है। अब तो काफी खबरें दे दीं न? ९ वीं तारीखको हैदराबादसे चलकर मैं पटना जाअूँगा। राजेन्द्रबाबूने बुलाया है। प्रभावती वहीं है। मुमकिन है कि बिहारमें काफी रहना पड़ जाय।

तुम सब बहनोंको बापूके आशीर्वाद।

६

पेशावर, ७-१०-'३८

बा,

तूने मुझे खूब फिकरमें डाल दिया है। तेरी तबियतके बारेमें जितनी फिकर मुझे अिस बार रही, अुतनी कभी नहीं रही। आज देवदासका तार मिलने पर मैं बेफिकर हुआ। मेरी चिन्ताका कारण तो यह था कि मैंने तुझको दुःखी हालतमें छोड़ा था। मैं अच्छा करने गया और तुझे दुःख हुआ। फिर तो तू भूली, लेकिन मैं कैसे भूलता? बीमार तो थी ही। मालूम होता है, अीश्वरने कृपा की। अब तबियत खूब सुधार लेना। लक्ष्मी, रामू, तारा, सब बिलकुल अच्छे हो गये होंगे? यहाँकी हवा तो बहुत अच्छी है। ठण्ड अभी तो सही जा सकती है।

बापूके आशीर्वाद।

७

१८-१०-'३८

बा,

अब तो ९ दिन बाकी हैं और अीश्वरने चाहा तो मिलेंगे। अुसी दिन सेगाँव चलेंगे। तेरे पत्रमें अेक बात थी, जिसका जवाब देना रह गया है। तूने लिखा है, मैंने चलते समय तेरे सिर पर हाथ तक न

रखा। मोटर चली और मैंने भी महसूस किया। लेकिन तू दूर थी। अब भी तुझे बाहरकी निशानी चाहिये क्या? यह क्यों मान लेती है कि मैं बाहर दिखाता नहीं, अिसलिअे मेरा प्रेम सूख गया है? मैं तो तुझसे कहता हूँ कि मेरा प्रेम बढ़ा है और बढता जाता है। अिसका यह मतलब नहीं कि पहले कम था। लेकिन जो था, वह रोज अधिक निर्मल बनता जाता है। मैं तुझे केवल मिट्टीकी पुतली नहीं समझता। और क्या लिखूँ? अिसका मतलब न समझी हो तो देवदास समझायेगा। लेकिन जिस तरह अमतुल, लीलावती वगैरा बाहरी चिह्न चाहती है, अुसी तरह तू भी चाहे, तो मैं दूँगा।

बापूके आशीर्वाद।

*　　　　*　　　　*

[आगाखान महलसे लिखे गये बा के पत्रोंके कुछ नमूने]

१

२६-५-'४३, सोमवार

चि० काशी,

तुम्हारे दोनों कार्ड मिले। पढकर आनंद हुआ। सबकी अपेक्षा अेक तुम्हारा पत्र नियमित आता है। पढकर खूब ही आनन्द होता है। ता० १४ का पत्र ठेठ आज मिला। यानी पत्र बहुत देरसे मिलते है। वहाँ सब अच्छे है, जानकर खुशी हुअी। किशोरलालभाअीकी तबियत अच्छी है, यह अेक खुश होने जैसी बात है। अिससे पहले मेरी सहीवाला पत्र तुम्हे मिला है या नहीं? आर्यनायकम्‌जी नागपूरसे आ गये, अिसलिअे अुनको और आशादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो, तो प्रभुको और अंबाको मेरे आशीर्वाद लिखना। कल लक्ष्मीका पत्र था। लिखती है कि कभी-कभी अंबाका पत्र आता है। और सब यहाँ मजेमें हैं। मेरी तबियत अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबियत अच्छी होगी? बचु मजेमें होगा? यहाँ प्रार्थनाके समय तुम सबको खूब ही याद करती हूँ। चि० कहाना क्या लिखता रहता है? शाक तो सभी थोड़ा-थोड़ा काटते है। कहना कि थोड़ा तू भी काट। भसालीभाअीके पास पढता है या नहीं? बढ़अीका काम करने जाता है या नहीं? वैसे,

मेरी राख तो आयेगी, पर मैं कैसे आअूँ? चि० कहानासे कहना, वह सबसे हिलमिलकर रहे। लीलावतीसे कहना, हमे अुसका संदेसा मिल गया है। कहते हैं कि जो तुझे अच्छा लगे, कर। वैसे, मुझे तो लगता है कि तू स्कूलमें भरती हो जा। यह तो लम्बा रास्ता है। छगनलालको आशीर्वाद। लीलावती, गोमतीबहन, आनंद, बचु वगैरा सबको और सब आश्रमवासियोंको मेरे आशीर्वाद। कृष्णचद्रजी, जेसे बने वेसे कहानाको अच्छी तरह रखना। तिस पर अुसे अच्छा न लगे तो भेज देना। नागपुरमे सब बहनोंको आशीर्वाद लिखना।

बा के शुभ आशीर्वाद, बापूजीके शुभ आशीर्वाद।

२

२–८–'४३, सोमवार

चि० काशी,

तुम्हारा पत्र मिला था। पढकर आनन्द हुआ। वहाँ सब अच्छे हैं, जानकर खुशी हुअी। बचु, आनन्द, सब मौज करते होंगे? बारिश तो यहाँ खूब ही है, वहाँ भी होगी। काठियावाड़मे तो अच्छी बारिश हुअी। पत्र लिखो तो दुर्गाको, बाबलाको और दूसरे सबको मेरे आशीर्वाद लिखना। छगनलालको आशीर्वाद। लौकी जैसे तुम्हारे वहाँ होती है, वैसे हमारे यहाँ भी खूब ही होती है। चि० मनु मजेमे है। मेरी और बापूजीकी तबियत अच्छी है। मुझे खाँसी है, और तो सब ठीक है। खड्डू है या गया? मणिबाअी है या नहीं? कल शकरनका पत्र था। लीलावती गअी। रसोअी कौन सँभालता है? आज अमावस है। कलसे श्रावण महीना लगेगा। अब सब वार-त्यौहार आयेंगे। अगले रविवारको 'वीरपसली'* है। जेलमे सबको आशीर्वाद। मनोज्ञा, कृष्णदास, प्रभुदास,

---

* वीरपसली – अेक त्यौहार है जो राखीसे पहले किसी रविवारको मनाया जाता है। तब भाअीकी तरफसे बहनको कुछ भेंट दी जाती है।

अंबादेवी सबको मेरा आशीर्वाद लिखना। अब तो लीलावतीके बिना सूना मालूम होता होगा?

विनोबाके पत्र कभी-कभी आते है। बालकोबाको आशीर्वाद। बस यही।

बा के और बापूजीके आशीर्वाद।

३

९-८-'४३, सोमवार

चि० काशी,

ता० २२-७-'४३का तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। बारिश और हवा वगैराको देखते हुअे मेरी तबियत अच्छी है। खाँसी आती है। दुर्गाके समाचार जाने। वहाँ सब मजेमें है, जानकर आनन्द हुआ। अुसको और बाबलाको और दूसरोंको भी मेरे शुभ आशीर्वाद। वैसे, मुझे तो लगता है कि अुसे सेवाग्राममें अच्छा नहीं लगेगा, अिसलिअे वहीं रहेगी। जहाँ रहे, वहाँ सुखी रहे, तो बस है। हमने सुना था कि सावित्री फिरसे मदिरमे गअी है। आश्रममे सबको आशीर्वाद। दूसरे, मेरी पेटी खोलना और अुसमे चार-पाँच साड़ियाँ है, अुनमेसे दो काली किनारकी है, सो फूफीजीको और कोअी चार गज़का टुकड़ा है, वह भी फूफीजीको भिजवा देना। और दूसरी दो लाल किनारकी है, अुनमेसे अेक रामीको और अेक मनुको भेज देना। और मेरी पेटीमे गोरखपुरकी बड़ी गीता है, और आल्मारीमे लाल किनारका चादरा है, सूती है, सो शान्तिकुमारके पास भिजवा देना, तो वह यहाँ भेज देगे। अब बापूजीका जन्मदिन आयेगा। अिसलिअे फूफीजीको और लड़कियोंको कुछ देनेकी मेरी अिच्छा है। अिसीलिअे यह लिखा है। दूसरे, अेक खाकी रगका टुकड़ा भी है, वह भी रामीको दे देना। अिनके सिवा मेरे कुछ जाकट हों, और तुम्हे देने-जैसे लगें, तो दे देना। लाल किनार और बड़ा अर्ज जिसका है, वह रामीको देना। मेरा बाँहोंवाला भूरे रगका स्वेटर है, वह भी भेज देना। डॉ० मनुभाअी और हीराबहनको आशीर्वाद।

आज तो 'बीरपसली' है। तुमने भी मनाअी होगी?

बा के और बापूके आशीर्वाद।

१

प्रथम दर्शन

पूज्य कस्तूरबाका दर्शन मैंने पहली बार सन् १९२०मे श्रीमती सरलादेवी चौधरानीके घर लाहौरमें किया था । मेरे भाअी (प्यारेलालजी) गांधीजीके साथ हो गये थे । अिससे मेरी माँ दुःखी थीं । वे अपने लड़केको वापस लाने गांधीजीके पास गअी थीं । गांधीजी बहुत काममे थे, अिसलिअे माताजी दुपहर-भर पूज्य कस्तूरबाके पास बैठी रहीं । जी भरकर बातें कीं । गांधीजीने अुन्हे शामका वक्त दिया था । लेकिन अिस बीच तो अुनका काफी हृदय-परिवर्तन हो चुका था । अुस दिन दुपहर-भर पूज्य कस्तूरबाके साथ बातें करनेके बाद माताजीको लगने लगा था कि "आखिर ये भी तो मेरे जैसी ही अेक स्त्री है न? ये अितना त्याग कर सकती है, तो मेरा लड़का भी देशकी सेवामे भले ही अपना कुछ समय दे।" अिसलिअे अुन्होंने गांधीजीसे कह दिया : "आप चाहे चार-पाँच साल तक मेरे लड़केको अपनी सेवामे रखिये, लेकिन बादमे मुझे मेरा लड़का लौटा दीजिये। मेरे पति नहीं है । यह लड़का ही मेरा आधार है।"

अुन दिनों मैं पाँच-छह सालकी थी। माताजीके साथ बात-करती हुअी बा का वह चित्र आज भी मेरी आँखोंके सामने खड़ा होता है । माताजी बा पर मुग्ध हो गअी थीं । गांधीजीने तो माताजीको खुद विदेशी कपड़े पहनने और मुझे भी पहनानेके लिअे और घर व दुनियाके प्रति अितनी ममता रखनेके लिअे अेक मीठा अुलाहना भी दिया था। मगर बा ने अुनके साथ पूरी हमदर्दी दिखाअी थी। आपबीती सुनाकर बदलते हुअे ज़मानेके साथ अुन्हें अपने विचारोंको भी बदलनेकी सलाह दी थी। माताजी कअी दिनों तक बा की ही बाते किया करती थीं। बा ने अितना

बड़ा त्याग सिर्फ बापूजीके प्रति अपनी वफादारी अदा करनेके लिअे ही किया था, अिसका माताजी पर गहरा असर पड़ा था। बा की सहानुभूतिसे अुनमे स्वय भी त्याग करनेकी शक्ति आ गअी थी। माताजीने यह भी देखा कि बा अुन्हींकी तरह 'माँ' थीं। अुनमे माँका अितना प्रेम देखकर माताजीको सतोष हुआ। अिस विचारसे कि मेरे लड़केकी सार-सँभाल अेक 'माँ' ही कर रही है, माताजीके लिअे अपने पुत्रके वियोगको सहना ज़रा आसान बन गया।

२

प्रथम परिचय

सन् १९२० और १९२९के अरसेमें मुझे कभी-कभी बा के और बापूजीके दर्शन हो जाया करते थे। बा हमेशा प्रेमसे पेश आती थीं। १९२९की गर्मियोंमे मुझे बा के कुछ अधिक निकट संपर्कमें आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे भाअी मुझे बहुत समयसे आश्रममे बुला रहे थे। मैं तो हमेशा तैयार ही थी, लेकिन माताजी अकेली लड़कीको घरसे बाहर भेजना पसन्द नहीं करती थीं। भाअीका आग्रह था कि अगर सचमुच ही मुझे कुछ सीखना हो, या नया अनुभव पाना हो, तो मुझको अकेले ही सफर करना चाहिये। आखिर मेरे कॉलेजमे दाखिल होनेके बाद माताजीने मुझे अकेले जानेकी अिजाज़त दी। भाअी किसी कामसे बापूजीके साथ आगरा आये हुअे थे। वे दिल्ली आकर मुझे ले गये। रेलके चौबीस घंटेके सफरके बाद हम लोग अहमदाबाद पहुँचे। मैं पहली ही दफा माताजीसे अलग हुअी थी, अिसलिअे मन कुछ अुदास था। मगर साथ ही नअी जगह और नये प्रकारके जीवनको देखनेकी अुत्सुकता भी खूब थी।

आश्रमके बारेमें मैने जो कुछ पढा और सुना था, अुसकी मुझ पर गहरी छाप पडी थी। मैं किसी देवलोकमें जा रही हूँ, और मेरे-जैसे तुच्छ व्यक्तिको बापूजीने वहाँ कुछ दिन रहनेकी अिजाजत दी है, अिस विचारसे मेरा हृदय कृतज्ञतासे गद्‌गद हो रहा था। जब भाअीने मुझे ट्रेनमेंसे

साबरमती आश्रमकी दूर पर टिमटिमाती हुअी बत्तियाँ दिखाअीं, तो मैं रोमांचित हो अुठी।

ट्रेनसे अुतरकर हम घोड़ागाड़ी पर सवार हुअे और आश्रम पहुँचे। रात काफी बीत चुकी थी। मैं थकी भी थी। अिसलिअे गाड़ीमें ही सो गअी। अेकाअेक गाडी अेक छोटेसे बरामदेके सामने आकर खड़ी हो गअी। हम आश्रममें पहुँच चुके थे। बादमें मुझे पता चला कि वह स्व० मगनलाल गांधीके घरका बरामदा था। जबसे मगनलालभाअीकी मृत्यु हुअी थी, बापू दिनमें अुनके घर बैठकर ही अपना सारा काम करते थे और रात 'हृदयकुंज' (बा का घर) में जाकर सोते थे। बापूजी हमसे अेक दिन पहले आश्रममें आ चुके थे। जब हम पहुँचे, सब लोग सो रहे थे। अकेले रामदासभाअी जागते थे। वे अुसी बरामदेमें सोते थे। मैं और भाअी भी वहीं बरामदेमें फर्श पर बिस्तर बिछा कर सो गये। जमीन पर सोनेका यह मेरा पहला ही तजरबा था। अुस रात कुतूहल और घबराहटके कारण मैं शायद ही कुछ देरको सो पाअी हूँगी।

सुबह चार बजे प्रार्थनाकी घंटी बजी। भाअी मुझे बापू और बा के पास ले गये। बापूजीने रास्तेका हाल पूछा और अगले दिनसे बा के पास ही अपने बरामदेमें सोनेकी सूचना की।

प्रार्थनाके बाद बा मुझे अपने कमरेमें ले गअी। कमरेमें सामान बहुत कम था, मगर हरअेक चीज करीनेसे रखी थी। कहीं भी गन्दगी या कचरेका कोअी निशान न था। अेक छोटे-से स्टोव पर चाय-कॉफी बनानेके लिअे पानी अुबलनेको रखा था। बा ने बड़े प्रेमसे मुझको और भाअीको नाश्ता कराया। यहाँ मैंने पहली ही दफा बा के हाथों कॉफी पी। जितने दिन मैं आश्रममें रही, बा मुझे अपने साथ ही नाश्ता कराती थीं। मुझे अपने घरकी और माताजीकी याद बहुत सताया करती थी। मैं माताजीके साथ जिद करके न आअी होती, तो शायद अेक ही दो दिनमें वापसी गाडीसे घर लौट जाती। लेकिन अब तो किसी भी तरह छुट्टियाँ यहाँ बितानी थी। लोग सब नये थे। मैं अुनकी भाषा नहीं समझती थी। मुझे लगता था कि ये लोग मुझसे बहुत अूँचे हैं। अिसलिअे मारे भयके मैं किसीसे बात भी नहीं करती थी। लेकिन जब मैं बा के

पास जाती, मेरा डर बहुत कम हो जाता। वे माताजीकी भाँति ही मुझे प्रेमसे खिलातीं-पिलातीं और बात-चीत करती थीं। उन्होंने कभी अैसी कोअी बात नहीं कही, जिससे मुझे लगता कि मैं कितने महान् व्यक्तिके पास बैठी हूँ। वे माँ थीं और अुनके आसपास माताका प्रेमभरा वातावरण हमेशा ही बना रहता था। मैं सारा दिन नाश्तेके समयकी ही राह देखा करती थी।

आश्रममें सुबह सब बहनें अनाज साफ करने, रोटी बनाने, और शाक वगैरा काटनेके लिअे जाती थीं। मै भी वहाँ जाती। अकसर बा भी वहाँ मिलतीं। वे सबके साथ बैठकर बराबरीसे अपने हिस्सेका काम करतीं। अुनके चलने, फिरने और काम करनेमें आश्चर्यजनक स्फूर्ति थी, और लगभग अखीर तक अुनकी यह स्फूर्ति कायम रही। बीमारीके दिनोंमें मुझे अुनसे अुनकी अिस स्फूर्तिके लिअे और आराम न करनेके लिअे कितनी ही दफा झगड़ना पडा है।

मैंने देखा कि बा खूब काता करती थीं। वे बापूजीके पास बहुत कम बैठी नजर आती थीं। फिर भी वे सारा समय अिस बातकी निगरानी रखती थीं कि किस वक्त कौन बापूजीकी शारीरिक सेवा करनेवाला है, और वह वक्त पर पहुँचा है या नहीं। अेक रोज मैंने देखा कि दुपहरकी जलती धूपमें बा साबरमती आश्रमके रसोअीघरकी ओर जा रही है। यह जगह अुनके अपने घरसे काफी दूर थी। पूछने पर पता चला कि वे भाअीको बापूजीके पैरोंमें घी मल देनेके लिअे ढूँढ रही थीं। बापूजीके सोनेका वक्त हो चुका था और भाअी अभी पहुँचे नहीं थे। मैंने कहा: "मुझे काम बताअिये, मैं कर दूँ।" अिस पर बा बोली: "नहीं, प्यारेलालको बापूकी सेवाका अवसर खोना अच्छा नहीं लगेगा। वही आकर करेगा। तुम अुसे ढूँढ लाओ। खाना खा रहा हो, तो मत बुलाना!" यहाँ फिर माँ बोल रही थी: "खाना खा रहा हो, तो मत बुलाना!"

अुन दिनों मुझे कपडे धोना नहीं आता था। कुअेसे पानी खींचनेकी मेहनत बचानेके लिअे मै नदी पर चली जाया करती थी और पानी साफ हो या मटमैला, अुसीमे जैसे-तैसे अपने कपड़े धो लाती थी। नतीजा यह हुआ कि मेरे सारे कपड़े मिट्टीके रंगके हो गये। और किसीको तो अिन बातोंकी ओर ध्यान देनेकी फुरसत नहीं थी, मगर बा की आँखसे यह

छिपा न रहा। अुन्होंने मुझे समझाया और बताया कि कपड़े किस तरह धोने चाहियें। भाअीसे कहा कि वे मेरी मदद करें। बा मेरे कपड़े किसीसे धुलवा देनेको तैयार थीं, मगर मैं जानती थी कि आश्रममें तो सारा काम हाथ ही से करना चाहिये, अिसलिअे किसीसे नहीं धुलवाये। मैंने खुद ही कुअें पर जाकर धोना शुरू कर दिया। कुअें पर अक्सर मुझे कोअी न कोअी पानी खींच दिया करता था। मुमकिन है कि अिसमें भी बा का ही हाथ रहा हो।

मेरी छुट्टी पूरी होनेको आयी। अेक दिन बापूजी अपने बरामदेमें बैठे अकेले कुछ काम कर रहे थे। अुस वक्त वहाँ बरामदेमें मेरे सिवा और कोअी नहीं था। अितनेमें कुछ दर्शक आये। अुन्होंने बापूजीको प्रणाम किया, कुछ भेंट भी दी और आश्रम देखनेकी अिच्छा जताअी। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा कि मैं अुनको आश्रम और आश्रमकी गोशाला वगैरा दिखा दूँ। फिर अेकाअेक अुन्हें कुछ खयाल आया और अुन्होंने मुझसे पूछा: "तूने खुद यह सब देखा है?" मुझे कहना पड़ा: "नहीं।" बापूने किसी औरको बुलाकर दर्शनार्थियोंको अुनके साथ भेज दिया। मुझे अेक भाषण सुननेको मिला: "कोअी अंग्रेज लड़की अितने दिनों तक यहाँ रहनेके बाद अिस तरह अपने आसपासकी चीजोंसे नावाकिफ न रहती। मगर हमारे लड़कों और लड़कियोंको तो आजकल किताबोंकी ही पड़ी है। बी० अे० पास कर लिया, तो जीवन सफल हो गया; और कहीं दुर्भाग्यसे नापास हो गये, तो बस खतम! सामान्य ज्ञानकी तो अुन्हें कोअी परवाह ही नहीं है।" मैं बहुत शरमिन्दा हुअी। अक्सर मैं किताब लेकर बैठती थी। मगर अिसका कारण यह था कि मेरे पास दूसरा कुछ करनेको नहीं था। सब कुछ देखनेकी अिच्छा तो थी, लेकिन संकोचवश मैं किसीसे कुछ पूछती नहीं थी। और यों दिन बीत रहे थे। बा को पता चला। वे फौरन अपने आप मेरी कठिनाअी समझ गअीं। अुन्होंने भाअीसे और बापूसे कहकर मुझे आश्रम और अहमदाबाद शहर दिखानेका बन्दोबस्त करवा दिया। अिस तरह आखिर मुझको सब जगहें देखनेका मौका मिला।

कुछ दिन बाद बापूजीके दौरे पर जानेका समय आया। मेरी भी छुट्टियाँ खतम हो रही थीं। मुझे वापस भेज देनेकी बात हुअी, लेकिन

मैंने तो कभी अकेले सफर किया ही नहीं था। मुझको अकेले दिल्ली कैसे भेजा जाय? आखिर बापूजीने मुझे अपने साथ ले जानेका निश्चय किया। आगरा अुनके रास्तेमे पड़ता था। वहाँसे मुझे दिल्ली भेजना आसान था। अहमदाबादसे हम लोग बम्बअी गये। वहाँ मैंने ट्रेनमेंसे पहली ही दफा समुद्रके दर्शन किये। आश्रममे मेरी चप्पले खो गअी थीं। सोचा था, बम्बअीसे ले लूँगी। मगर वहाँ अुस दिन दूकाने बन्द थीं। बम्बअीसे बापूजी भोपाल गये। गाडीसे अुतरकर पुल पार करते समय बा ने देखा कि मैं नगे पाँव चल रही हूँ। मुकाम पर पहुँचते ही अुन्होंने अपने पासकी नअी चप्पलें, जो कुछ ही दिन पहले अुनके लिअे आयी थीं, निकालीं और मुझे पहनाअीं। अिस प्रकार बा के साथ रहते हुअे मुझे क़दम-क़दम पर अुनकी मृदुलताका और अुनके मातृ-प्रेमका अनुभव होता रहा। मुझे मुक्तकण्ठसे बा की स्तुति करते सुनकर किसीने कहा: "तुम बा के पास अधिक समय रहोगी, तो तुम्हें पता चलेगा कि वे गुस्सा भी कर सकती है।" लेकिन मैं अिसे मान नहीं सकी।

बा को अग्रेजी बहुत नहीं आती थी। मगर अपनी थोड़ी-सी अग्रेज़ीसे भी वे कितनी अच्छी तरह अपना काम चला लेती थीं, अिसका अुन दिनोंका अेक अुदाहरण मुझे याद आता है। भोपालमे बापूजी नवाब साहबके मेहमान थे। बा को शहदकी जरूरत थी। अुन्होंने अेक चुस्त-से अमलदारको, जो हम लोगोंके लिअे तैनातमे था, पूछा: "आप हिन्दी जानते है?" बा की मंशा हिन्दीसे बोलचालकी हिन्दुस्तानीकी थी। मगर मुस्लिम रियासतके अेक मुसलमान अफसरको हिन्दीसे क्या वास्ता होता? अुन्होंने शुद्ध हिन्दुस्तानीमें जवाब दिया: "जी नहीं।" बा बोलीं: "अग्रेजी जानते है?" जवाब मिला: "जी हाँ।"

अिस पर बा ने कहा: "Bees, flowers, honey" और वह अफसर झट जाकर शहदकी बोतल ले आया।

नवाब साहबकी माँने बा को मिलनेके लिअे बुलाया था। मैं बा के साथ थी। बेगमोंसे मिलने और अुनके साथ बातचीत करनेमें बा को किसी क़िस्मका सकोच या कठिनाअी मालूम नहीं हुअी। धन-दौलतकी और राजपाटकी चमक-दमक अुन्हे ज़रा भी चकाचौंध नहीं कर पाती थी।

अुनके मन अिनकी कोअी कीमत न थी। वे अच्छी तरह जानती थीं कि अुनके पतिका दर्जा राजा-महाराजाओंसे कहीं बढ़-चढ़कर था। अुन्होंने बेगमोंको खादीका पैगाम सुनाया। अुनकी बातें सुननेवालेको यह कल्पना भी नहीं आ सकती थी कि वे लगभग अेक निरक्षर महिला थीं। अुनका अक्षरज्ञान चाहे कम रहा हो, मगर अुनका साधारण ज्ञान, मनुष्य-स्वभावका और मानव-जीवनका अुनका ज्ञान, बहुत गहरा था।

आगरेसे मैं वापस दिल्ली आअी। कॉलेज खुलनेका वक्त हो चुका था, अिसलिअे मैं दिल्लीसे लाहौर गअी। लेकिन मेरे दिलमें तो बा का और आश्रमका चित्र खिंच चुका था। वहाँकी स्वतन्त्रता और सादगीकी मेरे मन पर गहरी छाप पड़ी थी। अिसलिअे लाहौरका बनावटी जीवन मुझे बहुत चुभने लगा। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि मैं अपने बस भर सादा जीवन बिताअूँगी। जब मैं भाअीके साथ आश्रम जा रही थी, माताजीने मुझसे कहा था: "वहाँसे कोअी व्रत वगैरा लेकर न आना।" मैंने वचन दिया कि मैं अैसा कुछ नहीं करूँगी। माताजीका अिशारा खासकर खादी पहननेके व्रतकी ओर था। अुन्होंने अुसी साल मेरे कॉलेजमें भरती होने पर मुझे बहुतसे नये कपड़े बनवा दिये थे। वे अुनको जाया करना नहीं चाहती थीं। मैंने आश्रममें खादी पहननेका व्रत तो नहीं लिया था, मगर वहाँसे लौटकर मैं खादीके सिवा दूसरा कपड़ा पहन ही न सकी। मैं खादीके तीन जोड़ कपड़े लेकर आश्रम गअी थी। वापस आने पर मैंने अुन्हींसे कोअी तीन महीने अपना काम चलाया। आश्रममें जाकर मैंने बा से यह सीख लिया था कि खादीके सादे कपड़ोंमें भी खासी अच्छी शोभा आ सकती है। बा हमेशा बहुत सफाअी और सलीकेसे कपड़े पहनती थीं। वहाँ मैंने कपड़े धोना भी सीख लिया था। अिसीलिअे मैं रोज अपने हाथके धुले खादीके कपड़े पहनकर ही कॉलेज जाती थी। आखिर माताजीने मुझे मिलके कपड़े पहनानेका आग्रह छोड़ दिया और खादीके नये कपड़े बनवा दिये।

३

बापूसे सूने आश्रममें

सन् १९३०में भाअीके कहने पर मैं फ़िर आश्रम पहुँची। अुन दिनों गर्मीकी छुट्टियाँ थीं और भाअी और बापूजी दोनों जेलमें थे। आश्रम सूना था। बा अुन दिनों कुछ दिनके लिअे वहाँ आअी थीं। अुस समयकी बा दूसरी ही बा थीं। वे काफी थकी हुअी थीं। देशके दुःखसे दुःखी थीं। मैंने सुना कि वे गाँव-गाँव घूमकर कार्यकर्त्ताओं और सेवकोंका अुत्साह बढ़ानेमे लगी थीं। अुनके मुरझाये हुअे चेहरे पर अपूर्व दृढ़ता और आत्म-विश्वास झलकता था। वे अब सिर्फ अेक कोमलांगी माता ही नहीं थीं, बल्कि रणभूमिमें अुतरी हुअी वीरांगना भी थीं। अुनके मनमे हमारी लडाअीकी न्याय्यताके और हमारी अंतिम विजयके बारेमे जरा भी शका नहीं थी।

बापूजीकी निर्णयात्मक बुद्धि पर अुन्हें अपूर्व श्रद्धा थी। वे राजनीति नहीं समझती थीं, मगर बापूको पहचानती थीं। अुनके लिअे यह काफी था। अुनमे हिन्दुस्तानके करोड़ों मूक लोगोंकी मनोवृत्ति प्रतिबिम्बित होती थी।

आश्रममे आनेके बाद बा साबरमती जेलमें रामदासभाअी, मणिलाल-भाअी और दूसरे कुछ मित्रोंसे मिलने गअीं। जाते समय वे दूसरे कुछ आश्रमवासियोंको और मुझे भी अपने साथ ले गअी। जेलकी कठिनाअियाँ सहते-सहते अुन लोगोंके चेहरे सूख गये थे। यह सब देखकर मेरा जी भर आया — मुझे रुलाअी-सी आने लगी। लेकिन बा ने तो बहुत जेल देखे थे, बहुत कठिनाअियाँ सहन की थीं। वे बिलकुल शान्त रहीं। स्वतन्त्रताकी वेदी पर बलि चढ़ानेकी अुन्हे अितनी आदत हो गअी थी कि अुनको अपने पतिका, पुत्रोंका या अपना जेल जाना बलिदान-सा मालूम ही न होता था। हज़ारों लोग जेलोंमे बन्द थे न? अुनके अपने लड़के दूसरोंसे अनोखे थे क्या? यह था अुनका भाव! अुनकी हिम्मत और बहादुरी देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

४

दिखावेसे नफ़रत

१९३०मे देवदासभाअी गुजरात (पजाब) जेलमे थे और भाअी (प्यारेलालजी) साबरमती जेलमे। सारी दुनियाको अपना परिवार बना लेनेके बापूजीके आदर्शको बा ने अपना लिया था। बरसोंसे वे अुस पर अमल करनेकी कोशिश कर रही थीं। देवदासभाअी अुनके लाडले लडके थे, मगर बा साबरमती जेलमे भाअीसे और दूसरे कार्यकर्ताओंसे मिलकर अपने लडकेसे मिल लेनेका आनन्द और आश्वासन पा लेती थीं। वे जिन लोगोंको मिलने जाती थीं, अुन्हे अुनसे मिलकर कितना आनन्द होता और कितना आश्वासन व अुत्साह मिलता, सो तो कहनेकी बात नहीं। वे सिर्फ अेक बार देवदासभाअीसे मिलने गुजरात आअी थीं। मैं और माताजी अुनके साथ थीं। वहॉसे माताजीके कहने पर वे हमारे गॉवमे, जो गुजरात रेल्वे स्टेशनसे ४ मील आगे है, आअीं। अुस वक्त मैंने देखा कि अितना महान् व्यक्तित्व होने पर भी बा को अपने जुलूस वगैराके दिखावेसे कितनी नफरत थी। वे तो भाअीके प्रति अपने प्रेमके वश होकर अुनके घर आअी थीं। मगर लोगोंने अुनका जुलूस निकालनेकी कोशिश की। अुनका हेतु अिस बहाने जनताका अुत्साह बढाना था। लेकिन बा को वह अखरा। अिसे लेकर वे अितनी परेशान हुअीं कि आखिर लोगोंको अपना हठ छोड ही देना पडा। जनताके प्रेम-प्रदर्शन और स्वागत-समारोहके प्रति बा की अितनी अरुचि देखकर पजाबवालोंको बहुत आश्चर्य हुआ। हर आदमी अेक ही सवाल पूछता था: "लीडरोंको तो यह सब बहुत अच्छा लगता है। बा क्यों हमे जुलूस निकालनेसे रोकती है?"

१९३१की गर्मीकी छुट्टियोंमे मैं फिर आश्रम गअी। अिस बार भी बापूजी वहॉ नहीं थे। कुछ दिनों बाद वे वहॉ आये। मगर आश्रममे न रहे। दॉडी कूचके समय वे यह प्रण करके निकले थे कि जब तक स्वराज्य नहीं मिलेगा, वे वापस आश्रममे आकर नहीं रहेगे। अिसलिअे

वे विद्यापीठमें ठहरे थे। कुछ दिनों बाद बा भी वहाँ आ पहुँची। अेक अरसेके बाद अुन्हें बापूजीके साथ रहनेका यह मौका मिला था। अिसके दो-चार दिन बाद ही बापू वहाँसे वाअिसरायको मिलने शिमला चले गये और शिमलासे सीधे अुन्हें गोलमेज परिषद्के लिअे विलायत जाना पड़ा। वे बम्बअीसे जहाज पर सवार हुअे। अुन दिनों बा साबरमतीमे ही थीं। अुनके मनमे बापूजीके साथ विलायत जानेका तो क्या, बंबअी जानेका भी विचार नहीं अुठा। बरसों हुअे, वे अपने पतिको हिन्दुस्तानकी और मानवजातिकी सेवाके लिअे दे चुकी थीं। बापू पर जितना अुनका अधिकार था, अुतना ही दूसरोंका भी। अिस अुसूल पर अमल करनेकी कोशिशमें लगी हुअी बा को यह स्वाभाविक मालूम होने लगा था कि बापूजीके कामकी दृष्टिसे जिसका साथ रहना जरूरी हो, वही अुनके साथ रहे।

गोलमेज़ परिषद्से लौटनेके बाद बापूजी फिर तुरन्त ही सन् '३२में जेल चले गये। माताजी विलायतसे लौटे हुअे भाअीको मिलने बम्बअी गअी हुअी थीं। वहाँसे वापस लौटते समय जब वे बापूजीको प्रणाम करने गअीं, तो बापूने कहा: "अब वापस क्या जाती है? हमे जेल भेजकर आप भी जेल जाअिये।" बापूजीकी गिरफ्तारी माताजीके सामने ही हुअी। बादमे भाअी पकड़े गये। अुसके बाद माताजी भी जेल गअीं। कुछ दिनों तक वे और बा अेक ही जेलमे थीं। माताजी मुझसे कहती थीं कि जेलमे बा बहुत प्रसन्न रहती थीं। जेलकी तकलीफे अुन्हें तकलीफे ही नहीं मालूम होती थीं। यही नहीं, बल्कि अुनकी छायामें रहनेवाले दूसरे कैदियोंका जीवन भी बहुत कुछ सरल और मधुर बन गया था।

१९३५की गर्मीकी छुट्टियोंमे मै दो-तीन हफ्तोंके लिअे बापूजीके पास वर्धा गअी थी। बापू अुन दिनों मगनवाड़ीमे रहते थे। बा दिन भर अपने काममे लगी रहतीं। अुसी साल नवबरमें अपनी परीक्षाके बाद मैं भाअीके साथ फिर वर्धा गअी।

५

बा की सार-सँभाल

अुन दिनों देवदासभाओकी तबियत अच्छी न थी। बा ने जिस धीरज और समझसे अुस बीमारीमें देवदासभाओकी सेवा की, वह अद्‌भुत थी। १९३६की गर्मियोंमें बा और भाओी देवदासभाओको लेकर शिमला गये। भाओी कहते थे कि किस तरह बा अपने साधारण ज्ञान और अपनी सहज बुद्धिके ज़रिये बड़े-बड़े डॉक्टरोंसे भी ज़्यादा काम कर लेती थीं। आखिर अुनकी मेहनत फली। देवदासभाओी अच्छे हो गये। बा वापस बापूके पास पहुँच गओीं।

१९३७के दिसम्बरमें बापूजी कलकत्तेमें बीमार पड़े। मैं वहाँसे कुछ दिनोंके लिअे अुनके साथ वर्धा आओी। अिसके बाद कुछ अैसी घटनायें घटीं कि थोड़े दिनोंके बदले मैं बरसों अुन्हींके पास रह गओी। अब मुझे बा का और भी निकट परिचय हुआ। वहाँ पहुँचते ही बा ने मुझे अपने चार्जमें ले लिया। अुनके पास अेक छोटा सा कमरा, गुसलखाना और बरामदा था। वहीं अुन्होंने मेरा बिस्तर रखवाया। रात मुझे अपने पास बरामदेमें सुलातीं और सब प्रकारसे सगी मॉकी तरह मेरी सभाल रखतीं। शुरूमें सुबह मैं अकसर अपना बिस्तर अुठाना भूल जाती और बा बिना कुछ कहे चुपचाप अपने हाथसे अुठाकर अुसे कमरेके अन्दर रख देतीं। जब मुझे अिसका पता चला, तो मैं बहुत शरमिन्दा हुओी और फिर बिना भूले नियमसे अपना बिस्तर अुठाने लगी। मैं बा का बिस्तर भी अुठानेकी कोशिश करती, लेकिन अक्सर बा मेरे पहुँचनेसे पहले ही अपना बिस्तर वगैरा अुठाकर रख देती थीं। मैंने देखा कि बहुत बार वे दूसरोंके रखे हुअे बिस्तरोंको अुठाकर अुन्हें फिर क़रीनेसे रखती थीं। बड़े-बड़े वज़नी गदेलोंको भी अुठानेमें वे बिलकुल आलस नहीं करती थीं। अुन्हें सफाओी और क़रीनेसे अितना प्रेम था कि अव्यवस्था और गन्दगी अुनसे सही नहीं जाती थी। अुनकी नियमितता भी अितनी ही आश्चर्यजनक थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि अेक भी अैसा अवसर आया हो, जब बा कोओी काम करना भूल गओी

हों । अेक बार मैंने अुनकी छोटी पेटी (अटैचीकेस) मेंसे कुछ निकाला। अुसे बन्द करनेकी अेक स्प्रिंग कुछ बिगडी हुअी थी। अिसलिअे मैंने अुसे अेक तरफसे ही बन्द करके दूसरीको खुला छोड दिया। बा ने देखा, और चुपचाप अुसे बन्द कर दिया। जब दुबारा अुसमेंसे कुछ निकालनेका मौका आया, तो बा कहने लगीं : "ज़रा यहाँ लाओ, मैं बन्द कर दूँ।" मैंने कहा : "मैं करती हूँ।" बा की आँखें हँस रही थीं — मानो कहती हों : "कहीं भूल तो न जाओगी?"

६

बा की दिनचर्या

बा की तबियत अच्छी नहीं रहती थी। बरसोंसे खाँसी और दमेके कारण अुनका हृदय और फेफडे कमज़ोर पड़ गये थे। लेकिन अुनको अपने शरीरकी कोअी परवाह नहीं थी। अुनकी स्फूर्ति अद्भुत थी। धीमे-धीमे काम करना या चलना वे जानती ही न थीं।

बा सुबह चार बजे प्रार्थनाके लिअे अुठनेका आग्रह रखती थीं। प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा-पौना घंटा फिर सो लेते, मगर बा अुनके अुठनेसे पहले अुनके लिअे नाश्ता तैयार करने या करवानेको चली जातीं। आश्रमवासियोंमें बापूजीकी सेवा करनेकी लालसा तो हमेशा रहती ही थी। अिसलिअे बा अक्सर अुनकी सेवाके कामोंको बाँट दिया करतीं। लेकिन किसीको कोअी काम सौंपनेके बाद भी वे खुद सामने खड़ी होकर देखतीं कि सारा काम बराबर हो रहा है या नहीं। सफाअी बराबर रखी जा रही है या नहीं। नाश्ता तैयार करके वे अुसे बापूजीके कमरेमें ले जातीं और खुद पास बैठकर अुन्हें खिलातीं। अिसके बाद वे अिस बातका खयाल रखतीं कि बरतन वगैरा भलीभाँति साफ होते हैं या नहीं। अक्सर मैंने देखा है कि किसी लडकीके साफ किये हुअे बरतनोंको बा ने अपने हाथों फिर साफ किया है। अुनके बरतन हमेशा चमकते रहते थे।

जब बापूजी घूमनेको निकल जाते, बा स्नान वगैरासे निपटकर अपने पूजा-पाठमें लगतीं। वे रोज घंटा डेढ़ घंटा रामायण, गीताजी वगैराका पाठ करतीं। फिर रसोअीघरमें पहुँच जातीं और बापूजीका खाना तैयार करवातीं; दूसरोंके लिअे बननेवाले खाने पर भी नज़र रखतीं। परोसनेके समय बापूजीको और आसपास बैठे दूसरे मेहमानोंको परोसकर वे बापूके पास ही खाने बैठ जातीं। अुस समय भी अुनकी अेक आँख बापूजी पर रहती। ज्यों ही कोअी मक्खी बापूजीके नज़दीक आती, बा का बायाँ हाथ पंखे या रूमालसे अुसे अुड़ा दिया करता। खानेके बाद बा बापूजीके पास आकर बैठतीं और अुनके पैरोंमें घीकी मालिश करती। अिसके बाद वे अपने कमरेमें जाकर थोड़ा आराम करतीं और फिर कातने बैठ जातीं। वे रोजके चारसौ-पाँचसौ तार कातती थीं। कअी बार बीमारीसे अुठनेके बाद कमजोरीकी हालतमें मुझे अुनको टोकना पड़ा था। मैं कहती: "बा, आप कातनेकी अितनी मेहनत न किया करें।" लेकिन बा हँसकर टाल देतीं। अुन्हें लगता था कि जो भी बापूजीके लिखने-पढ़नेके और राजनीतिके कामोंमें वे मदद नहीं कर सकतीं, तो भी कातकर वे अुनके कामको आगे तो बढ़ा ही सकती है न? और, बापूने ही कहा है न कि "सूतके धागेसे स्वराज्य बँधा है!" अिसलिअे कताअी छोड़ना अुनको हमेशा खटकता था।

शामको वे फिर रसोअीघरमें पहुँच जातीं। बापूजीका खाना तैयार करवातीं। दूसरे कामोंकी देखभाल करतीं। फिर सुबहकी तरह बापूजीको भोजन करातीं। वे खुद तो बरसोंसे शामको खाना खाती ही न थीं। सिर्फ कॉफी पी लिया करती थीं। अिधर-अिधर अिन अखीरके दो-चार सालसे, अुन्होंने कॉफी भी छोड़ रखी थी, और अुसकी जगह वे दूधमें कुछ मसाले (तुलसी आदि) अुबालकर अुसे लिया करती थीं। शामको जब बापू घूमने निकलते, बा आश्रमके बीमारोंको देखनेके लिअे अुनके पास जातीं, और फिर आश्रमकी दूसरी बहनोंके साथ अक्सर खुद भी थोड़ा घूम आतीं। आश्रमसे कोअी आधे फर्लांग पर बापूजी अुन्हें वापस आते हुअे मिलते और वे भी अुनके साथ हो लेतीं। घूमकर लौटनेके बाद शामकी प्रार्थना होती थी। बा पूरी प्रार्थनामें अच्छी तरह भाग लेतीं और रामयण भी गाती थीं। रामायणकी तैयारी वे सुबह नाणावटीजीके

साथ बैठकर पहलेसे ही कर लिया करती थीं। वे सुबह अितने प्रेम और रसके साथ गीता और रामायणका अभ्यास करती थीं कि कोअी विद्यार्थी भी अपनी परीक्षाके लिअे अुससे अधिक ध्यान-पूर्वक तैयारी न करता होगा। शामकी प्रार्थनाके बाद प्रार्थनाके स्थान पर ही बा का दरबार लगता। लगभग सभी बहनें बा के आसपास बैठ जातीं। कोअी पाँव दबातीं, कोअी पीठ। अुस समय वहाँ आश्रमकी सब खबरें कही-सुनी जातीं और अिधर-अुधरकी चर्चाअें होती। आधे-पौने घंटेके बाद दरबार बरखास्त करके बा अपने और बापूजीके सोनेकी तैयारीमें लग जातीं।

अुन दिनों बा के पास रामदासभाअीका छोटा लड़का कनु रहा करता था। बा अुसकी देख-भाल अेक नौजवान माँकी-से अुत्साहके साथ करती थीं और अुसके पीछे काफी मेहनत अुठाती थीं। वे बच्चोंके मनको खूब समझती थीं। नतीजा यह हुआ कि कनु अपनी माँको भूल ही गया। अुसके लिअे अुसकी 'मोटी बा' (बड़ी माँ) ही सब कुछ थी। १९३९में जब बा राजकोटके सत्याग्रहमें शरीक होनेके लिअे चली गअीं, तो बापूजीके लिअे कनुको शान्त रखना असंभव हो गया। अुन्हें आशा थी कि वे अुसे अच्छी तरह सँभाल सकेंगे, मगर वैसा कुछ हो नहीं सका। कनु सारे दिन अपनी 'मोटी बा' को याद करता रहता था। आखिर अेक दिन बापूजीने अुससे हँसते-हँसते कहा : "तू मोटी बा के नामकी माला जप, मोटी बा आकर तेरे सामने खड़ी हो जायँगी।" कनु खुश होकर बोला : "आपो माळा!" (माला दीजिये)। बापूजीने माला दी। वह माला लेकर और आँख बन्द करके 'मोटी बा', 'मोटी बा' के नामका जप करने लगा। कुछ देर बाद रोता-रोता आया और बोला : "मोटी बा तो नहीं आअीं।" आखिर बापूजीको हारकर अुसे अुसकी माँके पास भेज देना पड़ा।

७

बा का त्याग

कलकत्तेसे बापूजी काफी बीमार होकर आये थे। अुनकी बीमारीकी चिन्ता करते-करते कअी आश्रमवासी तो बहुत घबरा गये थे। मगर बा के पास घबराहट नामकी कोअी चीज़ न थी। जब हम कलकत्तेसे लौटे, दिसम्बरका महीना चल रहा था। सेवाग्राममे खूब ठण्ड पडती थी। बापूको वर्षोंसे आकाशके नीचे सोनेकी आदत थी, लेकिन अिस समय ठण्डकी वजहसे खूनका दबाव अितना बढ जाता था कि डॉक्टरी सलाहके कारण अुन्हें खुलेमे सोना छोड़ना पड़ा। कलकत्ता जानेसे पहले बापूजी सेवाग्राममे सबके साथ अेक बडे 'हॉल' के कोनेमें रहा करते थे। अुनकी बीमारीकी खबर सुनकर अुन्हें अेकान्त और शान्ति देनेके खयालसे मीरा बहनने अुनके लिअे अपना कमरा ठीक करवा कर रखा। मगर बापूको वहाँ रहना स्वीकार न था। वे बोले: "मीराने तो वह कमरा अपने लिअे और अपने खादी-कामके लिअे बनाया था। मैं वहाँ कैसे रह सकता हूँ? और मुझसे बिना पूछे अिस तरहका परिवर्तन क्यों किया गया? मैं तो अपने पुराने कोनेमे ही रहूँगा।"

मगर कोनेमे रातको सोया कैसे जा सकता था? दूसरे लोग वहाँ पहलेसे ही सोते थे। अगर बापू वहाँ सोने लगे, तो अुन्हें तकलीफ हो। बापू अिसे कभी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। मीरा बहनवाले कमरेमे सोनेके लिअे कहनेकी किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। आखिर बा आगे बढीं। बोलीं: "मेरा कमरा है न?" और, बापू बा के कमरेमे सोने लगे। अुनका कमरा भी छोटा ही था। बापूके साथ अेक-दो जने और भी अुस कमरेमें सोनेको पहुँचे। बा, कनु और मैं बरामदेमे सोने लगे। बा ने अेकबार भी यह नहीं कहा कि "बापू सोयें, तो भले सोयें, लेकिन और किसीके लिअे मैं अपना कमरा क्यों खाली करूँ?" दूसरे दिन सबेरे नाश्ता करते समय बापू कहने लगे: "मैंने खास तौर पर यह घर बा के लिअे बनवाया था, और अब मैं अिस पर कब्जा करके बैठ

गया हूँ। बा को आज तक कभी अलग कोठरी मिली ही नहीं। मेरा और बा का जो कुछ था, सो शुरूसे ही सबके लिअे था। लेकिन अिस खयालसे कि बा के अिस बुढ़ापेमे अुनको थोड़ा अेकान्त मिल जाय तो अच्छा हो, मैंने अुनके लिअे यह घर बनवाया था। बा ने अिसका अुपयोग भी सिर्फ अपने लिअे कभी नहीं किया। अुन्होंने अिसमें कअी लड़कियोंको अपने साथ रखा है। लेकिन मेरे आ जाने पर तो बा को यहाँसे बिलकुल निकल ही जाना पड़े न? मैं जहाँ जाता हूँ, वहीं मेरे रहनेकी जगह धर्मशाला बन जाती है। मुझको यह खटकता है, लेकिन मुझे कहना चाहिये कि बा ने कभी अिसकी शिकायत नहीं की। मैं जो चाहता हूँ, बा से ले लेता हूँ। हर किसीको बा के पास रहने भेज देता हूँ। अिसमें वह हमेशा रज़ामन्द रही है।" बा बापूके पास ही खाट पर बैठी थीं। बापू अुनसे सहज हँसकर बोले: "होना भी तो यही चाहिये न? अगर मियाँ अेक कहे, और बीबी दूसरा, तो जीवन खारा हो जाय। लेकिन यहाँ तो मियाँकी बातको बीबीने सदा माना ही है।" सब हँसने लगे।

अन्दर सोनेसे भी बापूजीके खूनका दबाव ठिकाने नहीं आया। सर्दीके वक़्त बहुत बढ जाता था। आखिर डॉक्टरी सलाहसे बापूजीने जुहू जाना स्वीकार किया। अिस पर कुछ लोग तो रोने लगे। "क्या बापूजीकी हालत अितनी खराब है? वे वापस जिन्दा लौटेंगे तो सही न?" लेकिन बा के पास घबराहटका नाम नहीं था। वे आदर्श नर्स बनकर अुनकी सेवामें लगी हुअी थीं। अपना आराम वगैरा सब कुछ भूल बैठी थीं। वे सारा दिन बापूजीके आस-पास रहा करतीं और कहीं भी कोअी काम हो, तो करने या करवानेको तैयार रहतीं। बा जुहू आयीं।

जुहूमें बापू करीब दो महीने रहे। वहाँ अुनकी तबियत खूब सुधर गअी। वे समुद्र-किनारे घूमने जाते। बा अुन दिनों बराबर अुनके साथ घूमने निकलतीं। तबियत सुधरनेके बाद १९३९ के शुरूमे बापू वापस सेवाग्राम आये। वहाँसे वे राजबन्दियोंको छुड़वानेके कामसे कलकत्ता गये। मैं, भाअी, महादेवभाअी और कनु सब अुनके साथ थे। बा ने खुशीसे अुनको विदा किया। जब बापू अच्छे रहते थे, तब बा अुनके साथ रहनेका आग्रह नहीं रखती थीं।

८

जगन्नाथजीके दर्शनोंवाली घटना

कलकत्तेसे बापूजी गांधी-सेवा-संघकी बैठकके लिअे कटक गये।
सेवाग्रामसे बा, दुर्गाबहन वगैरा भी वहाँ आ पहुँची थीं। अेक दिन कुछ लोगोंने जगन्नाथपुरी जानेका विचार किया। बा, दुर्गाबहन, लीलावतीबहन, नारायण और दूसरे कुछ लोग रवाना हुअे। देवालयोंके प्रति बा के मनमें हमेशासे ही अपूर्व भक्ति थी। अिसलिअे दुर्गाबहनने और बा ने अन्दर जाकर जगन्नाथजीको प्रणाम किया, प्रदक्षिणा दी और शामको सब लोग वापस आये। जब बापूजीने सुना कि बा और दुर्गाबहन मन्दिरमें गअी थीं, तो अुन्हें बहुत दुःख हुआ। वे बहुत नाराज हुअे: "जिस मन्दिरमें हरिजनोंको नहीं जाने दिया जाता, अुसमें हम कैसे जा सकते हैं?" शामको घूमते समय बापूजी बा के कंधे पर हाथ रख कर चले और अुनसे अिस बारेमें बात की। बा ने अेक छोटे बालककी तरह अत्यन्त सरलतासे अपनी भूल स्वीकार कर ली और बापूजीसे क्षमा माँगी। बापूजीका रोष गायब हो गया। अुन्होंने बा से कहा: "अिसमें कसूर तो मेरा ही है। मैं तेरा शिक्षक ठहरा, और मैंने तेरे शिक्षणको अधूरा रहने दिया। फिर तू क्या करे?" कुछ देर बाद महादेवभाअीसे बातें करते हुअे बापूजीने कहा: "बा ने अितनी सरलतासे मेरे सामने अपनी भूल कबूल की है कि मैं मुग्ध हूँ। अिस घटनासे मुझे जबरदस्त आघात पहुँचा है। लेकिन मुझे लगता है कि अिसकी जिम्मेदारी बा या दुर्गाकी नहीं, मेरी और तुम्हारी है। अपना दोष तो मैंने कअी बार कबूल किया है। लेकिन अिस वक्त तो मुझे तुम्हारी बात करनी है। तुम्हारी और दुर्गाकी तो अेक असाधारण जोडी है। तुम परस्पर मित्र हो। तुमने दुर्गाको अपनेसे अितना पीछे क्यों रहने दिया? जिस तरह तुम बाबलाकी शिक्षाके बारेमें सोचते रहते हो, अुसी तरह दुर्गाके बारेमें क्यों नहीं सोचा?" महादेवभाअी बेचारे क्या कहते! अुन्हें अपनी भूल अितनी साफ दिखाअी पडी कि अुन्होंने बापूको अेक पत्र

लिखा : "मैं आपके पास रहनेके लायक नहीं हूँ। अिसलिअे आप मुझे अपने पाससे चले जानेकी अिजाज़त दें।" मगर बापू यों अुनको छोड़नेवाले थोड़े ही थे। भूले-भटकोंको रास्ते पर लाना ही तो बापूका काम रहा है। फिर अपने निकटतम व्यक्तिकी छोटी-सी भूलके लिअे वे अुसे छोड़ कैसे सकते थे? लम्बी-चौड़ी चर्चा हुअी। पत्रव्यवहार हुआ। बापूजी और अुनकी पार्टी डेलॉगसे वापस कलकत्ता आयी। बा वग़ैरा सेवाग्राम लौट गये थे। कलकत्तेमें भी कुछ समय तक अिसकी चर्चा चलती रही। बापूजी महादेव-भाअीको समझाते रहे। आखिर महादेवभाअीने यह सारा किस्सा अेक लेखके रूपमें 'हरिजन'मे छपाया और खुद शान्त हुअे।

९

सेवाग्राममें हैजा

१९३८ या '३९की गर्मियोंमें सेवाग्राममें हैजा फैला। मैंने सब आश्रमवासियोंसे हैजेका टीका लगवा लेनेको कहा। बापूजीने प्रार्थनामें कह दिया कि सब लोग सूअी लगवा लें तो अच्छा है; क्योंकि गाँवके लोग आश्रममें आते-जाते रहते हैं और छूत फैलनेका काफी डर है। वर्धामें काका साहब वग़ैरा हैज़ेसे बीमार थे। हम लोग आश्रममें हैज़ेको न्योतनेका खतरा अुठाना नहीं चाहते थे। कअियोंके दिलमें अिंजेक्शनके प्रति अश्रद्धा थी। वे अुससे बचना चाहते थे। लेकिन किसीकी बोलनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। आखिर बा ने कहा : "मैं तो अिंजेक्शन नहीं लूँगी; जो होना हो, सो हो।" बापू बोले : "जो अिंजेक्शन नहीं लेंगे, अुन्हें बालकोबावाली झोंपडीमें जाकर रहना पड़ेगा।" बा को यह स्वीकार था, लेकिन अिंजेक्शन लगाना स्वीकार न था। नतीजा यह हुआ कि बहुत थोडे लोगोंने टीका लगवाया। गाँवमें तो करीब सभीको टीका लगाया गया था। दूसरी खबरदारी और सार-सँभालके कारण सेवाग्रामसे हैजा जल्दी ही दूर किया जा सका और आश्रम बिलकुल बच गया।

१०

राजकोट सत्याग्रह

१९३९के शुरूमे सरदार वल्लभभाअीके आग्रह करने पर बापूजी बारडोली गये। अुसी समय राजकोटमे सत्याग्रह शुरू हुआ। वहाँकि ठाकुर साहबने प्रजाको कअी हक्क देने स्वीकार किये थे। मगर बादमें वे बदल गये। अुन्होंने वचनभग किया। जनताने अिसके खिलाफ अपना विरोध प्रकट करनेके लिअे सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बा ने सुना, तो वे झट बापूजीके पास पहुँचीं। राजकोट तो अुनका अपना घर था। राजकोटमे सत्याग्रह हो, तो अुसमें अुन्हें भाग लेना ही चाहिये। बापूजीने अुन्हें अिजाज़त दे दी, और बा राजकोटमे सविनयभगके कसूरके लिअे नज़रबन्द कर ली गअीं। पहले तो अुन्हें अेक बिलकुल अकेले गाँवमे रखा गया। देवदासभाअी वहाँ अुनसे मिलने गये। वहाँका वातावरण अिस कदर खराब था कि आज भी अुसका वर्णन करते हुअे देवदासभाअीकी आँखें डबडबा आती है। लेकिन बा ने अपने किसी पत्रमें अिसकी कोअी शिकायत नहीं की। वे स्वतंत्रताकी सिपाही बनकर गअी थीं और मानती थी कि सिपाहियोंको कठिनाअियाँ सहन करनेसे घबराना नहीं चाहिये। लेकिन जनतामें अिसको लेकर बहुत हलचल मची। बा की सेहत अितनी खराब थी कि अुन्हें डॉक्टरी मददसे अितनी दूर रखना पाप था। आखिर राजकोट सरकार अुनको राजकोटसे १०-१५ मील दूर अपने अेक महलमे ले आअी। वहाँ अुनके साथ मणिबहन और मृदुलाबहन थीं। अुन दिनोंके बा के पत्र बहुत दिलचस्प होते थे। अुन्हें सिर्फ बापूजीकी तबियतकी और चि० कनुकी चिन्ता रहा करती थी।

बा के जानेके कुछ ही दिनों बाद बापूजीने खुद राजकोटके जंगमे कूदनेका निश्चय किया। बापू, भाअी, कनु और मैं राजकोट पहुँचे। बापूजीके साथ हम बा से अुस जगह मिलने गये, जहाँ वे नज़रबन्द थीं। सरकारने अुन्हें सब तरहका आराम दिया था, तो भी अुनका चेहरा

मुरझाया-सा था। बा बापूजीके वियोगको बहुत दिनों तक सह ही नहीं सकती थीं। मनसे भले वे हिम्मत रख ले, मगर अुनके शरीर पर अुसका असर हुअे बिना न रहता था।

फिर तो बापूजीके राजकोटवाले अुपवास शुरू हुअे। जब बा को यह खबर मिली, अुन्हें आघात तो पहुँचा, लेकिन वे अिस तरहके सदमोंको सहनेकी आदी हो चुकी थीं। बा के पास अुपवासकी खबर लेकर मैं ही गअी थी। बा कहने लगीं: "मुझे खबर तो देनी थी कि बापूजी अुपवासका विचार कर रहे है।" मैंने कहा: "लेकिन बा, हममेंसे कोअी यह जानता ही नहीं था कि बापू अुपवासका विचार कर रहे हैं। अेकाअेक सुबह अुठकर बापूने अेक पत्र लिखा और अुससे सबको पता चला। दलील करनेका अुन्होंने मौका ही नहीं दिया।"

अिस पर बा ने कोअी अुत्तर नहीं दिया। तुरन्त ही खाना बनानेवालीको कहलवाया कि जब तक बापूजीका अुपवास चलेगा, वे अेक बार खायेंगी और सो भी सिर्फ फलाहार। बापूके अुपवासोंमें वे हमेशा अैसा ही करती थीं, जिससे सेवा भी कर सकें और बापूके साथ तपस्या भी।

दूसरे या तीसरे दिन अेकाअेक बा बापूके सामने आकर खड़ी हो गअीं। बापूने पूछा: "क्यों आअी?" सरकारकी तरफ़से बा को कहा गया था कि वे गांधीजीसे मिलने जाना चाहें, तो जा सकती है। अिसीलिअे वे आअी थीं। मगर रात तक बा को कोअी लेने नही आया। सरकारने अिस बहाने अुन्हें छोड़ दिया था। लेकिन बापू अिसे क्यों सहन करने लगे? अुन्होंने कहा: "छोड़ना हो, तो सबको छोड़े। मृदुला और मणिको भी छोड़े, और बाक़ायदा छोड़े।" यों बापूजीने रातके अेक बजे बा को वापस जेल भेजा। किसीने कहा: "वह रास्ता तो बन्द है। बग़ैर खास पासके वहाँ किसीको जाने नहीं देते। बा को रास्तेमे ही रोक लिया जायगा।" बापूजीने बा से कहा: "तुझे रास्तेमें रोकें, तो तू वही सत्याग्रह करना। जहाँ रोके, वहीं पड़ी रहना। चाहे सड़क पर ही सारी रात क्यों न पड़ा रहना पड़े!" बा बिना किसी तरहकी दलील किये चली गअीं। अुस समय अुनके मनकी क्या दशा रही होगी? बापूजीको अुस हालतमें छोड़ कर जाना कैसा लगा होगा? लेकिन अिन बातोंमें बापूजीके साथ दलील

करनेका विचार तक अुनके मनमें नहीं अुठता था। बापूजीने सरकारको भी पत्र लिखा। राजकोट दरबारकी हिम्मत न हुअी कि वह बा को सारी रात सड़क पर रहने दे। बा वापस महलमे ले जाअी गअी। दूसरे दिन अच्छी तरह लिखा-पढी करके सरकारने बा, मणिबहन और मृदुलाबहनको छोड दिया। दुपहरको तीनों बापूके पास पहुँच गअीं। अुस दिन बापूजीकी हालत थोड़ी गभीर थी। बा अुनकी सेवामे लीन हो गअी। अपनी थकान, बीमारी, सब भूल गअीं।

११

पहली सख्त बीमारी

राजकोटसे बापूजी कलकत्ता गये और वहाँसे गाधी-सेवा-संघके वार्षिक सम्मेलनके लिअे वृन्दावन पहुँचे। वृन्दावनसे वे वापस राजकोट गये। रास्तेमे दिल्ली अुतरे। वहाँ बा को बुखार आ गया। मैंने बापूजीसे कहा कि वे बा को दो-चार रोज सफरमे न रखे। मगर बापूजी माने नहीं। रास्तेमे ट्रेन ही मे बा को १०५ डिग्री बुखार हो आया। लेकिन बापूजी पास थे, अिसलिअे अुनको अपनी बीमारीकी कोअी चिन्ता न थी। राजकोट पहुँचने पर दवा वगैरा देनेसे बा अच्छी हो गअीं। अिसके कुछ समय बाद जब बापूजी सरहद जानेके लिअे बम्बअी गये, तब बा बहुत बीमार हो गअी। अुनकी सेहत गिरी-सी तो थी ही, रास्तेकी तकलीफके असरसे बम्बअी लौटने पर अुन्हे निमोनिया हो गया। लेकिन बा मे स्वस्थ होनेकी शक्ति भी अद्भुत थी। अुनका बुखार अुतरने पर बापूजी सरहदी सूबेके लिअे रवाना हुअे। बा को भी वहाँ जाना था। मगर कमजोरीके कारण ८-१० दिन बाद जानेका निश्चय हुआ। मैं और भाअी बा के साथ बबअीमे रहे। अुस समयका बा का सहवास और बादमे सरहदी सूबेकी यात्राके स्मरण बहुत मधुर हैं। मेरे पास अिन दिनों बा की सार-सँभालके सिवा दूसरा कोअी काम नहीं था। मैं सारा समय अुनकी सेवामें रहती।

बा भी हम दोनों भाअी-बहनोंके साथ बराबरीके अेक मित्रकी तरह रहने लगी। तब मैंने देखा कि अुनका मन कितना ताज़ा था और नये-नये दृश्योंमे और दूसरी कअी चीजोंमे वे कितना रस ले सकती थी। बा मुझ पर अपनी लड़कीकी तरह प्रेम रखती थी। माँ हमेशा यह सोचती है कि अुसके बच्चेके समान बुद्धिशाली दुनियामे दूसरा कोअी नही! अिसी तरह बा भी मानने लगी थी कि अुनकी सुशीलाका डॉक्टरी ज्ञान गहरा है। मुझे अिससे घबराहट होती। मैं अपनी अपूर्णताको जानती थी। लेकिन बा को बड़े-से-बड़े डॉक्टरके नुस्खेसे भी तब तक सतोष न होता था, जब तक वे मुझसे अुसके बारेमे सम्मति न ले ले। बा के अिस प्रेम और विश्वासने डॉक्टरी ज्ञानको बढानेकी मेरी अिच्छाको खूब अुत्तेजित किया।

१२

दूसरी सख्त बीमारी

सरहदी सूबेसे लौटने पर मैं कुछ दिन दिल्ली ठहर गअी। मुझे अपना अभ्यास पूरा करना था। अेम० डी० की परीक्षा देनी थी। अुसके बारेमे सब जानकारी हासिल की। मगर अुस साल मै अभ्यासके लिअे दिल्ली ठहर नही सकी। सेवाग्राममे कअी बीमार अिकट्ठा हो गये थे। बापूजीको मेरी हाजिरीकी जरूरत थी। अिसलिअे मैं वापस सेवाग्राम आअी। लेकिन १९४०के जूनमे फिर दिल्ली गअी और अभ्यास शुरू किया। १९४१के शुरूमे बापूजीका पत्र मिला: "बा बीमार रहती है। रोज कहती है,—'मुझे सुशीलाके पास भेज दो'। तू मुझे तारसे जवाब दे कि मैं अुन्हें भेजूं या नहीं।" मैने तुरन्त तार किया कि बा खुशीसे आवें। मार्चमे बा दिल्ली आ पहुँचीं। बिलकुल अकेली थीं। मैने अिस बारेमे बहुत शिकायत की कि अिस हालतमे, अितनी कमजोर सेहतके रहते, बा को यों अकेले नहीं भेजना चाहिये था। महादेवभाअीने लिखा:

"बापूने कहा था कि अकेली ही भेज दो। बा को भी लगा कि वे अकेली जा सकती है, सो मैं अुन्हे गाड़ीमे बैठा आया। साथके मुसाफिरोंसे कह दिया था कि ध्यान रखे"। बा कहने लगीं: "अिसमे हुआ क्या! तुम तो व्यर्थ चिन्ता करती हो। सीधा सफर था। गाड़ीमे ही बैठे रहना था। महादेवभाअीने वहॉ बैठा दिया, और यहॉ तुम लोगोंने अुतार लिया। अितना बस नहीं है क्या?" मैं चुप हो गअी। अिस दृढ़ता और आत्मविश्वासके सामने कोअी क्या कह सकता है?

बा देवदासभाअीके यहॉ ठहरीं। मैं दिनमे दो-तीन बार अुन्हें देखने जाती और दवा वगैरा लगानेका काम कर आती। अिसी बीच अीस्टरकी छुट्टियॉ आअीं। बापूजीने मुझे सेवाग्राम बुलाया। मैंने अपने अभ्यासके लिअे बंबअी जानेका कार्यक्रम पहले ही से बना रखा था। बा खास तौर पर सेवाग्रामसे मेरे पास आअी थीं। जो भी अुन्होंने तो बिना सकोचके मुझसे कह दिया: "तू जाकर आ, मैं आठ दिन यहॉ रहूँगी," लेकिन मुझको यह अच्छा नहीं लगा। बापूजीको तार करके बा के पास ही रहनेकी अिजाज़त ले ली। बबअी जानेका कार्यक्रम रद्द कर दिया। अच्छा ही हुआ। बा को बवासीरका अिजेक्शन दिलाना पड़ा। अिसके लिअे मै अुन्हे अस्पताल ले गअी। दुपहरको अुन्हें अपने कमरेमे लाअी। बा ने कहा कि वे दो-चार दिन मेरे पास ही रहना पसंद करेगी। मेरे लिअे अिससे बढ़कर खुशीकी बात और क्या हो सकती थी? मगर मुझे डर था कि मैं बा को पूरा आराम नहीं पहुँचा सकूँगी। जब मैं अस्पताल जाअूँगी, बा अकेली कैसे रहेगी? मगर बा को दूसरी परवाह न थी। अुन्होंने कहा: "तू सवेरे-शाम प्रार्थना सुनायेगी, तो मुझे अच्छा लगेगा। अिसीलिअे मैं यहॉ ठहरना चाहती हूँ।" मैं देवदासभाअीके घर जाकर भी बा को प्रार्थना सुनानेके लिअे तैयार थी, लेकिन मैंने अिस बारेमे आग्रह नहीं किया। कहीं बा यह न समझ लें कि मैं अुन्हे रखना नहीं चाहती। मुझे जो सकोच था, सो सिर्फ अुनके आरामके खयालसे था। अिसलिअे मै अुनके आग्रहके वशमे हो गअी और बा मेरे पास ही रह गअीं।

बा को आराम पहुँचानेके खयालसे मैने दुपहरमे अुनके कमरेको पानीसे तर करके खूब ठडा कर दिया। बिजलीका पखा तो था ही। बा को

बहुत अच्छा मालूम हुआ। वे खूब सोअीं, मगर सर्दी बरदाश्त न कर सकीं। दूसरे दिन अुन्हें थोड़ा बुखार हो आया। तीसरे दिन लक्ष्मी भाभी अुन्हें अपने घर ले गअीं, क्योंकि बीमारीमें वे बा के पास आये बिना रह नहीं सकती थीं, और धूपमें आने-जानेसे बच्चे बीमार पड़ने लगे थे। बा की बीमारी बढ़ गअी। अुन्हें पेशाबमें भी थोड़ी तकलीफ रहने लगी। निमोनियाका भी असर था। बस, मैं तो अपनी परीक्षाको भूलकर दिन-रात बा की सेवामें ही लगी रहती थी, और अीश्वरसे सतत प्रार्थना करती थी कि हे भगवान्, बा अच्छी हो जायँ! वही मेरी अेम० डी० की डिग्री होगी। मुझे चिन्ता खाये जाती थी। सेवाग्रामसे चलकर बा मेरे पास आअीं; अब बा को कुछ हो गया, तो मैं बापू को क्या मुँह दिखाअूँगी? आखिर भगवान्ने मेरी लाज रख ली। बा की तबियत धीरे-धीरे सुधरने लगी। अुन दिनों बापूजी बा को हर रोज़ पत्र लिखा करते थे। बहुत दफा पत्र मेरे अस्पतालके पते आता। जब मैं बापूजीका पत्र लेकर बा के पास जाती, तो अुनके चेहरे पर निराली ही रोशनी दिखाअी देने लगती थी। मुझे ज़रा भी शक नहीं कि बा के अच्छा होनेमें अुन पत्रोंका बहुत बड़ा हाथ था। आखिर अप्रैलके अन्तमें देवदासभाअी अपने परिवारके साथ बा को सेवाग्राम छोड़ने गये। बा अच्छी हो कर गअीं। जिस तकलीफका अिलाज करवाने आअी थीं, वह भी मिट गअी थी और थोड़ी कमजोरीको छोड़कर सब तरहसे अुनकी सेहत खासी अच्छी हो गअी थी।

१३

अन्तिम कारावासकी तैयारी

मअी, १९४२के अन्तमे मैंने अेम० डी० की परीक्षा पास की। लेकिन अस्पतालमे काम करनेका मेरा समय अगस्तके दूसरे हफ्तेमे खतम होता था। अगस्तके शुरूमे माताजी भाअीसे मिलने सेवाग्राम गअीं। मैंने सोचा था कि अे० आअी० सी० सी० की बैठकके बाद जब बापू बबअीसे सेवाग्राम लौटेंगे, तभी मैं वहाँ जाअूँगी। मगर ५ या ६ अगस्तको मुझे पता चला कि बापूजी तो सेवाग्राम पहुँचनेसे पहले ही गिरफ्तार हो जानेवाले हैं। मैंने अपने प्रिंसिपालसे चार-पाँच दिनकी ज्यादा छुट्टी माँगी और बा, बापू, भाअी वगैरासे मिलनेके लिअे मैं बबअीकी गाड़ीमे सवार हुअी। ८ अगस्तकी शामको मैं बबअी पहुँची। अे० आअी० सी० सी०के पंडालमे गअी, तो देखा, बापूजीका भाषण होनेको था। भाषण सुना। मुझे अिस बातकी बहुत खुशी थी कि मै वह भाषण सुन सकी। मुझे देखकर बापूजीको और भाअी वगैरा सबको आश्चर्य ही हुआ। मेरा तार अुन्हे मिला नहीं था। किसीको पता नहीं था कि मैं आ रही हूँ। बा अे० आअी० सी० सी०में नहीं आअी थीं। वे बिड़ला हाअुसमे थीं और हमेशाकी तरह बापूकी सेवामे लीन थीं। अे० आअी० सी० सी०से लौटनेके बाद प्रार्थना करके करीब १२ बजे हम लोग सोये।

सुबह चार बजेकी प्रार्थनाके समय महादेवभाअीने बापूजीसे कहा कि रात अेक बजेतक टेलीफोन आते रहे कि बापूजीको पकड़ने आ रहे हैं, वगैरा। बापू कहने लगे: "मुझे कोअी नहीं पकड़ेगा। सरकार अितनी मूर्ख नहीं कि मेरे-जैसे मित्रको पकड़े; और आजके मेरे भाषणके बाद तो पकड़ ही कैसे सकती है?"

बापूजीका यह आत्मविश्वास बापूके दलके सभी लोगों पर असर डाल रहा था। बा ने मुझसे कहा: "तू क्यों अिस तरह भाग-दौड़ मचाकर आअी? बापूके सेवाग्राम लौटने तक तेरा काम भी हो जाता। तभी आना था न?" लेकिन यह आत्मविश्वास झूठा साबित हुआ। नौ अगस्तको सुबह ५॥ बजे महादेवभाअी दौड़ते हुअे आये और बोले: "बापू! पकड़ने

आये है।" बापूजी झट तैयार हुअे। पुलिस अफसरने तैयारीके लिअे आध घंटा दिया था। सबने मिलकर प्रार्थना की:

"हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे।"

६ बजे बापू, महादेवभाअी और मीराबहनको लेकर पुलिस चली गअी। बा और भाअी भी चाहते, तो साथ जा सकते थे; मगर बापूजीने समझाया: "तू न रह सके, तो भले चल; लेकिन मैं चाहता तो यह हूँ कि तू मेरे साथ आनेके बदले मेरा काम कर।" बा के लिअे अितना काफी था। अुन्होंने बिना दलील किये बापूका काम करनेका निश्चय कर लिया। बापू शामको शिवाजीपार्ककी आम सभामे भाषण करनेवाले थे। बा ने अैलान किया कि अुस सभामें वे भाषण देंगी।

बापूजीके जानेके बाद शहरमे अेक बिजली-सी दौड़ गअी। कार्य-कर्त्ताओंके झुण्डके झुण्ड बिड़ला हाअुस आने लगे। बा का दरबार दिनभर भरा रहा। वे थककर चूर हो गअी थीं। बापूकी गिरफ्तारीके लिअे वे बिलकुल तैयार न थीं। अुसका अुन्हे बहुत सदमा पहुँचा था। फिर भी वे बडी हिम्मतके साथ तन-मनकी थकानकी परवाह किये बिना बैठी रहीं।

खबर मिली कि बहुत करके बा को सभामें जाते हुअे रास्तेमें ही पकड़ लिया जायगा। अगर बा पकड ली जायँ, तो अुनकी अिस कमजोर हालतमें अुनके साथ मेरा जाना जरूरी माना गया। सो मैंने अपना और बा का सामान बाँधा। अिसके बाद बा ने मुझसे बहनों और भाअियोंके नाम अेक-अेक सदेश लिखवाया। बस, वाणीका अेक प्रवाह-सा चल निकला। बा के हृदयसे जो अुद्गार अुमड रहे थे, वे अुन्होंने लिखवा डाले। सदेश लिखवाते समय अुन्हे न तो किसी किस्मका विचार करना पडा, और न कोअी मेहनत पडी। बहनोंके लिअे बा ने नीचे लिखे मतलबका संदेश लिखवाया था:

"महात्माजी तो आपसे बहुत-कुछ कह गये है। कल अुन्होंने ढाअी घंटे तक अे० आअी० सी० सी० की बैठकमे अपने दिलकी बातें कही है। अुससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो अुनकी सूचनाओंपर अमल ही करना है। बहनोंके लिअे अपना तेज दिखानेका अवसर आया है। सब क़ौमोंकी बहने मिलकर अिस लड़ाअीको सफल बनावें। सत्य और अहिंसाका मार्ग न छोडे!"

१४

गिरफ्तारी

पौने पॉच बजे मैं और बा सभाके लिअे रवाना हुअीं। पुलिस अफसर दरवाजे पर ही खडा था। हाथ जोडकर बोला : "माताजी, आपकी अुम्र घरमे बैठकर आराम करने की है। आप सभामे न जायॅ!" लेकिन बा क्यों मानने लगीं? अिसपर अुसने हम दोनोंको गिरफ्तार कर लिया; क्योंकि मुझे बा के साथ रखनेके लिअे पुलिससे यह कह दिया गया था कि बा के बाद मैं सभामे भाषण करनेवाली हूॅ। पुलिसको यह भी पता चल गया था कि हमारे बाद भाअी सभामे भाषण करेंगे, अिसलिअे अुनको भी हमारे साथ ही गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारीके समय बापू कह गये थे कि आजादीका हर सिपाही 'करेंगे या मरेंगे' का बिल्ला अपने कपड़ोंपर सी ले। कनुने कागजके अेक टुकडेपर यह मंत्र लिखकर दिया। जब बा को देने लगे, तो अुन्होंने लेनेसे अिनकार किया। बोलीं : "मुझे अिसकी क्या जरूरत है?" यह मंत्र तो अुनके मनमें भरा ही था। बाहर लिखनेसे क्या फायदा?

मोटर हम तीनोंको लेकर चली। बा के चेहरे पर खेद था। अुनकी ऑखोंमे ऑसू थे। मैंने पूछा : "बा, आप घबरा क्यों गअीं?" वे कुछ बोली नहीं। अुनका शरीर गरम था। मैंने आश्वासन देनेकी कोशिश की। अिस पर बा कहने लगीं : "अिस बार ये जिन्दा नहीं निकलने देंगे। बहन, यह सरकार तो पापी है।"

मैंने कहा : "हॉ बा, पापी तो है ही। अिसलिअे अिसका पाप ही अिसे खा जायगा और बापू फतह पाकर बाहर निकलेंगे।"

मोटर ऑर्थररोड जेलके सामने जाकर खडी हो गअी। कुछ लोग रास्ते पर आ-जा रहे थे। वे बगैर कोअी ध्यान दिये आगे बढ़ गये। मुझे आश्चर्य हुआ। क्या ये लोग बा को नहीं पहचानते? क्या ये नहीं जानते कि आज क्या हो रहा है?

फाटक खुला। हमें ऑफिसमे ले गये। थोड़ी देरमे स्त्री-विभागकी मैट्रन बा को और मुझे स्त्री-विभागमे ले गअी। अन्दर जाकर मैंने बा का और अपना बिस्तर खोला। लकड़ीके दो पटे आ गये थे। अुन पर बिस्तर बिछाये। अुस समय बा को ९९'६ बुखार था। अुन्हे कुछ खाना नहीं था। वे खूब थकी हुअी थीं, सो लेट गअीं और लेटते ही सो गअीं। मुझे भी तीन दिनसे पूरी नींद नहीं मिली थी।

१५

ऑर्थररोड जेलमें

ता० १०-८-'४२

रातके क़रीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मैं अुठ बैठी। देखा, तो बा पायखानेसे आ रही थीं। अुन्हे रातमे पतले दस्त होने लगे थे, और वे कअी बार पायखाने जा चुकी थीं। मैंने अुठकर मदद की। अुन्हे बिस्तरमे सुलाया। दूसरे दिन जब डॉक्टर आये, मैंने बीमारीकी बिना पर बा के लिअे खास खुराक मॉगी। वह कहने लगे: "खरीद सकती है।" मैंने कहा: "तो आप हमारे मित्रोंको फोन कर दीजिये, ताकि वे रुपये भेज सकें। हमारे पास खरीदनेके लिअे पैसा नहीं है।" मगर जेलर वग़ैराने कहा: "फोन नहीं हो सकता, क्योंकि सरकारका हुक्म है कि बाहरकी दुनियाके साथ आप लोगोंका कोअी संपर्क नहीं रहना चाहिये।" यह अेक अजीब हालत थी। मैंने डॉक्टरसे कहा: "तो आप या तो अस्पतालसे बा के लिअे सब कुछ भेजिये या अपनी जेबसे। कभी मौका मिलने पर मैं आपको पैसे लौटा दूँगी।" बहुत कहा-सुनी करने पर शामको दो सेव आये। लेकिन साथमें अुनका रस निकालनेका कोअी साधन नहीं था। अिधर बा को दिनभर दस्त आते रहे। मुझे चिन्ता होने लगी कि अब क्या होगा। दवाके लिअे कहा, मगर दवाका प्रबन्ध करनेके लिअे भी कोअी नहीं आया।

बा का चेहरा मुरझाया हुआ था। मैंने दो-चार बार अिधर-अुधरकी बाते करनेकी कोशिश की, मगर कुछ चला नही। बा को आज भी थोडा

बुखार था। दस्तोंके कारण कमज़ोरी बढ़ रही थी। जिस कमरेमें हमें रखा गया था, अुसकी हवा अितनी खराब थी कि बैठते ही सिरमें दर्द होने लगता था। मैट्रनने हमसे कहा कि हम अुसके कमरेमें जाकर बैठें। मैंने बा के लिअे गादी बिछाअी। बा वहाँ कुछ देर तक लेटीं। मगर फिर जल्दी ही अुनको पायखाने जाना पड़ा। बार-बार वहाँसे आना-जाना बा की शक्तिके बाहर था। अिसीलिअे हम वापस अपने कमरेमें आ गअीं। बा ने आग्रह करके मुझे बाहर भेजा। लेकिन मैं थोड़ी देर बाद ही भीतर चली आअी। अुसी समय अेक और बहन हमारे कमरेमें लाअी गअीं। वह तीन-चार छोटे-छोटे बच्चे छोड़ कर आअी थीं। बा ने बहुत प्रेमसे अुनका सब हाल पूछा। अुनका दुःख और चिन्ता देखकर बा अपना दुःख भूल गअीं। आखिर वे हिन्दुस्तानकी माँ जो थीं! जब सारा हिन्दुस्तान दुःखी हो रहा था, अैसे समय अेक-अेक व्यक्तिके दुःखका क्या खयाल करना था? लेकिन बा के मन पर व्यक्तिगत दुःख और चिन्ताका बोझ नहीं था। अुन्हें तो अेक दूसरी ही चिन्ता सता रही थी। क्या बापूजी हिन्दुस्तानका दुःख दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? मैंने समझानेकी कोशिश की: "बा, आप क्यों चिन्ता करती हैं? आखिर बापूने तो भगवान्‌का आश्रय लिया है न? और, जो कुछ किया है, शुभ हेतुसे ही किया है। अुन्हें सफलता देनेवाला भगवान् है।" बा चुप हो गअीं, मगर अुनकी आँखोंमें और चेहरेके भावमें वेदना भरी थी।

कल रात हमारे सो जानेके बाद हमें बाहरसे बन्द कर दिया गया था। अिसलिअे आज शामको ही हम तीनोंने बाहर बरामदेमें अपने बिस्तर लगा लिये। मैट्रन जेलरके पास गअी। जेलरने अुसे हमारे साथ छेड़-छाड़ करनेसे मना किया। बाहर सोनेका अेक कारण तो यह था कि कमरेकी हवा बन्द थी। हवाअी हमलेसे बचनेके लिअे सब खिड़कियोंका तीन चौथाअी भाग अीटोंसे चुन दिया गया था। अिस कारण अन्दर हवा आ नहीं सकती थी। पायखानेकी नाली टूटी लगती थी, और अुससे खूब ही बदबू आती थी। तिस पर कमरेकी फर्शमें बहुत नमी थी। बरामदोंमें भी अूँची-अूँची दीवारें चुनवाअी गअी थीं। मगर वहाँ कमरेसे ज़्यादा हवा आती थी।

बा थकीं थीं। अिसलिअे तुरन्त ही सो गअीं। हम दोनों भी

अपने-अपने बिस्तरों पर लेटी हुअी बा के अुठनेकी राह देख रही थीं। वे अुठें, तो प्रार्थना करें। नौ बजे मैट्रन आयी। कहने लगी: "ग्यारह बजे तुम दोनोंको (बा को और मुझे) यहाँसे ले जायेंगे।" मैंने अुठकर सामान बाँधा। दस बजे बा को जगाया। अुन्हें दूसरी बहनके बिस्तर पर बैठाकर अुनका बिस्तर बाँधा। फिर बैठकर प्रार्थना शुरू की। राम-धुन चल रही थी, कि अितनेमें जेलर वगैरा आ गये। आज सुबहके अनुभवकी यह बात सुनकर कि मेरे पास बा के लिअे फल वगैरा मँगानेको पैसे नहीं थे, नअी बहनने मुझे अपना बटुआ दे दिया। अुनके पास भी ज़्यादा पैसे नहीं थे। शायद सब मिला कर क़रीब बीस रुपये रहे होंगे। मैंने पाँच रुपयेका नोट अुनसे ले लिया। वह अपने लिअे रंगीन साड़ी लाना भूल गअी थीं। सो मैंने अुनको अपनी अेक रंगीन साड़ी दे दी। मनमें खयाल यह भी रहा कि कौन जाने, कहीं मै जेलमें मर जाअूँ, तो मेरे सिर किसीका क़र्ज तो न रहेगा!

सुपरिण्टेण्डेण्टके ऑफिसमें पहुँचने पर बा ने अुनसे पूछा: "कहाँ ले जायेंगे? यरवड़ा या बापूजीके पास?" मैट्रनसे भी पूछा था, मगर अुसने जवाब नहीं दिया था। अबकी जवाब मिला: "बापूजीके पास।" अिस अुत्तरसे हमारा मन काफी हलका हो गया। स्टेशन ले जाकर हमें अेक वेटिंग रूममे बैठाया गया। दरवाजा आधा खुला था और हमारे साथका पुलिस अफसर दरवाज़ेके सामने आरामकुर्सी लगाकर यों बैठा था, मानो अुसे हमारे भाग जानेका डर हो! मुझे नींद आ रही थी। मगर बा भली-भाँति जाग रही थीं। स्टेशन पर हमेशाकी तरह लोगोंका आना-जाना, भीड-भड़का और शोर-गुल जारी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थीं। अेकाअेक वे बोल अुठीं: "सुशीला! देख, यह दुनिया तो अैसे चल रही है, जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?" अुनकी वाणीमें अितनी करुणा भरी थी कि सुनकर मेरी आँखें डबडबा आयीं। मैंने कहा: "बा, अीश्वर बापूजीकी मदद पर है न? सब ठीक ही होगा।"

पुलिस अफसर आया। गाडीका समय हो चुका था। हमे पहले दर्जेके अेक छोटे डब्बेमें चढाया गया, और गाड़ी पूनाकी तरफ रवाना हुअी।

१६

आगाखान महलमें प्रवेश

ता० ११-८-'४२

सुबह क़रीब सात बजे गाडी अेक छोटेसे स्टेशन पर खड़ी हुअी। बादमे पता चला कि वह चिंचवड स्टेशन था। अेक पुलिस अफसर हमे लिवानेके लिअे आया हुआ था। लेकिन बा अुस वक़्त पायखानेमे थीं। सारी रात अुन्हें दस्त आते रहे थे। वे बिलकुल कमजोर हो गअी थीं। गाड़ी कोअी पाँच मिनट रोकनी पड़ी। बा निकलीं। स्टेशन पर अुनके लिअे कुरसी तैयार रखी गअी थी, मगर अुन्होंने कुरसी पर बैठनेसे अिनकार किया। बा का स्वभाव ही था कि जब तक शरीर चल सके, अुसे चलाना; दूसरों पर अुसका बोझ न डालना। वे चलकर बाहर आयीं। अेक मिनट भी नहीं चलना पड़ा। मोटर तैयार थी। हम दोनों अुसमे बैठीं। क़रीब आध घंटेमे मोटर आगाखान महलके फाटक पर पहुँची। पहरेदारोंने अेक बड़ा फाटक खोला। कुछ दूर जाने पर तारका अेक दरवाजा खुला। मोटर 'पोर्च'मे जाकर खड़ी हो गअी। बा मेरा सहारा लेकर धीमे-धीमे सीढ़ियाँ चढ़ीं। बरामदेमे कुछ क़ैदी झाड़ू लगा रहे थे। हमने अुनसे पूछा: "बापूजीका कमरा कौनसा है?" किसीने जवाब दिया: "अखीरका।" बा मेरे सहारे धीमे-धीमे चलकर बापूजीके कमरेमे पहुँचीं। बापू अेक अूँची गद्दी पर बैठे थे। हाथमे कुछ कागज थे। पेन्सिल हाथमे लेकर वे ध्यानपूर्वक कोअी लेख सुधार रहे थे। महादेवभाअी पास खडे अुनके कंधेके पीछेसे अुन कागजोंको देख रहे थे। कुछ चर्चा चल रही थी। जब हम अुनके काफी नजदीक पहुँच गअीं, तो महादेवभाअीने हमे देखा। बहुत खुश हुअे। मगर बापूकी त्योरियाँ चढने लगीं। अुन्हें लगा, "कहीं बा दुर्बलताके कारण, मेरा वियोग असह्य लगनेकी वजहसे तो यहाँ मेरे पीछे-पीछे नहीं चली आअी? वह अपना कर्त्तव्य तो नहीं भूल गअी?" बापूजीने तनिक तीखे स्वरमे पूछा: "तूने यहाँ आनेकी

अिच्छा प्रकट की थी या अुन लोगोंने तुझे पकड़ा?" बा अेक पलको चुप रहीं। वे कुछ समझ ही न पाअीं कि बापू क्या पूछ रहे थे। मैंने जवाब दिया: "नहीं बापूजी, गिरफ्तार होकर आअी है।" अिस पर बा समझीं कि बापू क्या कह रहे थे। बोलीं: "नहीं, नही, मैंने कोअी मॉग नही की थी। अुन्होंने हमे पकड़ा।" अितनेमें हमारे साथका पुलिस अफसर आ पहुँचा। बोला: "जरा बाहर चल कर अपना सामान देख लीजिये"। मैंने बा से बैठनेको कहा, मगर वे तो सामान देखनेके लिअे अुस लम्बे बरामदेको पार कर वापस 'पोर्च' तक आअीं। अुनके स्वभावमें फुर्ती और सुघड़ता कूट-कूट कर भरी थी। आराम लेना वे जानती ही न थीं, और बापूजीसे मिलकर तो अुनके शरीरमे मानो नया जीवन ही आ गया था। बहुत रोकने पर भी वे सामान देखनेके लिअे आनेसे रुकी नहीं।

मैंने कहा था कि बा बीमार है, सो महादेवभाअी अुनके लिअे खाट वगैराका प्रबन्ध करने लगे। हम लोग सामान देखकर लौट रही थीं कि रास्तेमे अुस जेलके सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कटेली हमे मिले। वे बहुत आदरके साथ बा को भीतर लिवा गये। अुन्हें पता भी नहीं था कि हम अेक बार अन्दर हो आअी थीं। बा को खाटमें सुलाकर मैंने अुनके लिअे दवाका नुस्खा लिखा, मगर बा के दस्त तो बापूजीके दर्शनसे और अुनके अपने मनके बोझके हलके हो जानेसे यों ही बन्द हो गये थे। दवाकी सिर्फ अेक ही खुराक अुन्हें दी गअी। दूसरी देनेकी जरूरत ही नही पड़ी। शायद अेक भी न देते तो भी काम चल जाता।

दूसरे रोजसे ही बा खटिया छोड़कर थोड़ा-थोड़ा घूमने-फिरने लगीं। बापूजीके खानेके समय वे अुठकर अुनके पास जा बैठतीं और अुनका खाना परोस देती। बा का खाना भी मैं वहीं ले आती थी। हमेशाकी तरह खाते समय भी बा अेक हाथमें पखा लेकर मच्छरों और मक्खियोंसे बापूजीकी रक्षा किया करती थीं। अुन दिनों आगाखान महलमे मक्खियों और छोटे-छोटे जन्तुओंकी भरमार थी; मालिशके समय भी मच्छर वगैरा अुड़ानेकी ज़रूरत रहती थी। नहीं तो मालिशके वक्त बापूजी सो नहीं पाते थे। शुरूमे अेक-दो दिन महादेवभाअी मच्छर वगैरा अुड़ाते रहे।

फिर बा ने यह काम भी अपने हाथमें ले लिया । करीब डेढ घंटा कुरसीपर बैठे-बैठे वे यह काम करती थीं । हम लोग तो किसी मच्छर या मक्खीके दीखने पर ही पखा हिलाते थे, मगर बा का पखा सारे समय बराबर चलता ही रहता था, ताकि कोअी जीव-जन्तु आने ही न पाये ।

१७

गवर्नर और वाअिसरायको पत्र

बा और मैं मंगलवार ता० ११ अगस्तको सुबह आगाखान महलमे पहुँची थीं । बापूजीने अुसी रोज बम्बअीके गवर्नर लॉर्ड लुम्लीको लिखे अपने पत्रका मसविदा पूरा किया था । महादेवभाअीके हाथों अुसकी साफ नकल हुअी । पत्र सुपरिण्टेण्डेण्टको डाकमे डालनेके लिअे दिया गया । अिस पत्रमे बापूजीने चिंचवड स्टेशनवाली अुस घटनाका जिक्र किया था, जिसमे पुलिसने अेक सत्याग्रही युवकके साथ बुरा सलूक किया था । साथ ही, अखबार मॉगे थे और सरदार और मणिबहनको आगाखान महलमे रखनेकी दरखास्त की थी । पत्रके चले जानेपर हम लोग बैठकर सोचने लगे कि सरदार आवेंगे, तो अुन्हे कौनसा कमरा देंगे । महादेवभाअी यह सोचकर बहुत खुश थे कि सरदार आ जायँगे तो अपने हँसी-मजाकसे वे बापूको खुश रखेंगे । बा भी अुनके आनेके विचारसे खुश थीं ।

बापूजी वाअिसरायके नाम पत्र लिखनेमे लगे थे । अुसमे हम सबकी मददकी जरूरत पड़ती थी । पत्रकी दो तीन कच्ची नकलें तैयार हुअीं । बापूजीने हमसे कहा कि हम सब पत्रको ध्यान-पूर्वक पढ़ जायँ और अपनी सूचनायें दें । महादेवभाअी पर सबसे ज्यादा बोझ था । आखिर शुक्रवारको पत्र तैयार हुआ । आखिरी नकल फिर महादेवभाअीने ही की । जब वे बापूजीके पास अुसे हस्ताक्षरके लिअे लाये, तो बोले: "नकल करनेमें मुझे पूरे दो घंटे लगे ।" अक्षर मोतीके दानों-जैसे थे । बापूजी क्षणभर महादेवभाअीके सुंदर अक्षरोंको देखते रहे । फिर दस्तखत

करके पत्र सुपरिण्टेण्डेण्टके पास भेजा। पत्रके चले जानेपर सबको छुट्टी-सी महसूस होने लगी।

अिन चार-पाँच दिनोंमें बा की तबियत खासी सुधर गअी थी। ताक़त भी काफी आ गअी थी। घूमने-फिरने लगी थीं। रसोअी-घरमे भी पहुँच जाती थीं। अपना पूजा-पाठ करतीं और खुश रहती थीं।

१८

शनिवार, १५ अगस्त '४२

हमेशाकी तरह बापू सुबह ७॥ बजे घूमने निकले। महादेवभाअी भी अुस दिन घूमने आये। आठ बजे सब लोग वापस आ गये। बापूजी मालिश वाले घरमे चले गये, और महादेवभाअी अपने काममे लग गये। बा पंखा झलने नहीं आअीं। अुस दिन जेलोंके अिन्स्पेक्टर जनरल कर्नल भण्डारी आनेवाले थे। कैदी लोग बरामदे वगैराकी सफाअी बडी फुर्तीसे कर रहे थे। बा श्रीमती नायडूके कमरेमे थीं।

थोड़ी देरमे कर्नल भण्डारीकी मोटर आअी। बापूको और मुझे छोड़कर बाकी सब लोग श्रीमती नायडूके कमरेमें अुनसे बातें करने लगे। मै बापूजीकी मालिश कर रही थी। महादेवभाअी वगैराके हँसनेकी आवाज़ आ रही थी। अेकाअेक आवाज बंद हो गअी। किसीने मुझे पुकारा। मैं समझी, कर्नल भण्डारीसे मिलनेके लिअे बुलाते होंगे। अितनेमे बा खुद दौड़ी-दौड़ी आअीं और बोलीं: "सुशीला, जल्दी चलो। महादेवको फिट आअी है।" मैं दौड़ी गअी। महादेवभाअी महाप्रयाणकी तैयारीमें थे। नाड़ी बन्द थी। हृदयकी गति बन्द थी। साँस चल रही थी। बदन अैंठा जा रहा था।

मैंने बापूजीको बुलवाया। बापू भी समझे कि कर्नल भण्डारीसे मिलनेके लिअे ही अुन्हे बुलवाया जा रहा है। किसीने अुनसे कहा: "महादेवभाअीकी तबियत ठीक नहीं है।" लेकिन बापूको यह कल्पना कैसे हो कि महादेवभाअी हमेशाकी छुट्टी पर जानेको तैयार हैं? बापू

महादेवभाओीकी खटियाके पास आकर खड़े हुओ : "महादेव! महादेव!!" पुकारने लगे। मगर जवाब कौन दे? बा ने पुकारा : "महादेव, ओ - महादेव! बापूजी आये है। महादेव, बापूजी बुलाते है।" लेकिन महादेवभाओी तो अुस दिन किसीको भी जवाब देनेवाले नहीं थे। धीरे-धीरे साँस भी बन्द हो गओी। पहला बलिदान पूरा हुआ!

बा के लिओ अिस वज्रपातको सहना सबसे अधिक कठिन था। वे बडी हिम्मतके साथ प्रार्थना वगैरामे शामिल हुओीं; मगर आँसुओंकी धारा तो अखण्ड बहती ही रही। अुनकी आँखोंके सामने सारी दुनिया घूम-सी रही थी।

आखिर जब शवको जलानेके लिओ नीचे ले गये, तो बा भी आग्रह-पूर्वक नीचे आओीं। अभी अुनमे सीढियाँ चढ़ने-अुतरनेकी ताक़त नहीं थी। मगर वे अपने महादेवको पहुँचाने भी न जायँ, यह कैसे हो सकता था? बा की कमज़ोर हालतको देखते हम यह चाहते थे कि वे दाहक्रिया न देखे, तो अच्छा हो। लेकिन बा रुकनेवाली नहीं थीं। चितासे थोड़ी दूर पर अुनकी कुरसी रखी गओी। वहाँ तक आते हुओ रास्तेमे भी और वहाँ बैठे-बैठे भी बा सारा समय हाथ जोड़कर यही पुकारती रहीं कि "महादेव, तू जहाँ जाय, वहाँ सुखी रहना। हे भाओी, तू सदा सुखी रहना। तूने बापूजीकी बहुत सेवा की है। तू सदा सुखसे रहना!" अिसके साथ ही वे बार-बार यह पूछती थीं : "महादेव क्यों गया, और मैं क्यों नहीं? ओीश्वरका यह कैसा न्याय है?" शवको जलाकर हम लोग घर लौटे। शामके पाँच बज चुके थे। घरमे सन्नाटा था। कौन किसे सान्त्वना देता?

१९

ब्राह्मणकी मृत्यु

बा कहती थीं: "ब्राह्मणकी मृत्यु तो भारी अपशकुन है।" बापू कहते: "हाँ, सरकारके लिअे।" लेकिन बा के मनसे यह शंका मिटी नहीं। कुछ दिनों बाद वे फिर मुझसे कहने लगीं: "सुशीला, ब्राह्मणकी यह मौत तो हमारे ही सिर रही न? बापूजीने लडाअी छेडी, महादेव जेलमे आया और यहाँ अुसकी मृत्यु हुअी। यह पाप तो अपने ही मत्थे चढा न?" मैंने समझाया: नहीं बा, आप अैसा क्यों सोचती हैं? महादेवभाअी तो देशकी सेवामें बलि चढे है। अुनकी मृत्युका पाप कैसा? और अगर हो भी, तो वह सरकारके सिर हो सकता है। सरकारने नाहक अुन्हें पकड़ा। बापूजीने लड़ाअी शुरू ही कब की थी?" अिस पर बा बोलीं: "हाँ, बात तो सच है। बापूजीने लड़ाअी शुरू नहीं की थी। वे तो अभी सरकारके साथ समझौतेकी चर्चा करने जा रहे थे। लेकिन यह सरकार बड़ी पापी है। अिसने कुछ करने ही नहीं दिया।"

२०

शंकरका मंदिर

बा मे गहरी धर्म-भावना थी। दुनियाकी कोअी भी ताकत अुनकी धार्मिक भावनाको डिगा नहीं सकती थी। बा हमेशा तुलसीमाताकी पूजा करती थीं। मीराबहनने अपने कमरेमें बालकृष्णकी अेक मूर्ति रखी थी। बा अुसे फूल चढाती थीं। वह बा का दूसरा मन्दिर था। और महादेवभाअीका चितास्थान बा के लिअे तीसरा मन्दिर — शंकर महादेवका मन्दिर — बन गया था। जब तक बा मे ताक़त रही, वे बापूजीके साथ

चितास्थान पर जाती रही और समाधिकी प्रदक्षिणा करके अुसे नमस्कार करती रहीं। दूसरी अक्तूबरको बापूजीका जन्मदिन आया। अुस दिन श्रीमती नायडूने छोटी-सी दीपमालिकाका प्रबन्ध किया था। बा ने मुझे पुकारा और कहा: "सुशीला, शकरके वहाँ दीया जरूर रख आना।" पहले तो मैं कुछ समझी ही नही कि बा क्या करना चाहती थीं। हमारे अेक सिपाहीका नाम शकर था। मगर बा अुसके वहाँ दीया क्यों भिजवाने लगी? अेकाअेक मुझे ध्यान आया। मैने पूछा: "बा, आप महादेवभाअीकी समाधि पर दीपक रखनेको कह रही हैं न?"

"हाँ, हाँ, वही तो महादेवका — शकरका — मदिर है न?" बा ने जवाब दिया।

२१

बा विद्यार्थीके रूपमें

महादेवभाअीकी मृत्युसे वातावरण बहुत गमगीन हो गया था। अिस तरहकी मौत कही भी हिलानेवाली होती। मगर जेलमे तो अिसका असर बहुत लम्बे अरसे तक बना रहता है। आखिर बापूजीने अुपाय सोचा: "हम सब अपने अेक-अेक मिनटका हिसाब रखें, सारा समय काममे ही लगे रहे, ताकि अिधर-अुधरके विचार मनमे आ ही न सके। हिंसासे भरी अिस दुनियामे अहिंसाको अपना स्थान ढूँढना है, तो अुसका भी यही रास्ता है।" बापूजी खुद तो सारा समय काममे लगे ही रहते थे। अब अुन्होंने दूसरोंका भी कार्यक्रम तय कर दिया। मेरा समय तो पहले ही से भरा हुआ था। बापूजीने मुझे आग्रहभरी सलाह दी कि मैं अपने कार्यक्रमको ध्यान-पूर्वक पूरा करूँ। अुन्होंने मेरे साथ थोड़े समय तक बाअिबल और गीताजी पढ़ना शुरू किया। बा को वे गुजराती सिखाने लगे। गीताजी भी सिखाते थे। गुजराती किताबमे कोअी भजन आ जाता, तो बापू अुसे बाको सस्वर गाना सिखाने बैठ जाते। भूगोल शुरू किया। कभी-कभी अितिहास भी पढ़ा दिया करते। दुपहरको खाना खाकर लेटने पर सोनेसे

पहले बापू बा को कुछ-न-कुछ पढ़कर सुनाते और अुस पर आलोचना करते। बा बहुत खुश होतीं। वे बड़ी दिलचस्पीके साथ सब कुछ सीखनेकी कोशिश करतीं। कभी-कभी अुन्हें अफ़सोस भी होता कि अुन्होंने यह सब बहुत देरमें सीखना शुरू किया। वे कहती: "मैंने पहले ही से सीखनेकी कोशिश की होती, तो कितना अच्छा होता।"

बा सीखती तो बहुत दिलचस्पीके साथ थीं, लेकिन अुनका मन और मस्तिष्क बापूजीकी तरह जवान नहीं था। अुनके लिअे अब नअी चीज़ सीखना कठिन था। शुरू-शुरूमें बापूजी अुनसे प्रश्न पूछते; यह जाननेकी कोशिश करते कि अुन्हें पहले दिनका पाठ याद है या नहीं। अकसर बा को वह याद नहीं रहता था। बापू बा पर नाराज़ तो नहीं होते थे, फिर भी प्रश्नका अुत्तर न दे सकनेके कारण बा को बुरा लगता था। वे पाठ याद करनेके लिअे मेहनत भी खूब करती थीं। अेक दिन बापूजीने अुन्हें पंजाबकी नदियोंके नाम सिखाये। बापूके सो जाने पर बा मेरे पास आअी और बोलीं: "सुशीला, वे नाम तू मुझे अेक कागज़ पर लिख दे।" मैंने लिख दिये। बा अुस कागजको सामने रख कर सारा दिन चलते-फिरते नदियोंके नाम रटती रहीं। मगर ७४ सालकी अुम्रमें नअी चीजें सीखनेकी शक्ति किसी बिरलेमें ही पाअी जाती है। दूसरे दिन वे फिर अुन नदियोंके नाम बापूजीको नहीं बता पाअीं। बापूजीने बा को प्राकृतिक भूगोल सिखाना शुरू किया। रेखांश और अक्षांश, भूमध्य रेखा या विषुवत रेखा क्या है, सो सब समझाया। लेकिन याद रखना कठिन था। हर रोज़ दुपहरको खानेके बाद बापू अेक नारंगी मँगवाते और अुससे बा को विषुवत रेखा वगैरा समझाते। आखिर बा को वे याद हो गये। अिसके कअी दिन बाद अेक रोज़ भाअी मनुको भूगोल पढ़ा रहे थे। बा खड़ी होकर सुनने लगीं। भाअीको अंग्रेजी नाम आते थे, अुर्दू नाम आते थे, मगर हिन्दी नाम याद करनेमें कुछ गोलमाल हो गया था। बा मुझसे आकर कहने लगीं: "सुशीला, प्यारेलाल जिसे रेखांश बता रहा है, बापूजीने अुसे अक्षांश बताया था।" और अुनकी बात सच थी। भाअीने अपनी भूल सुधारी।

बापूजीने बा के साथ गुजरातीकी पाँचवीं किताब पढनी शुरू की। अुसमें कवितायें आयीं। अुनके शुरूमें रागका नाम लिखा रहता। बापूजी

बा को अुनका राग सिखाने लगे। आठ दस दिन तक शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजी और बा अुन कविताओंको गाया करते। हमारी अम्माजान (श्रीमती नायडू) अक्सर मज़ाक करतीं। बापू हँस देते और फिर बा के साथ गाने लगते।

बापूजीने बा को हिन्दुस्तानके प्रान्तोंके नाम सिखाये। फिर हरअेक प्रान्तकी राजधानीका नाम सिखाया। बा ने अुन्हें सीखनेकी मेहनत तो बहुत की, मगर फिर भी जब बापू पूछते, तो बा के मुँहसे "कलकत्तेकी राजधानी लाहौर है," या अैसा ही कोअी दूसरा जवाब निकल जाता।

धीरे-धीरे बा का अुत्साह मन्द पड़ने लगा। वे अक्सर कहतीं: "मै बीमार रहती हूँ। अिसलिअे मेरा दिमाग़ कमजोर पड़ गया है। मैं कुछ याद नहीं रख सकती।" फिर भी बा ने अभ्यास नहीं छोड़ा। वे गीताजीके अभ्यासमे अधिक समय देने लगीं। बापूजीके साथ गीता पढ़तीं। फिर शामकी प्रार्थनाके बाद मेरे साथ पढ़तीं। कहा जा सकता है कि गीताजीका अुनका अभ्यास तो लगभग मृत्युके समय तक चलता रहा।

महादेवभाअीकी मृत्युके बाद बा सुबह-शाम नियमसे बापूजीके साथ घूमने निकलने लगीं। बापू कअी बार अुन्हें काफी तेज चला ले जाते, लेकिन यह सिलसिला अेक महीनेसे ज्यादा नहीं चल सका। अेक दिन वे बापूजीके साथ ५५ मिनट तेजीसे घूमीं। अुसी रोजसे अुनकी छातीमे दर्द शुरू हो गया। बस, अुसके बाद बा बापूजीके साथ अच्छी तरह घूम ही नहीं सकीं। सुबह जब बापूजी नीचे बगीचेमे घूमने जाते, तो बा अूपर बरामदेमे थोड़े चक्कर लगाकर कुर्सीपर बैठ जातीं। हम घूमकर लौटते, तो बा को हाथमे 'आश्रम-भजनावलि' और 'अनासक्तियोग' लिये बरामदेमें कुर्सी पर बैठी पाते। वे रोज करीब अेक घंटा अिन दोनों पुस्तकोंके साथ बिताती थीं। भजन गातीं, 'अनासक्तियोग' पढ़तीं और फिर मालिश वग़ैरा करवानेके लिअे अुठतीं।

बा के पढ़नेका ढंग बच्चोंका-सा था। बापूजीने अुन्हें समझाया कि अुनको अपने पढ़नेका ढंग सुधारना चाहिये। अक्सर बा सुबह 'अनासक्तियोग' और दोपहरमें अखबार अूँचे स्वरसे पढ़ा करती थीं। बापूजीने अुनके पढ़नेके ढंगकी टीका की, तो अुन्होंने जोरसे पढ़ना ही

छोड दिया, और दोपहरको अखबार लेकर भाओीके या मेरे पास सुननेको आने लगीं। बादमे जब मनु आ गअी, तो वह सुनाने लगी। 'अनासक्तियोग' भी बा अब मन ही मन पढ़ लिया करती थीं।

बा के लिखनेका ढग भी बच्चोंका-सा था। वे अक्षरोंको अलग-अलग करके लिखती थीं। बापूजीने अुन्हे अच्छी तरह लिखना सिखानेकी कोशिश की। अुन्हे लिखनेका अभ्यास करनेको कहा। बा मे ७४ सालके अनुभव और बुद्धिमत्ताके साथ ही बालककी-सी सरलता थी। किसीको कोअी नया काम करते देखतीं, तो अुससे वह सीख लेनेकी अुनकी अिच्छा हो जाती। हाल ही अचानक बा की १९३१-'३२ की डायरियाँ मेरे हाथ पड़ गअीं। अुन्हें देखनेसे पता चला कि अुन दिनों भी जेलमें बा की अभ्यास-वृत्ति आजके समान ही थी। वे मीराबहनसे हिन्दी सीखती थीं और दूसरी किसी बहनके साथ गुजराती पढती-लिखती थीं। अिसी तरह कुछ बहनोंको 'नैपकिन' बनाते देख कर अुन्होंने जेलमे वह काम भी शुरू कर दिया था। सेवाग्राममे छोटे कनुको अितिहास-भूगोल सीखते देखकर बा ने भी अितिहास-भूगोल सीखना शुरू किया था।

आगाखान महलमे हम सबको नोटबुक मँगाते देख कर अुन्होंने अेक दिन बापूजीसे अपने लिअे भी नोटबुक मँगा देनेको कहा। बापूजीने अुनके हाथमे दो-चार कागज दे दिये और कहा: "अिन पर लिखनेका अभ्यास कर; जब कुछ प्रगति कर लेगी, तो नोटबुक मँगा दूँगा।" बा को अिससे बहुत आघात पहुँचा। बापूजीने भी अपनी भूल तो महसूस की, लेकिन अब क्या हो सकता था? श्रीमती नायडूने चुपचाप बा के लिअे अेक नोटबुक मँगवा ली। मैं अुसे बा के पास ले गअी। बा ने अुसे बापूजीकी किताबोंमे रख दिया। बहुत कहने पर भी अुन्होंने अुसका अिस्तेमाल नहीं किया। बल्कि बापूजीके दिये कागज़ों पर ही लिखना पसन्द किया; बापूजीने भी समझाया, लेकिन बा तो स्वाभिमानिनी महिला थीं। अुन्होंने शान्तिके साथ अुत्तर दिया: "मुझे नोटबुककी आवश्यकता ही क्या है?" अन्त तक वह नोटबुक बापूकी किताबोंमे ही पड़ी रही।

२२

रामायण और भागवतमें श्रद्धा

बा की पुरानी डायरियोंसे पता चलता है कि सन् १९३१-'३३में वे तीन बार जेल गओीं और हर बार वे वहाँ नियमित रूपसे रामायण और भागवत सुनती रहीं। आगाखान महलमें शामकी प्रार्थनाके साथ तुलसी-रामायणकी दो चौपाअियाँ हमेशा गाओी जाती थीं। बा बड़ी दिलचस्पीके साथ दोपहरको रामायण अुठा कर ले जातीं और शामको पढ़ी जानेवाली चौपाअियोंको पहलेसे पढ़ लेतीं और अुनका हिन्दी अर्थ समझनेकी कोशिश करतीं। सेवाग्राममें भी अुनका यही कार्यक्रम रहा करता। वहाँ वे किसी न किसीसे अुनका अर्थ समझ लिया करती थीं। आगाखान महलमें प्रार्थनाके बाद बापूजीने बा को खुद अर्थ समझाना शुरू किया। बा की श्रद्धा अन्धश्रद्धा नहीं थी। जहाँ कहीं बहुत अतिशयोक्ति आती, बा कह अुठतीं: "यह तो सब निरी गप मालूम होती है!" अिसी तरह बालकाण्डमें दशरथ और जनकके वैभवके लम्बे-लम्बे वर्णन सुनकर और यह देखकर कि स्वयंवरके मण्डपकी रचनाका वर्णन करनेमें तुलसीदासजीने पन्नेके पन्ने भर दिये हैं, बा बोल अुठतीं: "क्या तुलसीदासजीको और कोअी काम ही न था, कि बैठे-बैठे अैसे लम्बे वर्णन लिखते रहे!" बापूजीको खयाल आया कि रामायणमेंसे अिस तरहके वर्णन, अुपाख्यान वगैरा निकाल कर अेक संक्षिप्त तुलसी-रामायण तैयार कर ली जाय, तो वह बा के बहुत काम आये। सो अुन्होंने रामायणमें निशान लगाना शुरू किया। बालकाण्डमें और अयोध्याकाण्डके कुछ हिस्सेमें निशान लगा भी लिये। प्रार्थनामें भी संक्षिप्त रामायण पढ़नेका सिलसिला शुरू किया। भाअीसे अुसका गुजराती अनुवाद करनेको कहा। बोले: "हररोज दो चौपाअीका अनुवाद करके अुसे सुन्दर अक्षरोंमें लिख लिया करो और बा को दे दिया करो। अिससे बा को बहुत अच्छा लगेगा और मुझे भी बहुत संतोष होगा।" भाअीने अनुवाद शुरू

किया । बापू खुद अुस अनुवादको सुधारने लगे । लेकिन आगे चल कर बापूका अुपवास आया और दूसरी भी कअी बातें पैदा हुअीं । नतीजा यह हुआ कि बापूजीका बा के लिअे रामायणमें निशान लगाना और भाअीका अनुवाद करना सब अधूरा रह गया ।

बापूजीके अुपवासके दिनोंमें शामकी प्रार्थनाके बाद बा को रामायणकी चौपाअियोंका अर्थ सुनाना मेरे जिम्मे आया और बादमें भी यह काम मुझ पर ही रहा । बा बहुत ध्यानके साथ अर्थ सुनती थीं और जहाँ कहीं गहरी धर्म-भावनासे भरी चौपाअियाँ आ जातीं या बहुत करुण-रस आ जाता, वहाँ वे आलोचना भी किया करती थीं । यह सिलसिला लगभग बा की मृत्युके समय तक जारी रहा । मृत्युके दो अेक रोज पहले बा बहुत थकी दीखती थीं । आँख बन्द करके पड़ी थीं । मैंने पूछा : "बा, रामायणका अर्थ सुनेंगी क्या?" बा ने आँखें खोलीं । "पूछती क्यों है कि सुनेंगी क्या? रामायण ला कर अर्थ करना शुरू क्यों नहीं कर देती?" बा ने जरा चिढ़कर कहा । मैं बोली : "बा आप थकी-सी लगती थीं, अिसलिअे मैंने पूछ लिया ।" बा ने शान्तिके साथ अुत्तर दिया : "लेकिन लेटे-लेटे रामायणका अर्थ सुननेमें मुझे कौन थकान लगनेवाली है? लाओ, सुनाओ अर्थ ।"

तुलसी-रामायणके बाद बापूजीने दोपहरके समयमें बा को बाल-रामायण पढ़कर सुनाअी । बादमें अुन्होंने वाल्मीकि-रामायणका गुजराती अनुवाद पढ़ा । शुरूमें बा अुसे भी बापूके पास बैठकर सुना करती थीं । लेकिन बापूजी अुसे जल्दी पूरा करना चाहते थे, और बा सारा समय बैठकर सुन नहीं सकती थीं, अिसलिअे अुसको भी बा ने मुझसे सुनना शुरू किया । बादमें जब मनु आ गअी, तो यह काम अुसने संभाल लिया । बा ने मनुसे सारी वाल्मीकि-रामायण सुनी ।

दोपहरमें भोजनके समय मैं बापूजीके पास संस्कृतमें वाल्मीकि-रामायण पढ़ा करती थी । बा अुस समय भी बापूजीके पास आकर बैठ जातीं और बहुत रसके साथ सब सुनतीं । बा की बीमारीके बढ़ने पर संस्कृत वाल्मीकि-रामायणका अभ्यास बन्द कर देना पड़ा, नहीं तो बापूजीका

अिरादा अुसमेंसे भी अेक संक्षिप्त रामायण तैयार करनेका था। बालकाण्ड और अयोध्याकाण्डका कुछ हिस्सा तैयार हो भी चुका था।

गुजराती वाल्मीकि-रामायण पूरी होने पर मनुने बा को "बारडोली सत्याग्रहका अितिहास" पढ़कर सुनाना शुरू किया। लेकिन बा ने अुसे यह कहकर बन्द करवा दिया कि यह सब तो मैं जानती हूँ। अुन्हें धार्मिक पुस्तकोंमें अधिक दिलचस्पी थी। अिसलिअे 'भागवत' मँगाअी और समूची भागवत सुनी। अिसके बाद भी खास-खास दिनोंमें (जैसे, अेकादशी वगैरा) बा भागवत सुना करती थीं। अपने अंतिम दिनोंमें बा ने फिर नियमित रूपसे भागवत सुनना शुरू किया था। अुन दिनों वे शामको चारसे साढे चार तक भागवत सुना करती थीं। लेकिन कोअी मिलनेवाले आ जाते, तो भागवत बन्द रहती थी। अेक बार पाँच-छह रोज तक लगातार मुलाकाती आते रहे। आखिर जिस दिन कोअी नहीं आया, अुस दिन भी मैं भागवत सुनाने नहीं पहुँची। सिलसिला टूट चुका था। और बा की बीमारी बढ़ जानेके कारण मुझे रातमें भी काफी काम रहता था। अिसलिअे अुस दिन मैं दोपहरमें सो गअी। भागवतके समय नींद तो खुल गअी थी। मगर थकी थी, सो सुस्ती कर गअी। मनको मना लिया कि आज बा को शायद ही भागवतकी याद आये। मगर बा यों भूलनेवाली नहीं थीं। अुन्होंने मनुको बुलाकर अुससे भागवत सुनी, अिसके बाद जो कुछ दिन अुन्होंने भागवत सुनी, सो मनुसे ही सुनी। मेरी फिर सुनाने जानेकी हिम्मत ही नहीं हुअी। लेकिन मनमें तो आज भी अिसका पछतावा बना हुआ है। मैं जानती थी कि बा को मुझसे भागवत सुनना अच्छा लगता था, क्योंकि मैं अुन्हें थोड़ा-बहुत अर्थ भी समझा सकती थी। मगर मैं अेक दिनका आलस्य कर गअी। दूसरे दिनसे जाने लगी होती, तो शायद अेकाध बार बा कोअी तीखी बात कहतीं, लेकिन मनमें तो खुश ही होतीं। मगर मुझसे यह न हो सका। कुछ देरके लिअे मैं यह भूल ही गअी कि जीवन क्षण-भंगुर है, अिसका कोअी भरोसा नहीं। अिसलिअे सेवाका मौका मिलने पर तो अुसे किसी हालतमें भी खोना न चाहिये।

२३

व्रत-अुपवास वगैरामें श्रद्धा

आगाखान महलमे पहुँचनेके कुछ दिन बाद बा ने बापूसे पूछा : "अेकादशी कब है?" बापूजीने मि० कटेलीसे अेक पंचांग मँगवा देनेको कहा। लेकिन बाहरकी कोअी भी चीज मँगवानेके लिअे सरकारी अिजाजतकी जरूरत थी और अुसके मिलनेमे देर लग सकती थी। अिसलिअे बापूजीने मुझे अेक जंत्री (कैलेंडर) बनानेको कहा। अुसका तरीका भी बताया। जिस दिन बापू पकड़े गये थे, अुस दिनकी तिथि, वार वगैरा हम जानते थे। अुस परसे सारे सालका हिसाब लगाया। मेरा अेक पूरा दिन अिसमे खर्च हुआ। कैलेंडरमें बापूजीने पूर्नोके दिन पर लाल पेंसिलका और अमावस पर नीलीका निशान लगवाया। अुस परसे अुन्होंने बा को तिथियाँ समझाअीं और अेकादशी किस दिन पड़ेगी, सो बताया। करीब अेक महीने तक हमारे पास वही अेक कैलेंडर था। बादमें पंचांग आ गया और कैलेंडर भी।

अेकादशीके दिन बा हमेशा फलाहार किया करती थीं। मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी किसी अेकादशीको वे अुपवास करना भूली हों। अिसी तरह हर सोमवारके दिन, सोमवती अमावसके दिन, और अकसर पूर्नो, जन्माष्टमी, शिवरात्रि वगैरा पवित्र तिथियों पर वे अुपवास करना चूकती न थीं। कभी-कभी सोमवार, अेकादशी और दूसरी कोअी तिथि अेक साथ आ जाती, तो बा तीन-चार दिन तक लगातार अुपवास रखतीं। बीमार हों या अच्छी, अिनमेंसे किसी भी अुपवासको छोड़नेका अुन्हें कभी विचार तक नहीं आता था। राष्ट्रीय सप्ताह, स्वतन्त्रतादिन और 'हिन्दुस्तान छोड़ो' दिनके अुपवास अिन अुपवासोंके अलावा होते थे, और बा अिन्हें भी कभी चूकती न थीं।

२४

पतिव्रता सती

बा बहुत पढी-लिखी न थीं। लेकिन अुनकी बुद्धिका खासा अच्छा विकास हो चुका था। देशमे क्या हो रहा है, अिसे वे अच्छी तरह समझती थीं। बापूजीमे अुनकी अपूर्व श्रद्धा थी। हिन्दू स्त्री पातिव्रत धर्मको सबसे पहला स्थान देती है। अतअेव बा भी बापूजीके पीछे-पीछे चलना ही अपना धर्म समझती थीं।

जेलमे सुबह-शाम घूमते समय मनु अकसर बापूजीसे कहानी सुनानेको कहती। बापूजीने अुसे दो-चार छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाअी भी। अेक दिन मैंने कहा: "कहानी कहना हो, तो हमे अपनी ही कहानी कहिये न!" बापू मान गये। अुनके मुँहसे अुनकी आत्मकथा सुननेमे और 'आत्मकथा' पढ जानेमे जमीन-आसमानका फर्क था। बापूजीने हमे अपने बचपनकी, बा के साथ खेलनेकी, विवाहकी, विलायत जानेकी, और दक्षिण अफ्रीकाकी कहानियाँ सुनाअी। लेकिन बादमे बाकी बीमारी बढ जानेके कारण कहानी सुनानेका यह सिलसिला टूट गया। बापूजीने बताया कि किस तरह बा ने हिन्दूधर्मके अपने पुराने सस्कारों पर विजय पाकर बापूजीके पीछे-पीछे चलनेकी कोशिश की थी। अुन्होंने कहा: "मुझे कहना चाहिये कि अिस काममे मेरे परिवारकी सब स्त्रियोंकी मदद मुझे मिली। वे सब बा से कहती थीं: 'दूसरे लोग चाहे खुद पुराने रीति-रिवाजोंका पालन करें, अछूतोंको घरमे न आने दें, मुसलमानोंका छुआ पानी तक न पीयें, मगर तुझे तो ये सब विचार छोड ही देने चाहिये। अपने पतिके पीछे चलना ही तेरा धर्म है। अुनके पीछे चलते हुअे तू कुछ भी क्यों न करे, तुझे अुसका पाप लग ही नहीं सकता। अुसका तो शुभ परिणाम ही हो सकता है।' और, बा ने हमेशा अुनकी सलाह पर अमल करनेकी कोशिश की है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि अुसने हरअेक क़दम अपनी बुद्धिसे समझ कर अुठाया है, लेकिन मैं तो हमेशासे यह मानता

आया हूँ कि बुद्धि हृदयके पीछे चलनेवाली चीज है। बा ने जो कुछ किया है, श्रद्धासे किया है, हृदयसे किया है, और बादमें बुद्धिसे भी वह अुन चीजोंको बहुत हद तक समझ सकी है।"

बा रोज नियमसे कातती थीं। अकसर वे तीन सौसे पाँच सौ तार हररोज कात लेती थी। रचनात्मक कार्यक्रमके महत्त्वको वे अच्छी तरह समझती थी। लेकिन आगाखान महलमे आनेके बाद वे बहुत कात नही सकीं। हृदयका दर्द शुरू हो जानेके कारण अुनको कातनेसे रोकना पड़ा। अिसमे मुझे कितनी कठिनाअीका सामना करना पड़ा, सो कहना मुश्किल है। बा कहती: "भला, कातनेसे मेरे हृदयको क्या श्रम पहुँचेगा?" अिसी तरह अुन्हे घरमे घूमने-फिरनेसे रोकना भी कठिन था। आखिर कर्नल भण्डारीने अुनको डराया: "देखिये, आप आराम नही करेंगी, तो मुझे आपको यरवडा ले जाना पडेगा।" बा अितनी भोली थीं कि धमकी काम कर गअी। अुन्होंने खाट पर रहना शुरू किया और दो ही चार दिनोंमे तबियत सुधरने लगी। मगर चरखा तो जो छूटा, सो छूटा ही। बा के मनमे यह खयाल जम गया कि चरखा चलानेसे हृदयका दर्द ब-ता है। अिसलिअे बादमें हम लोग अुनसे चरखा चलानेको कहते भी थे, तो वे चलाती नही थीं। हमें लगता था कि अुनके लिअे अपनी बीमारीके विचारको भूलकर दिल बहलानेके लिअे चरखा अच्छा साधन होगा। अेक दो बार बा ने चरखा निकाला भी, मगर वह सिलसिला फिर चल नही सका।

२५

छुआछूत

मैंने बा मे छुआछूतकी भावना कभी नहीं देखी। १९३० मे, जब मैं पहली बार गर्मीकी छुट्टियोंमे आश्रम गअी थी, वहाँ लक्ष्मी नामकी अेक लडकी थी, जिसे सब बा और बापूकी लडकी कहा करते थे। वह बा के पास ही रहती थी। बा माँकी तरह अुसकी सँभाल रखती थीं। जब मैं आश्रमसे लौटकर घर पहुँची, तो वहाँ किसी बहनने कटाक्ष करते हुअे पूछा: "आश्रममे भंगीकी वह लडकी तेरी सहेली बनी थी या नहीं?" मैं जरा चक्करमे पड़ गअी; पूछा: "भंगीकी लडकी कौन?"

"वही, जिसे महात्माजी अपनी लडकी बनाये हुअे हैं।"

तब मुझे पता चला कि लक्ष्मी बा की अपनी लडकी नहीं थी; वह हरिजन लडकी थी, जिसे बा और बापू अपनी लडकीकी तरह रखते थे।

अिसी तरह सेवाग्राम आश्रममे काम करनेवाले हरिजनोंके प्रति बा बहुत ही अुदारताका और प्रेमका भाव रखती थीं। अुन्हें खुद कभी कोअी सेवा लेनी ही पडती, तो हरिजन सेविका मणिबाअीसे ही लेना पसन्द करती थीं। आगाखान महलमे वे अक्सर मणिबाअी, खड्डू मामा वगैरा हरिजन सेवकोंको याद किया करती थीं। कअी बार चर्चा चलने पर वे कहतीं: "आखिर तो अीश्वर ही ने सबको बनाया है न! फिर अूँच क्या और नीच क्या? यह तो भावना ही गलत है।"

२६

पुराने संस्कार

लेकिन साथ ही वे अपने पुराने सस्कारोंको बिलकुल भूल नहीं सकी थीं। ब्राह्मणके प्रति अुनके मनमे विशेष श्रद्धा थी। आगाखान महलमे 'वहाँके सिपाही हम लोगोंकी बहुत-सी सेवा कर दिया करते थे। अुनमें अेक ब्राह्मण था। अुसे रसोअीघरके काम पर रखा गया था। बा अुस पर विशेष प्रेम रखतीं और अुसे दूध-फल वगैरा देती रहतीं। कभी

अुससे कोअी भूल भी हो जाती तो माफ कर देतीं। वे अकसर कहती: "बेचारा ब्राह्मणका लड़का है। यहॉ और तो कोअी धर्म हो ही नहीं सकता; अिसे कुछ दे सकें, तो अच्छा ही है।"

लेकिन अिसकी वजहसे दूसरे सिपाही अुसकी अीर्ष्या करने लगे, और आखिर सुपरिण्टेण्डेण्ट तक शिकायत पहुँची। अुन्होंने बा से कहा कि वे किसीको कुछ न दिया करें। मगर बा क्यों मानने लगीं? वे तो चुपचाप जो देना होता, दे आतीं और कहतीं: "मैं अपने हिस्सेमेंसे देती हूँ। किसीको क्या?"

अेक रोज बा अुससे पूछने लगी: "महाराज, तुम ब्राह्मण हो। कहो तो, हम घर कब जायँगे?" वह बेचारा क्या अुत्तर देता? बोला: "अच्छा बा, किताब देखकर बताअूँगा।" बादमें अुसने कुछ बताया या नहीं, मैं नहीं जानती।

२७

हिन्दू-मुसलमानके प्रति समभाव

यह सब होते हुअे भी बा के दिलमें दूसरी कौमके लोगोंके लिअे कोअी अप्रेम या अरुचि नहीं थी। आगाखान महलमें अेक-दो मुसलमान सिपाही भी थे। बा अुनके साथ भी अच्छी तरह हिलती-मिलती और बातचीत करती थीं। अुनसे रसोअीघरका काम भी करातीं। अीद वग़ैरा त्योहारोंके दिन वे अुन्हे फल और मिठाअी भी देतीं। सिपाहियोंमे हिन्दू या मुसलमानका कोअी भेदभाव वे नहीं रखती थीं, हालॉकि अितिहासकी किताबोंमें मुसलमानी हुकूमतके ज़मानेके जुल्मोंकी बात पढ़कर वे बेचैन हो अुठती थीं। डॉक्टर अन्सारी, हकीम साहब अजमल खान, खान अब्दुल गफ्फार खान, डॉ० खान साहब, और मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब-जैसे तमाम मुसलमान मित्रोंको देखकर अुनके मनमें अकसर यह सवाल पैदा होता कि आखिर अितिहासमें यह सब अैसा क्यों लिखा है? अिन मुसलमान मित्रोंके लिअे अुनके मनमें सरदार वल्लभभाअी या

जमनालालजीके जितना ही प्रेम और मित्रभाव था। अुनके दिलमे कभी यह खयाल तक नहीं आता था कि अिनमे कुछ हिन्दू है और कुछ मुसलमान। अिसी तरह आश्रममे रहनेवाले मुसलमान भाअी-बहनोंके प्रति भी अुनके बरतावमे कभी कोअी भेद-भाव मैंने नहीं देखा। हॉं, बा यह जरूर ताड जाती थीं कि कौन अुनकी सेवा मनसे करता है, और कौन सिर्फ बापूजीको खुश करनेके लिअे करता है। अैसे लोगोंसे सेवा कराना अुन्हे अच्छा नहीं लगता था, फिर भले वे हिन्दू हों या मुसलमान। अिसी तरह जो भी कोअी बापूजी तक अुनकी शिकायत लेकर जाता था, अुसे वे आसानीसे माफ नहीं कर सकती थीं। मुसल्मानोंके मनमे हिन्दुओंके प्रति जो अविश्वास पैदा हो गया है, अुसे दूर करनेके लिअे मुसलमानोंके साथ खास अुदारता दिखानेकी जरूरत है, अिस चीजको वे समझ नहीं सकती थीं। अुनके पास सबके लिअे समभाव था, और अितना अुनके लिअे बस था।

हिन्दू-मुस्लिम अैक्यकी आवश्यकता और अुसके महत्त्वको भी वे समझती थीं। अेक दिन अखबारमे मि० अेमरीका यह बयान पढ़कर कि गांधी और जिन्ना अेक दूसरेसे मिलना तक कबूल नही करते हैं, बा बहुत नाराज हो गअीं। कहने लगी: "यह बिलकुल झूठ है। गांधी तो जिन्नाके घर अुनसे मिलने गया था। महादेवने यह सब लिखकर रखा है। अेमरी जरा मेरे सामने तो आवे। मैं अुसे लिखा हुआ दिखाअूँगी और पूछूँगी कि गांधी जिन्नासे मिलने अुनके घर गया था या नहीं?" अखबारोंमे बापूजीकी टीका पढकर बा को बहुत दुःख होता था। अुनके लिअे यह अेक नअी चीज थी। अेक तो वे बाहर अितने ध्यानके साथ अखबार पढ़ती ही नहीं थीं, अुन्हें अितना समय ही नहीं मिलता था; दूसरे गांधीजीके खिलाफ जितना जहर अिस बार अुगला गया था, अुतना शायद ही पहले कभी अुगला गया हो। बा अकसर कहतीं: "देखो न, ये लोग कितना झूठ बोलते है? अिनके पापका घडा भी कभी तो भरेगा न? ओीश्वर कब तक अिनके पापको सहता रहेगा?" खास तौरपर जब बापूजीकी अहिंसापर कोअी हमला करता था, तो बा से वह बिलकुल नहीं सहा जाता था।

२८

अिस बारके जेलका बा पर असर

बा कअी बार जेल जा चुकी थीं। दक्षिण अफ्रीकाके जेलखानोंमें तो अुन्हे बहुत ही कष्ट सहने पड़े थे। कभी-कभी बा मुझको अपने अनुभवोंकी बाते सुनाया करती थीं। हिन्दुस्तानमे भी वे काफी बार जेल जा चुकी थीं। कम-से-कम तीन बार तो वे सन् १९३१-'३३के आन्दोलनमें ही गिरफ्तार हुअी थीं। लेकिन बा को अिस बारका जेल-जीवन पहलेके मुकाबले बहुत खटकता था। वे महसूस करती थीं कि अिस दफा सरकारने सबको बिला वजह पकड़ लिया है। जनतापर सरकारकी सख्तीकी जो थोड़ी-बहुत खबरे अखबारोंमे आती थीं, अुन्हे पढ़कर वे बहुत दुःखी होती थीं। अिस बारका बेमियाद जेल-जीवन अुन्हे बहुत खटकता था। महादेवभाअीकी मृत्युके बाद अुनके मनमे यह खटका पैदा हो गया था कि शायद वे अिस जेलसे जीते जी बाहर न जायँगी। ता० १९-९-'४२ के दिन पहली बार अुन्होंने अपना यह भय प्रकट किया था। चर्चा चल रही थी कि बाहर जाने पर कौन क्या करेगा? अिस पर बा कह अुठीं: "मेरा क्या ठिकाना है? मैं बाहर जाअूँ भी, न भी जाअूँ। यह भी हो सकता है कि मैं अभी हूँ, और शाम तक न रहूँ।" बापूने यह बात सुन ली। बोले: "अैसा क्यों कहती हो? वैसें देखा जाय, तो तुम जो कहती हो, सो सब पर लागू हो सकता है। यह सुशीला अभी अेम० डी० होकर आअी है। हो सकता है कि यह अभी है, और शामको न रहे। महादेवका अैसा ही हुआ न? तू और मैं, जो बीमार-से थे, अभी बैठे हैं। अिसलिअे तुझे तो अच्छा होना ही है। जितनी सेवाकी जरूरत हो, ले और मनसे सब तरहकी चिन्ताको निकाल डाल।"

लेकिन बा के लिअे चिन्ता छोड़ना कठिन था। दूसरे जेलोंमें बा के पास दूसरी बहुतेरी बहनें रहती थीं। अुनसे बातचीत करनेमें, बीमारोंको देखनेमें, कातनेमे और भजन-कीर्तनमे अुनका समय निकल जाता था।

लेकिन यहाँ तो अिस बार हरअेक अपने-अपने काममे लगा हुआ था। जब बा को कुछ पढ़कर सुनाना होता, या अुनकी दूसरी कोअी सेवा करनी होती, तभी लोग अुनके साथ रहते। बादमे तो बातें करनेके लिअे भी कोअी अुनके पास बैठनेवाला नहीं था। और बा को तो हमेशा दरबार लगाकर बैठना अच्छा लगता था, खास करके शामके वक्त। सो बा अकसर विचार-सागरमे डूब जाया करती थीं। अेक दिन कहने लगीं: "बापूजी अितनी बड़ी सल्तनतके साथ लड रहे है। अुसके पास साधनोंका पार नहीं है। बापूजी कैसे जीतेंगे?"

मैंने कहा: "बा, आखिर अीश्वर तो है न? बापूने तो अुसीके भरोसे यह लडाअी ठानी है। वही अिसे पार भी लगायेगा।"

बा बोलीं: "लेकिन आज तो अीश्वर भी हमारे ही विरुद्ध जा रहा है। देखो न, महादेवको किस तरह ले गया?"

बापूजीने सुना तो बोले. "महादेवका जाना अेक शुद्धतम बलिदान है। अुससे आजादीकी लडाअीको लाभ ही होनेवाला है।"

मगर बा के मनसे शका गअी नही। अेक दिन अुनकी तबियत कुछ ज्यादा खराब थी। चिढ़कर बापूजीसे कहने लगीं: "देखिये, मैं आपसे कहती थी कि अितनी बड़ी सल्तनतके साथ छेडछाड न कीजिये, मगर आपने अेक न सुनी। अब अुसका फल सबको भुगतना पड़ रहा है। सरकारकी ताकतका पार नहीं है। वह लोगोंको कुचल रही है। लोग बेचारे कहाँ तक सहेंगे? अिसका परिणाम क्या होगा?"

पहले तो बापूने बा को दलीलोंसे समझानेकी कोशिश की, लेकिन अुस दिन वे अिस तरह समझनेको तैयार न थीं। आखिर बापूने कहा: "तो तू क्या चाहती है? चल, तू और मैं सरकारसे माफी माँगे।"

बा चिढ़ बैठी थीं। बोलीं: "मैं क्यों किसीसे माफी माँगूं?"

"तो तू कहे, तो मैं वाअिसरायको माफीके लिअे पत्र लिखूँ?"

बापूकी मानहानिको बा किसी भी हालतमे सह नही सकती थीं। वे जरा गुस्सेमे आकर बोलीं: "सुकुमार (कमसिन) लड़कियाँ जेलोंमे पड़ी है। वे माफी नहीं माँगती और आप माँगेंगे? अब किया है, तो अुसका फल भुगतिये। आपके साथ हम भी भुगतेंगे। महादेव जेलमे

खतम हो गया है, अब मेरी बारी आ रही है।" बापूजी चुपचाप सुनते रहे। बा जब गुस्सा होती, बापू आम तौर पर मौन धारण कर लिया करते थे।

कुछ दिनों बाद बा ने बापूसे कहा: "मैं तो यह कहती हूँ कि आप अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तानसे जानेके लिअे क्यों कहते है? भले वे यहॉ रहे। हमारा देश बहुत बड़ा है। अुसमें हम सब समा सकते हैं। आप अुनसे कहिये कि वे यहॉ हमारे भाअी बनकर रहे।"

बापूने कहा: "तो मैं और कहता ही क्या हूँ? मैं भी तो अुनसे यही कहता हूँ कि आप हमारे भाअी बनकर रहे, सरदार बनकर नही। आप अपनी सरदारी हटा ले, तो आपके साथ हमारा कोअी झगड़ा ही नहीं।"

बा बोलीं: "सो तो ठीक ही है। हम अंग्रेजोंको अपना सरदार बनाकर नहीं रख सकते, भाअी बनकर वे खुशीसे रहे।"

दूसरे दिन मैं बा की मालिश कर रही थी। वे मुझसे कहने लगीं: "सुशीला, ये लोग बहुत बदमाश हैं। बापूजी कहते है, हमारे देशमे हमारे भाअी बनकर रहो, लेकिन अुन्हे तो हमारी सरदारी करनी है। हिन्दुस्तानको लूटना है। अिसीलिअे बापूजीको और दूसरे सब नेताओंको पकड़कर जेलमे बन्द कर दिया है!"

बा बापूजीसे कुछ भी नया सुनतीं, तो दूसरे दिन मालिशके समय अकसर मुझसे अुसका जिक्र किये बिना न रहती। किताबमे भी कुछ नया-नया पढ़ती, तो प्रायः हम सबसे अुसकी चर्चा करतीं। अेक रोज अुन्होंने किताबमें पारसियोंका अितिहास पढा। शामको हमारी छावनीके पारसी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० कटेली बा को देखने आये। बा अुनसे कहने लगीं: "कटेली साहब, आप जानते हैं, पारसी किस तरह हिन्दुस्तानमें आये?" और, किताबमे पढा हुआ सारा अितिहास वे अुन्हे सुना गअी। मि० कटेली बहुत ही सज्जन पुरुष थे। बा को देखकर अुन्हे अपनी बूढी मॉकी याद हो आती थी। अुन्होंने अत्यन्त सज्जनताके साथ बैठकर बा से सारी कहानी सुनी।

२९

बापूके अुपवासकी तैयारी

सत्याग्रहमे अुपवासका क्या स्थान है, अिसकी चर्चा तो बहुत समयसे चलती थी। बहुतोंको डर था कि अिस बार जेलमे जाते ही बापू अुपवास शुरू कर देंगे। महादेवभाअीने जेलमे जो ६ दिन बिताये, सो तो सारा समय अिसी चिन्तामे बीते कि बापू अुपवास करेंगे, तो क्या होगा? लेकिन महादेवभाअीकी मृत्युके बाद कुछ समय तक अुपवासकी बात ठण्डी पड़ गअी। बापूजीने महादेवभाअीकी मृत्युको आज़ादीकी वेदी पर चढ़ा हुआ शुद्धतम बलिदान कहा है। शायद अुस बलिदानका असर देखनेके लिअे भी अुन्होंने अुस समय तो अुपवासका विचार छोड़ दिया हो।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतने लगा, वैसे-वैसे देशकी दुर्दशा, दुष्काल और सरकारके ज़ुल्म वगैराके समाचार पढ़कर बापूजीकी शान्ति गायब होने लगी और वे बहुत ही गंभीर दीखने लगे। अुपवासका विचार फिर अुनके मन पर अपना प्रभुत्व जमाने लगा था। वे बराबर यह सोचने लगे कि सरकारके ज़ुल्मोंके खिलाफ वे अपना विरोध किस तरह प्रकट कर सकते हैं? जनताके दुःखमे खुद किस तरह हिस्सा बँटा सकते हैं?

२८ दिसबरको सोमवारका मौन था। अुस दिन बापूजीने वाअिसरायके नाम अेक पत्रका मसविदा तैयार किया। दूसरे दिन बा को पता चला, तो कहने लगीं: "पत्र आप भले लिखें, लेकिन अुपवासकी कोअी बात न निकालें।" बापू हँस दिये। अुस पत्रमे अुपवासका जिक्र तो था ही। हम सबने बापूजीसे आग्रह किया: "अुपवासकी बात निकाल दीजिये। मुमकिन है, आपके पत्र ही से वाअिसरायकी सद्‌बुद्धि जाग्रत हो जाय। कम-से-कम अुन्हें यह कहनेका मौका तो हरगिज़ न मिलना चाहिये कि गांधीने अुपवासकी धमकी दी थी, अिसलिअे मैंने अुसकी बात नहीं सुनी।"

बापू मान गये। ३१ दिसंबरको बापूजीका अेक छोटा-सा सुन्दर खत, अुनके अपने हाथों लिखा, भेजा गया। जवाबकी राह देखते हुअे बापू बहुत ध्यान-मग्न रहने लगे। अिस पर मीराबहनने कहा: "बापूको अेकान्तकी जरूरत है। आमके पेड़के नीचे अेक झोंपड़ी बना दी जाय, तो अच्छा हो।" बा ने मना किया। बोलीं: "झोंपड़ीकी क्या जरूरत है? बापू तो हर जगह अेकान्त सेवन कर सकते है।" बापूने भी कहा: "मेरा अेकान्त दूसरी तरहका है। बा को मै अपनेसे दूर नहीं रख सकता, रखना भी नहीं चाहता।"

ज्यों-ज्यों वाअिसरायके साथका पत्र-व्यवहार बढ़ा, अुपवास नजदीक आने लगा। मदसे चूर सरकार बापूकी क्यों सुनने लगी? लेकिन हम सब तो अुपवासके विचारसे ही घबराते थे। अेक दिन भाअीने (प्यारेलालजीने) मुझसे पूछा: "तुम्हारे खयालसे बापू कितने दिनोंका अुपवास सहन कर सकते है?"

मैंने कहा: "निश्चित रूपसे कहना कठिन है, लेकिन राजकोटके अुपवासके वक्त तो पाँचवें दिन ही हालत गंभीर हो गअी थी। अुस हिसाबसे देखें, तो बापू अिस बार बहुत दिन तक टिक नहीं सकेंगे।"

श्रीमती नायडू कहने लगीं: "बापूको अुपवास करना ही न चाहिये। अिस अुमरमें वे अुपवासके बाद बच नहीं सकेंगे, और अभी अंतिम बलिदानका समय आया नहीं है।"

बा चिन्तित रहने लगीं। सरोजिनी देवीने अुनसे कहा: "आप चिन्ता न करें। बापू तो कहते है कि जब तक अीश्वरकी आज्ञा न होगी, अन्तरात्माकी आवाज सुनाअी न पड़ेगी, वे अुपवास करेंगे ही नहीं। और भगवान् अुन्हें कभी अुपवास करनेको कहेगा ही नहीं।"

बा ने जवाब दिया: "यह तो मैं जानती हूँ कि भगवान् अुपवासके लिअे नहीं कहेगा। लेकिन बापूजी मान लें कि भगवान् ही कह रहा है तो?"

बापूजी दोपहरको आधा घंटा ध्यानमें बैठते थे। वे अीश्वरसे मार्ग-दर्शनके लिअे प्रार्थना करते थे। बा सुबह स्नान करके आधा-पौना घंटा

तुलसी माताकी पूजामें बैठती थीं। वे अीश्वरसे अपने पतिकी दीर्घायुके लिअे, प्राण-दानके लिअे, प्रार्थना करती थीं।

अिस चिन्ताके कारण बा की कमजोरी बढ़ने लगी। बा, सरोजिनी देवी और मीराबहन हर शनीचरको महादेवभाअीकी समाधि पर फूल चढ़ाने जाया करती थीं। लेकिन अब बा का जाना छूट गया। अुनमें अितना चलनेका भी अुत्साह नहीं रह गया था। अिससे हम सब बा के लिअे चिन्तित हुअे। सबके मनमें यह सवाल अुठता था कि अुपवासके दिनोंमें बा की क्या हालत होगी? हमें लगता था कि आजकी हालतमें वे अैसी कड़ी परीक्षाके लायक नहीं है। सरोजिनी देवीने तो ज़ोरदार शब्दोंमें बापूसे कहा: "बापू, आपका अुपवास बा को खतम कर डालेगा।" बापू हँस दिये और बोले: "मैं बा को तुम लोगोंसे ज्यादा पहचानता हूँ। तुम लोग बा की बहादुरीका अन्दाज भी नहीं लगा सकते। अुसे तुम पहचानते ही नहीं हो। आखिर मैंने बा के साथ बासठ साल बिताये हैं। मैं तुमसे कहता हूँ कि बा तुम सबसे अधिक हिम्मत रखनेवाली है। मेरे हरिजन-अुपवासके दिनोंमें, जब मैंने जीवनकी आशा छोड़कर अपना सब सामान अस्पतालवालोंको बाँट देनेका निश्चय कर डाला था, तब बा ने दृढ़तापूर्वक, अपने हाथों, सारा सामान दूसरोंको बाँट दिया था और अुस वक्त अुनकी पलक तक नहीं भीगी थी।"

सन् १९३३ की बा की डायरीके पन्नोंको अुलटनेसे अुसमें नीचे लिखा अुल्लेख मिलता है:

"नहाकर अस्पताल गअी। मथुरादास मेरे साथ थे। मैंने सामानकी बँधी टोकरी छोड़ी। फिर बापूजीने कहा: 'सारा सामान अस्पतालमें दे दो।' मैंने दे दिया। कल रात बापूजीको अुल्टी हुअी थी। सुबह बहुत कमजोरी आ गअी थी। बोले: 'अब मैं अिस बिछौनेसे नहीं अुठूँगा। तू कोअी फ़िकर न करना। तुझे तो अिसका अभिमान रखना चाहिये। सत्य अिसीका नाम है।' लेकिन अीश्वर दयालु है। अुसने अपने भक्तोंको तारा है। फिर जो होना हो, सो हो।"

और बा का अीश्वरके प्रति यह विश्वास निरर्थक नहीं ठहरा। सरकारने अुसी दिन बापूजीको छोड़ दिया। जिस दिन अुपवास पूरा हुआ,

अुस दिनकी अपनी डायरीमें बा ने लिखा है : "तीन बजे पर्णकुटी आये।" अिस प्रकार बा की श्रद्धा सफल हुअी।

बा की हिम्मतके बारेमें बापूजीका विश्वास सच्चा साबित हुआ। अुसी शामको अुन्होंने अुपवासके बारेमें बा से बातें कीं। दूसरे रोज बा कहने लगीं : "जहाँ अितनी ज़्यादा झुठाअी चल रही हो, वहाँ बापू चुप कैसे बैठ सकते है! सरकारके अत्याचारोंके प्रति अपना विरोध जतानेके लिअे बापूके पास अुपवासको छोड़कर दूसरा और साधन भी क्या है!" हम सब दंग होकर चुपचाप सुनते ही रहे।

मानसिक निश्चयके साथ बा की शारीरिक शक्ति भी बढ़ी। अुपवासके दिनोंमें अुन्होंने सारा समय हिम्मतके साथ बापूजीकी सेवा की। अुन दिनों अेक दिनके लिअे भी अुनकी अपनी तबियत नहीं बिगड़ी।

३०

अुपवास

१० फरवरी, १९४३को सुबह नाश्तेके बाद प्रार्थना करके बापूजीने अुपवास शुरू किया। अुस रोज़ वे सुबह-शाम घूमे। महादेवभाअीकी समाधि पर भी गये। बा भी अुनके साथ घूमीं। हमेशाकी तरह बा ने फलाहार शुरू कर दिया। और अिक्कीस दिन तक अन्न नहीं छुआ। बापूजीके पहलेके अुपवासोंमें वे फलाहार भी दिनमें अेक ही बार किया करती थीं। अिस बार अुनकी दुर्बल स्थितिको देखकर हम सबने अुनसे आग्रह किया कि वे अेक ही समय खानेका नियम न रखें। बड़ी अनिच्छाके साथ वे हमारे आग्रहके वश हुअीं।

दिनमें दो-तीन बार बा गरम पानी और शहद पिया करती थीं। अुपवासके दिनोंमे बराबर बापूके पास ही रहनेकी अुनकी अिच्छा स्वाभाविक थी। वे शहदके पानीका गिलास लेकर बापूकी खाटके पास आ जातीं। कुछ काम रहता, तो गिलासको बापूजीके पास मेज पर रखकर काम कर लेतीं और फिर पानी पीने लगतीं। अेक दिन डॉक्टर गिल्डरने

कहा : "यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि सरकारी आदमियोंके मनमे शक पैदा हो और वे समझें कि बा बापूको पिलानेके लिअे ही पानीका यह गिलास लिअे घूमा करती है।" अुन्होंने बा से भी यह चीज़ कही। बा ने दृढ़ताके साथ अुत्तर दिया : "बापूजीके बारेमे कोअी अैसी शंका कर ही नहीं सकता।"

अुपवासके तीसरे दिन बापूजीको मतली आनी शुरू हुअी। बा ने कहा : "पानीमे थोड़ा मोसबीका रस लीजिये न?" बापूने अिनकार किया। बोले : "मैं यों जल्दी-जल्दी रस नहीं लूँगा।" अुसके बाद तो अुबकाअीकी तकलीफ बढ गअी। बापू पानी बिल्कुल पी ही नहीं पाते थे। खून गाढा हो गया। गुर्दोंका काम ढीला पड गया, लेकिन बा ने दुबारा अुन्हे रस लेनेको नहीं कहा। वे बड़ी स्वाभिमानिनी थीं। वे यह भी महसूस करती थीं कि बापू करेंगे तो अपने मनकी ही, फिर बार-बार अेक ही चीज कहकर अुनकी शक्तिका दुर्व्यय क्यों किया जाय?

जैसे-जैसे अुपवासके दिन आगे बढ़े, बा की तुलसी-पूजाका और बालकृष्णकी पूजाका समय भी बढ़ता गया। बापूजीकी हालत ज्यों-ज्यों गंभीर होती गअी, बा की पूजा अधिक लम्बी और अधिक अनन्य बनती गअी। २२ फरवरीके दिन बापू जीवन और मरणके बीच झूल रहे थे। मीराबहन मुझे चुपकेसे बाहर बरामदेमे बुलाकर ले गअीं। वहाँ बा तुलसी माताके सामने घुटने टेककर बैठी प्रार्थना कर रही थीं। अुनके मुखका भाव अितना करुण और अितना दीन था कि देखनेवालेकी आँखे डबडबा आती थीं। बा अपने ध्यानमे लीन थीं। अुनको अिस बातका कोअी पता नहीं था कि कौन अुनके पास खड़ा है या अुधरसे गुजर रहा है!

अुपवासके तेरहवे दिन यानी २२ फरवरीको बापू दस मिनटके प्रयत्नसे आधा औंस पानी भी नहीं पी सके। थककर बेहोश हो गये, और खाटमे पड गये। नाडी कमजोर पड गअी। बदन पसीनेसे तर हो गया। बोलना तो ठीक, अुनमे अिशारा तक करनेकी ताकत न रह गअी। बा प्रार्थनामे लीन थीं। बापूके कमरेमे अकेली मैं ही थी। मैंने डरते-डरते कहा : "बापूजी, क्या मोसबीका रस लेनेका समय नहीं आया?"

सात मिनट तक विचार करनेके बाद बापूने अिशारेसे मंजूरी दी। मैं फौरन ही दो औंस रस और पानी मिलाकर लाअी और बापूजीको पिलाया। चार औंस प्रवाहीके शरीरमें पहुँचते ही बापूजीके निस्तेज चेहरे पर जीवनकी किरण झलकने लगी। अितनेमें बा आ पहुँचीं। भगवान्ने अुनकी प्रार्थना सुन ली थी।

२२ फरवरी १९४४ को बा का देहान्त हुआ। किसीने कहा: "पिछले साल अिसी दिन बापू यमराजके मुँहमें पड़े हुअे थे। बा ने सावित्रीकी तरह अुन्हें छुड़ाया होगा और शर्त की होगी कि अगले साल अिसी दिन मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।"

बापूजीके अुपवासने आगाखान महलके दरवाजे खोल दिये थे। दिन भर मुलाकातियोंका तॉता लगा रहता था। लोग बापूको तो सिर्फ़ प्रणाम करके ही बाहर निकल आते। बादमें वे बा से बातें करते। बा हिम्मतके साथ दिनभर काम करतीं। लड़कों-बच्चोंको देखकर वह बहुत खुश हुअीं। वे मॉ थीं। सारी दुनियाको अपना चुकी थीं। लेकिन अिसके कारण अुनके नजदीक अपने लड़कोंका स्थान घटा नहीं था। बापूने नियम बना दिया था कि अुपवासके दिनोंमें किसी मुलाकातीको खानेपीनेके बारेमें न पूछा जाय। बा के लिअे अिस नियमका पालन बहुत कठिन था। लेकिन अुन्होंने अिसे अक्षरशः पाला।

२१ दिन पूरे हुअे। सरकारने अुपवास छोड़नेके समय सिर्फ पुत्रोंको ही पास रहनेकी अिजाज़त दी, मित्रोंको नहीं। बापूके नजदीक मित्र और पुत्रमें कभी फर्क नहीं रहा। अिसलिअे अुन्होंने पुत्रोंको आनेसे रोक दिया। दो मार्चकी शामको जब मुलाकाती लौट रहे थे, बा की ऑखें सजल हो आयी थीं। लक्ष्मीबहन खरेको और दूसरे मित्रोंको विदा देते हुअे अुन्होंने कहा: "बहन, यह आखिरकी राम-राम है।" मैंने कहा: "बा अैसा क्यों कहती हैं? हम सब जल्दी ही बाहर जानेवाले है।" बा ने अुत्तर दिया: "हॉ, तुम सब जाओगे।"

३१

अुपवासके बाद

तीन मार्च, १९४३ को बापूके अुपवास पूरे हुअे। बादमे तीन-चार रोज तक सरकारने देवदासभाअी और रामदासभाअीको मिलने आनेकी अिजाजत दी। मगर जब देखा कि बापूजीको ताकत आ रही है, और खतरेका समय निकल गया है, तो मुलाकात बन्द कर दी। लड़कोंका आना बा के लिअे 'टॉनिक' का काम करता था। जेलके दरवाजोंके बन्द होनेके साथ ही बा की शक्ति भी क्षीण होने लगी। अपनी संकल्प-शक्तिके बलपर ही बा अुपवासके दिनोंमे अितना काम कर सकी थी, और शरीरको भी टिका सकी थीं। लेकिन वही शरीर अब क्षीण होने लगा। बा सहज ही थकने लगी। अुदास भी रहने लगी। १६ मार्चको हृदयकी धड़कनका दौरा हुआ, जो करीब दो घण्टे रहा, अुसके बाद २५ मार्चको, ९ दिन बाद, फिर वही दौरा हुआ और क़रीब चार घण्टे रहा। बस, तभीसे दवाअियाँ शुरू हुअीं, और आखिरी दम तक साथ चलीं।

अुपवाससे पहले बापूजी अक्सर कहा करते थे कि ६ महीनोंमे कुछ-न-कुछ फैसला हो ही जायगा। अुपवासके बाद अुन्होंने कहना शुरू किया कि अब कम-से-कम सात साल जेलमे रहना होगा। बा को अिस चीजका बहुत धक्का लगा। अुन्होंने बार-बार कहना शुरू किया: "मुझे तो महादेवके पास ही रह जाना है न? मैं कौन सात साल जीनेवाली हूँ?" लेकिन साथ ही बा बालककी तरह सरल भी थीं। अन्दरसे आशा बिलकुल नष्ट नहीं हो गअी थी। वे कअी बार बालकृष्णकी मूर्तिके सामने अेकान्तमें प्रार्थना करती सुनी गअीं: "हे बालकृष्ण, हमे जल्दी जेलसे बाहर ले चलो!"

अेक रोज़ यों ही सिनेमाकी चर्चा चल पड़ी। अखबारमें 'भरत-मिलाप' का अिश्तिहार था। बा को रामायणमे 'भरत-मिलाप' का प्रसंग बहुत प्रिय था। मैंने कहा: "बा, आप जब दिल्ली आयेंगी, तो आपको

‘भरत-मिलाप’ दिखा लायेंगे।” बा को यह विचार अच्छा लगा। कुछ देरके लिअे वे भूल गअी कि वे जेलमें बैठी थीं और दिल्लीसे बहुत दूर थीं। कहने लगी: “लेकिन बापूजी न जायँ, तो मैं कैसे जा सकती हूँ?” मैंने कहा: “नही बा, वह तो धार्मिक खेल है। रामायणकी कहानी है। बापू खुद चाहे न जायँ, लेकिन आपको नही रोकेंगे। हम तारा, रामू, मोहन* सबको साथ ले चलेंगे।” तारा, रामू, मोहन वगैराका नाम सुनकर बा मुसकराने लगीं और ‘अच्छा’ कहकर दूसरी बातोंमें लग गअीं।

बापूके अुपवासके दिनोंमें श्री जयसुखलाल गांधी बा से मिले। अुन्होंने बताया कि अुनकी लड़की मनु, जो १९४२ की लड़ाअीसे पहले बा की देखरेखमें थी, अब नागपुर जेलमें है, और वहाँ अुसकी आँखें बहुत खराब हो रही है। अुन्होंने बा से कहा: “अगर मनु आपके साथ रहे, तो अुसकी आँखें भी सुधर जायँ और आपकी सेवाका लाभ भी अुसे मिले।” बा के मातृ-हृदयको लड़कीकी आँखोंको बिगड़नेसे बचा लेनेका विचार बहुत महत्त्वका मालूम हुआ, और अुन्होंने बापूजीसे कहा: “मुझे अेक नर्सकी जरूरत तो है ही। हम मनुको बुला ले तो कैसा हो?” बापूजीने बातको टालनेकी कुछ कोशिश की। अुन्हे डर था कि सरकार अिनकार कर देगी, और वे सरकारको अैसा कोअी मौका देना नहीं चाहते थे। लेकिन बा अपनी बात पर डटी रहीं। अुन्होंने खुद कर्नल शाह और कर्नल भंडारीसे कहा: “मुझे अपने लिअे अेक नर्सकी जरूरत है।” अिसी दरमियान बा को फिर हृदयकी धड़कनका अेक सख्त दौरा हुआ। डॉ० गिल्डरने और मैंने अेक पत्रमें अपनी डॉक्टरी राय देते हुअे लिखा कि बा को नर्सके रूपमे अेक साथीकी आवश्यकता है। सरकार चौंकी। सवाल अुठा कि मनु न आ सके, तो कौन आये? बा ने मणिबहन पटेल और प्रेमाबहन कंटकके नाम दिये। सरकारको ये क्योंकर रुचते? बंबअीकी सरकारने मध्यप्रान्तकी सरकारके साथ पत्र-व्यवहार किया और २३ मार्च ’४३को मनु आगाखान महलमे आ पहुँची। अुसी दिन हमारी

* तारा श्री देवदासभाअीकी लड़की और रामू व मोहन अुनके लड़के हैं।

अम्माजान — श्रीमती सरोजिनी नायडू — मलेरियाके , जन्तुओंके प्रतापसे रिहा हुआीं।

मार्चके अन्तमें बा को निमोनियाका हल्का-सा हमला हो गया। अप्रैलके शुरूमे अुनके पेशाबमे 'बी० कोलाअी' (B. Coli) की पुरानी तकलीफ जाग अुठी। अुचित अिलाजसे ये सब तकलीफे दूर हो गअीं।

मनुने बा की सेवामे खूब मदद की। कुछ दिनके लिअे बा की तबियत खासी अच्छी लगने लगी। खानेके समय वे खानेके कमरेमे आकर बैठती। डॉक्टर गिल्डर और मि० कटेली मांसाहारी थे। अिसलिअे वे अलग अेक टेबल पर बैठते थे। मीराबहन जमीन पर आसन बिछाकर बैठतीं। मनु, भाअी और मैं अेक दूसरी मेज़ पर बैठते। बा सबके पास जातीं, सबके खानेका ध्यान रखतीं, और बातचीत करतीं। रसोअी पीछे-वाले बरामदेमे बनती थी। बा वहाँ जाकर बैठतीं, पकानेवालेके साथ बातचीत करती और पकानेके बारेमे सूचनायें देती। मतलब यह कि अुन्होंने वहाँ अच्छी तरहसे माताका स्थान ग्रहण कर लिया था। वे सारे हिन्दुस्तानकी माँ थीं। और अिस छोटेसे परिवारकी माँ तो थीं ही। माँकी ही तरह वे सबकी सँभाल रखती थीं।

बापूजीको जैसे-जैसे ताकत आती गअी, वे अपना ज्यादा समय सरकारके साथ पत्र-व्यवहारमे लगाने लगे। बा को सिखानेका काम और दूसरे सब काम ढीले पड़ गये। बा नियमित रूपसे अपने आप अकेली बैठकर रामायण, गीताजी वगैरा पढ़ती या मनुसे सुनतीं। मनुने अुन्हें सारी वाल्मीकि-रामायण पढ सुनाअी। बादमे पूरी भागवत सुना दी। बा को भागवत अितनी प्रिय थी कि अेक बार समाप्त करके अुसे फिर सुनना शुरू किया था।

३२
खेलका शौक

अिन सब कामोंके अलावा बा खेलोंमे भी काफी रस लेने लगीं। सुबह-शाम जब हम लोग 'बैडमिण्टन' या 'टेनीकॉअिट' खेलते, वे कुर्सी पर बैठकर देखा करती और अुनमें खूब दिलचस्पी लेतीं। अगर खेलमें कोअी शैतानी या चालाकी करता, तो वे अुसे डॉटतीं। रातमें मीराबहन और डॉ० गिल्डर वगैरा कैरम खेलते थे। बा कैरमका खेल देखने भी जातीं। धीरे-धीरे अुन्होंने खुद भी कैरम खेलना शुरू किया। अुसमे अुनको अितना रस आने लगा कि रोज दोपहरको वे आधा घंटा कैरमका अभ्यास करने लगीं। मीराबहन कैरममें सबसे होशियार थीं। बा हमेशा अुनके साथ रहतीं और अिसलिअे हमेशा जीत कर आतीं। अिससे अुन्हें बहुत खुशी होती थी। अगर किसी दिन अकस्मात हार जातीं, तो अुदास हो जाती। आखिर यह तय हुआ कि कुछ भी क्यों न हो, आखिरी खेलमे बा को जिताना ही चाहिये। बा को कैरमके खेलमे रानी ले लेनेका बहुत शौक था। रानी आ जाती, तो वे हारको हार न मानतीं। कैरममे बा अितनी लीन हो जाती थी कि अपना दुःख, रोग सब भूल जातीं। आखिरी बीमारीमे जब अुनमें खुद खेलनेकी ताकत न रह गअी, तब अुनके पलंगके पास कैरम बोर्ड रखकर दूसरे लोग खेलते थे और यह अुन्हें बहुत अच्छा लगता था। अिस प्रकार मृत्युके दो-तीन दिन पहले तक वे खाट पर पड़ी-पड़ी कैरमका खेल देखती और अुसमें रस लेती थीं। मीराबहन अुनकी हमेशाकी साथिन थीं। अिसलिअे अुनकी जीतको वे अपनी जीत और अुनकी हारको अपनी हार मानती थीं। वे हम लोगोंसे आग्रह करती थीं कि हम लोगोंमेसे कोअी मीराबहनके साथ खेले, ताकि डॉ० गिल्डर और अुनके साथी अकेली मीराबहनको हरा न सकें। जब 'पिंगपॉंग' शुरू हुआ, तो बा ने अुसे भी खेलना शुरू किया। लेकिन अुससे सॉस फूलती थी, अिसलिअे वह बन्द करवा दिया गया। अुनका शरीर बूढ़ा हो गया था, लेकिन मन कअी चीज़ोंके लिअे बिलकुल ताजा था।

३३

वात्सल्य

बच्चोंके साथ खेलना और अुन्हें खिलाना-पिलाना बा को बहुत अच्छा लगता था। आश्रममें बा के पास दो-चार लड़के-बच्चे रहते ही थे। जेलमें यह सब कहाँसे आते! अेक रोज बकरीने बच्चे दिये। मनु अेक बच्चेको बा के पास अुठा लाअी। बा अुसे गोदमें लेकर प्यार करने लगीं। अुसको खिलाती रहीं। वे मानो यह भूल ही गअीं कि वह बकरीका बच्चा था! वे अुससे बातें करने लगीं: "भाअी, तू हर रोज मेरे साथ खेलने आना।" कुछ दिनों तक मनु हर रोज अुसे बा के पास लाती रही। अेक दिन अुसने बा के कपड़े बिगाड़ दिये। तबसे अुसका आना बन्द हुआ।

३४

बा का दुशाला

जब बा के साथ मैं बिडला हाअुसमें गिरफ्तार हुअी, मेरे पास कोअी गरम कपडा न था। मैं तो चन्द रोजके लिअे बबअी आअी थी। गर्मीके मौसिममें गरम कपड़े कौन साथ रखता है? बा ने अपना सामान बाँधते समय अेक दुशाला वापस भेजनेके खयालसे अलग निकालकर रख दिया था। अुन्हें अुसको अपने साथ लेनेकी जरूरत नहीं मालूम हुअी। मुझे खयाल आया कि न जाने जेलमें कितने दिन लग जायें। शायद कहीं गरम कपड़ेकी जरूरत पड ही जाय, अिसलिअे बा से पूछकर वह दुशाला मैंने साथमें रख लिया। जेलमें वह मेरे बहुत ही काम आया। पूनामें खासी ठण्ड थी। सरकारका हुक्म था कि बाहरकी दुनियाके साथ हमारा कोअी सपर्क न रहे। अैसी दशामें वह दुशाला न होता, तो मुझे बहुत तकलीफ होती। बापूके अुपवासके दिनोंमें माताजी (मेरी माँ) वहाँ आअी थीं। बा ने सोचा कि कहीं सुशीला गरम कपडे मँगवाना भूल

न जाय, अिसलिअे अुन्होंने खुद ही माताजीसे कहा: "सुशीलाके पास शाल नहीं है। मेरा अिस्तेमाल करती है। अुसके लिअे शाल वगैरा भेज दे।" माताजीने सोचा होगा कि बा को अपने दुशालेकी ज़रूरत है, अिसलिअे वह अुसी रोज अपनी शाल वहाँ मेरे लिअे छोड़ गअीं। दूसरे रोज बा ने अुसे देखा और पूछने लगीं: "यह किसकी है?" मैंने कहा: "माताजी मेरे लिअे छोड़ गअी है।" बा अिसे सह न सकीं। बोलीं: "माताजीका दुशाला अुन्हें लौटा देना। तेरे पास तो मेरा है न?" मैंने कहा: "बा, आपको अुसकी ज़रूरत पड़ेगी न?" अिस पर बा बोलीं: "नहीं, नहीं, बहन मुझे जरूरत नहीं है। मैंने माताजीसे कह दिया है कि वे तेरे लिअे दुशाला और गरम कपड़े भेज दें। जब वे आ जायँ, तो तू मेरा दुशाला भले मुझे लौटा देना," और अुन्होंने आग्रहके साथ माताजीका दुशाला वापस करवाया। बा के दुशालेको मैंने सँभालकर अुनकी आलमारीमें रख दिया। बा की मृत्युके बाद देवदासभाअीने बा की स्मृतिके रूपमें वह दुशाला मुझे साग्रह वापस दिया।

दीवालीके दूसरे दिन बहुतसे प्रान्तोंमें नया साल मनाया जाता है। अिस रोज लोग अेक दूसरेको भेंट वगैरा भी देते है। जेलमें भी पहली दीवालीके बाद नये सालके दिन श्रीमती नायडूने बा को अेक साड़ी भेंट की। बा ने अुसे बखुशी पहना। बादमें बा मेरे लिअे अपनी आलमारीसे अेक साड़ी ढूँढ़ लाअीं। राजकुमारी अमृतकुँवरने अपने हाथकते सूतकी अेक साडी बुनवाकर बा को दी थी। अुसकी किनार नीले रेशमकी थी। बा वही साड़ी लाअीं और मुझसे कहने लगीं: "सुशीला, अिसे तू पहनना। नअी नहीं है बहन, अेक दो बार मेरी पहनी हुअी है। यहाँ मेरे पास नअी साड़ी नहीं है।" मैंने कहा: "बा, नअीकी तो आवश्यकता ही नहीं। आपके पहननेसे अिसकी कीमत घटी नहीं, बढ़ी है। लेकिन आपके पास यहाँ साड़ियाँ कम है, अिसलिअे आप अिसे रखिये। बाहर चलने पर दीजियेगा।" मगर बा बाहर न आअीं। अुनकी मृत्युके बाद देवदासभाअीने मुझसे अुनकी अेक साड़ी ले लेनेको कहा। मैंने वही साड़ी अुठा ली। बा की वह साड़ी और अुनका वह दुशाला, ये दो आज मेरी क़ीमतीसे कीमती चीज़ें है।

३५

खिलाने और खानेका शौक

बा बहुत अच्छा खाना पकाना जानती थीं। लेकिन बापूजीने जबसे अस्वादव्रत दाखिल किया, बा की यह कला निकम्मी-सी हो गअी थी। तो भी कभी-कभी वे कुछ बना या बनवा लेती थीं। अुन्हें अच्छा खाना खाने और खिलानेका शौक था। जेलमें वे डॉ० गिल्डर वगैराके नाश्तेके लिअे अकसर मनुसे कुछ-न-कुछ तैयार करवातीं। अेक रोज़ अुन्होंने 'पूरण पोली' बनवाअी। कहने लगीं: "आज तो मैं भी खाअूँगी। बापूजीसे पूछ आ, वे खायेंगे क्या?" भारी चीज़के खानेसे बा को हृदयकी धड़कनका दौरा हो आता था। मनु बापूजीसे पूछने गअी, तो बापूने जवाब दिया: "बा न खाये, तो मैं खाअूँ।" बा को निश्चय करनेमें अेक पलकी भी देर न लगी। बोलीं: "तो मैं नहीं खाअूँगी।" फिर पास बैठकर अुन्होंने बापूजीके लिअे और दूसरे सबके लिअे 'पूरण पोली' बनवाअी, सबको खिलाअी, और खुदने चखी तक नहीं!

अेक दिन बा को फिर हृदयकी धड़कनका हमला हुआ। बड़ी देर तक रहा। दूसरे दिन अुन्होंने मनुसे कहा कि वह अुनके लिअे घीमें बैंगन पका दे। मनु मुझसे पूछने आअी। मैंने मना किया। कहा: "किसी तरह अिसे टाल दो। अभी कल ही तो दौरा हुआ था। अैसी चीज खाकर कहीं फिर बीमार न हो जायँ!" मनुने जाकर बा से कहा: "सुशीला बहनने बैंगनका शाक बनानेसे मना किया है।" बा चिढ़ गअीं और बापूजीसे शिकायत की। बापू काममें थे। धीरजके साथ समझानेका समय न था। अिसलिअे अुन्होंने कह दिया: "तुम्हें अपनी तबियतके खातिर अितना संयम पालना ही चाहिये।" लेकिन बा यों थोड़े ही समझनेवाली थीं। वे नाराज हो गअीं। बोलीं: "बस मुझे कुछ खाना ही नहीं है।" मैंने और मनुने बहुत मिन्नत की। कहा: "बा, आपकी तबियतके लिअे ही अिनकार करना पड़ा। नहीं तो आप

जो कहें, सो बना दें।" लेकिन बा यों माननेवाली न थीं। "मुझे कुछ बनवाना ही नहीं है," अुन्होंने कहा, और फिर तो क़रीब दस-पन्द्रह दिन तक वे सिर्फ दूध, फल और शहदका पानी लेती रहीं। मुझे और मनुको बहुत दुःख हुआ। बापूजीने हमे समझाया: "चिन्ता न करो। अिससे बा को कोअी नुक़सान नही होगा, फ़ायदा ही होगा।" सचमुच अिस अरसेमें बा की तबियत बहुत अच्छी रही। हम लोग बा को समझानेका प्रयत्न तो करते ही रहते थे। धीरे-धीरे बा बैंगनवाली बात भूल गअीं और मामूली खुराक लेने लगीं।

३६

बा की जिद

अन्तिम बीमारीमे, मृत्युसे दो रोज पहले, बा को खयाल आया कि अुन्हे रेंडीका तेल लेना चाहिये। अुस समय वे अितनी कमज़ोर हो गअी थीं कि मुझे और डॉ० गिल्डरको लगा कि जुलाब देना ठीक न होगा। सुबह ही बा ने मुझसे रेंडीका तेल माँगा। मैंने पहले तो समझानेकी कोशिश की। मगर जब बा नहीं मानीं, तो अुन्हे टालकर चली गअी। थोड़ी देरमे बापूजी आये। बा ने अुनसे भी रेंडीका तेल माँगा। बापूजीने भी अुन्हे समझाया कि अैसी हालतमे रेंडीका तेल लेना ठीक नही, और कहा: "बीमारको कभी अपनी दवा खुद न करनी चाहिये। और, मैं तो तुझसे कहता हूँ कि अब तू दवा छोड़ दे, सब भूल जा, मुझे भी भूल जा। राममे ही मनको पिरो दे।" मुझसे कह दिया: "बा समझ गअी है। अब रेंडीका तेल नहीं माँगेगी।" मगर बा अितनी आसानीसे अपनी जिद छोड़नेवाली नहीं थीं। कुछ समय बाद डॉ० गिल्डर आये। बा ने अुनसे फिर रेंडीका तेल माँगा। अुन्होंने भी अिनकार किया। बा को बहुत दुःख हुआ। दुपहरमे जयसुखलालभाअी मिलने आये, तो बा अुनसे शिकायत करने लगीं: "ये लोग अपने कानून चलाते हैं। मुझे रेंडीका तेल भी नहीं देते!"

मै सुबहके बादसे बा के पास गअी नहीं थी। कहीं फिर रेडीका तेल मॉग बैठे तो! दो बजेके करीब गअी। तब तर्जनी दिखा-दिखा कर बा मुझसे कहने लगी: “तूने मुझे रेंडीका तेल नहीं दिया न! अब तो मैं कुछ भी नही लूँगी। तेरी कोअी भी दवा नहीं लूँगी। मुझ पर भी अस्पतालका कानून चलाती है क्यों?” अिस बालहठका क्या अुपाय करना, यह अेक समस्या ही थी। अुनके दिलको दुखाना भी अखरता था। कहा: “बा, मुझे तो पता चला था कि आप अब समझ गअी हैं कि रेंडीका तेल नहीं लिया जा सकता।” “नहीं, नहीं, मुझे तो वह लेना ही है,” बा की आवाजमे और अुनके चेहरे पर अेक तरहकी दीनता दीखती थी। मैंने सोचा, अन्तिम समयमे अिन्हे क्यों आघात पहुँचाया जाय? और कहा: “आप आग्रह छोड़ ही न सकेंगी, तो मै लाचार होकर आपको रेडीका तेल दूँगी।” बा ने कहा: “तो ला।” किसीने युक्ति सुझाअी कि ‘लिक्विड पैराफीन’ मे थोड़ा रेडीका तेल डालकर दे दो। अैसा ही किया गया। बा अुसे पीकर शान्त हो गअीं।

३७

‘ पीड़ पराअी जाणे रे ’

अिस बारका जेल-जीवन अनोखा था। सरकार अितनी डर गअी थी कि मानो निहत्थे स्त्री-पुरुष अुसे मिटा देंगे और कहीं जेलके अन्दर रहनेवालोंका बाहरवालोंके साथ किसी भी तरहका कोअी सपर्क कायम हो गया, तो शायद आसमान ही फट पडेगा! अगस्त ’४२की ‘पकड़-धकड़’ के दिनोंमे सरकारका हुक्म था कि कैदियोंको न तो अखबार दिये जायँ, न पत्र लिखनेकी अिजाजत दी जाय और न किसीसे मिलने दिया जाय। सरोजिनी देवी अपनी लड़कीको बीमार छोडकर आअी थीं। अुन्होंने सरकारको लिखा: “मेरी लडकीके समाचार तो मुझे भेजे जायँगे न?” बा को भी हर रोज अपने लड़कों-बच्चोंकी चिन्ता बनी रहती। मीराबहनके पास कपड़े कम थे। अुन्होंने आअी० जी० पी० से कहा: “मेरे कपड़े

तो मँगवा देंगे न?" आखिर कोअी तीन हफ़्ते बाद आअी०जी०पी०ने खबर दी कि घरेलू मामलोंके बारेमें सगे रिश्तेदारोंको पत्र लिखना हो, तो लिख सकते हैं। लिखकर पत्र सरकारके हवाले करने होंगे। वह अुन्हें आगे भेज देगी। रिश्तेदार भी लिखना चाहें, तो पत्र सरकारके पास भेजें। सरकारको ठीक मालूम हुआ, तो कैदियोंको पत्र दिये जायँगे। कपड़े वग़ैरा मँगानेके बारेमे भी अैसा ही नियम था। सरोजिनी देवीने अपने घर पत्र लिखा। मीराबहनने कुछ मित्रोंको पत्र लिखनेकी अिजाजत माँगी। अुनके घरके लोग तो समुद्र पार थे। अुन सबको छोड़कर वे यहाँ आअी थीं। यहाँ मित्र ही अुनके सगे-सम्बन्धी थे। बापूजीने लिखा: "मैंने तो आश्रम-जीवन अपनाया है। मेरे लिअे घरका कौन और बाहरका कौन? महादेवभाअीके लड़कोंको और पत्नीको न लिख सकूँ, तो और किसे लिखूँ? फिर, मेरे कोअी घरेलू मामले तो है ही नहीं। राजनीतिक विषयों पर न लिखूँ, लेकिन अगर दूसरे सार्वजनिक कार्योंके बारेमें भी न लिख सकूँ, तो पत्र लिखनेकी अिजाज़त मेरे लिअे कोअी मतलब नहीं रखती।"

सरोजिनी देवीने और बा ने मुझसे पूछा: "तूने माताजीको लिखा?" बापूजीने मुझसे कहा था: "मेरे पत्रका अुत्तर आने दे, फिर देखेंगे कि तुझे क्या करना चाहिये?" बापूजीके पत्रके अुत्तरमें सरकारने अुन्हें रिश्तेदारोंके अलावा आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी अिजाज़त दे दी। लेकिन घरेलू बातोंके सिवा दूसरी बातोंके बारेमें लिखनेकी मनाही थी। अिस पर बापूजीने किसीको भी पत्र न लिखनेका निश्चय किया और सरकारको अपना निश्चय लिख भेजा। अिस बीच भाअी (प्यारेलालजी) भी वहाँ आ गये थे। बापूने हमसे कहा: "मुझे लगता है कि अिन शर्तों पर हममेंसे किसीको भी पत्र नहीं लिखना चाहिये।" सरकारकी ओरसे हमे यह कहा गया था कि जिन्हें पत्र लिखना चाहें, अुनके नाम और पते दे दें। भाअीने और मैंने जवाबमें लिख भेजा कि "जब तक सरकार गांधीजीके लिअे पत्र लिखना शक्य नहीं करती, तब तक हम कैसे लिख सकते है?" मुझसे कहा गया: "बापू तो महात्मा हैं, तुम्हें तो माँ को पत्र लिखना ही चाहिये। अिस तरह पत्र न लिखनेसे

तुम कुछ महात्मा नहीं बन जाओगी।" मैंने जवाब दिया: "महात्मा बननेके लिअे मैंने अैसा नहीं किया।" मैंने बापूजीसे कहा: "बापूजी, मैंने तो आपकी सलाहसे सरकारको लिखा है। तब फिर मुझे अिस तरहकी बातें क्यों सुनाओ जाती है?" बापूजीने अुत्तर दिया: "मैंने तो तुझे तेरा धर्म बताया है। बा, तू, प्यारेलाल, मुझमें समा जाते हो। मैं न लिखूं, तो तुम कैसे लिख सकते हो? लेकिन वैसा करनेकी शक्ति न हो, या स्वतंत्र रीतिसे विचार करने पर तुझे लगे कि धर्म तो अिससे अुलटा ही है, तो तू सरकारको लिखा अपना पत्र लौटा ले और घर पत्र लिखना शुरू कर दे।" मुझे अैसा करनेकी कोअी आवश्यकता नहीं जान पड़ी।

कुछ दिनों बाद बा ने पत्र लिखना शुरू कर दिया। जेलमें किसीसे मिलना भी नहीं होता था, और पत्र भी न मिलें, तो बा को बहुत कष्ट होता था। तिस पर वे खुद पत्र न लिखें, तो अुन्हें पत्र मिलें कैसे? अिस विचारसे बा ने पत्र लिखना शुरू किया। मुझे भी समझाने लगीं: "बापूजी तो साधु है। अुन्होंने तो सब माया-ममता छोड़ दी है। मगर हम लोगोंने तो अैसा नहीं किया। तुझे भी मॉको पत्र लिखना चाहिये।" बापूजीसे भी कहा: "सुशीलासे कहिये न, अपनी मॉको पत्र लिखे।" बापू बोले: "मैंने अुसे कब रोका है?" बा अेक मॉ थीं। वे समझती थीं कि जिस तरह अुनके बच्चोंके पत्र न आनेसे वे व्याकुल हो अुठती है अुसी तरह माताजी भी हमारे पत्र न पाकर दुःखी होती होंगी।

३८

जेलमें बापूजीका दूसरा जन्मदिन

२ अक्तूबर, १९४३ को फिर बापूजीका जन्मदिन आया। बा की तबियत नरम थी। तिस पर अिस साल हमारी 'अम्माजान' नहीं थीं। सारी तैयारी हमीं लोगोंने की। बा ने अपने हाथों क़ैदियोंको खाना बाँटा और भरसक काममें मदद की। बा के पास बापूजीके सूतकी अेक साड़ी थी। सेवाग्राम छोड़ते समय बा ने वह मनुको सौंपी थी। "लोग कहते है, आश्रम ज़ब्त हो जानेवाला है। यह साडी सँभाल कर रखना। कहीं यह खो न जाय। मेरे मरने पर मुझे अिसी साड़ीमें जलाना," अुन्होंने कहा था। जेलमें आकर बा ने अुस साड़ीकी तलाश करवाअी। मगर कुछ पता न चला। जब मनु आगाखान महलमें पहुँची, तो अुसने साड़ीका ठिकाना बताया और बा ने साड़ी मँगवाअी। अबकी बापूजीके जन्मदिन पर बा ने वही साड़ी पहनी।

३९

सहृदयता

अक्तूबरके अन्तमें मेरी भाभी शकुन्तलाके शस्त्रक्रिया द्वारा प्रसूति कराअी गअी और अुन्हें लड़की हुअी। नवंबरके शुरूमें अेक हफ़्तेकी बच्चीको छोड़कर वे चल बसीं। जेलके ढंग अितने निराले होते हैं कि ऑपरेशनका और मरनेका तार अेक ही साथ मिला। वह भी मृत्युके आठ-दस दिन बाद! अितनेमें पत्र भी आ गया। बीमारीमें वे सारा समय मुझे पुकारती रही थीं। माताजीने और मेरे भाअीने सरकारसे मुझे पैरोल पर छोड़नेकी अर्ज की थी। लेकिन चूँकि मैं गांधीजीके साथ थी, सरकारने मुझे पैरोल पर बाहर भेजनेसे अिनकार किया। बा का

कोमल हृदय द्रवित हो अुठा। बापूजीसे कहने लगीं: "सुशीलाको मॉंके पास जाना ही चाहिये।"

बापू हँस दिये: "सुशीला जायेगी, तो तेरी सेवा कौन करेगा?"

"मैं जानती हूँ कि मुझे तकलीफ होगी; मगर मैं अितनी स्वार्थी नहीं हूँ कि अुसकी मॉंके दुःखको न समझ सकूं।" फिर मुझसे बोलीं: "सुशीला, तुझे माताजीको और मोहनलालको पत्र लिखना चाहिये।"

मैंने कहा: "बा, मैं सरकारको अेक बार लिख चुकी हूँ कि पत्र नहीं लिखूँगी। अब मैं कैसे लिख सकती हूँ?"

बा बापूजीके पास पहुँची: "सुशीलाको समझाअिये कि सरकारको लिख चुकी है तो क्या हुआ? अुस समय थोड़े ही किसीको कल्पना थी कि अैसी आपत्ति आयेगी? भाअी-बहन दोनोंको घर पत्र लिखना ही चाहिये।"

बापूजीने हमे बुलाकर कहा: "पत्र न लिखनेकी सलाह तो मेरी ही थी न? मुझे लगता है कि विशेष परिस्थितिमे पत्र लिखनेमे हर्ज नहीं है। माताजीकी और मोहनलालकी शान्तिके लिअे तुम्हे घर पत्र लिखना चाहिये।"

अुसी रातको हम लोगोंने घर पत्र लिखे। मेरे भाअीने जवाबमे लिखा कि माताजी खुद बीमार रहती हैं। अैसी हालतमे शकुन्तलाकी आठ दिनकी बच्चीको कैसे सँभालना, यह अेक सवाल है। बापूजीने बा से कहा: "बेबीको यहॉं बुला लें। तू सँभाल लेगी न?" बा ने कहा: "मैं क्या सँभालूँगी? मुझसे क्या होगा? मैं तो खुद बीमार हूँ। लेकिन सरकार अुसे आने दे, तो मुझसे जो बन पड़ेगा, करूँगी।" बापूजीने सरकारको पत्र लिखा: "घरमे अुस बच्चीको सँभालने लायक कोअी नहीं है। या तो सुशीलाको पैरोल पर जाने दिया जाय, ताकि वह बच्चीके लिअे मुनासिब बन्दोबस्त कर सके, या बच्चीको यहॉं भेज दिया जाय। सुशीला डॉक्टर है, लेकिन साथ ही हमारी लड़की भी है। कुछ दिनके लिअे भी अुसके जानेसे हमे तकलीफ तो होगी ही, अिसलिअे अगर बच्चीको ही यहाँ भेज दिया जाय, तो ज़्यादा अच्छा हो। अैसा न हो, तो भले हमें तकलीफ सहनी पड़े, मगर सरकार सुशीलाको पैरोल पर

जाने दे।" सरकारका जवाब आया: "दोनों दरख्वास्तोंमेंसे अेक भी मंजूर नहीं हो सकती।"

अिसी समय मध्यप्रान्तकी सरकारने सब नजरबन्द स्त्री-कैदियोंको छोड़ देनेका निश्चय किया। मनु मध्यप्रान्त सरकारकी कैदिन थी, सो हुक्म आया कि मनु चाहे तो छूट सकती है। मनुने न छूटनेका निश्चय किया: "मैं तो बा की सेवाके लिअे आअी हूँ। सेवा अधूरी छोड़कर कैसे जा सकती हूँ?" बा खुश हुअीं। देवदासभाअीको पत्र लिखवाया। अुसमें भी अिसका जिक्र किया। देवदासभाअीके यहाँ किसीने समझा कि सरकारने सुशीलाको छोड़ा था, मगर अुसने छूटनेसे अिनकार किया। अुनका पत्र आया: "सुशीलाको अैसा नहीं करना चाहिये। अुसकी माँको अुसकी मददकी बहुत आवश्यकता है।" बा ने सोचा कि अुन्हींके पत्रसे यह गलत-फहमी पैदा हुअी है। अुन्हें अिसे दूर करना चाहिये। कहीं माताजी यह न सोच ले कि अुनकी तकलीफके दिनोंमें अुनकी लड़की अुनकी सेवा करनेसे अिनकार करती है। यह ठीक न होगा। बा तुरन्त ही बापूजीके पास गअीं। तार लिखवाया: "सुशीलाको नहीं, मनुको छोड़नेकी बात थी।" मैंने कहा: "बा, जाने दीजिये न। और अगर लिखना ही है, तो पत्र लिख डालिये।" मगर बा न मानीं। माँकी भावनाको वे अच्छी तरह समझती थीं। माँके प्रति बच्चोंके धर्मको भी वे बखूबी जानती थीं।

४०

अन्तिम शय्या

चलते-फिरते बा की साँस तो हमेशा फूल ही जाया करती थी। '४३ के नवम्बरमे अुनकी यह शिकायत बहुत बढ़ गअी। कैरम खेलते-खेलते भी अुनका दम फूलने लगा। डॉ० गिल्डर कहने लगे कि हमे कैरम बन्द कर देना चाहिये; लेकिन बा को कैरमसे अितनी दिलचस्पी हो गअी थी कि अैसा करना ठीक न मालूम हुआ। अेक दिन बा अेनीमा लेकर निकलीं, तो अुनका दिल बहुत घबराने लगा। मैंने जाकर देखा, तो अुनके होंठ नीलेसे हो रहे थे। नाड़ी बहुत तेज थी। मैंने दवा दी। थोड़ी देरमे तबियत कुछ सुधरी, लेकिन पूरी तरह सँभल नही पाअी। दो-तीन रोज़ बुखार आया। तबसे जो खाट पकड़ी, तो वह छूटी ही नहीं। घूमना-फिरना बन्द हो गया। अुनके लिअे पहियेदार कुर्सी मँगवाअी गअी। अुसमें बैठाकर हम लोग बा को कुछ देर बरामदेमें घुमा लाते थे।

बीमारीमे भी बा अेकादशी, सक्रान्ति, वगैराको न भूलीं। तिल सक्रान्तिके दिन कहने लगीं: "तिल मँगवाओ और अुसके लड्डू बनाकर सब क़ैदियोंको दो।" बापूजीने टोका: "यह ठीक नहीं है। यह कौन हमारा घर है? अैसे काम जेलमे नही, घर पर ही किये जा सकते हैं।" "लेकिन मुझे कौन अब घर जाना है?" बा ने कहा। सो दूसरे दिन तिल मँगवाकर लड्डू बनाये गये। बा को पहियेदार कुर्सीमे बिठाकर बाहर ले गये। अुन्होंने अपने हाथों सबको तिल दिये।

दिसबरमे हालत और बिगड़ी। साँसके कारण लेटना कठिन हो गया। 'रेस्ट बेड' मँगवाया। कुछ दिनोंमे हालत और भी ज़्यादा खराब हुअी। अेक छोटी-सी मेज बनवाअी, जिस पर सिर रखकर बा सो जाया करती थीं। अपने हाथोंमे सिर रखकर अुस मेज पर पड़ी हुअी बा का वह चित्र बहुत ही करुण था। बा की मृत्युके बाद बापूजीने वह मेज़ अपने पास रखी। तबसे वह सब जगह बापूजीके साथ घूमती है। बापू खानेके

वक़्त अुसका अिस्तेमाल करते हैं। बा भोजनके समय हमेशा बापूजीके पास आकर बैठा करती थीं। अब बा की जगह अुनकी मेज़ रहती है।

हालत और खराब हुअी। 'ऑक्सीजन' मँगाकर रखा। पहले तो बा नलीको जल्दी ही नाकसे हटा लेती थीं, मगर बादमें तो खुद माँगकर 'ऑक्सीजन' लेने लगी। मैंने और डॉक्टर गिल्डरने सरकारको पत्र लिखा कि डॉ० जीवराज मेहताको और डॉ० विधानचन्द्र रायको सलाहके लिअे भेजा जाय। डॉ० जीवराज तो पूनामें ही थे। अेक दिन शामको चन्द मिनटोंके लिअे वे लाये गये। अुस वक़्त बापूजीको बा के पाससे हटा दिया गया था। सिर्फ़ डॉ० गिल्डरके साथ मैं हाजिर थी। डॉ० विधानचन्द्र रायको नहीं भेजा गया। दुबारा याद दिलवायी, मगर कोअी जवाब नहीं मिला।

जैसे-जैसे बीमारी बढ़ी, नर्सिंगका—तीमारदारीका—काम भी बढ़ा। दूसरी नर्सोंके लिअे लिखा गया, तो सरकारकी तरफसे अेक आया भेजी गअी। वह अेक हफ़्तेके अन्दर ही भाग गअी। अिसके आधार पर बा की मृत्युके बाद बड़ी धारासभामें यह कहा गया था कि बा की सेवाके लिअे तालीमयाफ़्ता नर्सें रखी गअी थीं। फिरसे नर्सोंकी माँग की गअी, तब सरकारने बाहरसे किसी रिश्तेदारको बुला लेनेके लिअे कहा। बा ने कनु गांधी और प्रभावतीबहनके नाम दिये। लम्बे पत्र-व्यवहारके फलस्वरूप, पहली माँगके हफ्तों बाद, सरकारने १२ जनवरीके दिन प्रभावतीबहनको भेजा और पहली फरवरीको कनुको आने दिया।

बापूजीने सरकारको लिखा था कि बा को और अुनके साथ रहनेवाले दूसरोंको मुलाक़ातें मिलनी चाहियें। पहले तो अुस पत्रका कोअी असर न हुआ, मगर बा की बीमारी बढ़ने पर सरकारने अुनके दो लड़कोंको—रामदास गांधी और देवदास गांधीको—तार करके बुलाया। बा अुन्हें मिलकर बहुत खुश हुअी। हमें अैसा लगा कि अगर बा को हर हफ्ते कोअी मिलने आ जाया करे, तो संभव है, अुनको फायदा हो। जेल अुनकी बीमारीका अेक बड़ा कारण था। वे अनेक बार जेल गअी थीं। लेकिन अिस बारकी यह अनिश्चित समयकी नज़रबन्दी अुनको बहुत खटकती थी। फिर, दूसरे जेलोंमें अुनके साथ बहुत-सी बहनें रहा करती

थीं। लोग समय-समय पर मिलने भी आते थे। अिससे वे खुश रहती थीं। अिस बार यह सब कुछ न था। तिस पर सबसे बड़ा बोझ अबकी अुनके मन पर अिस बातका था कि सरकारने अिस बार बापूजीको और अुनके साथ दूसरोंको बिना कारण पकड़ा है। बा के लड़कोंके लिअे हर हफ्ते वहाँ आना मुश्किल था। अिसलिअे दूसरे रिश्तेदारोंको भी आनेकी अिजाज़त मिली। हुक्म आया कि मुलाक़ातके वक़्त बा के पास बापूजीके सिवा और कोअी नहीं रह सकेगा। लेकिन बीमारीकी हालतमें नर्सके बिना काम कैसे चले? आखिर अेक नर्सको वहाँ हाज़िर रहनेकी अिजाज़त मिली। मगर जैसे-जैसे बीमारी आगे बढ़ी, अेक नर्ससे भी काम चलाना कठिन हो गया। बापूजीने फिर जेलके अफसरोंसे शिकायत की। फलतः हुक्म आया कि जेल सुपरिण्टेण्डेण्टको जितनी नर्सोंकी ज़रूरत मालूम हो, अुतनी को रहने दे।

दिसम्बरमें ही बा ने किसी वैद्यको बुलानेकी माँग की थी और नैसर्गिक अुपचारक डॉ० दीनशा मेहताको भी बुलवाया था। मगर सरकारको अेक दफा कहनेसे काम थोड़े ही हो सकता है? बापूजीको फिर लम्बा पत्र-व्यवहार करना पड़ा और सरकारी अफसरोंसे यहाँ तक कहना पड़ा कि "अपनी पत्नीके अिलाजके लिअे मैं आवश्यक प्रबन्ध न कर सकूँ, तो कृपा कर आप लोग मुझे किसी दूसरे जेलमें ले जायँ, जिससे मुझे अपनी पत्नीकी वेदनाका मूक साक्षी न बनना पड़े।"

आखिर ५ फरवरी, १९४४ को सरकारने डॉ० दीनशा मेहताको आने दिया। जबानी हुक्म सुनाया गया कि जब वे आवें, तब दो डॉक्टरोंके सिवा बा के पास कोअी न रहे। बापूको बहुत दुःख हुआ। जिस समय यह हुक्म सुनाया गया, बापू स्नानको जा रहे थे। आम तौर पर मालिश और स्नानके समय बापू आराम करते थे, सो भी जाते थे। मगर अुस दिन अुस हुक्मको सुननेके बाद आराम करना असंभव हो गया। स्नानके टबमें पड़े-पड़े अुन्होंने प्यारेलालजीसे सरकारके नाम पत्र लिखवाया। लिखवाते समय अुनके हाथ और होंठ काँप रहे थे: "मृत्युशय्या पर पड़ी स्त्रीके बारेमें अिस तरहकी शर्तें लगाना शोभास्पद नहीं है। अुसको पाखाने या पेशाबकी हाजत हो, तो क्या महज़ अिसलिअे कि डॉ० दीनशा मेहता वहाँ हैं, नर्सें अुसके पास नहीं जा सकेंगी? मुझे डॉक्टरसे पूछना

हो कि मेरी पत्नीकी तबियत कैसी है, तो मैं किसी दूसरेके मारफत पुछवाअूँ ? यह कैसी बात है ? अिस तरह बार-बार मुझे दुःखी करनेके बदले सरकार मुझको अेकबारगी यहाँसे हटा दे तो अच्छा हो। फिर न मेरी पत्नी मुझसे कोअी आशा रखेगी, और न मुझे ही अुसकी वेदनाका मूक साक्षी बनना पड़ेगा ?" दोपहरको जवाब आया : "हुक्मको समझनेमें आपकी कुछ गलती हुअी है। नर्सें रह सकती हैं, और आपको भी डॉक्टरसे कुछ पूछना हो, तो पूछ सकते हैं।" अिसलिअे बापूजीके अुस पत्रको आगे भेजनेकी आवश्यकता नहीं रही।

डॉ० दीनशाको दिनमें अेक ही बार आनेकी अिजाज़त मिली थी। बा चाहती थीं कि वे अेकसे अधिक बार आवें। अिसके लिअे बापूजीको फिर पत्र-व्यवहार करना पड़ा। आखिर अिजाजत मिल गअी।

अिधर जनवरीसे ही बा ने फिर वैद्यका अिलाज करवानेकी माँगको जोरोंसे दोहराना शुरू किया था। बापूजी, कर्नल भण्डारी, कर्नल शाह, हमारे जेलके सुपरिण्टेण्डेण्ट या जो भी कोअी आता, अुससे वे अिसीकी चर्चा करतीं। फ़रवरीके पहले हफ्तेमे बा की स्थिति और अधिक चिन्ता-जनक हो गअी। बापूजीने भी फिरसे जेलके अफ़सरोंको आग्रहके साथ कहा कि वे वैद्यको बुला दें। वे लोग कहने लगे : "हमारे हाथमें नहीं है। बंबअी सरकारसे फोन पर पूछते है।" बंबअी सरकारने अुत्तर दिया : "बात हमारे हाथकी भी नहीं है। हम दिल्ली सरकारको फोन करते है।" अिस तरह दिन बीतने लगे। आखिर ११ फ़रवरीको बापूजीने अिस बारेमे सरकारको अेक कड़ा पत्र लिखा, लेकिन अुस पत्रके डाकमें जानेसे पहले खबर मिल गअी कि दिल्ली सरकारने डॉक्टर, हकीम, जिस किसीको भी बुलाना हो, अुसे बुलानेकी अिजाज़त देने न देनेकी बात जेलके अफसरों पर छोड़ दी है। बापूजीने तुरंत पूनाके किसी वैद्यको बुलानेके लिअे कहा। शाम तक जोगी नामके अेक वैद्य आ गये। वे कुछ दवा दे गये। अुनकी सूचना थी कि अुनकी दवाके साथ दूसरी कोअी दवा न दी जाय।

दूसरे दिन लाहौरके वैद्यराज पंडित शिवशर्माजी आ पहुँचे, और अुनकी दवा शुरू हुअी। रात बा को कुछ बेचैनी-सी होने लगी। वैद्यजीकी दवाके साथ दूसरी कोअी चीज़ नही दी जा सकती थी, अिसलिअे सुपरिण्टेण्डेण्टसे

कहा गया कि वे शर्माजीको खबर कर दें। अुन्होंने फोन पर वैद्यजीको खबर दी, लेकिन बिना देखे वैद्यजी बेचारे क्या सलाह देते? अुन्होंने मालिश वगैरा करनेको कहा। सो सब हम कर ही रहे थे। लेकिन अुससे कोअी फ़ायदा न था। बा क़रीब-करीब सारी रात जागी।

जिन दिनों बीमारी कुछ कम थी, तब नींद न आनेकी हालतमें बा मेरे या मनुके पास आकर सो जाया करती थीं। अुस परसे वे अुस रात जो भी कोअी अुनके पास जाता, अुससे कहतीं: "मुझे अपने कमरेमें ले चलो। मुझे मेरी खाट पर ले चलो।" अुन्होंने मुझसे, भाअीसे, बापूजीसे, डॉ० गिल्डरसे यानी अेक-अेक करके सबसे यही बात कही। लेकिन सर्दीमें बा को अुनकी खटियासे हटाना किसीको मुनासिब न मालूम हुआ। आखिर थककर सुबह पाँच बजेके करीब वे सो गअीं।

आयुर्वेदकी दवासे बा को चिढ़ हो गअी। वे डॉ० गिल्डरसे कहने लगीं: "अब मुझे वैद्यकी दवा न देना। अपनी ही दवा देना।" हम सबने समझाया: "बा, वैद्यजीकी दवा शुरू की है, तो दो-चार दिन अुसकी आजमाअिश तो करनी चाहिये न?" वैद्यजीने भी फोन पर बा से दवा लेनेकी प्रार्थना की। आखिर बा मान गअीं। अुन्होंने वैद्यजीकी दवा चालू रखी।

दूसरे दिन बा की तबियत अितनी अच्छी मालूम हुअी कि शामको जब बापूजी घूमने गये, बा अपनी पहियेदार कुर्सीमें बैठकर सारे बरामदेमें घूमीं, और फिर 'बालकृष्ण' के पास पहुँचीं। बापूजीने नीचेसे देखा, तो अूपर आ गये और दरवाजे पर खड़े होकर देखने लगे। बा ध्यानमें लीन होकर प्रार्थना कर रही थीं! थोड़ी देरमें आँख खोली, तो बापूजीको देखकर शरमा गअीं। हँसते-हँसते बोलीं: "आप घूमने जाअिये। यहाँ क्या काम है?" बापू हँस दिये और फिर घूमने चले गये। हम सब बहुत खुश हुअे। आशाकी किरणें दिखाअी देने लगीं। हममेंसे हरअेकने महसूस किया कि अेक दिनकी दवासे अितना फायदा नजर आता है, यह बहुत खुशीकी बात है। आयुर्वेदका यह अेक चमत्कार है। लेकिन रातमें फिर बेचैनी शुरू हो गअी। अेक बजे तक नींद नहीं आअी। अिसलिअे फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबको जगाया।

अुन्होंने फोन पर वैद्यजीसे बात की। वैद्यजी आये। अेक गोली दे गये और फिर बा को नींद आ गअी।

बा की हालत अितनी नाजुक थी कि जिनका अिलाज चल रहा हो, अुन्हें रात अुनके पास ही रहना चाहिये था। मगर सरकार वैद्यजीको रात महलमे रहनेकी अिजाज़त नहीं दे रही थी। आखिर वैद्यजीने कहा: "मैं बाहर दरवाजे पर मोटरमें सो रहूँगा, ताकि जब जरूरत पड़े, तुरत आ सकूं।" सब पर अुनकी अिस कर्त्तव्य-परायणताकी गहरी छाप पड़ी। तीन दिन तक वैद्य शिवशर्माजी आगाखान महलके दरवाजेके बाहर मोटरमें सोये। तो भी जब-जब अुन्हे बुलानेकी जरूरत पड़ती, पहले अेक सिपाहीको जगाना पड़ता, सिपाही जमादारको जगाता, जमादार सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबसे चाबी लेकर बाहर वैद्यजीको बुलाने जाता और फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब वैद्यजीको लेकर भीतर आते। जब तक वैद्यजी अन्दर बा के पास रहते, तब तक सुपरिण्टेण्डेण्ट अुनके साथ रहते। बादमे अुन्हे बाहर पहुँचाकर खुद सोने जाते। यह सब बापूजीको बहुत अखरता था। १६ फरवरीके दिन मोटरमे वैद्यजीकी तीसरी रात थी। अुस रात क़रीब १२॥ बजे अुन्हें बुलाना पड़ा। १॥ बजेके क़रीब वे वापस मोटरमें सोने गये। बापू अपनी खटियामे पड़े-पड़े यह सब देख रहे थे। रात दो बजे अुठकर अुन्होंने अधिकारियोंको पत्र लिखा: "वैद्यजीको महलमे सोनेकी अिजाज़त मिलनी ही चाहिये। अुन्हे यह बिलकुल पसन्द नहीं कि अिस तरह हर रोज अितने आदमियोंको जागना पड़े। अगर कल रात तक, यानी १७ तारीखकी रात तक, अिजाज़त नहीं मिली, तो वे वैद्यजीकी दवा बन्द कर देंगे। डॉक्टरोंकी तो बन्द हो ही चुकी थी, चुनॉचे बीमार बिना अिलाजके पड़ा रहेगा।"

पत्रका असर हुआ। १७के दिन वैद्यजीको महलमे सोनेकी अिजाजत मिल गअी। वैद्यजीने रातमें दो तीन-बार बा को देखा। नींदकी दवा दी, और रात दूसरे दिनोंसे अच्छी बीती।

१८ फरवरीको फिर बेचैनी शुरू हुअी। वैद्यजी दिनभर शहरसे नअी-नअी दवाअियाँ ढूंढकर लाते और देते रहे, मगर बा बेचैनीकी वजहसे

सारी रात सो नही सकीं । वैद्यजीकी दवासे दस्त तो हुअे, मगर पेशाव नहीं अुतरा । रात थोडा बुखार भी था ।

सुबह प्रार्थनाके बाद वैद्यजीने बापूजीसे कहा : "मुझसे जो हो सकता था, मैं सब कर चुका हूँ । मगर बा की हालत सुधर नहीं रही; बिगड़ती ही जाती है । अैसी हालतमे मैं समझता हूँ कि डॉक्टरोंको अपना अिलाज आजमानेका मौका मिलना चाहिये ।" अगले दिन बापूजीने मुझसे कहा था : "कल तक वैद्यजीकी दवासे फायदा न हुआ, तो शायद वे चले जायेंगे । अुसके बाद केस तुम्हारे हाथमे आये, तो मेरी वृत्ति तो यह है कि दवा बन्द कर दी जाय । मगर यह तभी हो सकता है कि जब तुम लोग मेरी बातको दिलसे समझो और स्वीकार करो ।" लेकिन हम लोगोंके लिअे यह स्वीकार करना जरा कठिन था । सुबह डॉ० गिल्डरने और मैंने बा की जॉच की और अिलाज तय किया । दोपहरमे पेशाब लानेके लिअे ½ सी० सी० 'सॅलिर्गेन'का अिजेक्शन दिया । अिस आजमाअिशी खुराकसे भी शामको बा के करीब ५ औंस पेशाब अुतरा । हम सब खुश हो गये । तीन-चार दिनके बाद अितना पेशाब हुआ था । वैद्यजी कहने लगे कि अिजेक्शनोंसे पेशाब आता रहे, तो अेक दफा फिर मुझे मेरी दवा आजमाने दीजिये ।

मगर दूसरे दिन १९ फरवरीको 'सॅलिर्गेन'की पूरी मात्राका अिजेक्शन दे देने पर भी कोअी खास असर नहीं हुआ । फेफड़ोंमे निमोनियाके चिह्न थे । अुससे लहूका दबाव और भी गिर गया था । अैसी हालतमें बेचारे गुर्दे क्या काम करते ! निमोनियाके लिअे अधिकारियोंसे पेनिसिलिन मॅगवानेको कहा गया ।

१७ फरवरीको दोपहरके वक्त हरिलालभाअी आये थे । बा अुन्हे देखकर बहुत खुश हुअीं । बादमे पता चला कि अुनको सिर्फ अेक ही बार आनेकी अिजाजत मिली थी । यह सुनकर बा नाराज हो गअीं । बोलीं : "यह क्या बात है ! देवदासको तो हर रोज आने देते हैं, और हरिलाल अेक ही बार आ सकता है ! भडारी मेरे सामने आयें, तो मैं अुनसे कहूँ कि दो भाअियोंमें अितना फर्क क्यों करते हो ! यह बेचारा गरीब है, तो क्या अपनी मॉसे भी नही मिल सकता !"

बापूजीने अुन्हें शान्त किया और कहा : "मैं अिसके लिअे अिजाजत मँगवा लूँगा।" दूसरे दिन सरकारकी ओरसे तो अिजाजत आ गअी, मगर हरिलालभाअीका कहीं पता न चला। बा हर रोज पूछतीं और जवाब मिलता कि अुनका कहीं पता नहीं है। जब बा की हालत गंभीर हो गअी, तो सरकारने अुनके दोनों लडकोंको खबर भेजी। हमें संदेसा मिला कि देवदास और रामदासको खबर दे दी गअी है, और हरिलालको सरकार ढूँढ रही है।

४१
रामनाम ही दवा है

१९ को बा रात भर 'ऑक्सीजन'की नली नाकमें डालकर पडी रहीं। अच्छी तरह सोअीं। लेकिन २० फरवरीको सुबह ५ बजेसे बेचैनी शुरू हो गअी। मुँहसे बार-बार 'राम, हे राम' पुकारती थीं। सॅलिगॅनका पेशाब पर कोअी असर न होनेसे वातावरणमे बड़ी निराशा छा गअी थी। तिस' पर बा की बेचैनी सबको बेचैन बना रही थी। बापूजी आकर बा की खाट पर बैठे। अुनके कन्धे पर सिर रखकर बा कुछ शान्त हुअीं। अुसी तरह बैठे-बैठे बापूजीने सुबहकी प्रार्थना की। बारी-बारीसे सब लोग बा के पास बैठ कर रामधुन और भजन गाते थे। जब कोअी गानेवाला न होता, नो ग्रामोफोन पर रेकार्ड बजाने लगते थे। 'श्रीराम भजो दुःखमे, सुखमे', यह भजन बा को बहुत प्रिय था। अिसे सुनते समय वे क्षणभरके लिअे अपनी वेदना भूल जाती थीं। ९। बजे 'क्लोराल' और 'ब्रोमाअिड'की अेक खुराक दी। अुसके बाद बा करीब डेढ घंटा सोअीं। अुठीं, तो तबियत अच्छी थी। बैठकर अच्छी तरह दतौन किया, मसूढ़ोंको जोरसे घिसा, नाकमें पानी चढाया। सबको आश्चर्य होने लगा कि बा मे अितनी ताकत कहाँसे आ गअी? फिर वे चाय पीकर आरामसे लेट गअीं। दवा लेनेसे अिनकार कर दिया। दिनमे अेक बजे फिर बेचैनी शुरू

हुआी। 'राम, हे राम' पुकारने लगीं। अुनकी आवाज़ अितनी करुण थी कि सुनी नहीं जाती थी। जब वे बोलती थी, तब अैसा लगता था, मानो गले पर छुरी चलते समय बकरी मिमिया रही हो! गीतापाठ, रामधुन, भजन वगैराका सिलसिला तो ज़ारी ही था। अिसके कारण बीच-बीचमे कुछ देरके लिअे बा थोडी शान्त हो जाती थीं।

बापूजी दिनमे भी काफी देर तक बा की खाट पर बैठने लगे। अुनके बैठनेसे बा को थोड़ी शान्ति मिलती थी। बापूजीने हमसे कहा: "अब बा की दवा सिर्फ रामनाम ही है। दूसरे सब अिलाज छोड़ दो। मेरी वृत्ति तो यह है कि शहद और पानीके सिवा दूसरी कोअी खुराक भी मत दो। बा खुद माँगे, तो बात दूसरी है। मैं दवामे नहीं मानता। अपने लड़कोंकी सख्त बीमारियोंमे भी मैंने अुन्हे दवा नही दी। लेकिन बा के लिअे मैने वह नियम नहीं रखा। आज तो खुद बा को भी दवासे अरुचि हो गअी है। रामनामके सिवा अुसे चैन नहीं पडता। यह दृश्य करुण है। किन्तु मुझे बहुत प्रिय है। रामके सिवा मैंने आज अुसके मुँहसे कुछ सुना ही नहीं। अैसे समय तो मैं दवाको छोड़ ही दूँ। अीश्वरको जिलाना हो, जिलाये; ले जाना हो, ले जाये। अुसे बचाना होगा, तो वह यों ही बचा लेगा, नहीं तो मैं बा को जाने दूँगा।"

शामको बा ने अेनीमा माँगा। बापूजीने टालना चाहा: "अब रामनाम ही तेरी दवा है।" मगर बा नहीं मानीं। मैंने बापूजीसे कहा: "माँगती है, तो ले लेने दीजिये न। अन्त-अन्तमे जितना सतोष दे सकें, दें।" बापू मान गये। अेनीमा लेनेसे मल खूब निकला। अुसके बाद बा दो घंटे आरामसे सोअी। अुनकी हालत अितनी अच्छी लगने लगी कि मैने बापूजीसे कहा: "बापूजी, दवा देनेकी अिजाजत दीजिये न! जब तक प्राण है, प्रयत्न क्यों न किया जाय?" लेकिन बापू मेरी क्यों सुनने लगे!

कमज़ोरी बढ़ जानेके कारण बा जब-जब भी थूकती थीं, तब-तब पास बैठी नर्सको अुनका मुँह पोंछना पड़ता था। हम लोग कपड़ेके टुकड़ेसे मुँह पोंछकर अुसे फेंक देते थे। बा की मृत्युसे तीन-चार दिन पहले बापूजी रातको अुनके पास आये। अुस समय अुन्होंने हमसे कुछ छोटे-छोटे नये रूमाल बना लेनेको कहा। दूसरे दिन मैंने और मनुने चार रूमाल बनाये। बापूजी जब रातमे या दिनमें बा के पाससे गुज़रते, तो मैला रूमाल अुठाकर धोनेको ले जाते। पहले दिन मैंने कहा: "बापूजी आप रहने दें। हम धो लेंगे।" बापूने जवाब दिया: "मुझे करने दो। मुझे यह सब करना अच्छा लगता है।" अुस दिनके बाद फिर मैंने कभी बापूजीसे बा की सेवाका काम नहीं माँगा।

अिसी तरह अेक दिन दुपहरको खानेके बाद बापूजी बा के पास जाकर बैठ गये। बा सोनेकी तैयारीमें थीं। अगर वे बापूजीका सहारा लेकर सो जाती है, तो फिर जब तक जागे नहीं, बापू अुठ नहीं सकते थे। बापूजीका अपना भी वही सोनेका समय था। वे काफी थके हुअे भी थे। मैंने कहा: "बापूजी, अभी आप मुझे बा के पास बैठने दें। सो लेनेके बाद आप आ जाअिये।" बापूजी चले तो गये। मगर अपनी गद्दी पर जाकर कहने लगे: "मुझे थोड़ी देर और बैठने दिया होता, तो क्या बिगड़ता?" मैंने बताया कि क्यों मुझे अुनको अुस समय बा के पाससे अुठनेकी सूचना करनी पड़ी थी। लेकिन बात खुद मुझको ही अखरी। भले कुछ दिनके लिअे बापूका आराम कम हो, लेकिन जिस कामसे अुनके मनको शान्ति मिलती है, अुसमे मैं बाधा क्यों डालूँ? बा का यह अन्तिम समय था। अैसे समय अुन्हे चाहे निमोनिया हो या और कुछ, किसकी हिम्मत चल सकती थी कि वह बापूसे कहे कि वे बा के नजदीक कम बैठा करें? अिस पर डॉ० गिल्डर बोले: "बापू पास चाहे बैठें, मगर मुँह बा के मुँहके पास न रखें।" लेकिन अुस वक्त तो अुनसे अितना कहनेकी भी किसीकी हिम्मत न थी। बापू तो छूत वगैराको बहुत मानते भी नहीं। अिसलिअे चुप रहना ही मुनासिब समझा। डॉ० साहब भी समझ गये। बोले: "हाँ, ठीक है। अेक साथ ६२ वर्ष बितानेके बाद आज जुदाअीकी घड़ीको सामने देखते हुअे बापू

किस तरह बा से दूर रह सकते है, और कैसे हम अिस विषयमे अुनसे कुछ कह सकते है ?" कहते-कहते अुनकी आँखे सजल हो आयीं।

अपनी अन्तिम बीमारीके शुरू होनेसे कअी दिन पहले बा को पाखाने और पेशाबमे जलन होती थी। अुन्होंने बापूजीसे कहा : "मैं तो पानीका अिलाज करूँगी।" बापूने मजूर किया और दूसरे दिनसे अुन्हे ठण्डा और गरम 'टब-बाथ' देने लगे। अिसमे बापूजीका करीब अेक घटा चला जाता था। काफी थक भी जाते थे। अेक दिन बा ने कहा : "आप जाअिये। सुशीला मुझे बाथ दे देगी। आपको बहुत काम है।" बापू बोले : "तुम अिसकी फिकर न करो।" और वे बाथ देते रहे। अेक दिन मैंने भी कहा : "बापूजी, आपको वक्तकी अितनी ज्यादा तगी रहती है, और मै तो आप जब कहे तभी बा की सेवा करनेके लिअे तैयार ही रहती हूँ। अिसलिअे आप जब चाहें तभी बाथ वगैरा देनेका अेक घटा बचा सकते हैं।" बापूजीने अिस तरह घटा बचानेसे अिनकार किया। बोले : "तू बा की सेवा करनेको तैयार है, सो तो मैं जानता हूँ। लेकिन अुत्तरावस्थामे अीश्वरने मुझे अिस तरह बा की सेवा करनेका यह जो अवसर दिया है, अुसे मै अमूल्य मानता हूँ। जब तक बा मेरी सेवा लेगी, मैं खुशी-खुशी अुसके लिअे अेक घटा निकालता रहूँगा।"

बा की मृत्युके दो तीन दिन पहले ही बापू अिस बातकी चर्चा कर रहे थे कि बा किसकी गोदमे आखिरी साँस लेगी। अुन्होंने कहा था : "किस भाग्यशालीकी सेवा अितनी अेकनिष्ठ होगी कि बा अुसकी गोदमे देह छोड़े? अिसे तो अेक भगवान् ही जानता है।" और यह भाग्य अुनके सिवा दूसरे किसका हो सकता था ?

४४
अंतिम रात

शामको ६॥ बजेके करीब देवदासभाअी, मनु (हरिलालभाअीकी लड़की) और संतोकबहन आ पहुँचीं। बा अुन्हें मिलकर रो पड़ीं। हरिलालभाअी पर अुनका रोष अभी तक बना हुआ था। देवदासभाअीको देखकर बोलीं: "अब तू सबको सँभालना। बापूजी तो साधु है। अुन्हें तो सारी दुनियाकी चिन्ता है। हरिलालको तो तू जानता ही है। अिसलिअे अब परिवार तुझीको सँभालना है।"

मनुने बा को भजन सुनाये। बा की अिच्छा थी कि संतोकबहन और मनु रात अुनके पास रहें। मगर सरकारने अिजाजत नहीं दी। देवदासभाअीको रहनेकी अिजाज़त थी। वे अिन लोगोंको छोड़ने बाहर गये। बा मेरी गोदमे सो गअीं। मगर आजकी नींदसे मुझे खुशी नहीं थी। पेशाब न अुतरनेके कारण अब नशा-सा रहने लगा था। यह नींद ताजगी लानेवाली नींद न थी। रात साढ़े ग्यारह बजे मैं अुठी। प्रभावतीबहन बा के पास आकर बैठीं। बा ने अुनसे कहा: "चलो, हम दोनों सो जायें। अितनेमे अुन्हे जोरकी खाँसी आअी। मैं दवाकी खुराक लेकर बा के पास पहुँची। बा ने दवा तो नहीं ली, लेकिन मुझे खाटके पाससे बदबू आअी। बत्ती जलाकर देखा, तो खाटमें दस्त हो गया था। बा को अिसका पता भी न था। मुझे लगा, यह जानेकी तैयारी है। खाटके कपड़े बदले और बा को लिटाया। अितनेमें देवदासभाअी आ गये। वे खड़े पैरों बा की चाकरीमे लग गये। मैं बत्तीके पास जमीन पर बैठकर बा के स्वास्थ्यकी डायरी लिखने लगी। देवदासभाअी धीरे-धीरे बा का सिर दबा रहे थे। अुन्होंने समझा कि बा सो गअी हैं, सो दबाना बन्द कर दिया। बा ने मुझे पुकारा: "सुशीला, तू भी थक गअी क्या?" मैंने कहा: "बा, मैं क्यों थकने लगी?" और मैंने सिर दबाना शुरू कर दिया। बा के सिरमें दर्द हो रहा था। चक्कर आ रहे थे। विचारोंमे कुछ अस्पष्टता आ गअी थी। 'यूरीमिया' के चिह्न प्रकट होने लगे थे।

दो बजे बा सो गअीं। पौने तीन बजे मैं सोनेके लिअे अुठी। देवदासभाअी पाँच बजे तक बा के पास खड़े रहे थे। अुनके चेहरेसे करुणा और प्रेम टपक रहा था। अिस आशंकासे कि माँ जानेकी तैयारीमें है, अुनका दिल बालककी तरह रो रहा था। वहाँ खड़े हुअे वे माँके प्रति पुत्रके प्रेमकी मूर्ति से दिखाअी पड़ते थे।

४५

२२ फरवरी, १९४४

तारीख २२को सुबह ७ बजे मैं अुठकर भीतर आअी। मुँह-हाथ धो रही थी, कि बा ने पुकारा : "सुशीला!"

मैंने पास जाकर पूछा : "क्या है बा?"

बा बोलीं : "सुशीला, मुझे घरमें ले चल। मेरी सार-सँभाल कर।"

मैंने अुनकी खाटके पास ही लटकता हुआ 'हे राम' का चित्र अुन्हें दिखाया और कहा : "बा, आप तो घर ही में हैं। यह देखिये, यह रहा आपका प्यारा चित्र!"

कुछ देर बाद बा फिर बोलीं : "मुझे घरमें ले चल। बापूजीके कमरेमें ले चल।"

मैंने कहा : "लेकिन बा आप तो बापूजीके कमरेमें ही हैं।" फिर मुझे खयाल आया कि शायद बा बापूजीको बुलाना चाहती हैं। वे पासके कमरेमें नाश्ता कर रहे थे। मैंने अुन्हें कहलवाया कि घूमने जानेसे पहले जरा बा के पास हो जायँ।

बा मेरी गोदमें पड़ी थीं। अेकाअेक बोल अुठीं : "सुशीला, कहाँ जायेंगे? क्या मर जायेंगे?" पहले जब कभी बा अैसी बातें करतीं, तो मैं अुनसे कहती थी : "बा, आप अैसा क्यों कहती हैं? हम सब साथ ही घर जायेंगे।" लेकिन आज अैसा कुछ कहनेकी हिम्मत न हुअी। मैंने कहा : "बा, अेक दिन तो हम सबको मरना ही है न! आगे पीछे सबको जाना है। अिसमें है क्या?" बा ने सिर हिलाया, मानो 'हाँ'

कहती हों। फिर शान्त होकर आँखे बन्द कर लीं और मेरे सहारे आधी लेट-सी गयीं।

कुछ देर बाद बापूजी आ पहुँचे। थोड़ी देर बा के पास खड़े रहे और फिर बोले: "अब मैं घूमने जाअूँ?" हमेशा जब बापू बा के पास बैठना चाहते थे, तो बा कहती थीं, "नहीं, आप घूमने जाअिये' या कहती, 'सो जाअिये।' लेकिन आज बापूजीने घूमने जानेको पूछा, तो बा ने मना किया। बापू अुनके पास खाट पर बैठ गये। बा अुनकी छाती पर सिर रखे, अुनका सहारा लिये, आँख बन्द करके पड़ी थीं। अुस समय दोनोंके चेहरे पर अपूर्व शान्ति और संतोष दिखाअी दे रहा था। वह दृश्य अितना पवित्र और अितना दिव्य था कि हम लोग दूरसे ही देखकर दबे पाँव पीछे हट गये। बापूजी दस बजे तक वहीं बैठे रहे। बीच-बीचमे बा को रामनामका सहारा लेनेके लिअे कहते थे। अुन्हे खाँसी वगैरा आती, तो अुनको सहलाते थे।

भाअी, मैं और देवदासभाअी खानेके कमरेमें बैठे बाते कर रहे थे। देवदासभाअीने कहा कि अेक सरकारी अफसरने अुन्हे साफ-साफ़ बताया था कि सरकार बा को क्यों नहीं छोड़ रही है। अुसने कहा: "अगर हम अुन्हे छोडते है, और बाहर आने पर अुनकी हालत ज़्यादा गंभीर होती है, तो लोग तुम्हारे पिताजीको छोडनेकी माँग करेंगे और अुस वक्त हमने अुन्हे न छोडा, तो हमे राक्षस कहेंगे।"

दस बजे बा ने बापूजीको जानेकी अिजाज़त दी। अुनकी जगह मैं बैठ गअी। अकेली बैठी थी। मनमे खयाल आया: "बा से अपनी जाने-अजानेकी सब भूलोंके लिअे क्षमा तो माँग लूँ।" मगर बोलनेकी कोशिश करने पर गला रुँध गया और मुँहसे शब्द न निकला। सुबह सात बजे बा ने कहा था: 'क्या मर जायँगी?' अुन्हे फिरसे अिस विचारकी याद दिलाना भी मुझे ठीक नही मालूम हुआ। बीच-बीचमें बा कुछ गाफिल हो जाती थीं। आज पहला ही दिन था, कि अुन्होंने दतौन वगैरा नही किया था। मैंने 'बोरो ग्लिसरीन' से मुँह साफ करनेके लिअे पूछा, तो अुन्होंने मना कर दिया।

पेनिसिलिन कलकत्तेसे हवाअी जहाजमे भेजी गअी थी। कर्नल शाह और कर्नल भण्डारी खबर लाये कि पेनिसिलिन आ गअी है। बापूजीने तो सब दवा ही बन्द करवा रखी थी। बा को भी दवा लेनेकी कोअी अिच्छा नही थी। अैसी हालतमे सवाल यह था कि किया क्या जाय? देवदासभाअी चाहते थे कि पेनिसिलिनका अुपयोग किया जाय। डॉ० गिल्डरसे और मुझसे अिस बारेमें बातें करके वे बाहर किसी मिलिटरी डॉक्टरसे चर्चा करने जा रहे थे। डॉक्टर दीनशा मेहता अुनके साथ जानेवाले थे। अितनेमें बा ने पुकारा : "मेहता कहाँ हैं? मेरी मालिश वगैरा करे!" डॉ० दीनशा अभी सीढ़ी पर ही थे। अुन्हें बुलाया गया। अैसी हालतमें बा की मालिश करनेका कोअी अुत्साह अुनमें न था, मगर बा का आग्रह देखकर १५ मिनट तक पाअुडरसे थोड़ी मालिश कर दी और फिर चले गये। बा आधी बेहोशीकी हालतमे मेरी गोदमें पड़ी थीं। कुछ देरके बाद फिर बोलीं : "मेहता कहाँ हैं? वे सब करेंगे।" अपने अंतिम समयमें बा का अिस तरह डॉ० मेहताको याद करना, अुनके प्रति बा की श्रद्धाका अेक प्रमाण था। मैंने गीले कपड़ेसे बा का मुँह वगैरा साफ कर दिया। अितनेमें कर्नल भण्डारी आये। देवदासभाअीने बा का फोटो लेनेकी अिजाजत माँगी थी। कर्नल भण्डारी यह जानने आये थे कि अिस बारेमें बापूजीकी क्या अिच्छा थी। बापूजीने कहा : "मुझे तो अिन चीजोंकी परवाह नहीं है। मगर लड़के और रिश्तेदार वगैरा चाहते है, तो सरकारको अिजाजत देनी चाहिये।"

प्रभावतीबहनको बा के पास बैठाकर मैं स्नान करने गअी। मेरी गैरहाजिरीमे डॉक्टर गिल्डर बा के पास थे। बा की नाड़ी बहुत अनियमित चल रही थी। कभी बिल्कुल गायब हो जाती और कभी फिर चलने लगती। कल रातसे बीच-बीचमे नाड़ीकी यही हालत हो रही थी। सबको लगता था कि अब बात दिनोंकी नहीं, घंटोंकी ही है। बापूजीने मुझसे कहा था : "तुझे ज्यादा नहीं, तो कम-से-कम १५ मिनट तो घूम ही आना चाहिये।" अिसलिअे नहानेके बाद मैं १५ मिनट घूमने निकल गअी। घूमते समय मैं प्रार्थना कर रही थी :

"मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥"

आज हृदयसे बार-बार यही श्लोक निकल रहा था। क्या वह माधव अब भी बा को बचा नहीं सकता? लेकिन मनुष्यकी अपेक्षा भगवान् ही अधिक अच्छी तरह जानता है कि मनुष्यके लिअे क्या अच्छा है और क्या नहीं! और वह वैसा ही करता है। फिर बा को किसी-न-किसी रोज तो जाना ही है न? स्वतंत्रताके अहिंसक युद्धमे जेलके अन्दर मृत्यु पाना और स्वतत्रताकी वेदी पर बलि होकर शहीद बनना विरलोंके ही नसीबमे होता है। बा की आजीवन तपस्याके बाद अुन्हे यह सौभाग्य प्राप्त न होता, तो और किसे होता? भगवान्ने अुनको जिस महान् पदके योग्य पाया था, अुसे वह मेरे समान मोहग्रस्त व्यक्तिकी प्रार्थनाके कारण थोड़े ही बदल देनेवाला था?

अिधर कअी दिनोंसे बापू अपनी खुराकमें सिर्फ प्रवाही पदार्थ (पतली चीजें) ही लेते थे। अुन पर बा की बीमारीका अितना बोझ था कि खाना कम किये बिना वे अपनी तबियतको ठीक नहीं रख सकते थे। दूसरे, अुन दिनों खानेमें आध-पौन घटा खर्च करना अुन्हे अखरता था। स्नानके बाद १० मिनटमे खाना पूरा करके वे बा के पास आ बैठते थे। अेक दफा बैठनेके बाद फिर अुठनेकी अिच्छा नहीं होती थी। अिसलिअे आम तौरपर अपने सब कामोंसे निपटकर ही वे बा के पास आते थे। जब मैं पास आयी, तो बापूजी बा के पास बैठे थे। अेकाअेक बा खाट पर सीधी लेट गयीं। दमेकी वजहसे अिधर महीनों हुअे, वे चित सो नहीं पाती थीं। पीठकी तरफ मनुष्यका या खटियाका सहारा लेकर बैठती थीं, या सामने टेबल पर सिर रखकर पड जाती थीं। आज अुन्हे अचानक अिस तरह लेटते देखकर सब चौंक अुठे। देवदासभाअीको सॅदेसा भेजा गया। वे लेडी ठाकरसीके घर सोने जानेकी तैयारी कर रहे थे। खबर पाते ही मनुके साथ आ पहुँचे। डॉक्टर दीनशा मेहता भी आ गये। बापूजीने बा से पूछा: "रामधुन या भजन सुनोगी?" बा ने अिनकार किया। बादमे बापूजीने पासके कमरेमे धीमे स्वरसे गीता पाठ शुरू करवाया। कनु, देवदासभाअी, प्यारेलालजी वगैरा सब बारी-बारीसे गीतापाठ करने लगें, ताकि बा के कानोंमे गीताजीकी ध्वनि रह जाय।

रातसे ही बा को कुछ निगलनेमे कष्ट होता था। पानी पीनेकी भी अिच्छा नही होती थी। दुपहरको देवदासभाअी गंगाजल लाये। अुसमे तुलसीके टुकडे डाले। बापूजीने कहा: "देवदास गंगाजल लाया है।" बा ने मुँह खोल दिया। बापूजीने चम्मच भरकर डाला। बा झटसे पी गअीं। अुन्होंने फिर मुँह खोला। बापूने अेक चम्मच और डाला। फिर बोले: "अब थोडी देर बाद लेना।" बा शान्तिसे आँखें बन्द करके लेट गअीं। बेचैनीमें वे 'हे गंगाजी' भी पुकारती थीं। गंगाजलका पान करके अुन्हे अपूर्व शान्ति मिली थी। दूसरे रिश्तेदारोंको बा के पास बैठनेका मौका देनेके लिअे बापूजी बा के पाससे अुठकर नजदीक ही अपनी गादी पर जा बैठे। थोडी देरमे संतोकबहन, केशुभाअी और रामीबहन (हरिलालभाअीकी बडी लड़की) आ पहुँचीं। न जाने कहाँसे बा मे शक्ति आ गअी। वे अुठकर अिन सबसे बातें करने लगीं। संतोकबहनसे कहने लगीं: "देवदासने मेरे लिअे बहुत चक्कर खाये है; मेरी बहुत सेवा की है।" फिर देवदासभाअीसे बोलीं: "तूने मेरी बहुत सेवा की है। अब तू सबको सँभालना और अपना कर्त्तव्य पूरा करना।" देवदासभाअीने कहा: "बा मैंने क्या सेवा की है? मैं तो कल ही रातको आया हूँ। सेवा तो तुम्हारे अिन साथियोंने की है।" किन्तु अंतिम समयमे देवदासभाअीको देखकर बा परम संतुष्ट हुअी थीं। अुनकी अेक रातकी सेवा बा के निकट सबसे ज्यादा मूल्यवान थी। देवदासभाअीने कहा: "बा रामदासभाअी आ रहे हैं।" बा बोली: "क्या काम है?" रामदासभाअीको तकलीफ देना अुन्हें बहुत अखरता था।

बा बापूजीकी ओर देखकर कहने लगीं: "मेरे मरनेका दुःख क्या? मेरी मौत पर तो लड्डू बँटने चाहिये।" अिसके बाद आँखें बन्द करके और हाथ जोड़कर वे अीश्वरसे प्रार्थना करने लगीं: "हे भगवन्, ढोरकी तरह पेट भर-भरकर खाया है। माफ करना। अब तो तेरी ही भक्ति चाहिये। तेरा ही प्रेम चाहिये।" अुनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी। अुन्होंने अुस समय सब मोह-माया छोड़ दी थी। अुनकी वृत्ति पूर्णतया सात्त्विक हो गअी थी।

कनुने बाके कुछ फोटो लिये। सब चाहते थे कि बा के साथ बैठे हुअे बापूजीका फोटो लिया जा सके, तो अच्छा हो। मुझसे कहा गया कि मैं बापूको बा के पास बैठाअूँ। मेरे सामने सवाल था कि मैं अुनसे कैसे कहूँ। बापूजीको फोटोसे चिढ है। अचानक कोअी अुनका फोटो ले ले, तो बात अलग है। मगर फोटोके लिअे वे कभी बैठते नहीं।

बापूजी आग्रह करते थे कि सबको थोड़ा-थोड़ा आराम लेना चाहिये। अिसकी बिना पर मैंने चार बजे अुनसे कहा: "बापूजी, मैं थोडा आराम करने जाती हूँ। आप बा का 'चार्ज' लें।" कनुको आशा थी कि जब बापू 'चार्ज' लेकर बा के पास बैठेंगे, तब वह फोटो ले लेगा। मगर बापूजीने कहा: "चार्ज तो मैं लेता हूँ, पर यहीं बैठे बैठे। दूसरे सब बा के पास बैठे हैं; अुन्हें बैठने दो। बा मुझे बुलावेगी, तब मैं अुसके पास चला जाअूँगा।"

साढे पाँच बजे कर्नल शाह और कर्नल भण्डारी पेनिसिलिन लाये। बापूजीसे पूछा। अुन्होंने कहा: "डॉ० गिल्डर और सुशीला देना चाहें, तो दीजिये।" डॉ० गिल्डर बापूजीके विचारोंको जानते थे। अिसलिअे वे पेनिसिलिन देनेसे झिझकते थे। देवदासभाअीसे बातें हुअीं। दो सवाल सामने थे। अेक तो यह कि मृत्यु-शय्या पर पडी हुअी बा को अब अिंजेक्शन देनेसे क्या फायदा? अीश्वरके भरोसे पड़ी रहने दो और शांतिसे जाने दो। यह था बापूजीका मत। अुसमें काफी सचाअी थी। दूसरा यह कि जब तक प्राण है, आशा क्यों छोडी जाय? प्रयत्न क्यों छोडा जाय? यह था साधारण, तटस्थ, डॉक्टरी मत। देवदासभाअी दूसरे मतके थे। डॉ० गिल्डरने अुनसे कहा: "आप चाहते हैं, तो हम बा को पेनिसिलिन देनेको तैयार हैं।" अुन्होंने मुझे अिशारा किया और मैंने पिचकारी अुबालनेको रखी। अितनेमें बापूजीने मुझे देखा और पूछा: "तुम लोगोंने क्या तय किया है?" मैंने कहा: "पेनिसिलिन देंगे।" बापूने पूछा: "तुम दोनों मानते हो कि देना चाहिये? अिससे फायदा होगा?" अिसका अुत्तर मैं 'हाँ' में कैसे दे सकती थी? मैंने कहा: "आप डॉक्टर गिल्डरसे बात कर लें।"

बा की हालत कुछ अच्छी मालूम होती थी। शायद पेनिसिलिनसे फायदा हो, आशाकी अिस किरणसे मेरे मनका बोझ कुछ हल्का हुआ। सुबहसे खाना नहीं खाया था। अिसलिअे मैं खाने गअी। क़रीब-क़रीब सभी खाने बैठे। बापू डॉ॰ गिल्डरको समझाकर देवदासभाअीको समझाने गये। डॉ॰ गिल्डरने मुझको कहा: "बापूको पता न था कि कअी अिंजेक्शन देने होंगे। अब पता चला है, तो पेनिसिलिन देनेसे मना किया है।" मैंने पिचकारी अुठाकर बन्द कर दी। मनमे थोड़ी निराशा हुअी। साथ ही अिस विचारसे थोडी शान्ति भी हुअी कि अैसी हालतमे मुझे बा को सुअी नहीं टोचनी पड़ेगी।

बापू देवदासभाअीको समझा रहे थे: "तू अीश्वर पर विश्वास क्यों नहीं रखता? मृत्यु-शय्या पर पड़ी माँको भी दवा क्यों देना चाहता है?" वगैरा। अिस चर्चाके कारण अुन्हें घूमने जानेमें देर हो गअी। हर रोज वे ६॥ बजे नीचे घूमने चले जाते थे। अुस रोज़ क़रीब ७। बज रहे थे। बात पूरी करके वे नीचे जानेके लिअे तैयार होनेके खयालसे गुसलखानेमे आये। अितनेमे बा बोलीं: "बापूजी!"

प्रभावतीबहन पास बैठी थीं। अुन्होंने बापूजीको बुलाया। वे आकर बा के पास बैठ गये। मगर कनुको फोटो लेनेसे मना कर दिया।

बा को बहुत बेचैनी थी। दो बार अुठकर सीधी बैठीं। फिर लेट गअीं। बापूजीने पूछा: "क्या होता है?" नये देशके किनारे खडे भोले बालककी तरह अुन्होंने अत्यन्त करुण स्वरसे तुतलाते हुअे कहा: "कुछ समझ नहीं पड़ता।" मैंने नाडी देखी। वह बहुत कमजोर थी। लेकिन दिनमे कअी दफा कमजोर हो चुकी थी। अिसलिअे मेरी समझमे नहीं आया कि अब सिर्फ मिनटोंका खेल बाक़ी है। बा के दरवाजेके पास बरामदेमे कनु और मै बात कर रहे थे: "बापूजीने मना न किया होता, तो कितना अच्छा फोटो मिल सकता था! हमेशा तो कोअी बिना बताये फोटो ले लेता, तो बापू रोकते नहीं थे। आज क्यों रोका?" अुस समय हम यह नहीं समझ सके थे कि बापूजीके लिअे बा के पासकी वे अन्तिम घड़ियां अत्यन्त पवित्र थीं। फोटोसे वे अुनकी पवित्रताको कम

नहीं करना चाहते थे। बापूने पेनिसिलिन देनेसे रोका, अुसका भी हमें अफ़सोस हो रहा था।

अितनेमें बा के भाअी माधवदासजी आये। बा ने अुन्हें पहचाना। आँखें भर आअीं। पर बात नहीं कर सकीं। मैं अंदर आअी। बा ने अन्त-अन्तमें अुठनेकी कोशिश की, किन्तु बापूजीने कहाः "अब तुम पड़ी रहो।" बा ने बापूजीकी गोदमें सिर डाल दिया। अुनकी आँखें पथराने लगीं। अुन्होंने दो-चार हिचकियाँ ली। गलेसे मौतके समयकी घरघराहट भरी आवाज निकलने लगी। मुँह खुल गया। दो-चार श्वास लिये, और बा की आत्मा अिस दुनियाके बन्धनसे मुक्त हो गअी। बापूने कहा था: 'बा किसकी गोदमे देह छोड़ेगी? वह सौभाग्य किसका होगा?' बापूजीके सिवा वह और किसका हो सकता था? अुस दिन अचानक घूमने जानेमे अुन्हें देर न हो गअी होती, तो वे अंतिम समयमें बा के पास पहुँच ही न पाते। लेकिन अीश्वर अुन्हें बा के प्रतिकी अुनकी वफ़ादारी और भक्तिका फल देना क्योंकर भूलता?

बापूजीने बा के सिरके नीचेसे तकिये निकाल लिये। खाटको भी सीधा किया। मीराबहनने दोपहरसे ही खाटकी दिशा अुत्तर-दक्षिण कर दी थी। सब लोग रामधुन गाने लगे। मैं जडकी तरह खड़ी देख रही थी। डॉक्टर होते हुअे भी, और कअी मौतें देखनेके बाद भी, अैसी मृत्युको तटस्थताके साथ देखना मैं अभी सीखी न थी।

ठीक ७ बजकर ३५ मिनट पर बा की आत्मा मुक्त हुअी। देवदासभाअी बा की खाट पर सिर रखकर बालककी तरह 'बा-बा' पुकारते हुअे फूट-फूट कर रोने लगे। बापूजीकी आँखोंके कोनोंसे भी दो मोती चू पड़े। आखिर बापू अुठे। अुन्होंने कमरा खाली करनेको कहा। जेलके फाटक पर मथुरादासभाअी अपने परिवारके साथ खडे थे। अुन्हें अंतिम दर्शनके लिअे अन्दर आनेकी अिजाज़त नहीं मिली थी। सरकारको डर था कि बाहर बा की मृत्युके समाचार पहुँचते ही कहीं कोअी दंगा वगैरा न हो जाय। आखिर बापूजीने अुनके लिअे अिस शर्त पर अन्दर आनेकी अिजाज़त हासिल की कि जब तक सरकार मंजूरी न दे, तब तक हममेंसे कोअी बाहर न जायगा।

बापूजीने, मैंने, मनुने और संतोकबहन वगैराने मिलकर बा को स्नान कराया। बाल धोकर कघी की। शवको पोंछकर सूखा किया और बापूजीके हाथके सूतकी जिस साड़ीको बा ने अपनी अंतिम यात्रामे पहननेके लिअे सॅभाल कर रखा था, अुसमे अुसे लपेटा। लेडी ठाकरसीने गगाजलमे भिगोअी हुअी अेक दूसरी साड़ी भेजी थी, वह बापूजीवाली साडीके अूपर डाली गअी। संतोकबहनने बापूजीके सूतकी बनी चूड़ियॉ बा को पहनाअी। गलेमे तुलसीकी कठी डाली और माथे पर चन्दन और कुकुमका लेप किया।

मनु और कनुने बापूजीवाले कमरेको, जहॉ बा ने प्राण छोडे थे, साफ किया। मीराबहनने शवके लिअे चूनेका अेक लम्ब-चौरस चौक पूरा और सिरकी तरफ सुन्दर ॐ और पैरोंके पास सुन्दर स्वस्तिक बनाया। बादमे शवको वहॉ लाकर रखा गया। मीराबहनने बा के बालोंमे फूल सजाये। बा के चेहरे पर मन्द मुसकानके साथ-साथ अपूर्व शान्ति थी। वे सोअी हुअी मालूम पडती थी। सबने बैठकर प्रार्थना की। गीताजीका पारायण किया। डेढ घटेमे यह सारी विधि पूरी हुअी।

शान्तिकुमारभाअीने दाह-क्रियाके लिअे चन्दनकी लकड़ी लानेका प्रस्ताव किया। बापूने अिनकार करते हुअे कहा: "बा गरीबकी पत्नी थी। गरीब आदमी चन्दन कहॉसे लाये?" हमारे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब बोल अुठे "मेरे पास चन्दनकी लकड़ी है।" बापूने जवाब दिया: "आप (यानी सरकार) तो जिस चीज़का भी चाहे, अुपयोग कर सकते हैं। आपसे चन्दनकी लकडी लेनेमे मुझे कोअी अेतराज हो ही नही सकता।" फिर तो अेक समूचे चन्दनके झाड़की लकडी वहॉ आ पहुँची।

मृत्युके बाद तुरत ही कर्नल भण्डारी सरकारकी तरफसे बापूजीको यह पूछने आये कि शवके अग्निसस्कारके बारेमे अुनकी क्या अिच्छा है। बापूजीने तीन रास्ते सुझाये:

१. शव अुनके लडको और रिश्तेदारोंको सौंप दिया जाय। अिसका मतलब यह होगा कि सार्वजनिक रीतिसे, आम जनताके बीच, अग्निसस्कारकी क्रिया की जायगी और सरकार अुसमे किसी तरहकी दस्तदाजी नहीं करेगी।

यह न हो सके तो;

२. महादेवभाअीकी तरह महलके सामने ही अग्निसंस्कार किया जाय और रिश्तेदारों व मित्रोंको हाज़िर रहनेकी अिजाजत दी जाय।

३. अगर सरकार सिर्फ रिश्तेदारोंको ही आने देना चाहती हो, और मित्रोंको आनेकी अिजाजत न दे, तो वे चाहेंगे कि कोअी भी हाज़िर न रहे। जेलके अपने साथियोंकी मददसे वे अकेले ही अग्निसंस्कार कर लेंगे।

बापूने खास तौर पर यह बिनती की थी कि सरकार जो भी कुछ करे, ढंगसे करे, ताकि अुसमें संघर्षकी कोअी गुंजाअिश न रहे। यदि अन्त्येष्टि संस्कार आम जनताकी अुपस्थितिमें किया जाय, तो वे अितना कहनेको तैयार थे कि सरकारको अशान्ति या अुपद्रवका डर रखनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। "मेरे लड़के वहाँ मर जायेंगे, मगर कोअी अुपद्रव नहीं होने देंगे।"

अुनसे पूछा गया: "यदि बाहर अग्नि-दाह किया जाय, तो क्या आप खुद वहाँ जाना चाहेंगे?"

बापूने जवाब दिया: "नहीं, मेरे लडके, मित्र और रिश्तेदार सब कर लेंगे। मैं बाहर नहीं जाअूँगा।"

लेकिन सरकार अेक बड़े जुलूसका जोखिम अुठानेको तैयार न थी। अिस बहाने भी लोगोंमें जाग्रति आये और जोश पैदा हो, यह सरकारको स्वीकार न था। अिसलिअे अुसने दूसरी शर्त मंजूर की और मित्रों व सगे-संबंधियोंकी हाजिरीमें महलके सामने ही अग्निसंस्कार करनेकी अिजाजत दी।

गीतापाठके समाप्त होने पर यानी रातके कोअी ग्यारह बजे, देवदासभाअी, मनु और संतोकबहनको छोडकर बाकी सबको बाहर जानेका हुक्म मिला। हम सब बारी-बारीसे शवके पास बैठे। सुबह शवके पास ही सबने प्रार्थना की। बापूजीने शवके सिरहाने ही अपना आसन लगाया था।

२३ फरवरीको सबेरे ७ बजेसे लोग आने शुरू हो गये। करीब डेढ सौ मित्र और सगे-सम्बन्धी आ पहुँचे थे। मनुने शवकी आरती अुतारी। और सबोंने शवको प्रणाम किये। फूलोंका अेक बड़ा-सा ढेर लग गया था। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी, अंग्रेज, सभी कौमोंके दोस्त हाजिर थे। जिन ब्राह्मणोंने महादेवभाअीकी क्रिया करवाअी थी, वे भी आ पहुँचे थे। सारी क्रिया देवदासभाअीके हाथों करवाअी गअी।

शवको चिता पर रख देनेके बाद बापूजीने अेक छोटी-सी प्रार्थना करवाअी, जिसमें हिन्दू, अीसाअी, पारसी, अिस्लाम सभी धर्मोंकी प्रार्थना शामिल थी। देवदासभाअीने आग दी। कुछ ही मिनटोंमें ज्वालायें भड़क अुठीं।

बा ने 'करेंगे या मरेंगे' मत्रका पूरी तरह पालन करके दिखाया था। अब वे स्वतंत्र थी। कौनसी सल्तनत अब अुन्हे बन्धनमे रख सकती थी ?

चिता महादेवभाअीकी समाधिके बाजूमे ही रची गअी थी। मॉ ने सोचा होगा कि बेटेको अकेला छोड़कर कैसे जाअूँ, अिसलिअे वे अुसके पास ही रह गअीं !

शान्तिकुमारभाअीने दिनभर पुत्रकी तरह काम करके देवदासभाअीका बोझ हलका किया। शवके नीचेकी लकड़ियॉ कुछ, कम पड़ी। जलती चितामे अूपरसे लकड़ियॉ डालते समय कनुकी पलकें थोड़ी झुलस गअी।

बा के शरीरसे पानी बहुत निकला। अिसलिअे दहनक्रिया शामको चार बजे पूरी हुअी। तब तक बापूजी चिता-स्थान पर ही हाज़िर रहे। कअी बार मित्रोंने कहा : "आप थक जायॅगे।" लेकिन बापूने वहॉसे हटनेसे अिनकार ही किया। अुन्होंने हॅसकर जवाब दिया : "६२ वर्षके साथीको क्या अब अिस तरह छोड सकता हूँ ? अिसके लिअे तो बा भी माफ न करेगी !" किन्तु अुनके हृदयमे तीव्र वेदना हो रही थी। वे ज्ञानी हैं, मगर साथ ही मनुष्य भी है। सबके चले जानेके बाद रातको खाट पर पड़े-पड़े कहने लगे : "बा के बिना मैं जीवनकी कल्पना ही नही कर सकता। मै चाहता था कि बा, मेरे रहते चली जाय, ताकि मुझे चिन्ता न रहे कि मेरे बाद अुसका क्या होगा। लेकिन वह मेरे जीवनका अविभाज्य अग थी। अुसके जानेसे जो सूनापन पैदा हो गया है, वह कभी भर नहीं सकता।" फिर कहने लगे : "अीश्वरने भी मेरी कैसी कसौटी की ? मैं तुम लोगोंको पेनिसिलिन देने देता, तो भी वह तो जाने ही वाली थी। लेकिन वैसा करनेसे अीश्वरके प्रतिकी मेरी श्रद्धामे न्यूनता आ जाती। मैं देवदासको समझाकर आता ही हूँ, पेनिसिलिन न देनेकी बात पक्की होती है, और बा चलनेकी तैयारी कर देती है, यह भी अेक योग ही है। और बा मेरी ही गोदमें गअी, अिससे तो मेरे हर्षका पार न रहा।"

रामदासभाअी शामको पहुँच पाये। चिता अभी जल ही रही थी। देवदासभाअी और रामदासभाअीको तीन दिन तक महलमे रहनेकी अिजाजत मिली। चौथे दिन चिताकी राख और फूल अिकट्ठा करके वे विदा हुअे। नर्सें भी अेक-अेक करके विदा हो गअी। किसीने कहा : "बा ने अपने

प्राण देकर अेक बार तो जेलका दरवाज़ा खुलवा ही दिया ! वे त्यागमूर्ति थीं। अपना जीवन देकर अुन्होंने अितने लोगोंको बापूके दर्शनोंका सुवर्ण अवसर प्रदान किया ! ”

बा के चितास्थान पर अेक कच्ची समाधि बनाअी गअी। महादेवभाअीकी समाधि पर छोटे-छोटे शखोंसे ॐ लिखा गया था। बा की समाधि पर शंखोंसे ‘ हे राम ’ लिखा गया। रोज़ सुबह-शाम हम सब समाधिकी यात्रा करते और फूल चढाते थे। सबेरे गीताजीके बारहवें अध्यायका पाठ भी किया जाता था। बापूजीने महादेवभाअीकी समाधि पर फूलोंका क्रॉस (सूली) बनाना शुरू किया था। बा की समाधि पर स्वस्तिक बनानेका निश्चय हुआ। यह कुछ मरे हुओंकी मूर्तिपूजा नहीं थी; बल्कि अुनके गुणोंका स्मरण था। अुन गुणोंके प्रति श्रद्धांजलि थी। अीश्वरसे प्रार्थना थी कि अुन दो महान् व्यक्तियोंके — मॉ-बेटेके — गुणोंका हम भी अनुसरण कर सकें !

बा की बीमारीके दिनोंमे बापूजीको बहुत श्रम पहुँचा था। वे काफी दुर्बल हो गये थे। आखिर वे मलेरियासे बीमार पडे। सरकार नहीं चाहती थी कि आगाखान महलमे तीसरी मृत्यु हो। ६ मअीको हमारे जेलके फाटक खुल गये और बापूजी और अुनके सब साथी रिहा कर दिये गये।

रिहाअीसे पहले बापूजीने सरकारको पत्र लिखा कि समाधिका स्थान पवित्र स्थान है; अुसका दूसरा कोअी अुपयोग नहीं होना चाहिये, और लोगोंको समाधिके पास जानेकी अिजाजत होनी चाहिये।

आखिरी दिन सुबह सात बजे हम सब दोनों समाधियोंसे बिदा लेने गये। पूरे ९२ हफ्ते बापूजी अुस जेलमे रहे थे। वह हमारा घर-सा बन गया था, और अपने दो साथियोंको वहीं छोडकर जाना सबको अखरता था। लेकिन वे दो तो देशके और बापूके सच्चे सेवक थे। देशकी और बापूकी सेवामें अुन्होंने अपने प्राण अर्पण किये थे। और, क्या जेलके दरवाजे खुलवानेमे भी अुनका हाथ न था ? जीवनकी तरह मृत्युमे भी अुन दोनोंने बापूजीकी अर्थात् देशकी ही सेवा की थी। कौन कह सकता है कि आज भी वे दो आत्माये बापूजीकी रक्षा और सेवा नहीं कर रहीं ?

अन्त्येष्टि

मेरे नाम, और नज़रबन्दोंकी छावनीके पतेपर मेरे पिताजीके नाम सीधे भेजे गये भ्रातृभाव और समवेदना व्यक्त करनेवाले असख्य सन्देश, सार्वजनिक रीतिसे कृतज्ञता प्रकट करनेके अुपरान्त भी कुछ अधिककी अपेक्षा रखते है। अुनमेसे कुछ तो बहुत परिश्रमपूर्वक और विस्तारसे लिखे गये हैं, फिर भी वे अुनके लेखक जो कुछ कहना चाहते हैं, सो सब व्यक्त नहीं करते। जो शोक प्रकट किया गया है, वह अितना तो हृदय-द्रावक है कि वह शोककर्ताओंकी और प्रत्यक्ष रीतिसे वियोगके दुःखमे डूबे हुओंकी सहानुभूतिको पारस्परिक बना देता है। मेरे लिअे यह अुचित न होगा कि मैं अपनी माताके अतिम क्षणोंके अमूल्य और पवित्र संस्मरणोंको अपने ही पास रख छोड़ूँ और मेरे साथ दुःखी बने हुअे अेक बड़े जनसमूहको सार्वजनिक रीतिसे, जिस हद तक सभव हो, अुस हद तक अुसमे अपना भागीदार न बनाअूँ। मेरे शोकका आवेग अभी शान्त नहीं हुआ है, और मैं मानो दैव परका अपना विश्वास खो बैठा होअूँ, अैसी अेक विचित्र भावना मुझे व्यथित कर रही है। मुझे विश्वास है कि यह थोड़े समयकी ही चीज़ है। मै अचानक मातृहीन बन गया हूँ। लेकिन अपनी अिस मानसिक स्थितिसे झगड़कर मै अिससे अुबरनेकी आशा रखता हूँ।

वे (बा) अतिम क्षण तक पूरी तरह बेहोश तो कभी हुअी ही नहीं। शनिवारके दिन सरकारी वक्तव्यमे अुनकी स्थितिके गभीर होनेकी बात कही गअी थी। तब भी, बिलकुल निराशाजनक परिस्थितिमे भी, यह आशा रखी जा रही थी कि अुनकी बीमारीकी अिस अतिम हालतमेसे भी सहीसलामत पार हुआ जा सकेगा। हृदयकी क्रियाके मन्द हो जानेके कारण पिछले कुछ दिनोंसे अुनके गुर्दोंने काम करना छोड़ दिया था, और बिना बुखारके त्रिदोष (निमोनिया) के कारण हालत और भी नाज़ुक

हो गअी थी। खूनका दबाव घटकर ठेठ ७५-५२ पर जा टिका था। अब डॉक्टरोंने अुनके बचनेकी आशा छोड दी थी, और अिलाज बन्द कर दिया था। सोमवारकी शामको जब मैं वहाँ पहुँचा, वे बहुत ही कष्टमें थीं। अुनके साथी नजरबन्दोंकी प्रेमपूर्ण शुश्रूषा ही अुनके अिस कष्टको अूपर-अूपरसे कुछ हलका बना सकती थी। डॉक्टरोंका खयाल नहीं था कि वे रात निकाल सकेंगी। अुनके पार्थिव जीवनकी वह अंतिम रात थी। सारी रात अुन्हें प्रतिपल अपने साथियोंकी और गाधीजीकी अखंड सेवा-शुश्रूषा मिलती रही।

आधी बेहोशीकी हालतमें वे सवालोंके जवाब 'हाँ'-'ना' से अथवा धीरेसे अपना सिर हिलाकर देती थीं। अेक बार जब गांधीजी अुनके पास आये, तो अुन्होंने अपना हाथ अुठाकर अुनसे पूछा : "ये कौन है?" और जब गांधीजी क़रीब अेक घंटे तक अुनकी सेवामें बैठे रहे, तो अैसा लगा कि बा को अुससे बहुत ही राहत मिली। अुनके पास बैठे हुअे गांधीजी अुनके मुकाबिले अुमरमें बहुत छोटे दीखते थे, यद्यपि अुनके हाथ कॉप रहे थे। अिस दृश्यको देखकर मुझे बत्तीस साल पहलेकी अफ्रीकाकी अेक घटना याद हो आयी। अुस समय बा तीन महीनोंकी सजा काटकर बाहर आअी थीं। और वे बहुत ही कमजोर हो गअी थीं। अेक रेलवे स्टेशन पर मेरे माता-पिताको देखकर अेक परिचित युरोपियन सज्जनने पूछा था : "मि० गांधी, क्या ये आपकी माँ है?"

सुबह अुनकी हालत ज़्यादा खराब मालूम होती थी। लेकिन वे शान्त और स्वस्थ थीं। सोमवारको अुन्हें अपने जीवनकी कुछ आशा थी। मंगलवारको मुझे अैसा लगा कि वे अुस आशाके बन्धनसे मुक्त हो गअी हैं। यूरेमियाका प्रभाव बढ़ता जाता था, फिर भी अुनका मन अधिक शान्त और स्पष्ट था।

सोमवारसे अुन्होंने किसी भी तरहकी दवा और पानी तक लेना बन्द कर दिया था। लेकिन मंगलवारको दोपहरके समय गंगाजलकी अेक बूँद लेनेके लिअे अुन्होंने अपना मुँह खोला था। अिससे अुन्हें कुछ समयके लिअे शान्ति मिली। बादमें तीन बजे अुन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा : "मैं जाती हूँ। अेक-न-अेक दिन तो मुझे जाना ही है, तो

फिर आज ही क्यों न जाअूँ?" मैं अुनका सबसे छोटा लड़का ठहरा। स्पष्ट ही अुनका जी मुझमें लगा हुआ था, लेकिन अूपरके शब्द कहकर और दूसरे मीठे और प्यारभरे शब्दोंका अुच्चारण करके अन्य सबोंकी अुपस्थितिमें अुन्होंने बलपूर्वक मेरे प्रतिकी अपनी आसक्तिको खींच लिया। अुनकी वाणी अितनी स्पष्ट मैंने पहले कभी सुनी नहीं थी, और अुनके शब्द मुझे कभी अितने मीठे और चुनकर कहे हुअे नहीं लगे थे।

अिसके बाद तुरत ही अुन्होंने अपने हाथ जोड़े और बिना किसीकी मददके वे अुठ बैठीं। फिर अपना सिर झुकाकर जितने अुच्च स्वरसे वे बोल सकती थीं, अुतने अुच्च स्वरसे अुन्होंने कुछ मिनट तक प्रार्थना की: 'हे अीश्वर, हे मेरे आधार, मैं तेरी दया चाहती हूँ।" ये हृदय-वेधक शब्द बार-बार अुनके मुँहसे निकलते रहे। मैं अपने आँसू पोंछनेके लिअे कमरेसे बाहर निकला और अुसी समय आगाखान महलके ओसारेमें पेनिसिलिन आ पहुँचा। डॉक्टर अिस दवाकी आजमाअिश करना नहीं चाहते थे। त्रिदोष (निमोनिया) तो केवल अेक पूरक वस्तु थी। मूत्र-पिण्डकी (गुर्दोंकी) काम करनेकी अंतिम अक्षमता पेनिसिलिनसे दूर नहीं की जा सकती थी। और अब तो अिसका समय भी बीत चुका था। फिर भी निमोनियाकी अिस चमत्कारिक दवाको देनेकी तैयारी की गअी।

क़रीब पाँच बजे मैंने फिर बा के पास जानेकी हिम्मत की। अिस बार वे तनिक मुसकराअीं। यह वह मुसकान थी, जिसने ४३ वर्षों तक मेरे-लाड़ लड़ाये थे। लेकिन साथ ही, वह मरनेवाली माताका अपने पुत्रको आश्वस्त करनेवाला विषादपूर्ण अंतिम हास्य भी था।

मेरी माँ मानवताकी प्रतिमूर्ति थीं। अुन्होंने मेरे प्रति जो विशेष प्रेम दिखाया था, अुसके लिअे मैं अुनके निकट परिचयमें आये हुअे सब किसीसे अुनकी ओरसे क्षमा माँगता हूँ। जिस माँने अन्य प्रकारसे अीश्वरकी सृष्टिको अुज्ज्वल बनाया है, अुस माँकी त्रुटियोंको वे अवश्य ही क्षमा कर देंगे।

लेकिन अुस हास्यने पेनिसिलिन-विषयक मेरी दिलचस्पीको फिरसे जगा दिया और अुसके बारेमें आगेकी कार्रवाअी करनेके लिअे डॉक्टरोंके साथ सलाह-मशविरा करना मुझे अपना फर्ज मालूम हुआ। डॉक्टर अुसका प्रयोग करनेके लिअे तैयार थे। लेकिन अुन्होंने अुसके सफल होनेकी कोअी

आशा नहीं बँधवाअी। जब गांधीजीको पता चला कि बा को तकलीफ़ पहुँचानेवाले अिंजेक्शन देनेके विचारसे मैं सहमत हुआ हूँ, तो अुन्होंने शामको बगीचेमें घूमने जानेका विचार छोड़ दिया और वे मुझसे अिसकी चर्चा करनेके लिअे आये: "तू कैसी ही चमत्कारिक औषधि क्यों न लाये, अब तू अपनी माँको चंगा नहीं कर सकेगा। तू आग्रह करेगा, तो मैं अपनी बात छोड़ दूँगा, लेकिन तेरा आग्रह बिलकुल ग़लत है। अिन दो दिनोंमें अुसने किसी भी तरहकी दवा या पानी लेनेसे अिनकार किया है। अब तो वह अीश्वरके हाथमे है। तेरी अिच्छा हो, तो तू अुसमें दखल दे; लेकिन तू जो रास्ता लेना चाहता है, मेरी सलाह है कि अुस रास्ते तू मत जा। और, याद रखना कि चार-चार या छह-छह घंटेसे अिंजेक्शन दिलाकर तू अपनी मरती हुअी माताको शारीरिक पीड़ा पहुँचानेका काम कर रहा है।" अब मेरे लिअे दलीलकी गुंजाअिश नहीं रह गअी थी। डॉक्टरोंने भी छुटकारेकी साँस ली। अपने पिताजीके साथकी मेरी यह सबसे मीठी चख-चख ज्यों ही खतम हुअी, त्यों ही सदेसा आया कि बा अुन्हें बुला रही है। वे फौरन ही वहाँ पहुँचे। और जो लोग बा को आराम पहुँचानेके लिअे अुन्हें अपना सहारा देकर अुनके पास बैठे थे, अुनकी जगह खुद बैठ गये। अुन्होंने बा को अपने कंधे पर टिका लिया और जितना आराम वे अुन्हे पहुँचा सकते थे, पहुँचानेकी कोशिश की। दूसरोंकी तरह मैं भी बा पर निगाह रखता हुआ सामने खड़ा था। अितनेमे मैंने देखा कि बा के मुँह परकी छाया ज़्यादा घनी होती जा रही थी। लेकिन अिसी समय वे बोलीं और ज़्यादा आराम पानेके लिअे अुन्होंने अपना हाथ अिधरसे अुधर बदला।

अितनेमें अचानक अुनका अंत समय आ पहुँचा। अनेक आँखोंसे आँसू बहने लगे। गांधीजीने तो अपने आँसू रोक रखे। सब अुनके आसपास गोलाकारमे खड़े हो गये और आज तक अुनके साथ जिन भजनोंको गाते आये थे, अुन्हे गाने लगे। दो मिनटमे वे निश्चेष्ट हो गअीं! जैसा कि हममेंसे अेक भाअीने मुझसे कहा था, बा मानो हमारे ब्यालू कर चुकनेकी राह ही देख रही थीं। नज़रबन्दोंकी छावनीमे छह बजे ब्यालू किया जाता है। सात बजकर पैंतीस मिनट पर बा ने अपनी देह छोड़ी।

अुनके फूलके साथ अिलाहाबाद जाते हुअे रास्तेमे मैं यह लिख रहा हूँ। सोमवारको त्रिवेणीमे वे प्रवाहित किये जायँगे। मॉकी ये अस्थियॉ अितनी छोटी-छोटी हैं कि अेक मुट्ठीमे समा जायॅ। नज़रबन्दोंकी छावनीमे रहनेवालोंने शुक्रवारके दिन चिताकी भस्ममेसे अिन अस्थियोंको विधिपूर्वक चुना था। ये केलके पत्ते पर रखी गअीं और अिन पर फूल, सिंदूर और दूसरे सुगधी द्रव्य चढाये गये। बादमे पवित्र सस्कारकी विधि की गअी और फिर अिन्हे अन्तिम यात्राके लिअे तैयार किया गया। अिस तरह मैं अपनी माताके साथ यात्रा कर रहा हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि कलके बाद मै फिर कभी अुनके साथ यात्रा नहीं कर सकूँगा।

गांधीजीका यह स्पष्ट निर्णय था कि अिन फूलोंको ठडा करनेकी क्रिया दो महान् नदियोंके सगम-स्थान पर की जाय। अुन्होंने मुझसे कहा: "करोडों हिन्दू जो धार्मिक विधि करते है, वह तेरी माताको भी प्रिय होगी।" अिस निर्णयको तब और भी बल मिला, जब पूज्य मालवीयजीने भी अपने तार द्वारा अैसा ही करनेकी अपनी अिच्छा व्यक्त की। अधिकांश भस्म तो, जैसी कि अुधर प्रथा है, पूनाके पास अिन्द्रायणी नदीमे प्रवाहित कर दी गअी थी। विज्ञानकी दृष्टिसे अिस दूसरी चीजके औचित्यके बारेमे मुझे शका है। अुसके विनियोगकी दूसरी किसी रीतिका मै स्वागत करता, लेकिन दूसरा कोअी अुचित मार्ग सोचा नहीं गया था, अिसलिअे रूढिकी ही विजय हुअी।

मुझे और शुक्रवारको सूर्योदयसे पहले मेरे साथ नदी पर आनेवाले अेक छोटे-से जन-समूहको, यह क्रिया अूपर अुठानेवाली थी।

अग्निसस्कारके बाद दूसरे दिन अिकट्ठी की गअी भस्मका थोड़ा हिस्सा नजरबन्दोंकी छावनीमे सँभालकर रखा गया है। अुसमे चिताके साथ जलने पर भी अखडित रही हुअी और बादमे मिली हुअी पॉच चूड़ियॉ भी शामिल है।

मेरी माताजीकी बीमारी नजरबन्दोंकी छावनीमें सितम्बर, १९४२ से शुरू हुअी थी। अुसी समय पहली बार हृदय-रोगके चिह्न प्रकट हुअे थे। यद्यपि पिछले चार-पॉच सालसे अुनकी तबियत खराब रहने लगी थी, तो भी अिससे पहले हृदय-रोगका आक्रमण कभी नहीं हुआ था। यह कहनेमे

बा

बा के बारेमें कुछ कहना या लिखना बहुत कठिन है। वे मानव-हृदय और मानव-चित्तकी शुचिता और सरलताकी प्रतीक-सी थी। जिस व्यक्तिको खुद ही पता न हो कि वह किस भूमिका पर विचर रहा है, अुसका वर्णन करनेमें वाणी असमर्थ है। बा तो बा ही थीं। बिलकुल सीधी-सादी, लेकिन धीर और वीर। दूसरेका दोष तो अुनके मनमे कभी स्थान पाता ही न था। आश्रममें या बाहर किसीने कुछ बुरा किया हो, और अुसकी चर्चा चले, तो बा बोल अुठती थीं: "लेकिन अुसने अैसा किया क्यों?"

बा के बारेमें बहुतोंका यह खयाल है कि वे नरम स्वभावकी गरीब हिन्दू पत्नी थी — अपने पतिकी छाया-मात्र! किन्तु यह बात जरा भी सच नहीं। बा का भी बापूके समान ही स्वतंत्र व्यक्तित्व था। सिर्फ बुद्धिसे ही नहीं, बल्कि आन्तरिक प्रेरणासे भी वे सचाअीको पहचान लेतीं, और स्वतंत्र रीतिसे अपने निर्णय करती थी। अपने बल पर ही वे अपनी अुच्च कक्षाको पहुँची थीं। बापू स्वयं अितने महान् है और स्त्रीत्वके भी अितने बड़े पुजारी है कि वे किसीको भी जबरदस्ती अपने साथ घसीटेंगे नहीं। सैंकड़ों बरसोंकी रूढ परम्पराओंको छोडते हुअे बा को सहज ही कठिनाअी तो मालूम हुअी होगी। साबरमती आश्रममे अस्पृश्यताके महान् कलंकके बारेमें बा को समझानेमें बापूको भी वक्त लग गया था। लेकिन अेक बार बा को यकीन हो गया और वे समझ गअीं, अुसके बाद तो हरिजन अुनके लाड़ले बन गये।

अपनी मृत्युसे दो साल पहले सेवाग्रामकी अपनी झोंपडीके पश्चिमवाले चबूतरे पर बैठी हुअी बा का चित्र मेरी आँखोंके सामने खडा हो जाता है। देशके कोने-कोनेसे बापूको मिलने आनेवालोंको बापूकी कुटिया तक जानेके लिअे अिस चबूतरेके सामनेसे गुजरना पड़ता था। अुनमेंसे कअी बा को भी प्रणाम करने जाते, और अुनके हँसते हुअे चेहरेके दर्शनोंका

आनन्द लूटते। बा सबसे प्रेम और ममताके दो मीठे शब्द कहे बिना न रहतीं। अुनके अुस शान्त और मधुर दर्शनको कोअी भी नहीं भूल सकता। मैं तो बा की आवाज कभी भूल ही नहीं सकती। अुस आवाजमे अेक विलक्षण मार्दव था — पक्षीके मधुर कूजन-सा कुछ था। बा जब किसी पर चिढ़तीं या नाराज़ होती थीं, तब भी अुनके स्वरकी मृदुता नष्ट नहीं होती थी। कांग्रेसकी कार्यकारिणी समितिके सदस्य गांधीजीके साथ घटों चर्चा करके कितने ही क्यों न थक गये हों, फिर भी अुस चबूतरे पर बा से मिले बिना वे कभी जाते न थे। बा से मिलनेका हरअेकका ढग जुदा होता था। वल्लभभाअी तो नन्हे नटखट 'कहाना' को ही चिढ़ाते और अुसके साथ 'धूमा-मस्ती' करने लगते। कहाना भी वल्लभभाअीको चपलता भरे जवाब देकर हँसाता। मौलाना साहब तो गभीर भावसे बा के पास आकर बैठते और अुनकी तबियतके समाचार पूछकर व सलाम करके चले जाते। जवाहर-लाल जब मौजमे होते, तो कोअी क्रान्तिकारी बात कहकर बा को चिढ़ानेकी कोशिश करते। वे सोचते कि बा गुस्सा होकर विरोध करेंगी। लेकिन बा तो अपनी मीठी हँसी हँसकर धीमेसे कहतीं: "नहीं, तुम्हारी बात ठीक नहीं है। तुम कुछ भूले हो।" अगर जवाहरलाल थके होते, तो बा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते, और कुशल-समाचार पूछकर चले जाते। लेकिन बा को यह अच्छा न लगता। अुस दिन वे बापू पर सवालोंकी झड़ी लगा देतीं: "आज जवाहर अुदास क्यों दीखता था? आपने अुसे कुछ कहा तो नहीं?" बापू हँसकर जवाब देते: "तू भी जवाहरकी तरह मौजी तो नहीं बन गअी है? आज तो हमारे बीच कोअी मतभेद ही नहीं हुआ।" राजेन्द्रबाबूके साथ तो कभी कोअी चखचख होती ही नहीं थी। शायद अिसलिअे कि दोनोंके स्वभाव अेक ही-से थे। दोनोंके दिलमे कडुवाहट नामकी तो कोअी चीज थी ही नहीं। और, विलक्षण व्यक्तित्ववाले वे महान् पठान खान अब्दुल गफ्फार खां! अुनके दिलमें तो युद्ध और हिंसाके प्रति गांधीजीके समान ही तीव्र अरुचि है। वे बा के पास ही जाकर बैठते और पश्चिमके अस्त होते हुअे प्रकाशको देखा करते। कार्यकारिणीके दूसरे सब सदस्य शामको वर्धा जाते, लेकिन खान साहब तो सेवाग्राममे ही रहते।

बा को और सरोजिनी देवीको देखकर ही हमें अिस बातका अन्दाज़ हो सकता है कि नारीत्वमें कितना गौरव और कितना वैभव रहा है: कितनी विविधता, कितनी तेजस्विता और कितना सनातन यौवन! अपने माने हुअे आदर्शोंके लिअे, दिलमे लेशमात्र भी कडुवाहट न रखते हुअे, कष्ट सहनेकी कितनी तैयारी, कितना धैर्य, कितनी अटल श्रद्धा और कितनी शक्ति! अिन दो स्त्रियोंको देखनेसे क्या हमें अिस बातका दिव्य दर्शन नही होता कि हमारी भारतभूमि नारियोंकी भूमि है। ये नारियाँ ही मानवप्रेम और मानवसेवाके गांधीजीके महान् आदर्श पर डटी रहेंगी और बाजारोंकी, फौज़ोंकी और हुकूमतकी होड़में कभी शामिल नहीं होंगी।

बापूकी भाँति दूसरे भी कअी होंगे, जो बा की शान्त हुअी आवाज़को सुननेके लिअे तरसते होंगे। लेकिन अिस शोकके पीछे अेक अमर आशा यह रही है कि बा-जैसे व्यक्ति कभी मरते ही नहीं। अमरताके सच्चे अुत्तराधिकारी (वारिस) वे ही है।

क्या कभी यह संभव था कि हिन्दुस्तानको छोड़कर दूसरे किसी देशमे बा का और बापूका जन्म होता? मुझे तो अिस सवालका जवाब साफ 'ना' में मिलता है। मैं मानती हूँ कि अिस देशने अुनको जितना प्रेम और जितनी पूजा मिली है, अुतनी दूसरे किसी देशमें न मिलती। अिस विचारसे हमे आश्वासन मिलता है। हमारी जो प्राचीन संस्कृति पुराणोंके कालसे चली आ रही है, मानवके रूपमें बा और बापू अुसके अवतार-समान है। हो सकता है कि आज हमारी अुस संस्कृति पर विकृतिकी कुछ लकीरे खिंच गअी हो। फिर भी मूलतः हमारी संस्कृति शान्ति और ज्योतिकी संस्कृति है। वह मनुष्यको अीश्वरका ही अंश मानती है। दूसरी कोअी संस्कृति मनुष्यके सामने अितनी शक्ति और अितनी स्वतन्त्रताकी आशा अुपस्थित नहीं करती। यद्यपि आजकी दुनियाकी करतूतोंको देखते हुअे तो शक्तिका अर्थ भी बहुत-कुछ बदल जाता है। आज तो जो अपने विरोधियोंको ज़्यादा-से-ज़्यादा नुकसान पहुँचा सकते हैं, वे अपनेको अधिक-से-अधिक शक्तिशाली समझते हैं। लेकिन शक्तिके संबधमे गांधीजीकी

और हमारे देशकी व्याख्या अिससे बिलकुल भिन्न है : दिलमे किसी तरहका द्वेष न रखकर जो अधिक-से-अधिक कष्ट सहनेके लिअे तैयार होता है, शक्ति अुसके चरणोंमे आकर बैठती है। भौतिक सत्ता प्राप्त करनेके लिअे महान् युद्ध शुरू करके आज दुनिया अपनी विरासतमे आग और अगारे ही छोडे जा रही है, यह कितना करुण और कितना मूर्खता-पूर्ण है! दुनियाके विचारशील लोगोंके दिलमे तो तनिक भी शका नही है कि जो लोग आज मदसे चूर है, अुनको पीछे हटना ही पड़ेगा, और आधुनिक जगत्का पुरुषोत्तम अपनी जिस शान्ति-वीणाको पत्थरकी दीवारोंके पीछे बैठा बजा रहा है, अुसे सारी दुनियाको सुनना ही होगा। अिस मदोन्मत्त दुनियाके सामने खडे होकर यह कहना कि "तुम सब गलती पर हो, और अकेला मै ही सचाअी पर हूँ, सभव है कि तुम्हारा हृदय-परिवर्तन होने तक मैं ज़िन्दा न रहूँ, तो भी आनेवाला समय और आनेवाली पीढियाँ मेरे अिन वचनोंकी साक्षी देंगी," किसी साधारण हिम्मतवाले आदमीका काम नहीं! हमारी बा अैसे अेक पुरुषकी जीवन-संगिनी थीं। वे जीवन-भर अुनके साथ रही है। आज बापूकी विरह-वेदनाका अदाज कौन लगा सकता है? किसीको अुसका पता भी नहीं चलेगा, क्योंकि बापू तो अपने जीवनकी गहन वेदनाओंको मौन रहकर अीश्वरके सान्निध्यमे ही भोगते हैं।

बहुत साल पहले जब बापूने अस्पृश्यताके कलकके विरुद्ध युद्ध छेडा था, तब बा के विचारोंको बदलनेमे अुनको बडी कठिनाअीका सामना करना पडा था। अथाह धैर्यके साथ बापू बा को समझाते रहते। रोज घटों चर्चा करते। अेक दिन तो हरिजनोंको रसोअीघरमे दाखिल करके रसोअी बनाने देनेके लिअे बा को समझाते-समझाते वे थक गये और बोले: "बा को यह चीज समझाना बहुत मुश्किल है।" लेकिन अिन शब्दोंके अुच्चारणके साथ ही वे बहुत गभीर हो गये और फिर दूरकी कोअी बात सोच रहे हों, अिस तरह कहने लगे: "अितने पर भी यदि मुझे जन्म-जन्मान्तरके लिअे अपना साथी पसन्द करना हो, तो मैं बा को ही पसन्द करूँगा।" बापूके अिन शब्दोंसे बढकर और कौनसे शब्द होंगे, जिनसे बा के सच्चे स्वरूपका वर्णन किया जा सके?

भाषा द्वारा हम बा का विचार कर ही नहीं सकते। अिसके लिअे तो अुनकी मूर्तिको, अुनके चित्रको, आँखोंके सामने खड़ा करना चाहिये। अुनकी चाल, अुनका घूमना-फिरना, अुनकी कोमल आवाज और अिन सबसे बढ़कर अुनकी मीठी, निर्मल मुसकान हमें अुस महान् विभूतिकी शुचिता और वीरताका सच्चा दर्शन कराती है। यों देखें,—तो बा बहुत अुग्र नहीं थीं। दक्षिण अफ्रीकामें और यहाँ आज़ादीकी लड़ाअीमें वे कअी बार जेल गअी थीं। लेकिन अुन्होंने यह कभी नहीं दिखाया कि जेल जाकर वे कोअी असाधारण काम कर आअी हैं। देशके लिअे अुन्होंने जो बड़े-बड़े बलिदान किये, स्वेच्छापूर्वक गरीबीको अपनाया, अपने सर्वस्वको छोड़ा, अपने प्रिय पतिके सहवास तकका त्याग किया, सो सब अुन्होंने अपने सहज भावसे और निरभिमान वृत्तिसे ही किया।

पिछली बार जब बा जेल गअीं, मैं वहीं थी। पुलिस अफ़सरके आने पर वे अुतनी ही मिठाससे अपना सामान बाँधनेमें लग गअीं। पहले दिन अेलान किया था कि ९ अगस्तको शिवाजी पार्कमें सभा होगी, और बापू अुसमें भाषण करेंगे। बापूकी गिरफ्तारीके बाद बा ने अुस सभामें जाने और बापूका संदेश सुनानेका निश्चय किया था। अुस दिन बा की गिरफ्तारी अेक बहुत अजीब ढंगसे हुअी। पुलिसका अेक बड़ा कद्दावर अफ़सर, जो हिन्दुस्तानी था, बा के सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहा और जरा झुककर बा से पूछने लगा: "आप घर ही रहेंगी या सभामें जायँगी? आपका क्या हुक्म है?" अुसे भी अटपटा तो लगा होगा कि अुसके जैसा अल्पात्मा शरीरसे अितना मोटा-ताज़ा है और बा के जैसी महान् आत्मा अितने नन्हे और नाज़ुक शरीरवाली है! बा ने तो अपनी अुसी मीठी मुसकानके साथ फौरन जवाब दिया: "मैं सभामें तो जाअूँगी ही।" अफसर बेचारा सोचमें पड़ गया। आखिर बोला: "तो आप अिस मोटरमें बैठेंगी? मैं आपको बापूके पास ले जाअूँगा।" अिस तरह बा की गिरफ्तारी हुअी। आश्रमके अेक छोटे लड़केको अिच्छा हुअी कि वह बा की साड़ी पर 'करेंगे या मरेंगे' का अेक बिल्ला लगा दे! वह लगाने गया। बा ने हलकेसे अुसे हटा दिया और कहा: "मुझे यह नहीं फबता।" यह थी बा की अंतिम यात्रा। वहाँसे वे वापस न आअीं।

अुन्होंने तो अुक्त सूत्रका पालन बिना किसी आडम्बरके कर दिखाया। मैंने सुना है कि आगाखान महलके अुस मनहूस वातावरणमे अुनको अच्छा नहीं लगता था। आश्रमकी सादी किन्तु साफ कुटियामे रहनेका अुन्हे अभ्यास हो गया था। महलका वह फर्नीचर, जिसके अन्दर ढेरों धूल भरी रहती थी, अुन्हे बिल्कुल न रुचता था। वहाँका वातावरण तो प्रतिकूल था ही। तिस पर वहाँ कुछ ही दिनों बाद महादेवभाअीकी मृत्यु हो गअी।

बापूके पिछले अुपवासके दिनोंमे मैंने बा को आखिरी बार देखा था। १९४३की १८वीं फरवरीका वह दिन था। वह पहला दिन था, जब बापूकी तबियत नाजुक हो गअी थी। रविवार ता० २१ फरवरीके दिन बापूकी तबियत बहुत ही नाजुक हो अुठी। अुस दिन बा के चेहरे पर विषादकी हृदय-विदारक घटा छाअी हुअी थी। वे सारे देशके — गरीब-अमीर सबके — हृदयमे व्याप्त दुःखकी प्रतिमूर्ति-सी लगती थीं। अैसा प्रतीत होता था, मानो समूचे देशकी ओरसे बा विनय कर रही हों कि "नहीं, नहीं, भगवन्! अितनी बड़ी कुरबानी नहीं हो सकती। अिस अंधेरे और भयावने बियाबानमेसे हमारे देशको प्रकाश और शान्तिके मार्ग पर ले जानेके लिअे अिस नेताको बचा!" बापू तो शान्त थे और कहते थे: "कोअी घबराओ नहीं। अिस पार या अुस पार सब अेक ही है। मै तैयार हूँ।" अिस परित्याग और अैसी अीश्वर-श्रद्धाके सामने शोकका कोअी स्थान ही नहीं हो सकता। किन्तु अपनी वीरतापूर्ण मुसकानके पीछे बा जिस दुःखको छिपाये हुअे थीं, वह तो असह्य ही था। आगाखान महलके सामने बैठाअी गअी दो-दो चौकियोंको पार करके बाहर निकलते समय मै और मेरे साथी तो रो ही पडे। शायद बापू न रहेंगे, अिसके दुःखकी अपेक्षा यह विचार अधिक दुःखदायी था कि बा का क्या होगा? अिस अन्तिम चित्रको भूलनेकी मै बहुत कोशिश करती हूँ। राष्ट्रीय तूफानके कुछ दिन पहले मैं सेवाग्राम गअी थी। अुस समयकी बा के अुस चित्रको अपने मनमे अंकित कर रखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। प्रार्थनाके चौकसे लगे अपनी कुटियाके चबूतरे पर बा बैठी हैं, अुनके आसपास बहनोंका दरबार जुडा है और बा अपने विलक्षण व अनुपम

ढंगसे सबके साथ बात कर रही है। अुस समयकी बा की मुसकानसे मिलने-वाला प्रकाश जितना अद्‌भुत था, अुतना ही अद्‌भुत था कअियोंके लिअे काम कर-करके थकी हुअी बा का दोनों हाथ जोड़कर सबका स्वागत करना या सबको बिदा देना! अब तो वे अमर और विभूतिमय भारतीय नारी-मण्डलके बीच सीता और सावित्रीके बराबर जा बैठी है। हज़ारों वर्षों तक वे भारतवासियोंके लिअे आश्वासन और धैर्यका धाम बनी रहेंगी!